१
बाबा कदम
धूमधडाका

TABLE OF CONTENTS

□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
11
20
21

□□□□□□

□□□ □

□□□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□□□□

दिलीपराज

□□□□□□□□
□□□□□ □□□□□□
□□□□□□ □□□□□□,
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□
□□□ □, □□□□□□ □□□,
□□□□ 411 030.
© □□. □□□□□□□□ □□□□□□ □□□
'□□□□', □□□□ □□□□□ □□ □□□,
□□□□□□□ □□□□□,
□□□□□□□□□
□□□ □□□□□□□:
15 □□□□□□□, 2004
□□□□□□□ □□□□□□□ : □□□□
□□□ □□□ :
□□□□ □□□□□□
□□□□: □□□□□ 2020
□□□□□□□: www.diliprajprakashan.in
□□□□: info@diliprajprakashan.in

□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□

□
□
□
□
□
□
□
□
□
□□
□□
□□
□□
□□
□□
□□
□□
□□
□□
□□

अब मैं बोल नहीं सकता। लकवे के एक और दौरे ने मेरी वाणी को लकवाग्रस्त कर दिया है। पहले दौरे में मेरे शरीर का बायां हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था। मेरी बाईं भुजा और बायां पैर, दोनों अंग, मेरे थके-हारे शरीर से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन उनमें कोई जान नहीं है। सौभाग्य से! मेरी दाहिनी भुजा अभी भी आवश्यक कार्य कर रही है!
अब मैं अड़तीस साल का हो गया हूँ। मैंने सोचा था कि कम से कम एक दिन तो जी लूँ; लेकिन जब मैं इस शरीर की कमज़ोरी की गति के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि अब यह नामुमकिन है! अब मुझे ऐसा लगता है कि हर उगता दिन मेरी ज़िंदगी का आखिरी दिन है। मैं इस तरह जीने से थक गया हूँ। मेरी पूरी ज़िंदगी एक फ़िल्म की तरह मेरी आँखों के सामने चल रही है। मेरा मन करता है कि मैं दुनिया को बताऊँ कि मैं कौन था, मैंने कैसे ज़िंदगी जी, इन अड़तीस सालों में मैंने कितनी मुश्किलें झेली हैं! लेकिन क्या फ़ायदा! मैं अब और जी नहीं सकता! मेरा दायाँ हाथ अभी बेकार नहीं हुआ है।
आज समाज में मेरी छवि क्या है? एक ऊंचे खानदान का, हठी बदमाश! एक जुआरी जो चालाकी से धोखा देता है! शराबी, अय्याश, घुड़दौड़ का सट्टेबाज, ब्लैकमेलर! इस दुनिया के सारे असामाजिक विशेषण मुझ पर पूरी तरह लागू होते हैं! पैंतीस साल की उम्र तक, मेरे पास इस बारे में सोचने का समय नहीं था कि मैं कौन हूं और मैं कैसे व्यवहार करता हूं - मैंने अपने चारों ओर एक ऐसा गतिशील वातावरण बना लिया था।
मैंने 'फ्लश' खेलते हुए लोगों को धोखा दिया, लाखों रुपये कमाए, गरीबों को देखते ही बेवकूफ बनाया, इसीलिए मेरी जिंदगी पूरी तरह बर्बाद हो गई! सब कुछ बेतुका था! हद पार हो गई थी! मेरी संगत में आने वाला हर अमीर आदमी मुझे 'बकरी' जैसा लगता था। हर खूबसूरत औरत जिससे मैं मिलता, मुझे लगता था कि वो मेरे साथ सोने के लिए ही बनी है। सिर्फ मुझे ऐसा लगता ही नहीं था, बल्कि ऐसा होता भी था! पता ही नहीं चलता था कि क्या हो रहा है, वो औरत मेरे हाथों में होती थी! यही मेरी संगत का जादू था। उन बेचारे लोगों को पता ही नहीं था कि हम कौन हैं या क्या हैं! आप कह सकते हैं, कितनी बेशर्मी! ऐसा कबूलनामा करते हुए उसे शर्म क्यों नहीं आती? लेकिन सच कहूं तो, 'शर्म' शब्द मेरी डिक्शनरी में था ही नहीं! शर्म किसे आती है? सिर्फ उसे जिसकी अंतरात्मा हो, चाहे उसके कर्म सही हों या गलत! विवेक और मैं बचपन में ही अलग हो गए थे! स्कूल में ही!
आप सोच रहे होंगे कि अगर वह स्कूल गया था, तो उसने कितना सीखा होगा? उसने ज़्यादा कुछ नहीं सीखा। उसने कॉलेज में दो साल बिताए, फिर उसे कॉलेज से निकाल दिया गया, और अगर उसे कॉलेज से नहीं भी निकाला जाता, तो भी वह कॉलेज छोड़ देता। दूसरा विश्व युद्ध ज़ोरों पर था। हर गाँव में भर्ती केंद्र स्थापित किए गए थे। उस समय दुनिया को बेहतर बनाने और कुछ महान करने की इच्छा प्रबल थी। कॉलेज से निकाले जाने के कारण मुझे सेना में भर्ती होने से रोका जा सकता था; लेकिन मेरे पिताजी कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे

भवानीनगर के महाराजा के कानूनी सलाहकार थे! उन्हें राजराजों को सलाह देने का कौशल प्राप्त था! उनके जैसे वकील के लिए कॉलेज से निकाले जाने की बाधा को पार करके अपने बेटे को सेना में कमीशन दिलवाना कोई मुश्किल काम नहीं था!
मुझे आज भी वो दिन याद है जब मैंने सेना में भर्ती हुई थी। सेकंड लेफ्टिनेंट की वर्दी पहनने के बाद मैं कुछ पल के लिए भावविभोर हो गई थी। आईने के सामने खड़े होकर मैंने अपनी छवि को देखा, सावधान की मुद्रा में खड़ी हुई, अपनी छवि को सलाम किया और कहा, 'सेकंड लेफ्टिनेंट समर ठाकुर, अब से घमंड करना छोड़ दो! बस एक इंसान की तरह व्यवहार करो!' मैं सेना में अपना नाम कमाना चाहती थी, लेफ्टिनेंट, कैप्टन, मेजर, लेफ्टिनेंट कर्नल, कर्नल के पदों पर तरक्की करना चाहती थी और अंत में ब्रिगेडियर बनना चाहती थी! ब्रिगेडियर समर ठाकुर! एक और सलाम! मेरा परिवार राजसी-क्षत्रिय योद्धाओं का परिवार है! राजस्थान का सूरतगढ़ हमारा पैतृक गाँव है! मैंने इसे अभी तक नहीं देखा है। लगभग सन् 1901 में, मेरे दादाजी पहली बार भवानी नगर आए थे। उस समय रियासती युग था। भवानी नगर दक्षिण महाराष्ट्र की एक प्रमुख रियासत थी। लेकिन इस रियासत के राजाओं पर एक अभिशाप था। हर एक या दो पीढ़ी में संतान होती थी। बाद में, सिंहासन के उत्तराधिकार को जारी रखने के लिए, परिवार के किसी करीबी बच्चे को गोद लेना पड़ता था। लेकिन ऐसे गोद लिए गए राजकुमार के जीवन को कई खतरे होते थे। जिन असंतुष्ट लोगों को उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया था, वे कई साजिशें रचते थे और गोद लिए गए राजकुमार के जीवन को खतरे में डाल देते थे!
भवानी नगर के सिंहासन पर एक महान राजकुमार भीमदेव आसीन हुए! वे भीम की तरह बलवान और सुंदर थे। लेकिन तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को संदेह था कि राजकुमार को जहर दिए जाने की प्रबल संभावना है। दिल्ली में काफी हलचल मची हुई थी। भवानी नगर के सिंहासन को लेकर हर बार उठने वाले इस सिरदर्द को रोकने के लिए राजकुमार भीमदेव को सुरक्षा में रखना आवश्यक था। योजना बनाई गई कि राजकुमार के मेजर बनने तक उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों की निगरानी में एक अत्यंत विश्वसनीय देशी अंगरक्षक की देखरेख में रखा जाए। मेरे दादाजी को राजकुमार भीमदेव का विशेष अंगरक्षक नियुक्त किया गया था! सुमेर सिंह ठाकुर मेरे दादाजी थे! साढ़े छह फुट लंबे, गोरे, चील जैसी नाक वाले, दाढ़ी में घुसती मूंछों के सिरे, साफ रंग और हल्की भूरी आंखों वाले! राजकुमार की हत्या का प्रयास करने वालों को जब पता चला कि सुमेर सिंह ठाकुर को भवानी नगर का प्रमुख नियुक्त किया गया है, तो उन्होंने उन्हें जान से मारने का निश्चय कर लिया। सुमेर सिंह ठाकुर राजस्थान के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनके मेवाड़ के राजपरिवार से संबंध थे। सुमेर सिंह ठाकुर उन गिने-चुने राजपूत परिवारों में से एक थे जो ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार थे। एक फतवा जारी किया गया कि राजकुमार की हत्या का प्रयास करने के संदेह में पकड़े गए किसी भी व्यक्ति का सिर कलम कर दिया जाएगा। मेरे दादाजी, सुमेर सिंह, अब जीवित नहीं हैं। मेरे घर में अभी भी उनकी एक तेल चित्रकला है, जिसे एक ब्रिटिश चित्रकार ने बनाया था। वह चित्र

आता, वे उससे कहते, 'मनुष्य नश्वर है!' पिताजी ने लॉ स्कूल से स्नातक होने के बाद कुछ दिनों तक वकालत की और फिर नौकरी शुरू कर दी।
पिताजी की एक और विशेषता यह थी कि वे कभी-कभी बहुत अनाड़ी और भद्दे लगते थे; लेकिन जब वे किसी मामले की पैरवी करने के लिए खड़े होते थे, तो ऐसा लगता था मानो उनकी ज़ुबान पर सरस्वती का श्रृंगार उतर आया हो। पिताजी की अंग्रेज़ी सुनने के लिए ही दरबार में भीड़ उमड़ती थी! पिताजी ने दो-तीन वर्षों के भीतर ही दीवानी और आपराधिक दोनों मामलों में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर ली। पिताजी का पालन-पोषण रियासती युग में हुआ था। उन्हें शुरू से ही राजशाही और रियासती युग के प्रति आदर था। पिताजी की रियासती संस्कृति में अंग्रेज़ी रीति-रिवाजों का प्रभाव होने के कारण उनके व्यक्तित्व में एक अनूठा रूप आ गया था।
पिताजी लंबे और गठीले शरीर वाले थे। उन दिनों लंबे बाल रखना आम बात नहीं थी; लेकिन पिताजी, जो मुंबई में पारसी और ईसाई बच्चों के बीच पले-बढ़े थे, भवानी नगर लौटने के बाद से कभी पगड़ी या टोपी नहीं पहनी थी।
राजा भीमदेव की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र राजकुमार सत्वशील सिंहासन पर बैठे। पिताजी और वह बचपन से साथ पले-बढ़े थे। राजकुमार सत्वशील के राज्याभिषेक के समय, श्वेत राजकक्ष ने सुझाव दिया कि पिताजी को राजा का कानूनी सलाहकार नियुक्त किया जाए। मेरे दादा सुमेर सिंह ठाकुर के बाद, सत्वशील का मार्गदर्शन करने की ज़िम्मेदारी, भले ही उन्हें अपने पिता का संरक्षण प्राप्त न हो, पिताजी पर आ पड़ी।
कई लड़कियाँ पापा के पास आने लगीं। पापा ने वहाँ पश्चिमी संस्कृति का स्पष्ट रूप से अनुकरण किया था। उन्होंने विवाह संबंधी सभी अधिकार हमारी दादी को सौंप दिए थे। महाराष्ट्र के नागर, नासिक, सतारा और सोलापुर क्षेत्रों में कई शाही-क्षत्रिय परिवार बस गए थे। समय के साथ, वे मराठी संस्कृति में घुलमिल गए थे। नागर में, नारायणलाल एक विदेशी सैन्य ठेकेदार थे। उनकी बहन को दादी ने पापा के लिए चुना था। पापा ने भी अपनी पसंद ज़ाहिर की।
मैंने अपने जीवन में बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। लोगों को आकर्षित करने का कारण मेरा व्यक्तित्व है! मुझे यह प्रभावशाली व्यक्तित्व अपने माता- पिता से विरासत में मिला है। मुझे अपनी माँ से गोरी त्वचा, लंबा कद, भव्य माथा और धनुषाकार भौहें मिली हैं। मुझे अपने पिता से असाधारण स्मृति, कल्पनाशीलता और अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़ मिली है। आपको आश्चर्य होगा, 'माँ' शब्द का उच्चारण करने से पहले ही मैंने 'दादी' कहना सीख लिया था। मेरे पिता घर पर मुझसे बहुत कम मराठी बोलते थे।
जब वह कानूनी सलाहकार बन गए, तो हम अपने फार्म हाउस से भवानी नगर चले गए। दादाजी ने भवानी मंदिर के पास एक तीन मंजिला हवेली खरीदी थी। दादाजी ज्यादातर समय उसी हवेली में रहते थे। गांव वाली हवेली खाली पड़ी थी। पिताजी को फार्म हाउस में रहना बहुत पसंद था। उन्हें सुबह-शाम टहलने की आदत थी। वे सुबह जल्दी उठकर टहलने चले जाते थे। पिताजी मानते थे कि टहलना एक बेहतरीन व्यायाम है और जो लोग दिन में कम से कम तीन मील चलते हैं, वे

स्वस्थ रहते हैं। उनका टहलने का तरीका अनोखा था। टहलते-चलते वे एक फर्लांग दौड़ भी लगाते थे। उनका एक और शौक तैरना था। फार्म के सामने एक कुआँ था जो हमेशा पानी से भरा रहता था। गर्मियों में पिताजी टहलने के बजाय तैरना पसंद करते थे।
मैंने छह साल की उम्र में तैरना सीखा था। अगले दिन तक, जब मैंने पानी से भरा एक कुआँ देखा, तब तक मेरे हाथ खाली थे! लेकिन अब यह नामुमकिन है। मेरे शरीर का पूरा बायाँ हिस्सा काम करना बंद कर चुका है!
दिन बीतते गए। रियासती युग में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे थे। भीमदेव के बाद युवराज सत्वशील सिंहासन पर आसीन हुए; लेकिन उनके चारों ओर प्रशंसकों की भीड़ उमड़ पड़ी। सत्वशील, जो बुद्धि में कुछ मंदबुद्धि थे, किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति को अपने निकट नहीं रखते थे। उनके और उनके पिता के बीच मतभेद उत्पन्न होने लगे। हालांकि, यह मतभेद अधिक समय तक नहीं चले।
पिताजी का स्वभाव बहुत बुरा है। एक बार वे उठे और सीधे राजकुमार के पास जाकर बोले,-
"महाराज, आपको मुझे सेवा से मुक्त करना होगा!"
"क्यों? क्या किसी ने आपको बताया?"
"मेरी तरह बोलने की हिम्मत कोई नहीं करेगा; लेकिन मुझे लगता है कि अब कानूनी सलाहकार के तौर पर परामर्श करने के लिए कोई सवाल नहीं बचा है। मैं इसके लिए हर महीने सरकारी खजाने से पांच सौ रुपये लेना पसंद नहीं करता!" लेकिन मान लीजिए कि हमें परामर्श की आवश्यकता है?
"तो आधी रात को संदेश भेज देना, मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ!"
"क्या आप आगे कुछ करने वाले हैं?"
"वह कहता है कि तुम्हें अभ्यास करना चाहिए!"
"ठीक है!"
धर्मात्मा राजाओं को कभी-कभी पिताजी का सीधा-सादा व्यवहार और सलाह पसंद नहीं आती थी, फिर भी उनमें उन्हें घर वापस जाने के लिए कहने का साहस नहीं था। राजाओं ने स्वयं ही तय कर लिया था कि यदि वह जाना चाहते हैं, तो उन्हें रोका नहीं जाएगा। जब पिताजी विदाई देने गए, तो उन्होंने ज्यादा ज़ोर नहीं दिया, इसीलिए!
जिस दिन पापा काम से छुट्टी लेते, वो स्कॉच की एक बोतल खोलते। पापा रोज़ाना तीन पेग पीते थे। ड्रिंक्स खत्म होते ही पापा खाने के लिए उठ जाते। खाना कम होता था, लेकिन स्वादिष्ट होता था। मटन सूप उनके रोज़ाना के खाने का ज़रूरी हिस्सा था। कभी कटलेट, कभी चॉप्स और कभी मटन रोल!
माँ ने ये सब शहर में रहते हुए सीखा था। माँ के बड़े भाई एक सैन्य ठेकेदार थे! ब्रिटिश अधिकारी नारायणलाल परदेशी के बंगले पर 'भारतीय व्यंजनों' का स्वाद लेने जाया करते थे। उस समय, अधिकारियों के मेस का रसोइया फर्नांडीस घर आकर मदद करता था। उसने माँ को पश्चिमी शैली के ये सारे मांसाहारी व्यंजन बनाना सिखाया था। जब माँ की शादी पिताजी से हुई, तब वह इन व्यंजनों का इस्तेमाल करता था। पिताजी का खान-पान भी बहुत कम था। वे हमेशा कहते थे, 'कम खाओगे तो ज्यादा जिओगे!' यही कारण है कि मैं भी शाकाहारी बन गई! मैं तभी

विषयों का क्या? मैंने अब तक इन हाथों से चार-छह लाख कमाए होंगे; लेकिन मैं कभी भी दो संख्याओं का गुणा या भाग नहीं कर पाता था। मैं सिर्फ जोड़ कर सकता था! लेकिन जब मैं पैसे कमाता था, तो मैं उसे भी करने की ज़हमत नहीं उठाता था। जो पैसा आता था वह मेरा होता था, और जो पैसा जाता था वह मेरा नहीं होता था, यह एक बहुत ही सरल हिसाब था।
मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और कॉलेज में दाखिला लिया। कॉलेज के पहले दिन जाने से पहले, मैंने अपनी हल्की-सी मूंछें मुंडवा लीं। मैंने अपने होंठों के दोनों तरफ दो नुकीले निशान बनाए। कॉलेज जाने से पहले, मैंने अपना सिर अपने पिता और माता के चरणों में रख दिया। पिताजी ने मुझे जगाया और मेरे गाल पर चुंबन किया। उनके व्यवहार में अंग्रेज़ों के शिष्टाचार की झलक साफ दिखती थी! लेकिन मैंने इस बारे में सोचा तक नहीं! मुझे आश्चर्य हुआ कि सुबह पिताजी के शरीर से व्हिस्की की महक आ रही थी!
पिताजी सुबह कभी शराब नहीं पीते थे। लेकिन जैसे-जैसे उनकी कमाई बढ़ने लगी, हमने उनके रोज़मर्रा के व्यवहार में बदलाव देखना शुरू कर दिया। लक्ष्मी खुश रहती थी, दूसरों को खुश रखती थी, लेकिन अगर उसकी खुशी ज़रूरत से ज़्यादा हो जाती, तो यह साफ था कि वह बर्बादी की ओर बढ़ रही थी! अब जब वह विकलांग हो गए हैं, तो यह बात मुझ जैसे मूर्ख को भी समझ आने लगी है!
उस दिन मैंने महालक्ष्मी पर 'किंग सोलोमन' नाम के घोड़े पर सात सौ रुपये का दांव लगाया था। घोड़ा बहुत तेज था; लेकिन उसे दौड़ाने वाले जॉकी विलास ने पिछली रात कहा था, -
"समर, कल जितना चाहो उतना खेलो, मैं राजा सोलोमन को हरा दूंगा!"
"क्या, क्या बता रहे हो तुम, विली! अरे, घोड़ा तो बेकार है, इस मौसम में उसे उतारकर किसी प्रजनन केंद्र में भेज दिया जाएगा!"
"मज़ाक मत करो समर! गंभीर हो जाओ, तुम मेरी दोस्त हो और एक ऐसी दोस्त हो जिसके पास गिलास है!" विलास ने अपना गिलास मेरे गिलास से टकराते हुए कहा। मैंने एक घूंट लेते हुए पूछा, "तो क्या हुआ?" तब विलास ने कहा, "जिस दोस्त के पास गिलास हो, वो तो सबसे बढ़िया दोस्त होता है!"
जब मैंने ताली बजाई तो उसके हाथ में रखा गिलास खटकने लगा। जब थोड़ी सी व्हिस्की उसकी पैंट पर गिर गई, तो मैंने 'सॉरी' कहकर माफी मांगी, और वह मुस्कुराया और बोला, 'समर, सॉरी मत कहो, यह शुभ संकेत है! शराब पीते समय गिलास टूटना और शराब गिरना शुभ माना जाता है!'
मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा, "शराबी हमेशा ऐसा ही करते हैं। इसीलिए उन्होंने इसे इस तरह समझा होगा!"
"क्या हम नशे में हैं?" विलास ने पूछा।
"'चे: चे:! बिलकुल नहीं! जब तक हम शराब नहीं पीते, तब तक हमें शराबी नहीं कहा जा सकता! लेकिन 'राजा सोलोमन', है ना?"
"सौ प्रतिशत!" विलास ने अपनी दो उंगलियों को चूमा और मुझे अपनी तर्जनी और मध्यमा उंगलियों का आकार दिखाया।
अगले दिन मैंने एक आराम से बैठे घोड़े पर सात सौ रुपये का दांव लगाया। कीमत घटकर एक लाख अस्सी हो गई। मेरे सात सौ रुपये पच्चीस हज़ार दो सौ हो गए।

लेकिन क्या होता अगर मैं वो पैसा लेकर सीधे रेस ट्रैक से चला जाता? पर ऐसा कभी नहीं होता। लक्ष्मी, बिना किसी प्रयास के प्रसन्न होकर, बदला लेने आती। उस शुरुआती पच्चीस हज़ार रुपये ने मुझे रेस का पक्का सट्टेबाज बना दिया।
एक जाति के रूप में मेरा जीवन बहुत समृद्ध है। मैंने आपको बस इसकी एक झलक दिखाई है। बताने का उद्देश्य यह है कि लक्ष्मी बदला लेने की भावना से हमारे घर आई थी। पिताजी शराबी बन गए थे। उनके हाथ तब तक कांपते रहते थे जब तक उन्हें हर सुबह दो पेग न दे दिए जाएं। वकालत का धंधा चौपट हो गया था। उनकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई थी। लोग खुलेआम कहने लगे थे, 'अगर ठाकुर ने वकील रखा होता, तो हालात और बिगड़ जाते।'
मैंने फर्स्ट ईयर पास किया और इंटर क्लास में चला गया, उस समय की बात है।
- ०-०-०-

२
हालाँकि मैंने कॉलेज में पढ़ाई पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, मैं मुख्य रूप से अन्य 'गतिविधियों' में व्यस्त रहा। फ़ुटबॉल मेरा पसंदीदा खेल था। मैं क्रिकेट, टेनिस और बैडमिंटन भी खेलता था; लेकिन फ़ुटबॉल में मैं विशेष रूप से प्रसिद्ध था!
घर में खूब दूध होता था। मेरी माँ के पास फार्म पर बने बंगले में पाँच से पचास मुर्गियाँ थीं। वे हर दिन एक दर्जन या दो दर्जन अंडे देती थीं। मैं सुबह उठकर एक ही साँस में दो मील दौड़ जाता था! सफेद टी-शर्ट और सफेद शॉर्ट्स पहने हुए। मेरे कैनवास के जूते और मोज़े भी सफेद होते थे! दौड़ने के बाद मैं एक गिलास दूध में दो कच्चे अंडे डालकर पीता था!
उस समय मेरा मूड बहुत अच्छा था। चाहे मैं फुटबॉल मैदान पर कितनी भी देर दौड़ता, थकता नहीं था। हालाँकि फुटबॉल एक ऐसा खेल है जो मेरी टीम के खिलाड़ियों की मदद से खेला जाता है, लेकिन मेरा स्वभाव अलग था! एक बार फुटबॉल मेरे पैरों में आ जाती, तो विपक्षी टीम के लिए उसे छीनना नामुमकिन था! मैं गेंद को हाथों में घुमाता और विपक्षी टीम की ओर ले जाता, किसी को भी उसे छूने का मौका नहीं देता जब तक कि मैं गोल न कर दूं! भवानी नगर के फुटबॉल प्रशंसकों ने मेरी यह कला कई बार देखी थी; इसीलिए वे मैच देखने आते थे। जब भी वे मुझे टीम में देखते, वे कहते, 'गर्मी का मौसम है! अब तो बस! वो विपक्षी टीम के खिलाफ आधा दर्जन गोल दाग देगा!'
भवानीनगर में साल में एक बार फुटबॉल मैच हुआ करते थे। गांवों से टीमें आती थीं और मुकाबले बेहद रोमांचक होते थे। लेकिन आखिर में, भवानीनगर की टीम ही ट्रॉफी जीतती थी! टीम के कप्तान धोंडू मास्टर थे! धोंडू मास्टर ने मेरे जैसे दर्जनों 'शरारती' लड़कों को ट्रेनिंग दी थी। लगातार छह साल तक हमने किसी और को ट्रॉफी नहीं जीतने दी!
धोंडू मास्टर ने मुझे फुटबॉल सिखाया। उन्होंने मुझे एक और चीज़ सिखाई, और वो थी शराब पीना!
मुझे शराब पीना बिल्कुल पसंद नहीं था। जब मैं सड़क किनारे पड़े लोगों को देखता था, तो मुझे उन पर तरस आता था। मेरे माता-पिता शराब पीकर मर क्यों नहीं गए? जब मेरे पिता ने शराब पीना शुरू किया, तो हमारे परिवार का स्वास्थ्य बिगड़ गया, और इसीलिए मुझे शराब से दिल से नफरत थी। लेकिन कौन जाने उस शराबी के दिमाग में क्या चल रहा था! एक बार वह हमें मेले में ले गया और जबरदस्ती शराब पिलाई। जब मैंने वह तरल पिया जिससे मेरा गला जल गया, तो मुझे घिन आ गई। मैंने उस शराबी को कोसते हुए बिना कुछ खाए ही घर छोड़ दिया। मुझे अपने पैरों के नीचे सड़क दिखाई नहीं दे रही थी। मेरा सिर चकरा रहा था, मेरा संतुलन बिगड़ रहा था। किसी तरह मैं घर पहुंचा। मैंने दरवाजा खटखटाया। मेरी माँ ने दरवाजा खोला। मुझे देखकर उन्होंने मेरे माथे पर एक थप्पड़ मारा और कहा, "क्या है समर? क्या तुमने और तुम्हारे पिता ने परिवार को बर्बाद करने का फैसला कर लिया है?"

"नहीं, नहीं! माँ, उस धोंडू मालिक ने आज मेरे साथ ज़बरदस्ती की। मैं अब कभी उसे हाथ नहीं लगाऊँगी। कसम से!"
मेरी माँ मुझे घर ले आई और मुझे खाना खिलाया। मैं खा रहा था। मुझे पता भी नहीं था कि मैं क्या खा रहा हूँ। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा पेट जल रहा हो। उस समय मेरी माँ आँखें बंद करके रो रही थी। पिताजी बहुत ज़्यादा शराब पी रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ा रहे थे। जब वे शराब पीते थे, तो उन्हें लगता था जैसे वे अदालत में हैं। यह सोचकर कि उनके सामने कोई न्यायाधीश बैठा है, वे खुद से बड़बड़ाते रहते थे, इशारे करते हुए कहते थे, 'माननीय न्यायाधीश, गवाह झूठ बोल रही है! उसने घटना देखी ही नहीं होगी! मेरी मुवक्किल बिल्कुल निर्दोष है! उसे बरी कर देना चाहिए!' नशे में भी वे बोलते समय कोई गलती नहीं करते थे! कभी-कभी उनका मनगढ़ंत मामला बनाने का काम रात के बारह या दो बजे तक चलता रहता था।
पड़ोसी कहते थे, ‘वकील ठाकुर तो जल्द ही पागल हो जाएगा!’ लेकिन पागल होने की बारी तो माँ की थी! पिताजी का काम धीरे-धीरे इतना कम हो गया कि महीने में एक-दो सौ रुपये भी घर नहीं आते थे। अनाज तो आता था। दादाजी द्वारा लगाए गए आम के पेड़ हर साल नीलाम होते थे, जिनसे दो हज़ार रुपये मिलते थे, और माँ जैसे-तैसे घर का खर्च चलाती थीं। लेकिन पिताजी का मासिक खर्चा ही चार सौ रुपये था! वो हर दिन आधी बोतल व्हिस्की पी जाते थे! उन्हें रात के खाने में अंग्रेज़ी खाना चाहिए होता था! अगर उसमें भी कोई कमी हो जाती, तो बस काम तमाम: झगड़े शुरू हो जाते!
मेरी माँ बहुत परेशान थीं। वह मुझसे बार-बार कहती थीं, "बेटा समर, तुम्हें धीरे-धीरे सीखना चाहिए और बड़ा होना चाहिए। मेरे जीवन में जीने के लिए कुछ बचा ही नहीं है। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए और इस अमरता के लिए जीती हूँ।" मेरे चाचा नारायणलाल, जो एक विदेशी थे, अचानक शहर से आ गए। उन्होंने घर की हालत देखी और अपनी माँ से कहा, -
"रूपा, चलो बच्चों के साथ कुछ दिनों के लिए शहर चलते हैं!"
"मैं इस घर से सिर्फ एक बार ही बाहर जाऊंगी! दादाजी, क्या आप राजपरिवार का नियम भूल गए हैं? हमारे परिवार में, बेटी ससुराल जाते समय खड़ी होती है, लेकिन लौटते समय लेट जाती है!"
"लेकिन रूपा, देखो तुम्हें क्या हो गया है! कल मैंने उनसे कहा था कि तुम्हारे जैसी बुद्धिमान व्यक्ति को यह व्यवहार शोभा नहीं देता, लेकिन उन्होंने कहा, 'जब तक मैं तुम्हारे दरवाजे पर न आऊं, तब तक मुझे अक्ल सिखाने की कोशिश मत करो!'"
"जाओ दादाजी!" मां ने अपनी आंखें पोंछते हुए कहा।
मेरे चाचा भवानी नगर कभी वापस नहीं लौटे। लेकिन शहर जाने के बाद उन्होंने मेरी माँ के नाम से दो सौ रुपये का मनी ऑर्डर भेजा था। मेरी माँ ने उसे भी स्वीकार नहीं किया। मेरी माँ गडकर परिवार की सिंधु की दूसरी अवतार हैं! घर का यह माहौल देखकर मुझे लगा कि अब हमें भी जीविका कमानी चाहिए!

दालें, चना, मूंग और मटकी जैसी फसलें साल भर के लिए पर्याप्त मात्रा में घर पहुँच रही थीं। कुशप्पा नाम का एक किसान, जो खेत में काम करता था, ईमानदारी से तय समय पर फसलें घर पहुँचा रहा था।
इंटर की परीक्षाएं ठीक दो महीने दूर थीं। मैं तीसरी मंजिल पर अपने कमरे में सारी किताबें फैलाकर बैठा था और अपना माथा हाथों में थामे हुए था। मुझे पता था कि तर्कशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे विषयों को जल्दबाजी में नहीं पढ़ा जा सकता। पहले सेमेस्टर में मैंने फुटबॉल टूर्नामेंटों की वजह से पढ़ाई नहीं की, लेकिन दूसरे सेमेस्टर में मैंने शुरू से पढ़ाई करने का फैसला किया, और पापा ने घर में हलचल मचा दी!
पास होना बेहद ज़रूरी था। आखिरकार, मेरे दिमाग में योजना बनने लगी। मैं नकल करना चाहता था! मैंने बारीक नोक वाले कागज़ पर महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर लिखना शुरू कर दिया। इसके लिए मैंने गाइडबुक भी साथ ले ली थीं। मैं यह सब शौक के तौर पर बिना किसी को बताए कर रहा था।
हमारे कॉलेज की इमारत विशाल और भव्य है! राजा भीमदेव ने अपने पुराने महल का एक हिस्सा कॉलेज के लिए दान कर दिया था। उन्हें शिक्षा में बहुत रुचि थी। उन्होंने निजी छात्रवृत्तियां शुरू की थीं ताकि सभी जातियों के बच्चे पढ़ सकें। लेकिन राजा भीमदेव के देहांत के बाद युवराज सत्वशील गद्दी पर बैठे। उन्हें शिक्षा में कोई रुचि नहीं थी। यहां तक कि युवराज के आसपास के कुछ लोग उनके गले में ताबीज भी पहनते थे। पिताजी के कानूनी सलाहकार का पद छोड़ने के बाद राजपरिवार से हमारे संबंध लगभग टूट गए थे। लेकिन मेरी खेल भावना के कारण राजा सत्वशील की नजर मुझ पर पड़ी! जब मेरी परीक्षाएं सिर्फ चार दिन दूर थीं, तभी मुझे अचानक महल से फोन आया।
मेरी माँ ने मुझसे कहा, "उन्होंने राजपरिवार से संबंध तोड़ लिए थे; लेकिन अब दोबारा संबंध जोड़ने का मौका मत गंवाओ। राजपरिवार से संबंध तोड़ने की वजह से ही हमारा परिवार इस स्थिति में है!"
मां भोलेपन से मानती थी कि राजा ईश्वर का एक अंश है और ईश्वर का प्रकोप उस पर इसलिए पड़ा है क्योंकि उसके पिता ने राजा से अपने संबंध तोड़ लिए थे। मैं महल गया। मैंने महाराजा के पैर छुए और एक तरफ खड़ा हो गया।
"अभी क्या चल रहा है, समर?"
"महामहिम, मैं अंतर-विश्वविद्यालय परीक्षा में हूँ। परीक्षा चार दिन बाद है!"
"आइए। मैंने आपको इसलिए बुलाया है क्योंकि भारत के सभी राजकुमारों ने रत्नपुर में एक खेल महोत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया है। हमने आपके नेतृत्व में अपनी राजसी फुटबॉल टीम भेजने का निर्णय लिया है!"
‘‘जी महाराज!’’
"परीक्षाओं के बाद, आप अभ्यास शुरू कर सकते हैं। शहर की अन्य टीमों में से आप ही तय करें कि किन खिलाड़ियों को चुनना है! मैं आज ही प्रशासकों को बता रहा हूँ कि आपको निजी निधियों से जितनी भी राशि की आवश्यकता हो, वह आपको दे दें!"
‘‘जी महाराज!’’

"महल के पीछे वाली ज़मीन पर अभ्यास करो। ताकि मैं भी इसे देख सकूँ।"
‘‘जी महाराज.’’
मैं इन दो शब्दों के अलावा और कुछ नहीं कह सका। जिसने भी राजसी युग की शान-शौकत को करीब से देखा है, वह वहाँ के माहौल को समझ जाएगा! राजा से ज्यादा बात करना असभ्य माना जाता था!
परीक्षा का दिन आ गया। सुबह से ही मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने सिर्फ़ दो विषयों में नकल करने का फ़ैसला किया था। तर्कशास्त्र और अर्थशास्त्र! चाहे मैं कुछ भी कर लूँ, ये दोनों विषय मेरे दिमाग़ में नहीं आ रहे थे। अगले दिन, मैंने अपनी कमीज़ के नीचे छिपाए तर्कशास्त्र के प्रश्नपत्र के नोट्स निकाले और प्रश्नपत्र के नीचे रखकर इधर-उधर देखने लगा। उस दिन का झूठ अब समझ में आ गया था। आख़िरी प्रश्नपत्र अर्थशास्त्र का था!
प्रश्नपत्र शुरू हुआ। मैंने कार्ड निकाले और उन्हें प्रश्नपत्र के नीचे रखकर पढ़ना शुरू किया। तभी प्रोफेसर जमदग्नि बिना कदम बढ़ाए मेरे पास आए और धीरे से बोले,
"क्या चल रहा है?"
मेरी आँखों के सामने चाँदनी छा गई। मैंने पलक झपकते ही अपने सामने रखे कागज़ समेटे और पेंडोला से सीधे बाहर भागा। जमदग्नि चिल्लाया, “पकड़ो! पकड़ो!” कॉलेज का बेल्टधारी जमादार दरवाजे पर बैठा था। वह पालथी मारकर बाहें फैलाए खड़ा था। मैंने उसे धक्का दिया और कॉलेज की इमारत से बाहर भागा। जमादार बहुत ताकतवर था। मैं दरवाजे से बाहर सिर्फ इसलिए निकल पाया क्योंकि वह लापरवाह था। लेकिन जमादार ने खुद को संभाला और मेरा पीछा करने लगा। मैं बेल्टधारी फुटबॉल खिलाड़ी हूँ! मैं उसके पिता की बात मानता हूँ! मैं इस दौड़ में उसके पीछे भागा। भवानी नगर की गलियाँ मेरी पीठ थीं, और जमादार भी उन्हें जानता था। मैं दौड़ते हुए बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। आधा मील और एक चौथाई दौड़ने के बाद भी, जमादार मेरे पीछे ‘पकड़ो! पकड़ो’ चिल्लाता हुआ भाग रहा था।
सड़क पर खड़े लोग हैरानी से देख रहे थे। कई लोग मुझे जानते थे। लोगों को गुमराह करने के लिए मैं भी आगे दौड़ते हुए चिल्ला रहा था, 'पकड़ो, पकड़ो!' मेरा इरादा था कि लोग सोचें कि मैं भी किसी को पकड़ने के लिए दौड़ रहा हूँ, और वो भी जमादार को! मैं इतना चिल्ला रहा था कि जमादार रुककर कुछ समझा नहीं पाया। मैंने पडवाले के बीचोंबीच जमादार को गले लगा लिया। पडवाले के बीचोंबीच पाँच फुट की दीवार थी। मैंने उस दीवार से सीधी छलांग लगाई और उल्टी दिशा में भाग गया। जमादार ताकतवर आदमी था, लेकिन उसके लिए एक छलांग में उस दीवार को पार करना नामुमकिन था। जितनी देर में उसने दीवार पर चढ़कर नीचे उतरा, मैं उसकी नज़रों से ओझल हो गया और अपने घर के पीछे वाली गली में बने चबूतरे में घुस गया। जिस टीम के लिए मैं फुटबॉल खेलता था, वो इसी चबूतरे के आसपास रहती थी। जब मैं चबूतरे में घुसा, तो उन लड़कों को समझ आ गया कि कुछ गड़बड़ है। कोई समर का पीछा कर रहा है। वे स्टडी रूम के दरवाजे

के पास खड़े हो गए। मैं उस अलमारी के पीछे छिप गया जहाँ पीरा के कपड़े रखे थे।
बाहर बातचीत चल रही थी। थका हुआ, पसीने से तर जमादार वहाँ खड़ा पूछ रहा था,- "क्या ठाकुर की गर्मी यहाँ आ गई है?"
"नहीं! क्या हुआ?"
वह परीक्षा हॉल से भाग गया!
‘‘का?’’
"क्योंकि जमदग्नि सर ने उसे नकल करते हुए पकड़ लिया था!"
"मैंने यहाँ कुछ नहीं देखा। हम सुबह से यहीं बैठे हैं!"
"अरे वाह! कितनी शानदार गाड़ी है!"
यह कहकर जमादार हाथ जोड़कर लौट गया। पता नहीं परीक्षा हॉल में क्या हंगामा हुआ होगा! काफी देर बाद, बाहर से कुछ लड़के अंदर आए और मुझसे पूछने लगे, "समर, यह भंगड़ क्या है?"
"मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हुआ!" मैंने अपने हाथ में पकड़े कागज़ फाड़ते हुए कहा। "मुझे अब जो करना है वो करने दो! कम से कम सबूत तो नष्ट हो गए!" रात को घर जाना जरूरी था।
लगभग दस बजे, मैं पीछे के बरामदे पर चढ़कर घर में दाखिल हुआ। ऊपर पापा की अदालत भरी हुई थी। वे मेरा मामला चला रहे थे, मुझे आरोपी मान रहे थे। वे सामने बैठे जज को समझाने की कोशिश कर रहे थे कि सबूतों के अभाव में किसी को सज़ा नहीं दी जा सकती - मैंने साफ़-साफ़ अंग्रेज़ी में ये शब्द सुने, "किसी भी दस्तावेजी सबूत के अभाव में मेरे बेटे समर को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।"
मेरी माँ रसोई की दहलीज पर बैठी रो रही थी। मैं धीरे से उनके पास गया और वहीं खड़ा हो गया। अपनी माँ को सामने देखते ही मुझे अपराधबोध हुआ। उस जमादार को इतने लंबे समय तक धोखा देने की खुशी पल भर में गायब हो गई।
उसने मेरी तरफ देखा और कहा, "मुझे लगा था कि तुम कम से कम मुझे एक अच्छा दिन तो दिखाओगे!" मैं अपनी माँ के सामने सिर झुकाए खड़ा था। मैंने जल्दी से झुककर उनके पैर पकड़े और कहा,-
"माँ, मुझे माफ़ कर दो। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा!"
"अरे, अगर तुमने पढ़ाई न की होती तो परीक्षा में बैठ ही न पाते! तुम्हें कितनी शर्मिंदगी सहनी पड़ी होगी? प्रधानाचार्य, प्रोफेसर और कॉलेज के पचपन छात्र वहाँ मौजूद थे। यह सब देखने से बेहतर होता कि तुम अपनी आँखें बंद कर लेते!"
"माँ, मैंने तुमसे कहा था! मैं अब ऐसा दोबारा नहीं करूँगा!"
"और कुछ मत बोलो! जो हुआ वो क्या था? जाओ, उस प्रोफेसर के पैर पकड़ो। प्रधानाचार्य से माफी मांगो!"
"माँ, ये सब बोलना बंद करो और कुछ बोलो!" मेरे अंदर का शाही खून खौल रहा था! उस समय इंटर की परीक्षाएं विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जाती थीं! मेरे पंडाल से भागने की सूचना विश्वविद्यालय को दी गई। मामले की जांच हुई और मुझे दो साल के लिए कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

मैं आठ दिनों तक घर से बाहर नहीं निकला। जब भी मेरी माँ मुझे रात के खाने के लिए बुलाती, मैं नीचे आ जाता था। इस मामले में मुझे हिम्मत मेरे पिताजी ने ही दी! वे मुझसे कहा करते थे,
गर्मी का मौसम! हर कोई ललचा जाता है! तुमने परीक्षा पास करने की पूरी कोशिश की, लेकिन असफल रहे! अब फिर से इसी तरह पढ़ाई करो, दो साल बाद जब तुम परीक्षा दोगे, तो तुम्हें प्रथम श्रेणी में आना चाहिए! यही तुम्हारी इस शर्मिंदगी की भरपाई करने का एकमात्र तरीका है!
"लेकिन पापा, मैं अब और पढ़ना नहीं चाहती!"
"तब तुम्हारी ओर से क्या किया जा रहा है?"
मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ, यहाँ तक कि खेती भी!
"लेकिन मुझे लगता है कि आपको और अधिक सीखना चाहिए!"
उस दोपहर महल से गाड़ियों का काफिला आया। महाराज ने मुझे बुलाया था।
मैं गया। महाराज के दर्शन करने के बाद, मैं एक तरफ खड़ा हो गया। महाराज ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "समर, परसों कॉलेज में क्या हुआ था?" मैं सिर झुकाकर खड़ा हूँ।
"वाह, यह तो बहुत बढ़िया है! लेकिन आप अभ्यास कब से शुरू कर रहे हैं? टूर्नामेंट तो बस एक महीने दूर हैं!"
"महामहिम, मेरी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। हमें यह जिम्मेदारी किसी और को सौंप देनी चाहिए!"
"अरे, तुम्हारा मूड कैसा है? तुम ये करो। अब घर पर मत रहो! यहीं रहो! आज हमारे साथ शिकार पर चलो! तुम खिलाड़ियों के नाम बताओ। हम शिकार से लौटने के बाद उन्हें बुला लेंगे। तुम यहीं रहो और अभ्यास शुरू करो!"
मैं भी घर पर बैठे-बैठे ऊब गया था। जब मैंने उसे बाहर देखा, तो मुझे लगा कि वह उंगली उठाकर बहस करने वाला है। इसलिए, महाराज के सुझाव पर मैंने कुछ दिनों के लिए महल में ही रुकने का फैसला किया।
सत्वशील महाराज स्वयं बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, और न ही उनके आसपास के लोग शिक्षा में रुचि रखते थे। इसलिए परीक्षा के दौरान मैंने जो गड़बड़ की थी, उससे कोई भी खुश नहीं था!
मैंने घर पर अपनी माँ को संदेश भेजा। मैं महाराज के साथ वैम्प नाम के एक शिकारी के साथ रावजीपुर के जंगल में गया था।
वहाँ पठार पर एक तंबू लगाया गया। महाराजा के तंबू के बगल में हमारा पाँच-छह लोगों का तंबू था। खाने-पीने का भरपूर इंतजाम था। अगली सुबह, रणकधे धनगर आए। उन्होंने जंगल में रणनीतिक स्थानों पर तोपें तैनात कर दीं। मैं भी एक बैरल वाली तोप के साथ एक अच्छी काठी पर बैठा था।
दूर से जंगली सूअर ‘हा: ’ चिल्लाते हुए हमारी ओर आ रहे थे। जैसे ही पुकारने वालों ने आवाज़ सुनी, जंगल में मौजूद जंगली मुर्गे और कुस्तर सूखे पत्तों पर इधर-उधर दौड़ने लगे। लेकिन जब हम बड़े शिकार पर जाते हैं, तो हम छोटे जानवरों को मारना नहीं चाहते; इसलिए हमने मुर्गों और कुस्तरों को नज़रअंदाज़ कर दिया और बड़े जानवरों का इंतज़ार करते रहे। इसी बीच, मेरी आवाज़ बड़े जानवरों की आवाज़ से सुनाई देने लगी। मैंने बंदूक रोक दी और

विपक्षी टीम के क्षेत्र में कोई फाउल होता, तो उनमें हनीफ नाम का एक शानदार खिलाड़ी था जो निश्चित रूप से गोल कर देता था। आखिरकार, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, हमारी टीम और रत्नपुर फाइनल में पहुंच गईं। सबकी निगाहें इस बात पर टिकी थीं कि खेल महोत्सव में कौन सी टीम अजेय साबित होगी।
फाइनल का दिन आ गया। सत्वशील महाराज भवानी नगर से आए। वे रत्नपुर के महल में ठहरे हुए थे। उस दिन, सुबह करीब दस बजे, महाराज ने मुझे बुलाया। पिछले मैचों में मैंने रत्नपुर के फुटबॉल प्रेमियों को अपना और अपनी टीम का हुनर तो दिखाया था; लेकिन मैंने अपना असली 'थेवानी' खेल नहीं दिखाया था। मैं फाइनल में इसे दिखाकर सबको चौंका देने वाला था।
सेवक मुझे महाराज सत्वशील के महल में ले गया। अंदर महाराज सत्वशील, राजकुमार अमरेंद्र और राजकुमारी रत्नप्रभा चाय पी रहे थे। छोटे बालों और सौम्य रंगत वाली राजकुमारी ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए राजा सत्वशील से कहा, "मामा, आपने सही कप्तान चुना है!"
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
मैंने आपकी टीम का खेल देखा! वे बहुत अच्छा खेलते हैं!
इस पर राजे सत्वशील ने कहा, "आज का फाइनल मैच देखिए, आपको इसका असली जादू देखने को मिलेगा! मुझे शक है कि गेंद आपके खिलाड़ियों के पैरों को छू भी पाएगी या नहीं! माफ कीजिए अमरेंद्र! मैं अपने ही कप्तान की तारीफ कर रहा हूँ!"
राजकुमार अमरेंद्र मुस्कुराए और बोले, "मुझे हमेशा से पता था कि उसमें एक अच्छे खिलाड़ी के गुण हैं। लेकिन फिर भी, फाइनल में आपकी टीम को कड़ी टक्कर देनी होगी! अरे! ये क्या हो रहा है, आपको तो बस ध्यान से बैठना चाहिए!" राजकुमार ने मुझसे कहा।
राजकुमारी ने अपनी कुर्सी थोड़ी एक तरफ खिसकाई और अपना सिर कंधे पर टिका लिया। लेकिन दादाजी सुमेरसिंह हमेशा कहते थे कि आम लोगों को कभी भी शाही कुर्सी के बगल वाली कुर्सी पर नहीं बैठना चाहिए! मैं उस कुर्सी पर बैठने को तैयार नहीं थी।
जब राजकुमार अमरेंद्र और राजकुमारी राजकुमारी दोनों ने आग्रह किया, तो राजा सत्वशील ने भी कहा, "बैठ जाओ, समर!"
मैं राजकुमारी के बगल वाली कुर्सी पर शालीनता से बैठ गया। नौकरानी मेरे पीछे आई और मेरी चाय का प्याला भर दिया।
"तो आज क्या होने वाला है?" धर्मात्मा राजा ने पूछा।
मैंने बस मुस्कुराते हुए कहा, "राजकुमार की टीम बहुत ताकतवर है! हुजूर खुद पेनल्टी कॉर्नर लेने में माहिर हैं। फिर भी, हम उनके प्रयासों को नाकाम कर देंगे!"
राजकुमारी ने मेरी ओर प्रशंसा भरी निगाहों से देखा और बोली, "रत्नापुर की टीम को आज तक कोई नहीं हरा पाया है। चाचा जी, मान लेते हैं कि आप हार जाएंगे। वरना बाद में आप घबरा जाएंगे!"
"अरे नहीं बेटा! ये तो खेल है! कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता! जीत हो या हार, खेल भावना के साथ स्वीकार करनी होगी!"

राजकुमारी मुस्कुराई और बोली, "आज हम एक असली लड़ाई देखने जा रहे हैं!" राजकुमारी की वाणी और मुस्कान इतनी कोमल थी कि मेरा मन करता था कि मैं उन्हें हर पल निहारती रहूँ; लेकिन वहाँ यह संभव नहीं था। कौन जाने शाही परिवार के आसपास कोई खास आभा होती है! आम लोगों के लिए उनसे आँखें मिलाकर बात करना मुमकिन नहीं था। वह युवा और खूबसूरत थीं!
पूरा महल उनके द्वारा किए गए लंबे-लंबे दिखावे से भर गया था। उनके गोरे हाथों की पतली उंगलियों पर नेल पॉलिश लगी हुई थी। होंठों पर हल्के गुलाबी रंग की लिपस्टिक थी। उनकी असली धनुषाकार भौहों पर पेंसिल इतनी कुशलता से खींची गई थी कि उन्हें पहचानना किसी के लिए भी आसान नहीं था!
"अमरेंद्र, शिकार के बारे में क्या ख्याल है?" राजा सत्वशील ने राजकुमार से पूछा।
"काफी समय से मैं बाहर नहीं निकली थी। पिछले महीने तो बच्चे ने मुझे सिर्फ एक बार ही काटा था!"
"हाँ बेबी?"
"जी! चाचा जी, मेरी एक दोस्त बैंगलोर से आई थी। वह शिकार देखना चाहती थी, इसलिए वह हमें वहाँ ले गई। हम दिन भर घूमते रहे, लेकिन इन लोगों ने हिरण और चीनी को ऐसे गायब कर दिया, पूछो मत!" उसने अमरेंद्र की ओर इशारा करते हुए कहा।
"हमारा काम हो गया, है ना?"
"अगर ऐसा नहीं हुआ तो क्या होगा? गाड़ी तो बस इधर-उधर भागती ही रहेगी! आखिरकार मुझे राइफल से चलती गाड़ी पर गोली चलानी पड़ी!"
"लेकिन आप यह कैसे कह सकते हैं कि उसने मुझे मार डाला?"
"गर्दन पर गोली लगी थी!" राजकुमार ने आंखें चौड़ी करते हुए कहा।
"बहुत बढ़िया! हमारा खेल उत्सव समाप्त होते ही, हम शिकार के लिए एक दिन की योजना बनाएंगे! हमने बहुत दिनों से चिकन नहीं खाया है। अचार वाला चिकन!" मैं उनकी बातचीत सुन रहा था तभी राजा ने कहा, "समर, तुम जा सकती हो, मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं!"
मैं अपने गाँव लौट आया, लेकिन राजकुमारी की वह सादगी भरी और सुंदर छवि अब भी नहीं दिख रही थी! गाँव में भी मुझे उसके शरीर पर छिड़के इत्र की खुशबू आ रही थी। उस समय मैं पच्चीस साल का था। वह उम्र जब हर युवती मुझे सुंदर लगती थी! लेकिन मैंने अब तक लड़कियों के बारे में ज़्यादा नहीं सोचा था। जब मैं मना करता, तो हमारे गाँव के घर के सामने खड़ी भूरे बालों वाली बिंदी बस मुस्कुरा देती! मैं दोपहर के लगभग समय में अपने पिताजी के कपड़े चूल्हे में डालने जाता था, क्योंकि उस समय भूरे बालों वाली बिंदी अपनी पीठ पर कपड़ों का गट्ठा लिए नदी पर कपड़े धोने गई होती थी। बिंदी गोरी थी, सत्रह-अठारह साल की, हल्के भूरे बालों वाली, बहुत आकर्षक। लेकिन हमारा यह परिवार, भवानी नगर में मेरे दादाजी का यह दबदबा! मैंने बिंदी के बारे में कभी सोचा ही नहीं!
आज राजकुमारी रत्नप्रभा को इतने करीब से देखकर मेरा दिमाग चकरा गया! मेरे मन में अनचाहे विचार आने लगे!

मैं कमरे में बिस्तर पर लेट गया। दीवार पर एक कैलेंडर लगा था। उस पर एक युवती की तस्वीर थी जो सिर पर पानी का घड़ा लिए खड़ी थी! उसके सिर पर रखे घड़े से पानी उसकी छाती पर गिर रहा था, जिससे उसकी पतली, फटी हुई सफेद साड़ी में से उसके स्तनों की गोलाई साफ दिखाई दे रही थी। मुझे उस तस्वीर में एक राजकुमारी नजर आने लगी। अरे! तुम कितने मूर्ख हो! तुम्हारी बुद्धि कितनी कमजोर है!... बिंदी तो एक गरीब लड़की है, इसलिए तुम उसके बारे में ज्यादा नहीं सोच सकते!... ये रही राजकुमारी! एक तुमसे बहुत नीची; और एक बहुत ऊँची... अगर तुम बस उन्हें देखते रहोगे तो तुम्हारी गर्दन टूट जाएगी! तो फिर मैं किस लड़की के बारे में सोचूँ! तुम्हारे बराबर! तुम्हारे परिवार, तुम्हारी संस्कृति जैसी! लेकिन मुझे कभी ऐसी कोई मिलेगी कब? मिलेगी! एक मिनट रुको! तुम अभी अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पाए हो! परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने के कारण तुम्हें दो साल के लिए कॉलेज से निकाल दिया गया है। बी. ए. हाँ। कोई नौकरी कर लो; सब अपने आप ठीक हो जाएगा! हम शादी कर सकते हैं!... परसों मेरी माँ कह रही थीं, बारामती के ईश्वर सिंह की बेटी बहुत सुंदर है। वह पुणे के एक कॉलेज में पढ़ती है! लेकिन क्या वह राजकुमारी जैसी सुंदर होगी?... हे भगवान! मैंने उसके जैसी सुंदर स्त्री कभी नहीं देखी!...
"अरे समर, तुम लेटे क्यों हो? उठो, लगभग तीन बज गए हैं। फाइनल चार बजे शुरू होगा!" अगर हमारी टीम के सुब्या सरनोबत ने मुझे न बुलाया होता, तो मैं न जाने कितनी देर तक वहीं लेटा रहता! मैं उठा और कपड़े पहनने लगा। लेकिन मेरा ध्यान कहीं और था। राजकुमारी रत्नप्रभा, जो सुगंधित घेरे में घूम रही थीं, मेरी आँखों के सामने स्थिर थीं।
- ०-०-०-

३
हर शहर की अपनी अलग खासियत होती है! अगर आप किसी खेल का नाम लें, तो पूरा शहर इकट्ठा हो जाता है। अगर आप कुश्ती का नाम लें, तो कोल्हापुर के लोग जोश से भर उठते हैं। अगर आप क्रिकेट का नाम लें, तो मुंबई में बच्चे से लेकर बड़े तक, सभी को इसमें दिलचस्पी हो जाती है! रत्नपुर में फुटबॉल को लेकर भी उतनी ही दीवानगी है!
स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था। रत्नापुर और भवानी नगर की दो टीमों के बीच फाइनल मैच होना था! न केवल भवानी नगर के महाराज मैच देखने आए थे, बल्कि दो से तीन सौ लोग ट्रकों में भरकर भवानी नगर से आए थे।
ठीक चार बजे दोनों टीमें मैदान में उतरीं। मैं महाराज सत्वशील के पास गया और उन्हें प्रणाम करके उनका आशीर्वाद मांगा। राजकुमारी उनके बगल में बैठी थीं। उन्होंने मेरी ओर देखा और फिर से मधुर मुस्कान दी। उनके होंठ हिले। मैं उनके शब्द नहीं सुन सका; क्योंकि उन्होंने जानबूझकर उन्हें धीरे से बोला होगा। दूसरी ओर, रत्नपुर की महारानी और महाराज मैच देख रहे थे। राजकुमारी के होंठों की हरकत से मैं समझ गया कि उन्होंने 'शुभकामनाएं' कहा होगा। चूंकि उनके भाई भी रत्नपुर टीम के कप्तान थे, इसलिए उन्होंने उन शब्दों को ज़ोर से बोलना उचित नहीं समझा होगा!
अंपायर ने ठीक चार बजे सीटी बजाकर मैच शुरू किया। मैच शुरू होने से पहले राजकुमार अमरेंद्र ने मुझसे कहा, "समर, तुम्हें शुभकामनाएं।"
"आपको भी, महाराज!" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।
बीच में रखी गेंद को राजकुमार ने काफी ऊपर उछाला। उसने तुरंत गेंद को हमारी तरफ खींच लिया। मुझे पता था कि उन लोगों में अच्छा तालमेल है; लेकिन फिर भी मुझे यह अंदाजा नहीं था कि वे शुरू से ही इतना आक्रामक रुख अपनाएंगे। मैं भी गेंद के पीछे भागा और जब मैंने अपने गोल से बीस फीट दूर, जो विपक्षी टीम के गोल के बिल्कुल पास था, गेंद पर कब्जा कर लिया, तो मैंने किसी को भी गेंद छूने नहीं दी। मैं गोल करने ही वाला था कि रेफरी ने सीटी बजाकर फाउल दे दिया। मुझे समझ नहीं आया कि उसने फाउल क्यों दिया। मैंने न तो किसी खिलाड़ी के पैर पर कदम रखा था और न ही कोई नियम तोड़ा था। फिर उस अहम मौके पर जब मैं गोल करने ही वाला था, मुझे समझ नहीं आया कि रेफरी ने फाउल क्यों दिया; लेकिन मैंने सोचा, शायद रेफरी से कोई गलती हो गई हो। गेंद फिर हमारी तरफ फेंकी गई। मैंने फिर से उस पर नियंत्रण हासिल किया और उसे विपक्षी गोल की तरफ ले गया। गोल करने ही वाला था कि रेफरी ने फिर से मेरे खिलाफ फाउल का ऐलान कर दिया। इस बार मुझे शक हुआ कि हमारे साथ कुछ गड़बड़ हो रही है। तीसरी बार भी वही हुआ, लेकिन इस बार मैं अपना गुस्सा काबू नहीं कर पाया। मुझे पूरा यकीन था कि रेफरी ने जानबूझकर फाउल किया है ताकि गोल करने से ठीक पहले मुझसे गेंद छीन ली जाए। मैं रेफरी की तरफ दौड़ा और उसे इतनी जोर से घूंसा मारा कि वह जमीन पर गिर पड़ा!
पूरा स्टेडियम शोर मचाते हुए खड़ा हो गया। रत्नपुर से कुछ लोग मुझे पीटने के लिए मैदान में घुसने लगे; लेकिन ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों ने

उन्हें रोक दिया। राजकुमार अमरेंद्र ने मेरी लाठी पकड़ी और महाराजा के सामने लाकर कहा, “पिताजी, इसे वापस जाने दीजिए! लोग बहुत गुस्से में हैं। जब तक वे इसे पीट नहीं देते, तब तक वे नहीं रुकेंगे!”
उस समय, रत्नपुर के महाराजा, जिनके मुँह में पाइप था, ने शांत भाव से कहा, "अमरेंद्र को छोड़ दो। उसने कुछ भी गलत नहीं किया! वह अंपायर मूर्ख था! जॉन को बुलाओ!"
जॉन दक्षिणी रेलवे टीम के सेवानिवृत्त कप्तान हैं। वे टेंट के पीछे बैठकर मैच देख रहे थे। वे मैदान में आए। मैच फिर से शुरू हुआ। पहले आधे घंटे में मैंने लगातार नौ गोल किए। उनमें से केवल एक गोल खाया। खेल समाप्त होने की सीटी बजी। और मेरी टीम हमारे महाराज का अभिवादन करने दौड़ी, उसी समय रत्नपुर के महाराज उठे और मुझसे बोले,-
“शाबाश समर! महाराज, आपको बधाई हो!” रत्नपुर के महाराज ने भवानीनगर के महाराज की ओर मुड़ते हुए कहा। राजकुमारी ने मुझे देखकर एक बार फिर मुस्कुरा दिया।
मैंने पिछले दस वर्षों की परंपरा तोड़ दी थी। मैंने यह बिल्कुल गलत अनुमान लगाया था कि रेफरी को घूंसा मारने पर रत्नपुर के महाराजा मुझसे नाराज होंगे और मुझे अनुशासनहीनता के लिए दंडित करेंगे।
रात में रत्नपुर के महल में एक भव्य भोज था। मैं भवानीनगर के महाराजा के पास खड़ा था, तभी रत्नपुर के महाराजा हमारे पास आए और बोले, "समर! मेरा तुमसे एक निवेदन है!"
"महाराज, आप किस प्रकार का अनुरोध कर रहे हैं? आपको आज्ञा माननी होगी!" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।
"मैंने आपके जैसा फुटबॉल खिलाड़ी कभी नहीं देखा!" हमारे लड़के टीमवर्क और पासिंग में तो माहिर हैं, लेकिन वे आपके कौशल की बराबरी नहीं कर पाएंगे। अगर आप कुछ दिन यहाँ रुककर हमारे लड़कों का मार्गदर्शन करें तो बहुत अच्छा होगा!" उन्होंने हमारे महाराज की ओर देखा।
हमारे महाराज ने कहा, "यह एक महान खिलाड़ी है; लेकिन क्या आप देखते हैं कि यह कितना गुस्सैल है?"
"अरे! छोड़ो भी! हमारा अंपायर बिल्कुल बेकार था। अगर उसने उस समय उसे मुक्का न मारा होता, तो मैं माइक पर जाकर ऐलान कर देती कि उसके फैसले गलत थे! क्या खेल भावना जैसी कोई चीज़ होती है? वो अंपायर गलत था! समर, तुमने उसे कड़ी टक्कर दी!"
मैंने सोचा था कि रत्नपुर के महाराजा चुप रहे होंगे, क्योंकि वे कोई तमाशा नहीं चाहते थे, क्योंकि गाँवों के राजकुमार मैच देखने के लिए इकट्ठा हुए थे। वे शाम को इस पर नाराज़ होंगे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत, उन्होंने मुझसे अपनी टीम के कोच के रूप में कुछ दिनों के लिए रत्नपुर में रहने का अनुरोध किया, और मुझे भी एहसास हुआ कि महाराजा जातिवादी खिलाड़ी थे। उस रात कितनी स्कॉच की बोतलें खाली हुईं, इसका मैं हिसाब नहीं लगा सकता।

अगले दिन, मेहमान सुबह जल्दी ही जाने लगे। रत्नपुर के महाराजा के विशेष आग्रह पर, मुझे फुटबॉल कोच के रूप में कुछ दिनों के लिए रत्नपुर में रुकना पड़ा। सत्वशील महाराजा को गर्व हुआ कि रत्नपुर के महाराजा ने मुझे अपने यहाँ रखा। मैं यहाँ केवल दो-तीन महीने ही रुकने वाला था, इसलिए कुछ खास गड़बड़ नहीं होने वाली थी। इसके अलावा, मुझे इस बात का भी सम्मान महसूस हुआ कि खेल के मैदान में मेरी गलती के बावजूद रत्नपुर के महाराजा ने मुझे अपने यहाँ रखा। मेरा सामान वैन से महल तक पहुँचाया गया। मेरा शाही मेहमान की तरह स्वागत किया गया। इतना ही नहीं, दिमती में दो कमरे थे! किसी चीज की कमी नहीं थी। स्वादिष्ट भोजन भी उपलब्ध था!
जब मैंने शिविर छोड़ा, तो मैं अपने साथ एक कैलेंडर ले गई जिस पर एक छोटी लड़की पानी के फव्वारे की ओर जाते हुए दिखाई दे रही थी। मैंने उसे महल में अपने कमरे में टांग दिया। जब मैंने उस कैलेंडर को देखा, तो मुझे राजकुमारी की याद आ गई!
हर सुबह और शाम, मैं रत्नपुर महल की टीम को फुटबॉल खेलना सिखाने लगा। वह टीम बहुत अच्छी थी; लेकिन उन्हें मेरी खास कला का पता नहीं था - एक खिलाड़ी के साथ गेंद को छोड़े बिना विपक्षी टीम के खिलाफ गोल करना। राजकुमार अमरेंद्र नियमित रूप से अभ्यास में आते थे। राजकुमारियाँ भी कभी-कभी सामाजिक मेलजोल करती थीं, लेकिन उस समय कम से कम महाराज या राजकुमार तो मौजूद रहते थे! दोनों को ही कहीं जाकर राजकुमारी से दिल खोलकर बात करने की इच्छा होती थी। रात के खाने के दौरान खूब बातें होती थीं; लेकिन राजकुमारी उसमें ज्यादा हिस्सा नहीं लेती थीं। वह दिन-ब-दिन बेचैन होती जा रही थीं। उस शाम महाराज ने उनसे कहा, "क्या हुआ है रत्ना?"
‘‘नथिंग डॅडी!’’
"तुम हंस रहे हो। अमरेंद्र, क्या तुम्हें नहीं लगता कि अब तुम अनुचित व्यवहार कर रहे हो?"
राजकुमार ने कहा, "मैंने उससे इस बारे में दो-तीन बार पूछा भी था!"
"हम ऐसा करेंगे!"
"कैसे?"
‘‘लेट अस गो टु बॉम्बे फॉर ए चेंज!’’
"हा! फिर वे अपने दोस्तों से मिल सकते हैं!"
इसके अलावा, मुझे मुंबई में भी बहुत काम करना है!
राजकुमारी नीचे देखते हुए खाना खा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसका ध्यान खाने पर नहीं था। मुझे लगा जैसे उसे मुंबई जाने के प्रस्ताव में कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। मैं राजकुमारी से दोस्ताना लहजे में बात नहीं कर पा रहा था। मैं अपने माता-पिता की बातें शांति से सुनता था।
जब बटलर पुडिंग के कटोरे मेज पर ले आया, तो महाराज ने मुझसे कहा,
समर, मैंने कल हमारी टीम का मैच देखा। तुमने बहुत अच्छी तैयारी की है! तुम्हारी टीम को देखकर लगता है कि वह सफल होगी!
"हे प्रभु! यदि मेरी टीम आपकी टीम से हार भी जाए, तो भी मैं इसे अपना गौरव मानूंगा! शिष्य द्वारा गुरु को पराजित करना गुरु को धन्य बनाता है!"

बस इतना ही! इसके लिए आपको कितना भुगतान चाहिए?
"मैं यहां मानदेय की उम्मीद में नहीं रुका था, महोदय!"
"लेकिन क्या आपको कम से कम अपने श्रम के लिए उचित भुगतान नहीं मिलना चाहिए?"
"ऐसा प्रतीत होता है मानो मैंने आप दोनों, राजकुमार और राजकुमारी की कृपा प्राप्त करके सब कुछ पा लिया हो, महाराज!"
जब हम बातें कर रहे थे, राजकुमारी उठ खड़ी हुई, आधा हलवा वहीं छोड़कर, और बोली,
"पापा, माफ कीजिए, मुझे बहुत तेज सिरदर्द हो रहा है!"
"अरे! तुम्हें अचानक चक्कर क्यों आने लगे?"
मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा! मैं जा रहा हूँ!
राजकुमारी अपने कमरे की ओर चली गई।
महाराज ने राजकुमार की ओर देखकर कहा, "उसमें कुछ गड़बड़ है!"
"अब तो सच में ऐसा लग रहा है! हम कल सुबह निकलेंगे, पापा!"
‘‘अरे, कौन! समरला पहुँचते ही भवानीनगर छोड़ देते हैं!” महाराज ने कहा। मैंने उन दोनों को अलविदा कहा और अपने कमरे में आ गया। मुझे भी बेचैनी होने लगी। राजकुमारी को क्या हुआ होगा? अचानक उसके सिर में दर्द क्यों होने लगा? क्या मेरे जाने की वजह से उसे ऐसा महसूस हो रहा है?... लेकिन तुम ये अनुमान कैसे लगा सकते हो? क्या तुमने कभी उससे बात की है?... ऐसी बातों पर यकीन करने का क्या फायदा जो हैं ही नहीं?...
मैंने कैलेंडर देखा और युवती की जगह राजकुमारी की तस्वीर देखी। हालाँकि मैंने रत्नापुरा का ज़िक्र नहीं किया था, फिर भी मुझे उससे लगाव होने लगा था। महाराज और राजकुमार दोनों ने मेरा खुले दिल से स्वागत किया। रत्नापुरा को अलविदा कहते हुए मुझे सचमुच दुख हुआ। मैं बहुत देर से उठी। सुबह छह बजे महाराज, राजकुमार और राजकुमार के साथ जाना था, इसलिए मुझे जल्दी उठना पड़ा। लेकिन आधी रात तक उनसे मेरी मुलाकात नहीं हुई!
जब मैं अधनी नींद में थी, तभी मुझे महसूस हुआ कि किसी ने मेरे ऊपर कंबल खींच लिया है। मैंने अपनी आँखें खोलीं। खिड़की से आती चाँदनी में मैंने राजकुमारी को देखा। एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे मेरे पूरे शरीर में बिजली दौड़ गई हो। उसने मेरे ऊपर से कंबल खींचा और उसे एक तरफ फेंक दिया, और कोमल स्वर में बोली,-
"गर्मी, उठो, तैयार हो जाओ और मेरे साथ आओ!"
"कहाँ!"
"तुम्हें सुबह होने से पहले यहाँ से निकल जाना होगा!"
"लेकिन क्यों?"
"मेरे पास यह बताने का समय भी नहीं है कि क्यों। उठो। उठो!"
मैंने अपनी पैंट और कमीज पहन ली। वह खिड़की से चांद को देखती हुई वहीं खड़ी थी।
"लेकिन तुम्हें कल सुबह मेरे साथ कार में चलना था, है ना?"

"तुम पागल हो! यह सब एक नाटक था। तुमने हमारी टीम को हराया, और पापा तुमसे बदला लेना चाहते थे!"
"आपका क्या मतलब है?"
"वे आपको अपने भरोसे में लेकर धोखा देना चाहते थे!"
"लेकिन-" डर के मारे मेरे मुंह से ये शब्द नहीं निकल पाए।
"क्या आपने भवानी नगर को पत्र भेजकर बताया कि आप यहां खुश हैं?"
"हां, मैंने दो महीनों में अपनी मां और दोस्तों को छह या सात पत्र भेजे!" "पापा यही तो चाहते थे। वो चाहते थे कि तुम्हें लगे कि तुम यहाँ खूब मजे कर रहे हो! चलो, मेरे पीछे आओ!"
मैं अंधेरे में राजकुमारी के पीछे-पीछे गया। मेरे हाथ-पैर सुन्न पड़ गए थे। मेरा गला सूख गया था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि महाराजा इतने शातिर होंगे। उनका व्यवहार पहले कभी ऐसा नहीं था। लेकिन मेरे जैसे खिलाड़ी के लिए यह कल्पना करना नामुमकिन था कि रत्नपुर के महाराजा, जो इतने वर्षों तक इंग्लैंड में रहे थे, अंग्रेजी राजनीति को इस हद तक आत्मसात कर लेंगे। महल की तीसरी मंजिल पर, सामने की ओर, राजकुमारी का कक्ष था। उस कक्ष में दो दासियाँ खड़ी थीं। उनमें से एक के पास एक बड़ी रस्सी थी। मुझे लगा कि राजकुमारी इसे नीचे उतरने में मदद के लिए लाई होंगी। लेकिन ऐसा नहीं था। वह इसे महाराजा को गुमराह करने के लिए लाई थीं। राजकुमारी ने एक दासी से कहा, "जाओ और रस्सी का एक सिरा खिड़की के पर्दे से बाँध दो और धीरे-धीरे दूसरा सिरा नीचे लटका दो! पहले नीचे वाली रस्सी पकड़ो!"
जब नौकरानी रस्सी लेकर चली गई, तो राजकुमारी ने मेरी तरफ देखकर कहा,
"क्या आप साड़ी पहन सकती हैं?"
"साड़ी?" मैंने सिर हिलाकर कहा, "नहीं!"
उसी क्षण राजकुमारी ने एक दूसरी दासी को इशारा किया कि वह मुझे साड़ी पहनाए। राजकुमारी की आँखों में एक अजीब सी चमक थी।
जैसे ही नौकरानी ने मेरी कमर पर साड़ी लपेटी, उसने कहा, "इन दोनों का काम सुबह चार बजे खत्म हो जाएगा। ये महल के मुख्य द्वार से निकलेंगी! तुम्हें भी इनके साथ जाना चाहिए! लेकिन ध्यान रखना कि तुम्हारे सिर पर पड़ा घूंघट न गिर जाए; नहीं तो मैं भी तुम्हारे साथ सौ साल की हो जाऊंगी! और हां, यहां से जाने के बाद किसी को भी यह पता नहीं चलना चाहिए कि मैंने तुम्हारी रिहाई के लिए यह चमत्कार किया! तुम्हारे माता-पिता को भी नहीं!"
"नहीं, नहीं, राजकुमारी, मैं इस बारे में किसी को भी जरा सी भी बात नहीं बताऊंगा!"
"महल के बाहर आओ, मेरी दासी का भाई यहाँ है, वह तुम्हें स्टेशन का रास्ता दिखाएगा। स्टेशन यहाँ से साढ़े तीन मील दूर है। ट्रेन ठीक पाँच बजे स्टेशन पहुँचती है। एक बार स्टेशन पहुँच जाने के बाद, कोई भी तुम्हें पकड़ने की हिम्मत नहीं करेगा। स्टेशन को ब्रिटिश भारत की सीमा माना जाता है! जाओ, शुभकामनाएँ!"

जब मैं राजकुमारी के पैर पकड़ने के लिए झुका, तो उसने थोड़ी नाराज़गी से कहा, "क्या तुम भूल गए कि मैंने तुमसे क्या कहा था? मुझे अपने पैरों को छूना पसंद नहीं है!"
राजकुमारी ने मेरे हाथ में एक बटुआ थमा दिया।
"ये क्या है, नन्हे राजा!"
"पैसे! तुम्हारे पास भवानी नगर तक पहुँचने के लिए ही पैसे हैं!"
मेरी आँखें भावनाओं से भर उठीं। राजकुमारियाँ देवदूतों की तरह मेरी मदद के लिए दौड़ पड़ी थीं। प्राचीर पर तैनात पहरेदार ने हमें देखा और दरवाजा खोल दिया। जैसे ही हम दरवाजे से बाहर निकले, उसने दरवाजा बंद कर दिया। मैंने राहत की साँस ली।
बाहर अभी भी अंधेरा था। मेरे साथ आई नौकरानी ने मुझसे पहली बार बात की। "एक महीना हो गया, अक्का साहब बेचैन थे!"
‘‘का?’’
उन्हें पहले से ही आभास था कि महाराज तुम्हें इसी तरह मार डालेंगे! "लेकिन खाना खाते समय वह किसी से ज्यादा बात नहीं कर रही थी!"
इसी बीच, मोर्चे से एक युवक आया। नौकरानी ने उससे कहा, "अरे बदमाश, इसे थाने ले चलो! खुद मत जाओ; कोई देख लेगा!" मैंने नौकरानी को धन्यवाद दिया और कहा, "अपने चाचा को मेरा नमस्कार कहना!"
मैं तुमसे कहता हूँ! लेकिन अब तुम जाओ।
अंधेरे में मैं उस युवक का चेहरा भी नहीं देख पा रही थी। साढ़े तीन या साढ़े चार बज रहे थे। आसमान तारों से भरा था। हवा में हल्की ठंडक थी। रत्नपुर से बाहर निकलने तक मुझे पता ही नहीं चला कि वह युवक मुझे किस दिशा में ले गया है। सड़क पर पहुँचकर मैंने अपनी पैंट पर लिपटी साड़ी उतारकर उस युवक को दे दी और कहा, "आप लोग बहुत दयालु हैं!"
उन्होंने कुछ नहीं कहा। मुझे लगा जैसे मैं उनसे जीवन में फिर कभी नहीं मिल पाऊँगी!
मैंने उसके दिखाए रास्ते पर दौड़कर स्टेशन तक का सफर तय किया। दौड़ने के अभ्यास के कारण स्टेशन तक पहुंचना मेरे लिए ज्यादा मुश्किल नहीं था।
मैं लगभग 4:45 बजे स्टेशन पहुंचा। ज्यादा भीड़ नहीं थी। फिर भी, मैंने रोशनी से दूर रहने का ध्यान रखा। मैं टिकट काउंटर पर गया और "वन मिराज" का टिकट मांगा।
मैंने टिकट खरीदा। मैं प्लेटफार्म के उस अंधेरे कोने में पहुंचा और रत्नपुर की ओर पीछे मुड़कर देखा। बिजली की बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। महल पर लगा लाल दीपक मंगल ग्रह जैसा लग रहा था। राजपरिवार के लोग जब अपने महल में रहते हैं तो इस तरह का लाल दीपक जलाते हैं; लेकिन उस समय मैंने सोचा, "यह लाल दीपक आम लोगों के लिए एक चेतावनी है कि वे इन क्रूर और षड्यंत्रकारी लोगों से सावधान रहें!"
ठीक पाँच बजे ट्रेन आई और पटरियों पर तेज़ रोशनी बिखेर दी। मैंने चारों ओर देखा और एक डिब्बे में घुस गया। दो-तीन मिनट बाद इंजन ने सीटी बजाई। ट्रेन चलने लगी। मैंने राहत की साँस ली।

मैं एक कोने में आँखें बंद करके बैठी थी। कुछ पल पहले मैं कहाँ थी? मुझे नहीं पता था कि अगर मैं वहाँ से नहीं निकलती तो मुझ पर किस तरह की मुसीबत आ पड़ती। मैं राजकुमारी की कृतज्ञता का बोझ ढो रही थी। मैंने अब यह रहस्य सुलझा लिया था कि जब से मैं महल में रहने आई थी, वह इतनी असहाय क्यों दिखती थी; लेकिन अब जब मैं वहाँ से भाग निकली थी, तो मैं सोच भी नहीं सकती थी कि आगे क्या होगा। चूंकि राजकुमारी ने मुझे भागने में मदद की थी, मैं मन ही मन प्रार्थना कर रही थी, 'उन्हें कोई परेशानी न हो...'
भवानी नगर पहुँचने के बाद मेरा महल जाने का मन नहीं हुआ। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि सभी राजा-रानी धोखेबाज़ होते हैं। मेरे मन में एक अस्पष्ट शंका अभी भी बनी हुई थी। क्या रत्नपुर के महाराजा ने सचमुच मेरी जान को खतरा पहुँचाने की साजिश रची थी?
मुझे इस सवाल का जवाब भवानी नगर पहुंचते ही मिल गया।
मेरे जाने से चार दिन पहले रत्नपुर के महाराजा ने सात्वशील राजा को एक पत्र भेजा था, जिसमें उन्होंने लिखा था, "समर एक-दो दिन में यहाँ से लौट रहा है। उसने हमारी टीम को फुटबॉल खेलना बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से सिखाया है। उसे यहाँ रहने देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" उस पत्र का मतलब यह था कि दो दिन बाद मैं कोई गलती करूँगा और अगर कोई पूछताछ के लिए रत्नपुर आएगा, तो मैं उनसे कहूँगा, "समर यहाँ से लौट आया है। हमने उसे पहले ही सूचित कर दिया था कि वह जा रहा है।"
जैसे ही मैंने अपना सिर माँ के चरणों में रखा, मुझे ब्रह्मांड की याद आ गई। अनजाने में ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं ऊपर गई और पापा से मिली। आश्चर्य की बात यह थी कि पापा ने कुछ दिनों से शराब पीना छोड़ दिया था। वे कभी-कभार ही पीते थे।
हाथ में पकड़ी 'साक्ष्य अधिनियम' की किताब को एक तरफ रखते हुए उन्होंने कहा, “शाबाश समर! तुमने अपनी भवानी नगर टीम को चैंपियनशिप दिलाई है। उन लोगों ने तुम्हें अपना 'कोच' नियुक्त किया है, जो तुम्हारे लिए और हमारे महाराज के लिए बहुत बड़ा सम्मान है!”
पिताजी, मैंने ये बात कही थी कि रत्नपुर के राजा का मुझे कैद रखने का बुरा इरादा था और मैं राजकुमारी की कृपा से ही बच पाई। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। राजकुमारी ने मुझे चेतावनी दी थी कि तुम्हारे माता-पिता को भी पता नहीं चलना चाहिए कि मैंने भागने की कोशिश की थी!
हालाँकि मुझे राजपरिवार से गहरी नफ़रत थी, फिर भी मुझे राजा सत्वशील से मिलना ही था। मैं नहीं चाहता था कि राजा को पता चले कि समर लौट आया है और मुझसे मिलने क्यों नहीं आ रहा है। उस समय महाराजा महल के सामने खड़े होकर पेगू नस्ल के मुर्गों की लड़ाई देख रहे थे। दोनों मुर्गों के सिर खून से लथपथ थे। फिर भी, दोनों पक्षी अपनी लाल-पीली आँखों को उंगलियों की तरह झपकाते हुए एक-दूसरे को नोंच रहे थे। वे हवा में हल्के से उड़ रहे थे और अपने नुकीले नाखूनों से एक-दूसरे की आँखें नोंचने की कोशिश कर रहे थे। गर्दन के पास के पंख खून से लाल और गहरे लाल हो गए थे। दो निर्दोष जानवरों को उकसाने और उन्हें आपस में लड़वाने का यह जुनून अमानवीय था। लेकिन वहाँ

मौजूद किसी के मन में यह विचार नहीं आया। अंत में, एक मुर्गा कीड़े के काटने से ज़मीन पर गिर गया। दूसरा विजेता अपनी छतरी पर खड़ा हो गया और अपनी चोंच से उसकी आँखें नोंचने लगा। महाराजा के एक सेवक ने विजयी मुर्गे को उठाया और उसे आगे ले आया। महाराजा ने उसके पीठ पर हाथ फेरा और कहा,- "शाबाश, बहादुर आदमी! इसके मालिक को पांच सौ रुपये का इनाम!"
लाल कमरबंद पहने और कभी कुश्ती लड़ चुके लंबे कद के शेम, जो कभी पहलवान रह चुके थे, अपनी टोपी लहराते हुए आगे आए और राजा को प्रणाम किया।
"शिरपा, अगली बार तुम्हारा मुर्गा हमारे महल के मुर्गे से लड़ेगा! अच्छी तैयारी करो! अगर हम हार गए, तो तुम्हें एक हजार का इनाम मिलेगा!"
शिरपा ने शेम के गले में टोपी डाल दी और शेम ने विनम्रता से कहा, "महाराज, मैं और मेरा मुर्गा अपने भोजन पर जीते हैं, मैं आपको अपने मुर्गे से लड़ने नहीं दूंगा!" शिरपा के शब्द मुझे बहुत मार्मिक लगे। मैंने हाल ही में उस विपत्ति का अनुभव किया था जो आम लोगों पर तब आती है जब राजा जनता से प्रतिस्पर्धा करते हैं।
जब महाराज महल के लिए रवाना हुए, तो मैं आगे बढ़ा और उनका अभिवादन किया। उन्होंने एक पल के लिए मेरी ओर देखा और कहा, "तुम कब आए?"
‘‘काल!’’
"हमें लगा था कि आप रत्नापुरा में स्थायी रूप से रह रहे हैं! लेकिन महाराज का एक पत्र आया था जिसमें आपको परसों आने के लिए कहा गया था! ऐसा लगा जैसे आपके घर भी कोई संदेश भेजा गया हो!"
"मैं समझता हूँ!"
"अब हमें हॉकी टीम बनानी होगी! हम जनवरी में दिल्ली में मैच खेलना चाहते हैं!"
"महाराज, मेरे लिए अभी खेलना असंभव है!"
‘‘का?’’
"मुझे एक नौकरी की जरूरत है!"
"क्या आपको लगता है कि मैं आपको नौकरी देने में असमर्थ हूँ?"
"ऐसा नहीं है, महाराज!"
"तो फिर कैसे?"
"मैं नौकरी के लिए विदेश जाना चाहता हूँ। उस नकल मामले के बाद से..."
"वो कॉपी-पेस्ट वाली चीज़ तो बहुत परेशान करने वाली है! लोग तो इसके बारे में भूल ही गए हैं!"
लेकिन मैं भूल नहीं सकता, महाराज!
"तुम ऐसा करो, महल में ही रहो! गांव में इधर-उधर मत भटको!"
मेरे शरीर में एक चुभन सी पैदा हो गई। मैंने महल में एक दिन भी न रुकने का फैसला कर लिया था। मैंने कहा, "मैं इस बारे में सोचूंगा," और उस दिन के लिए खुद को बचा लिया। लेकिन जब महाराजा ने मुझे दोबारा बुलाया, तो मैंने चार दिन तक यह सोचने में बिताए कि कैसे मना करूं। पांचवें दिन मुझे खबर मिली: "भवानी नगर में सेना भर्ती केंद्र खुल गया है! योग्य, शिक्षित युवाओं को सेना में कमीशन दिया जाएगा!"

मैंने वह कागज पापा को दिखाया और कहा, "मुझे लगता है कि भवानी नगर को सम्मान के साथ छोड़ने का यही एकमात्र तरीका है।"
"ईश्वर आपका भला करे! समर, मैं आपका समर्थन करता हूँ! आखिरकार, हम स्वभाव से योद्धा हैं! युद्ध हमारा क्षेत्र है! अब जब मौका आ गया है, तो इसे बर्बाद मत करो!"
मैंने आयोग के लिए आवेदन किया। जब पुलिस मेरे व्यवहार के बारे में पूछताछ करने आई, तो उन्होंने मेरे नकल के मामले का ज़िक्र किया। उन्होंने बताया कि मुझे कॉलेज से निकाल दिया गया था। वे मुझे साक्षात्कार के लिए भी नहीं बुला सके। जब मैंने पिताजी को इस समस्या के बारे में बताया, तो वे बस हंस दिए।
मैं उन्हें देखता रहा। वे शांति से अपनी कुर्सी से उठे, अपना काला कोट पहना और मुझसे बोले, "तैयार हो जाओ, हम जा रहे हैं!"
"कहाँ?"
"बेलगाम के लिए!"
"आप वहां क्या करेंगे?"
‘‘तू चल तर खरा!’’
मैंने भी अपने कपड़े बदले और पापा के साथ बेलगाम चली गई। वहाँ पापा मुझे एक श्वेत सेना अधिकारी के घर ले गए।
पिताजी ने सबसे पहले उस सज्जन से अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं भवानीनगर के महाराजा का पूर्व कानूनी सलाहकार हूँ! मैं अपने बेटे समर के लिए आपको थोड़ी परेशानी देने आया हूँ!"
पिताजी ने मेरी ओर इशारा करते हुए उससे कहा। पिताजी का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली नहीं था। लेकिन उनकी अंग्रेजी बोलने की शैली ऐसी थी कि जातिवादी अंग्रेज के पास यह कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, "कृपया अंदर आइए, महोदय, आप जैसे गणमान्य व्यक्ति का स्वागत करना हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात है!"
पिताजी ने हमारे दादाजी से लेकर उस सज्जन तक का हमारा इतिहास धाराप्रवाह अंग्रेजी में सुनाया। राजक्षत्रियों के जुझारू जज्बे का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा, "हम जन्म से सैनिक होते हैं, लेकिन सामाजिक ढांचा मूल रूप से बदल गया है और हमें दूसरे पेशों को अपनाना पड़ता है, जैसे कि मैंने जो पेशा चुना है!"
पिताजी ने साहब को अपने संरक्षण में ले लिया और फिर धीरे-धीरे मेरी नकल का मुद्दा उठाया, यहाँ तक कि उसे खूब खरी-खोटी भी सुनाई! पिताजी ने कहा, "उस साल मैं बीमार था, घर पर मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। उसे खेती से लेकर व्यापार तक सब कुछ संभालना पड़ा। वह कह रहा था कि वह परीक्षा भी पास नहीं कर सकता; लेकिन उसके प्रधानाचार्य घर आए और बोले, "तुम हमारे कॉलेज के खिलाड़ी हो! तुम परीक्षा दो, इसे पास कराना हमारी ज़िम्मेदारी है!"
"वह उन्हें डराने के लिए बैठ गया। लेकिन वह कुछ लिख नहीं सका, इसलिए वह सीधे पोडियम से उठ गया। प्रोफेसरों ने उसे जगाया क्योंकि उन्होंने उसे नकल करते हुए पकड़ लिया था! लेकिन महोदय, उनके पास लिखित सबूत की एक भी

पंक्ति नहीं है! अब यह मामला विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र में था, इसलिए मैंने उसे चुनौती नहीं दी। सच कहूँ तो, मैं वास्तव में इस मामले को अदालत में ले जाना चाहता था। लेकिन मैंने सोचा, क्यों परेशान हो रहे हो? मामला बहुत मामूली था! वैसे भी, हम कहाँ से पढ़ाई करके प्रोफेसर बनेंगे? अगर पुलिस विभाग में नहीं तो सेना में ही चले जाएँगे!"
‘‘यू आर परफेक्टली राइट! नाउ आय कॉट द पॉइंट!’’
ये साहब थे! वो पापा के वहाँ जाने का मकसद समझ गए थे। पापा ने जाते हुए एक और बात कही, "देखो साहब, हमारे दादाजी ने सत्तवान के विद्रोह में अंग्रेजों का साथ दिया था। आज मेरा बेटा किसी और युद्ध में सरकार की मदद करना चाहता है। लेकिन ऐसा हो सकता है कि नकल के इस मामले जैसी कोई छोटी- मोटी बात भी मुसीबत खड़ी कर दे, ऐसा वो कहता है!"
‘‘नो ऽ नो ऽ! नथिंग ऑफ द् सॉर्ट वुइल हॅपन. आय अश्युअर यू!’’
साहब ने जाते समय हमें चाय और बिस्कुट दिए। जब पापा बंगले से बाहर आए तो उन्होंने मुझसे कहा, "समर, समझ लो जैसे तुम्हें कोई कमीशन मिल गया हो! तैयारी शुरू कर दो!"
"लेकिन पापा, क्या यह पुलिस रिपोर्ट है?"
"वह गड्ढे में चला गया! यह कौन है महोदय, क्या आप जानते हैं?"
"कौन?"
"यह तो सभी अधिकारियों का बाप है! कोई भी इसके खिलाफ जाने की हिम्मत नहीं करेगा!"
जब हम वापस जाने वाले थे, तो पिताजी ने मुझसे पूछा, "क्या तुम रत्नपुर में काफी देर तक रुके थे?"
"रामलो कहाँ है? उसे तो उन्होंने अपने पास रख लिया है!"
"ठीक है, तुम यहाँ से निकल जाओ! ये राजरजावड़े बड़े अजीब हैं। इनके स्वभाव का कोई अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। आज जिसे ये सिर पर नचाते हैं, कल उसे कोड़े मारेंगे। मैंने कानूनी सलाहकार की नौकरी छोड़कर कोई मूर्खता नहीं की!"
"लेकिन मुझे लगा था कि भवानी नगर के महाराज पिता मुझे सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करेंगे!"
"तुम पागल हो! ओह समर, क्या तुम्हारे बेवफाई के मामले को दबाना उनके लिए नामुमकिन था? लेकिन नहीं, उन्होंने पुलिस रिपोर्ट में इसका जिक्र करने पर ज़रूर ज़ोर दिया होगा!"
"वे ऐसा क्यों करेंगे?"
ये राजकुमार ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनी वफादारी का दिखावा करने में बड़ा गर्व महसूस करते हैं। वैसे, बताइए, क्या वे आप जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी को खोना चाहेंगे? आप अभी बच्चे हैं। आप विज्ञान को समझना नहीं चाहते! पिछले राजा और सम्राट बड़े दिल वाले थे। उनकी दानशीलता तो अद्भुत थी!

"'यह सच है!'" मेरे होंठों पर था कि मैं पिताजी को रत्नपुर में हुई घटना के बारे में बताऊं; लेकिन मैं चुप रही क्योंकि मैंने राजकुमारी से वादा किया था।
वापस लौटने के अगले दिन, मैं अपने दोस्तों से मिला और उनसे कहा, ‘मैं जल्द ही सेना में भर्ती हो जाऊंगा। मुझे राजा का कमीशन मिल जाएगा!’ वे मेरे भवानीनगर छोड़ने की बात बर्दाश्त नहीं कर सके। यह महाराष्ट्रियों के खून में बसा एक बड़ा दोष है! किसी को अपना गाँव नहीं छोड़ना चाहिए!
जैसा कि मुझे उम्मीद थी, मुझे एक टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि मुझे राजा का कमीशन प्राप्त हो गया है।
समर धीरज सिंह ठाकुर ने सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में सेना में भर्ती हुए। उन्हें प्रशिक्षण के लिए पुणे में तैनात किया गया था।
यह खबर मेरी तस्वीर के साथ स्थानीय अखबार में प्रकाशित हुई, और हैरानी की बात यह है कि महामहिम मुझे बधाई देने वाले पहले व्यक्ति थे!
मुझे पिताजी की बात समझ आ गई थी। इन राजपरिवार के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। मुझे यह अजीब लगा कि महाराजा, जो मुझे कमीशन मिलने से रोकने की इतनी कोशिश कर रहे थे, वही मुझे बधाई देने वाले पहले व्यक्ति थे। लेकिन जब गाड़ी दरवाजे पर पहुंची, तो मेरे पास आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम करने के अलावा कोई चारा नहीं था।
- ०-०-०-

रेंज हिल में एक सैन्य प्रशिक्षण केंद्र था। अधिकारियों के क्वार्टर के बगल में अधिकारियों का भोजनालय था। उसके आगे सैनिकों के लिए बैरकें थीं। हर सुबह पांच बजे बिगुल बजता था। बिगुल बजने के एक घंटे के भीतर ही हमें पी.टी. के लिए मैदान में जाना पड़ता था। अधिकारी और सैनिक, जो मेरी तरह भारत के विभिन्न हिस्सों से आए थे, सफेद बनियान और सफेद पतलून पहने हुए, अपना टीम अभ्यास शुरू कर देते थे।
इस प्रशिक्षण केंद्र में मुझे इस बात की वैज्ञानिक शिक्षा दी गई कि मोर्चे पर मुझे किन संगठनों का सामना करना पड़ेगा और उनसे कैसे निपटना है। मुझे रस्सी की मदद से ऊंची दीवार पर चढ़ना, ऊंचाई से कूदना, गड्ढे खोदना, निशानेबाजी करना आदि जैसे कई तरह के युद्ध अभ्यास सिखाए गए, साथ ही हर शाम खेलकूद के लिए मैदान पर उपस्थित रहना पड़ता था। खेलकूद शब्द सुनते ही मेरा स्वभाव बदल जाता था। मुझसे फुटबॉल के बारे में कुछ मत पूछो! थोड़े ही समय में मैंने अपने फुटबॉल कौशल से सबको चकित कर दिया। भवानी नगर में बचपन से ही फुटबॉल खेलने का जो शौक मैंने पाला था, उससे मैं यूनिट में लोकप्रिय हो गया। सब सोचने लगे थे कि लेफ्टिनेंट समर ठाकुर जिस टीम के लिए खेलते हैं, वह जरूर जीतेगी। पौष्टिक आहार, सैन्य अनुशासन और मानसिक तनाव से मुक्ति ने मेरे पहले से ही मजबूत शरीर को और भी मजबूत बना दिया।
प्रशिक्षण के दौरान मुझे हर रात खाने के लिए मेस हॉल जाना पड़ता था। वहाँ खूब शराब होती थी! शराब न पीना पिछड़ापन माना जाता था! लेकिन मैंने अपनी माँ के सामने कसम खाई थी कि मैं जीवन भर शराब को हाथ नहीं लगाऊँगा। धोंडू मास्टर ने सबसे पहले मुझे खाना खिलाया। उस दिन मैंने जो गड़बड़ की थी, वह मैं भूला नहीं था। इसके अलावा, मैं पापा जैसे बुद्धिमान वकील की अत्यधिक शराब के कारण बिगड़ती हालत को भी नहीं भूल पाया था। इसलिए, जब भी मुझे मेस हॉल में शराब पीने के लिए कहा जाता, मैं अपने साथियों से हाथ जोड़कर विनती करता, "कृपया मुझ पर एक एहसान कीजिए और मुझे इस तरह मजबूर मत कीजिए।"
कुछ लोग मुझे 'कायर' कहते थे, तो कुछ मुझे अपशब्दों से अपमानित करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। लेकिन मैं कब तक इस दृढ़ संकल्प को कायम रख पाता? हर शाम मैं क्लब के एक कोने में बैठ जाता था, और वे सभी अधिकारी व्हिस्की के गिलास लेकर मेरे चारों ओर आकर बैठ जाते और कहते, 'तुम किस तरह के राजा- क्षत्रिय हो? अरे, बिना एक घूंट पिए तो गर्मी लग ही नहीं रही। पी लो, कम से कम एक घूंट तो पी लो!' वे ऐसा कहते और अपने गिलास मेरे होठों तक ले आते।
उस दिन मुझे ताने असहनीय लगे। मैंने अपने चारों ओर बैठे अधिकारियों के हाथों से गिलास छीन लिए, एक-एक करके सारे गिलास पी लिए और कहा, "बोलो! अब मैं किस तरह का राजा-क्षत्रिय दिखता हूँ?"
उस दिन से मैंने नियमित रूप से शराब पीना शुरू कर दिया। मैंने अपनी माँ से वादा किया था, लेकिन उसे निभाना मेरे लिए नामुमकिन था! उस समय मैं बहुत कम पीता था - ढाई से तीन पेग!

प्रशिक्षण के दौरान, हमारे कुछ अधिकारी रात में बैठकर फ्लश खेलते थे। मुझे ताश खेलना बिल्कुल पसंद नहीं था। मुझे न सिर्फ ताश, बल्कि कोई भी ऐसा खेल नापसंद था जिसमें बैठकर खेलना पड़ता हो। खेल शब्द मेरे लिए खुले मैदान, ऊपर नीला आकाश, नीचे हरियाली, तेज धूप और पसीना बहाते हुए दौड़ने से जुड़ा था। घंटों तक बिजली की रोशनी में एक कमरे में बैठे रहना, सिगरेट के पैकेट पर पैकेट खत्म करना, मुझे ये सब बहुत बुरा लगता था। लेकिन लगता है किस्मत ने कुछ और ही योजना बना रखी थी कि मुझे वो चीजें जबरदस्ती खिलाई जाएं जो मुझे पसंद नहीं थीं।
एक साधारण शौक के तौर पर, मैंने खुद को एक चादर में लपेट लिया और फ्लश देखने लगा। धीरे-धीरे, मुझे भी एक हाथ खेलने और उसे आजमाने का मन हुआ। यहीं से सेना में एक कट्टर जुआरी बनने की मेरी आजीवन प्रतिबद्धता की शुरुआत हुई।
चाहे रात के दो या तीन बज रहे हों, उसे पता नहीं चलेगा। जुआ शराब से भी कहीं ज़्यादा बुरा है! अगर कोई बहुत ज़्यादा पी ले, तो वह कोमा में जा सकता है और लकवाग्रस्त हो सकता है, लेकिन इस जुए में ईर्ष्या उसे तब तक ज़मीर की कोई परवाह नहीं करने देती जब तक कि वह उस व्यक्ति को पूरी तरह बर्बाद न कर दे। उसे स्थिति का ज़रा भी एहसास नहीं होता!
उस रात हमारी किस्मत इतनी चमकीली थी कि जब पाँच बजने का बिगुल बजा, तो हम मेज से उठकर पी.टी. की तैयारी करने लगे। हमने पूरी रात खेला। कभी पैसे आते, कभी चले जाते! इसी समय हमें एक पार्टी का निमंत्रण मिला। कमांडिंग ऑफिसर की अनुमति से हम पीछे वाले कमरे में पार्टी में गए। वह ईरानी सज्जन बड़े जुआरी थे। उनके कई सेना अधिकारियों से अच्छे संबंध थे। हमने साढ़े दस या ग्यारह बजे तक शराब पी। फिर हमने कुछ खाना खाया। वह ईरानी पक्के जुआरी थे। पहले तो वे हारे। लेकिन आखिरकार उन्होंने एक के बाद एक रंगीन कार्डों के 'त्रयी' और 'श्रृंखला' निकालने शुरू कर दिए। हम सब हार गए। मुझे थोड़ा सा शक हुआ कि इसमें कुछ तो चालाकी होगी। मैं उन्हें बहुत ध्यान से देख रहा था। जब उनकी गहरी नीली आँखें, जो उनके चश्मे से दिखाई दे रही थीं, हम सब पर घूमतीं, तो वे बेजान सी हो जातीं। वे ऐसे लगते जैसे विचारों में खोए हुए हों। वे बीच में ही हँसने लगते! वे हमें भाँप लेते। हम जोखिम उठाना चाहते थे और अगली चाल चलना चाहते थे। मैंने सोचा, 'चलो पीते हैं।' इसीलिए हम चालाकी से नहीं खेल सकते, तो हमें एक बार बिना शराब पिए उसके साथ खेलना चाहिए! रविवार का दिन था। पी.टी. परेड में छुट्टी थी। वम्पाटा की दुकानें भी उस दिन बंद थीं; इसलिए मैं इरन्या के पास गया। उसकी बेकरी भी उस दिन बंद थी। मुझे देखकर वह थोड़ा घबराया हुआ लगा; लेकिन बनावटी मुस्कान के साथ उसने कहा, “हेलो समरसिंह! कितना सुखद आश्चर्य है! इतनी सुबह-सुबह आप यहाँ कैसे आ गए?”
"आसान है। मैंने कहा, छुट्टी का दिन था, अगर आपके पास समय है तो एक-दो पारी खेल लीजिए!"
"क्या सच में? कोई बात नहीं! लेकिन सच कहूँ तो? फ्लश खेलने का असली मज़ा तो रात में ही आता है! मुझे अभी खेलने में कोई दिक्कत नहीं! अच्छा, बस एक

मिनट!" ईरानी अंदर चला गया। जब मैं आज खेल में उसकी जीत का राज़ जानने आया, तो उसे ध्यान से देखते हुए मैंने एक बात गौर की। फ्लश खेलते समय उसने जो चश्मा पहना था, वह अब उसकी आँखों पर नहीं था। जब वह अंदर गया और वापस आया, तो उसके पास वही चश्मा था जो वह हमेशा फ्लश खेलते समय पहनता था। लेकिन दोनों चश्मों के फ्रेम लगभग एक जैसे थे! मैंने उससे उन चश्मों के बारे में कुछ नहीं कहा।
"श्री ठाकुर, आप मेरे साथ दोपहर का भोजन करेंगे!"
‘‘डोंट बॉदर! आय हॅव टेकन हेवी ब्रेकफास्ट टुडे!’’
"नहीं नहीं! ऐसा कभी नहीं हो सकता!" उन्होंने मुझे ऊपर जाने का इशारा किया और पर्दे वाले दरवाजे के पास जाकर बोले,
‘‘पमि ऽ ला, इट अॅट एलेवन थर्टी शार्प!’’
"ओह!" अंदर से एक आवाज आई।
बहराम ईरानी बत्तीस वर्ष के थे, गोरे, लाल बालों वाले, लंबी नाक और घनी मूंछों वाले, और अच्छी कद-काठी के थे। उनकी वाणी और मुस्कान बहुत ही मधुर और प्रभावशाली थी। शिसवी की गोल मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगी थीं। हम आमने-सामने बैठे।
बहराम ने एक कार्ड निकाला और तेज़ी से पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते उसके माथे पर घुंघराले भूरे बालों का एक गुच्छा हिलने लगा। उसने अपना सिर उठाया और सीधा बैठ गया, उसके चश्मे नाक से थोड़े बाहर निकले हुए थे। मुझे लगा कि अब वह कार्ड बाँटने वाला है; लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा करता, वह रुक गया और बोला, "समरसिंह, चलो थोड़ी जिन कॉर्डियल पीते हैं!"
"अरे नहीं, धन्यवाद! मैं आमतौर पर छुट्टी नहीं लेता!"
"लेकिन जिन तो महिलाओं का पेय है! अभी रात नहीं हुई है, कम से कम एक-दो ड्रिंक तो पी लें!"
सच तो यह है कि मैं यहाँ उसके साथ बिना कोई ड्रिंक लिए खेलने आया था! लेकिन मुझे उसकी हर बात ठुकराना ठीक नहीं लगा। वैसे भी, एक-दो पाइंट जिन का मुझ पर कोई खास असर नहीं होता। मुझे हाल ही में छह पाइंट व्हिस्की पीने की आदत हो गई थी। फिर मैंने कहा,-
"अरे! बेवजह परेशान होने का कोई फायदा नहीं है!"
वह हँसते हुए बोला, "कुछ ड्रिंक्स के बिना लंच का मज़ा ही नहीं आएगा! हमारी पामेला की बहन कल लिस्बन से आई थी। वो अपने साथ सॉसेज लाई है। इन्हें ज़रूर चखिए। हम यहाँ भी सॉसेज बनाते हैं; लेकिन इनका स्वाद विदेशी सॉसेज जैसा नहीं होता!"
"लेकिन बहरामजी, आप लोग इसे नहीं खाते, है ना?"
‘‘हमको तो सब चलता है! यू नो, पमिला इज खिश्चन! इज अॅन इंटरकास्ट मॅरेज!’’ ‘‘ओह! आय सी!’’
बहराम ने जिन को गिलास में डाला। उसने उसमें थोड़ा सा कॉर्डियल मिलाया। उसने बर्फ के टुकड़े डाले और कहा, "क्या इसमें पानी भी डालना चाहते हो?" "नहीं, धन्यवाद! कोई बात नहीं!"

बहराम ने अपना गिलास मेरे गिलास से मिलाया और खुशी से कहा, "आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ।"
"धन्यवाद! आपको भी!" मैंने एक घूंट लेते हुए कहा।
वह जोर से हँसा और बोला, "बहुत बढ़िया! लेकिन 'किस्मत' हम दोनों के साथ एक ही समय पर नहीं होगी!"
खेल शुरू हुआ। एक रुपये की चाल से फैसला हुआ। पहली दस चालें बिना देखे चली गईं। मेरे पास तीन सौ रुपये थे। बहराम एक बदमाश था। सिर्फ़ ईर्ष्या के कारण उससे खेलने का कोई मतलब नहीं था; इसलिए मैंने पत्ते उठा लिए। मेरे पास दो बादशाह और एक आठ था। मैंने एक और चाल चली। बहराम ने अपने पत्ते उठाए और 'खुले पत्ते' मांगे। उसके हाथ बिल्कुल गंदे थे!
मैंने दो सौ पचास रुपये जीते, और फिर दरवाजे पर दस्तक हुई।
‘‘येस्, कम इन् प्लीज!’’
पामेला अंदर आई। उसने लाल रंग की चेकदार स्कर्ट पहनी हुई थी और उसके बाल पीठ पर खुले हुए थे। उसके बाल थोड़े भूरे थे, लेकिन चेहरा बेहद आकर्षक था! मुस्कुराने पर उसके गालों में झनझनाहट होती थी! उसने अपने होंठों और गालों पर ब्लश लगाया हुआ था; लेकिन इसे केवल एक पारखी ही पहचान सकता था! "पामिला, मेरे दोस्त लेफ्टिनेंट समरसिंग से मिलो!" पामिला को अंदर आते देख मैं खड़ी हो गई। सेना में भर्ती होने के बाद मुझे महिलाओं के प्रति शिष्टाचार का कड़ा सबक मिला था। लेकिन उससे पहले भी मुझे पता था कि राजपरिवार में महिलाओं का हमेशा सम्मान किया जाना चाहिए।
मुझे लगा था कि पामिला हाथ जोड़कर मेरा अभिवादन करेगी; लेकिन उसने तो बस हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। मुझे उससे हाथ मिलाना ही पड़ा। पामिला मेरे बगल वाली कुर्सी पर बैठी थी, उसकी जांघें लगभग नंगी थीं। पामिला द्वारा लगाए गए पाउडर की खुशबू उत्तेजक थी। पामिला की सुडौल जांघें, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, उसकी सधी हुई भौहें और उसके थोड़े भरे हुए होंठ देखकर, मुझे वो सब महसूस होने लगा जो एक सज्जन को अपने मित्र की पत्नी के बारे में नहीं महसूस करना चाहिए। मुझे खुद पर शर्म आ रही थी।
"बम, लंच तैयार है!" उसने हमारा खेल रोकते हुए कहा।
‘‘कृपया इसे यहाँ ले आओ, हम खेलते हुए इसका आनंद लेंगे! समर खेलते हुए खाने का मज़ा कैसे ले सकती है?’’
‘‘सर्टनली!’’
जब पामिला उठकर दोपहर का खाना लेने नीचे गई, तो बहराम ने कहा, "दोपहर के खाने के लिए एक और!"
मैं दो पेग खरीदने जा रहा था, लेकिन इसके बजाय मैंने पाँच या छह पेग खरीद लिए, और वेटर कह रहा था, "एक लंच के लिए!"
आज मैं जीत गया था। जीत का नशा मुझ पर छा गया था। अब एक और जींस खरीदने का क्या फायदा?
मेरे खेलने के बाद, पाँच सौ पचपन रुपये का एक पैकेट खत्म हो चुका था। बहराम ने अलमारी से दूसरा पैकेट निकाला और मेज पर रख दिया। उसने लाइटर से मेरी सिगरेट जलाई और कहा,—

‘‘समरिंग, तुमने आज कमाल कर दिया भाई!’’ मैं हँस पड़ा।
पामिला थालियाँ लेकर आई और उन्हें मेज पर रख दिया। तब मैंने कहा, "भाई बहराम, हम इस मामले में लापरवाही नहीं कर सकते!"
"क्या यह काफी नहीं होगा? इसे छोड़ दो! खेलो और खाओ! यह काफी होगा या नहीं!" पामिला ने उसकी 'मजाक' पर हंसे बिना कहा, "तुम्हारी बात बिल्कुल सही है, समरिनसांग! एक समय में एक ही काम करना चाहिए! चाहे खेलना हो या खाना!" "चलो, बहुमत ही जीतता है!" बहराम ने अपने हाथ में रखे कार्ड नीचे रखते हुए कहा और एक कांटा-चम्मच लेकर तले हुए सॉसेज काटने लगा।
मैंने पामिला से कहा, "ये सॉसेज बहुत स्वादिष्ट हैं!"
"रीटा इसे जानबूझकर लाती है क्योंकि उसे यह बहुत पसंद है!"
"वे करते क्या हैं?"
"वह एक नाव पर है! वह 'अलीतालिया' नामक एक इतालवी कंपनी के जहाज पर मेडिकल असिस्टेंट है!"
वाह! उन्हें तो हर दिन कितने नए-नए अनुभव मिलते होंगे!
"उसे अपना पेशा बहुत पसंद है; लेकिन मुझे वह जीवन उबाऊ लगता है। महीनों तक पानी पर तैरने का क्या मतलब? नाव की तरह धीमी गति से चलने वाला कोई दूसरा वाहन नहीं है। पापा चाहते थे कि वह डॉक्टर बने!"
"पापा कहाँ हैं?"
पामिला ने कुछ गंभीरता से कहा, "उनकी मृत्यु हो गई! दो साल हो गए हैं, जब उनकी मृत्यु हुई तब वे सेना में ही थे। मोर्चे पर उनकी मृत्यु हो गई!"
"ओह! मुझे माफ़ करना!" मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने गलती से पामेला के सामने यह विषय उठा दिया हो।
बहराम ने कहा, "समर, यहाँ दौड़ अगले रविवार से शुरू हो रही है। क्या तुमने कभी दौड़ लगाई है?"
नहीं भाई! मुझे तो लगता था कि घोड़ों पर सट्टा लगाने का मतलब घोड़े की पीठ पर पैसे लगाना होता है! लेकिन अगर तुम खेलना भी चाहते हो, तो भी कभी न कभी रेस तो देखनी ही पड़ेगी! हमारे भवानी नगर का एक जॉकी है, विलास!
मैं उसे जानता हूँ! तो रविवार को मेरे साथ आओ! मैं कई प्रशिक्षकों और मालिकों को जानता हूँ। घुड़दौड़ एक बहुत ही रोमांचक खेल है!
इस पर पामिला ने कहा, "खेल मत कहो, जुआ कहो! सरकार द्वारा स्वीकृत जुआ!" हमारा खाना खत्म हो गया था। पामिला खाली प्लेटें लेकर नीचे चली गई। बहराम और मैंने सिगरेट जलाई और फिर से खेलने लगे। लेकिन तभी बहराम से जीती हुई सारी रकम मैं हारने लगा; और जब उसने भी मेरी ली हुई रकम जीत ली, तो मुझे यकीन होने लगा कि उसके खेल में कुछ गड़बड़ है। चार बजे तक मैं पूरी तरह कंगाल हो चुका था। पामिला चाय लेकर ऊपर आई। उसने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा, "क्या हुआ? कौन बाहर हो गया?"
“मैं ही हूँ! मैं कभी नहीं हारती!” मैंने कहा। पामिला ने केतली से कप में चाय डाली और बोली,-
बस करो अब! पता नहीं कोई इतनी देर तक एक ही जगह बैठे-बैठे कैसे ऊब सकता है!

"खेल खत्म!" मैं कुर्सी से उठी और आलस से अपने चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का। ऐसा लग रहा था जैसे बहराम झूठ बोल रहा हो। जब मैं बाथरूम में थी, पामिला और बहराम किसी बात पर चर्चा कर रहे थे। जैसे ही मैं वापस आई, उसने बात करना बंद कर दिया। चाय का प्याला हाथ में लेकर मैंने कहा,-
"आज मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आया!"
बहराम ने चाय की एक घूंट लेते हुए हल्की सी मुस्कान बिखेरी और कहा, "भाई समर, मुझे आपसे एक निवेदन करना है!"
"कौन सा?"
"फिर कभी मेरे साथ फ्लश खेलने मत आना!"
‘‘का?’’
‘‘आस्क पमिला!’’
मैंने पामिला के चेहरे को प्रश्नवाचक भाव से देखा। लेकिन पामिला कुछ गंभीर लग रही थी।
मैंने पामिला से पूछा, "क्या बात है?" लेकिन बहराम ने जवाब दिया। उसने कहा,- "उसके पिता सेना में थे। मोर्चे पर उनकी मृत्यु हो गई। उसे सेना के लोगों से बहुत लगाव है। जब तुम यहाँ आकर खेलते हो और कभी-कभी हार जाते हो, तो उसे बुरा लगता है! इसलिए मैंने आज से तुम्हारे साथ फ्लश गेम न खेलने का फैसला किया है!"
“तुम उसका पैसा लौटा दो!” पामिला ने बहराम से कहा, और सचमुच बहराम ने मेरी जीती हुई सारी रकम अपनी जेब से निकालकर मेज पर रख दी। यह मेरे लिए बिलकुल अप्रत्याशित था। मैंने बहराम से कहा, “मैं यह पैसा नहीं लूंगी। इस पर मेरा कोई हक नहीं है! मैंने पहले कभी किसी की मदद नहीं ली है। मैं फिर कभी किसी से मदद नहीं मांगूंगी। बहराम, अगर तुम मेरे साथ नहीं खेलना चाहते, तो मत खेलो; लेकिन मैं आज यह पैसा बिल्कुल नहीं लूंगी।”
बहराम मुस्कुराया और पामिला से बोला,-
मैं तुम्हें क्या बता रहा था? अरे, यह तो एक सच्चे राजा-क्षत्रिय का रक्त है!
"लेकिन आज ही आप दोनों को ऐसा क्यों लगा?" मैंने उन दोनों की ओर देखते हुए पूछा।
"आज का दिन वैसा नहीं है जैसा मैंने सोचा था, समर! जब से तुम यहाँ आई हो, तब से यही कह रही हो कि सेना के लोगों से पंगा मत लेना!"
"ऐसा कुछ नहीं है। हम यहाँ इसलिए आते हैं क्योंकि हमें मज़ा आता है। क्या आप हमें खेलने के लिए मजबूर कर रहे हैं? मैं वो पैसा वापस नहीं लूंगा!"
जब मैं जाने के लिए उठा, तो बहराम ईरानी खड़े हो गए और मुझसे हाथ मिलाते हुए बोले, "सिर्फ इसलिए कि तुम अब खेलना नहीं चाहते, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम यहाँ आना नहीं चाहते। याद रखना, समर!"
मैंने कहा, "अगर तुम खेलना ही नहीं चाहते तो आने का क्या फायदा?"
"देखो!" बहराम ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। "मैंने आज तक अपना वचन नहीं तोड़ा है। मैं इसे फिर कभी नहीं तोड़ूंगा। इसलिए कृपया गलतफहमी मत पालिए!"

मैं वहाँ से किसी चमत्कारिक हालत में निकल आया! पामिला ऐसा क्यों सोच रही थी? उसने बहराम से जीती हुई सारी रकम लौटाने को क्यों कहा? क्या उसे यह भी यकीन था कि बहराम ने धोखाधड़ी से पैसे कमाए थे? आखिर हुआ क्या था?... यह सच है कि मैंने आज थोड़ी जिन पी थी; लेकिन दोपहर के खाने के बाद तो एक बूंद भी जिन नहीं बची थी... तो फिर ऐसा क्यों हुआ? बहराम हर खेल जीतता रहा। एक बार इक्कों का 'त्रयी', दूसरी बार इक्का-बादशाह-रानी, वो भी एक ही सूट के, तीसरी बार सात-आठ-नौ की श्रृंखला! ये किस तरह की चाल हो सकती है?... बहराम फ्लैश खेलते समय जो गिलास इस्तेमाल करता है, उसमें कुछ तो गड़बड़ है! लेकिन वो अब मेरे साथ खेलने को तैयार नहीं है, तो मैं इस रहस्य को कैसे समझूँ?
मुझे तो पता भी नहीं चला कि कब मैं अपने कमरे में पहुँच गया। उस रात सोने के बाद भी, मैं बहराम और पामिला के अजीब व्यवहार के पीछे का रहस्य नहीं समझ पाया।
- ०-०-०-

५
हालांकि मुझे पता था कि बहराम उस रविवार को रेस देखने जा रहा है, फिर भी मैं उसके घर गया। मैंने दरवाज़े की घंटी बजाई। पामिला ने जालीदार खिड़की से देखा कि कौन आया है और मुस्कुराते हुए दरवाज़ा खोला। पामिला ने बिना आस्तीन की फ्रॉक पहनी हुई थी। मेरी नज़र उसकी कमर पर पड़ी।
‘‘बेहराम कुठंय?’’
"रेस देखने गया हूँ!"
"क्या ऐसा है?"
"तुम जाने वाले थे, है ना?"
मैं जाने वाला था, लेकिन शिविर छोड़ने का समय हो गया था!
मैं पामिला के पीछे-पीछे हॉल में गई। वह मेरे सामने वाली कुर्सी पर पालथी मारकर बैठ गई। इतनी छोटी फ्रॉक पहने उसे मेरे सामने बैठने में शर्म आनी चाहिए थी। लेकिन जिस संस्कृति में वह पली-बढ़ी थी, वहाँ सुडौल शरीर होने में शर्म की कोई बात ही नहीं थी! लेकिन मैंने रियासती युग को करीब से देखा है। भवानी नगर के जहाँगीरदारों और इनामदारों के नाखून तक दिखाई नहीं देते थे! यहाँ तक कि जब वे बाहर जाते थे तो उनकी बग्गियों पर भी सुंदर पर्दे लगे होते थे!
मुझे पता था कि किसी खूबसूरत महिला को घूरना असभ्य व्यवहार है। इसलिए मैं हॉल में लगी उस दीवार पर बनी पेंटिंग को देखता रहा जिसे मैं अक्सर देखता था। "बहराम कब लौटेगा?"
वह शाम छह बजे आएगा!
मैंने अपनी घड़ी देखी, 3:30 बज रहे थे। "तो मैं चलता हूँ!"
"बिना कुछ लिए? कम से कम एक कप चाय ही ले सकते हो?"
अरे वाह! जैसी आपकी इच्छा! दरअसल, मैं उस दोपहर बहराम के घर जानबूझकर आई थी। बहराम के चश्मे का रहस्य मेरी समझ से परे था। मैं यह जानना चाहती थी कि बहराम, जो आमतौर पर अलग-अलग चश्मे पहनता है, ताश खेलते समय वही चश्मा क्यों पहने रहता है। मुझे उम्मीद थी कि पामिला, जिसे सेना में पुरुषों के प्रति सहानुभूति थी, मुझे इस बारे में कुछ सुराग देगी। उसने मुझसे बहराम को जीती हुई रकम लौटाने को कहा था। मुझे लगा कि उसे मुझसे स्नेह हो गया होगा। "गर्मी के मौसम में घर पर कोई नहीं होता। रसोई में आओ! मुझे चाय बनानी है!" पामिला ने कहा।
‘‘क्या? तुम्हारी वो मैरी कहाँ गई?’’
वह गोवा गई है। उसकी चाची बीमार है!
आप क्यों परेशान हो रहे हैं?
दरअसल, मैं बहराम के कमरे में जाकर वो चश्मा पहनकर देखना चाहती थी। लेकिन मैंने पामिला से अपनी शंका व्यक्त किए बिना कहा,-
"परसों किसी को मेरी कलम यहाँ मिली थी क्या?" उसने उसे थपथपाया।
"नहीं! मुझे यह नहीं मिला। क्या यह बहुत भारी था?"
"पार्कर फिफ्टी वन, पापा ने मुझे जन्मदिन के तोहफे के रूप में दिया था!"

"चलो, तुम ऊपर जाओ। मैं तुम्हारे लिए चाय लाती हूँ!"
मुझे बिलकुल यही चाहिए था। मैंने बैग के पीछे देखा था कि बहराम अपने चश्मे किस दराज में रखता है। पामिला रसोई में गई और मैं सीधे ऊपर बहराम के कमरे में चला गया। मैंने ड्रेसिंग टेबल की दराज खोली, चश्मे निकाले और अपनी पैंट की जेब में रख लिए।
यह चोरी थी; लेकिन उस समय मुझे नहीं लगा कि मैं चोरी कर रहा हूँ। मैंने बहराम के साथ आठ-दस बार फ्लश खेला। हर बार उसने मुझे हरा दिया। एक बार तो मेरे पास टैक्सी से वापस आने के लिए पैसे भी नहीं थे। बहराम ने अकेले ही मुझे फ्लश में हरा दिया। इतना ही नहीं, वह सबके साथ एक जैसा बर्ताव करता था, और हर बार उसकी आँखों पर वही चश्मा लगा रहता था! ये चश्मे आज मेरे हाथ लगे। मैंने इन्हें इसलिए नहीं पकड़ा क्योंकि मैं इनकी तरफ आकर्षित था, बल्कि इसलिए कि मुझे इनमें एक रहस्य सा महसूस हुआ। यहाँ से इन्हें देखना नामुमकिन था। चश्मा जेब में रखकर मैं घास पर खड़ा हो गया।
पामिला ट्रे से चाय और बिस्कुट लेकर आई और बोली,
"समझ गया?"
मैंने उत्साह से पूछा, "क्या?"
"अरे वाह, तुम्हारा पेन!"
"हां-नहीं, शायद यह शिविर में कहीं खो गया होगा!"
मैं और खोजूंगा!
केतली से कप में चाय डालते हुए पामिला ने मुझसे कहा, "समर, तुमने परसों पैसे क्यों नहीं लिए?"
"देखो, जुए में हारे हुए पैसों पर मेरा क्या हक़ है? मुझे वो पैसा लेना शर्मनाक लगा! मुझे किसी की परवाह नहीं। लेकिन जब कोई मेरी आलोचना करता है तो मुझे बहुत गुस्सा आता है! तुमने कल मेरे प्रति सहानुभूति दिखाई थी; पर मुझे वो पसंद नहीं आई!"
पामिला हंसते हुए बोली, "बहराम इतने सारे लोगों को यहाँ बुलाता है और उन्हें जेबें खाली करवा देता है। लेकिन मुझे कभी किसी के लिए सहानुभूति नहीं हुई; पर तुम्हारे लिए है!"
"उसे ऐसा क्यों करना चाहिए?"
"मेरे पिताजी सेना में थे। सेना के अधिकारी घर आते थे! मैं उनके स्वभाव को भलीभांति जानती हूँ। सेना के लोग सीधे-सादे होते हैं। उन्हें काम के दांव-पेच समझ नहीं आते। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं कि कोई उनकी भोली प्रकृति का फायदा उठाए। यहाँ तक कि मेरे पति बहराम भी!"
"तो क्या बहराम मेरे सीधे-सादे स्वभाव का फायदा उठा रहा है?"
पामिला हंसते हुए बोली, "ऐसा नहीं है कि वह फायदा उठा रहा है, लेकिन मुझे यह बात पसंद नहीं आई कि उसने आप जैसे ईमानदार सैनिक का फायदा उठाया!"
"उसके चोरी करने का सवाल ही कहां से आया? जुए में तो मैं हारता हूं!" "लेकिन अगर कोई बहराम के साथ खेलता है तो अंत में कौन नहीं जीत सकता?" "पामिला, यह जुआ है, और जुए में हारने वाले भी होते हैं। लेकिन बहराम के हमेशा जीतने का रहस्य क्या है?"

पामिला हंसते हुए बोली, "तुमने हद पार कर दी। समर, अभी के लिए बस इतना याद रखना, बहराम से मुकाबला करने की कोशिश मत करना! तुम कभी नहीं जीत पाओगे!" "ठीक है!"
मैंने पामिला को अलविदा कहा और बाहर निकल गई। मेरी जेब में बहराम का चुराया हुआ चश्मा था। मैंने तुरंत अपनी जेब एक-दो बार चेक की। मैं कैंप में आई और कमरे में घुसते ही मैंने उसे पहन लिया; पर मुझे उसमें कुछ खास महसूस नहीं हुआ। चश्मा नुकीला था। मैं निराश हो गई। मुझे लगने लगा कि मैंने ये चश्मा बेवजह चुराया है। खैर, अब अगर मैं बहराम से इसे लौटाने के लिए कहूँगी भी, तो यह साबित हो जाएगा कि मैंने इसे चुराया है। मैंने उसे रैक पर गोला- बारूद रखने वाले डिब्बे में रख दिया। मुझे बार-बार पछतावा हो रहा था, मैंने बहराम के घर वापस न जाने का फैसला किया। पर पामिला उसे बता देगी कि मैं उसके घर गई थी और उसे शक हो जाएगा कि मैंने चश्मा चुराया है... अगर वह पूछने आ गया तो क्या होगा? मैं क्या करूँ?...
एक हफ़्ता ऐसे ही बीत गया। मैंने जानबूझकर बहराम के पास जाने से परहेज़ किया था। लेकिन मेरा मन मुझे अंदर ही अंदर खा रहा था। धीरे-धीरे मेरा मन करने लगा कि किसी दिन जाकर वो गिलास उसके घर ले जाऊं। लेकिन मेरा 'अपराधी अंतरात्मा' मुझे ऐसा करने नहीं दे रही थी!
रविवार की सुबह फिर से हो गई। छुट्टी का दिन। मेरे बाकी सहकर्मी आम कपड़े पहनकर घूमने निकल गए। उनमें से एक मेरे पास आया और बोला,-
"समर, तुम्हें क्या हुआ है? तुम आजकल इतनी चिंतित क्यों लग रही हो? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?"
"ऐसा कुछ नहीं है!" मैंने गुस्से से जवाब दिया।
"तो फिर तुम इस तरह सबसे दूर रहने की कोशिश क्यों कर रहे हो? तुम मुस्कुराते भी नहीं, बाहर भी नहीं जाते!"
"मैं ऊब गया हूं!"
"इसीलिए तो मुझे बाहर जाना पड़ा। आज रेस है। हम रेस देखने जा रहे हैं, अगर तुम आ रहे हो तो आ जाओ!" मैंने सोचा कि मैं आ जाऊँगा; लेकिन मुझे तुरंत एहसास हुआ कि बहराम भी रेसकोर्स पर होगा! अंत में, मैंने उनके साथ जाने से मना कर दिया। मैं मेस में गया और एक बियर पी। मैंने दोपहर का खाना खाया और जेम्स हैडली चेज़ का एक जासूसी उपन्यास पढ़ते हुए सोफे पर लेट गया। मेरी आँखें थोड़ी धुंधली हो रही थीं, इसलिए मैंने किताब बंद कर दी और उसे अपने बगल वाले स्टूल पर रख दिया, तभी मेस मैनेजर आया और बोला, टिक-टॉक, -
‘‘सर, बाहर एक औरत आयी है!’’
मैं उठी। मैंने अपना गाउन पहना। मैं बाहर आई। जमादार ने कहा, "वह हॉल में बैठी है। वह आपसे मिलना चाहती है!"
बस यूं ही, मैं मेस के मुख्य हॉल में घुस गई। पामेला सोफे पर बैठी इलस्ट्रेटेड वीकली का एक अंक पलट रही थी। मुझे देखते ही उसने अंक को चाय की मेज पर रख दिया और बोली, "समर, थोड़ी देर के लिए बाहर आओ। मुझे तुमसे थोड़ी देर बात करनी है!"

उसके अस्पष्ट शब्दों ने मुझे निर्मम बना दिया। मुझे लगा जैसे वह सिर्फ उन चश्मों के लिए ही यहाँ आई हो। लेकिन चेहरे पर कोई भाव दिखाए बिना मैंने कहा, "मैं आ जाऊँगा, लेकिन इसमें बड़ी बात क्या है?"
"अरे, मैं यहां ठीक से बोल नहीं सकती," उसने दरवाजे पर खड़ी भीड़ की ओर देखते हुए कहा।
"चिंता मत करो, चिंता मत करो। हम अगले कमरे में बैठेंगे। वहां कोई नहीं आएगा! जमादार, हम इस अगले कमरे में बैठकर थोड़ी देर बात करेंगे, किसी को यहां मत छोड़ना," मैंने कहा।
‘‘येस सर!’’
सेना अधिकारियों के परिवार वाले कभी-कभार उनसे मिलने आते थे। लेकिन उन्हें हमारे आवास पर लाने की अनुमति नहीं थी। हमें भोजन कक्ष में बैठकर उनसे बात करनी पड़ती थी।
"यह किस तरह का भाषण है?"
"बहराम ने मुझे घर से निकाल दिया!" पामिला ने कहा।
"क्या, क्या कह रहे हो तुम?"
"हाँ! पिछले एक महीने से हमारी थोड़ी कहा-सुनी चल रही थी; लेकिन मैं इसे समझदारी से सह रही थी। वो मुझे छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ाता रहता था। अभी कुछ दिन पहले, ताश खेलते समय इस्तेमाल किए जाने वाले उसके चश्मे कहीं खो गए। वो कहता है कि मैंने उन्हें कहीं खो दिया है!"
मेरे सीने में धड़कन तेज हो गई।
"अब मुझे बताओ, उन चश्मों को पहनकर मैं किसके साथ 'फ्लश' खेलना चाहूंगा?" "उन चश्मों में ऐसी क्या खास बात थी?" उसने पूछा।
पामिला ने एक लंबी आह भरी और बोली, "यह खास था, इसलिए वह इतना जोश में था! समर, तुम्हें पता नहीं है, उन चश्मों के निचले छल्ले के पास दो छोटे-छोटे लेंस हैं। कुछ खास कोणों से देखने पर कार्ड के पन्ने मुकुट के आकार की किताब जितने बड़े लगते हैं। बहराम कार्ड के बाहरी हिस्से पर पिन या नाखून से छोटे-छोटे निशान बनाता है, जिससे उसे खेलते समय यह सटीक रूप से पता चल जाता है कि दूसरे के हाथ में कौन से कार्ड हैं। अगर उसे अपने प्रतिद्वंदी के पास 'त्रयी' या 'श्रृंखला' दिखती है, तो वह तुरंत 'ओपन' मांगता है, या चाल रोककर खेल खत्म कर देता है। तुमने मुझसे पहले पूछा था, बहराम के हमेशा जीतने का राज क्या है? मुझे उस समय पता था और मैंने तुम्हें नहीं बताया! तो यही उसका राज है! पंद्रह दिन पहले उसने वो चश्मा कहाँ खो दिया! उसने मुझ पर दूसरों के साथ धोखा करने का आरोप लगाया, इसलिए मैंने उसे सबक सिखाया! उसे चश्मे के साथ अकेला छोड़ दो! वह दूसरे मामलों में भी ऐसा ही करता था! बहुत खतरनाक आदमी! आखिरकार, मैं तंग आ गई। अपने परिवार के विरोध के बावजूद, मैंने उसे सबक सिखाया।" मैंने उनसे अंतरजातीय विवाह किया था। लेकिन मुझे कोई खुशी नहीं मिली!''
बोलते-बोलते पामिला ने अपने आँसू रुमाल से पोंछे। स्त्रियों के आँसुओं में इतनी शक्ति होती है कि व्रज जैसे कठोर हृदय वाले पुरुष भी पिघल जाते हैं! तो फिर मेरा क्या भाग्य है? मैंने कहा, "समझो पामिला। अगर बहराम को वो

चश्मा वापस मिल जाए, तो क्या तुम्हारे और उसके बीच के सारे मतभेद सुलझ जाएँगे?"
"यह नामुमकिन है! चश्मे की वजह तो एक है, असहमति के कई कारण हैं। वह आदमी दुनिया में पैसे के सिवा किसी चीज़ से प्यार नहीं करता! कैंप में उसकी बेकरी खूब चल रही है। वह महीने में ढाई से तीन हज़ार रुपये कमाता है! लेकिन वह संतुष्ट नहीं है। वह गाँव के व्यापारियों के बेटों को बुलाता है, उन्हें लूटता है, तुम्हारे जैसे सेना अधिकारी को बुलाकर उनसे भी लूटपाट करता है। सच कहूँ तो, अगर उसने पूरी दुनिया लूट ली होती, तो मैं उसे एक पल के लिए भी माफ़ कर देता; लेकिन मुझे वे लोग पसंद नहीं जो अपने देश की रक्षा के लिए घर-बार और दुनियादारी छोड़कर सेना में भर्ती होते हैं, उनके साथ भी धोखा और लूटपाट होती है। मेरे चचेरे भाई और पिताजी दोनों सेना में थे। वे युद्ध के मैदान में शहीद हो गए, इसलिए जब मैं किसी सेना अधिकारी को देखता हूँ, तो मुझे अपने चचेरे भाई और पिताजी की याद आ जाती है! अगर कोई उन्हें परेशान करे, उनके साथ धोखा करे, तो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता! सेना अधिकारी मेरी कमज़ोरी है, समर!"
बोलते-बोलते पामिला रुमाल से अपनी आँखें पोंछ रही थी। मुझे लगा जैसे बहराम का चश्मा उतारकर मैंने कुछ भी गलत नहीं किया! और तो और, पामिला ने अब मुझे उन चश्मों का 'निशान' भी बता दिया था।
आंखें बंद करने के बाद पामिला ने कहा, "मैं बस इसी काम के लिए आपके पास आई थी, मुझे कुछ पैसों की जरूरत है। मैं लखनऊ जा रही हूँ!"
"वहाँ कौन है?"
"यहीं मेरा घर है। घर पर मेरी माँ और दो छोटे भाई हैं। लेकिन इस अमानवीय कृत्य के कारण मैं उन्हें छोड़कर यहाँ आ गई। फिर भी, मेरी बहन रीता मुझसे कहती थी, 'यह आदमी तुम्हें खुश नहीं रहने देगा।' रीता नाव पर रहती है, उसने दुनिया का बहुत कुछ देखा है। वह हमेशा मुझसे कहती है, 'तुम्हारे अनुभव का दायरा बहुत सीमित हो गया है क्योंकि तुमने गाँव नहीं छोड़ा है!'"
आप यहां कितने वर्षों से हैं?
"साढ़े तीन!"
"आप इससे कहाँ मिले?"
"मैं लखनऊ आया था। लखनऊ में ऑल इंडिया बेकर्स एसोसिएशन की बैठक थी। मेरे चाचा जोसेफ की लखनऊ में एक बड़ी बेकरी है। मैं उनसे मिलने गया था। मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ था। लेकिन अब मुझे पछतावा होता है! इस आदमी ने मुझे बहुत दुख दिया। इसीलिए मैंने सब कुछ सहन किया। मैं अंदर से बहुत दुखी था; लेकिन मैंने कभी किसी को इसका एहसास नहीं होने दिया। लोगों ने कहा था कि बच्चा होने पर वह बदल जाएगा, लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ।" "पामिला, मुझे इन सब बातों के लिए बहुत खेद है! अच्छा, इसमें तुम्हारा कितना खर्चा आएगा?" मैंने पूछा।
"एक लाख! अगर कभी आना चाहो तो लखनऊ आना! जोसेफ बेकर लखनऊ में बहुत मशहूर हैं! मेरा घर उनकी बेकरी के ठीक बगल में है!"

"पामिला, बहराम ने तुम्हें घर से निकाल दिया, ये तो बहुत बुरा हुआ! क्या उसने इतनी हद तक जा किया?"
"उसे लगा कि मैं उसके कपटपूर्ण तरीकों का पर्दाफाश कर दूंगी; मैं उसकी धन हड़पने की योजनाओं का पर्दाफाश कर दूंगी; इसीलिए उसने मुझे बाहर निकालने का कदम उठाया।"
"यह मेरे लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित था।"
"ओह, मैं क्या कहूँ, समर, इस आदमी की हर हरकत! पैसे के लिए यह किसी भी हद तक गिर सकता है! रीता ने मुझे कुछ विदेशी चीज़ें तोहफे में दी थीं। इस निकम्मे आदमी ने बहुत सारा पैसा लेकर उन्हें बेच दिया। पता नहीं, कहीं उसने मुझसे भी धोखा तो नहीं किया-" बोलते-बोलते पामिला का गला भर आया।
मैं उठी और वेटर को बुलाकर कॉफी मंगवाई। मैंने पामिला से कहा, "बगल में बाथरूम है, नहा लो। मैं कमरे से पैसे ले आती हूँ!" रोने से उसकी आँखें लाल हो गई थीं।
कॉफी पीने के बाद जब मैंने पामिला को सौ रुपये दिए, तो उसने कहा, "मैं आपको बाद में मनी ऑर्डर से पैसे वापस कर दूंगी!"
"रहने दो! पैसे की चिंता मत करो, पामिला।"
बात करते-करते मैं गेट पर पहुँच गया। पामिला ने मुझे धन्यवाद दिया और कहा, "समर, जीवनसाथी चुनते समय कभी भी जल्दबाजी में फैसला मत लेना! तुम्हें जीवन भर पछतावा होगा!"
पामिला ने मेरी विदाई के साथ ही विदा ले ली। उस पल मुझे दुख हुआ। लेकिन बहराम का रहस्य और उसके चश्मे का राज जानने के बाद मुझे संतोष भी महसूस हुआ!
पामेला को अलविदा कहने के बाद, मैं कमरे में आया और चश्मा लगाकर अपने सामने रखे कार्ड के पन्ने को देखने लगा। जैसे ही मैंने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाया और किनारे से देखा, मुझे पता चला कि कार्ड का पन्ना कितना बड़ा था - एक किताब जितना बड़ा!
मुझे बहराम के हर बार मुझे फ्लश में हराने का राज समझ आ गया। मुझे यह भी समझ आ गया कि खेलते समय वह ऊपर देखकर सोचने का नाटक क्यों करता था।
मैंने उन कीमती चश्मों को वापस अपने गोला-बारूद के थैले में छिपा दिया। इन्हीं चश्मों से मैंने बाद में कई लोगों को बुरी तरह से धोया। भवानी नगर के जागीरदारों से लेकर दौलत खान नवाब तक!
- ०-०-०-

६
पुणे में हम हर शाम खेल के लिए मैदान जाते थे। उस समय सेना में हॉकी को बहुत महत्वपूर्ण खेल माना जाता था। उस समय अखिल भारतीय हॉकी टीम अजेय थी। हमारी यूनिट के एक वरिष्ठ अधिकारी, बलबीर सिंह, एक समय भारतीय हॉकी टीम के लिए खेल चुके थे। उस समय जब भी खेलों की बात होती, सिर्फ हॉकी का ही नाम दिमाग में आता था! उनका मानना था कि जो अधिकारी हॉकी अच्छा खेलता है, वह असफल है। उनकी नज़र में, जो हॉकी नहीं खेल सकता, वही असफल है!
मैं फुटबॉल का शौकीन हूँ। हॉकी और फुटबॉल में ज़्यादा अंतर नहीं था। दोनों में ही मजबूत सीना और दौड़ने की आदत ज़रूरी थी। हालाँकि फुटबॉल आकार में बड़ा था, फिर भी दोनों खेलों में एक समानता थी, और वह थी विरोधी टीम पर हमला करना और गोल करना। जल्द ही मुझे हॉकी में चैंपियन माना जाने लगा।
शाम के समय, कभी-कभार क्लब में 'फ्लश' खेला जाता था। लेकिन यह एक राज़ की बात थी! चार-छह लोग फ्लश खेलने के लिए इकट्ठा होते थे। उनमें से एक था गुमान सिंह, एक युवा सिख कप्तान जो हमेशा हॉकी में मुझसे मुकाबला करता था। गुमान सिंह छह फुट दो इंच लंबा था, उसकी नाक चील जैसी नुकीली थी, उसकी दाढ़ी हल्के भूरे रंग की और घनी थी, और वह हमेशा खूब पंजाबी गालियाँ देता था! बहराम का चश्मा मिलने के बाद, मेरे हारने का तो सवाल ही नहीं उठता था। पहले तो मैं जानबूझकर हारने का नाटक करता और फिर सबको 'दिवालिया' कर देता! उस दिन मेरे जीजा गुमान सिंह ईर्ष्या से भर गए थे। मैंने उनके साढ़े छह सौ रुपये जीत लिए थे। फिर उन्होंने कहा, "कर्ज का खेल खेलो। अगर पहली मुलाकात में तुम पर मेरा कोई कर्ज हो, तो मैं चुका दूंगा!"
मैंने कार्ड उठाए और उन्हें वापस डिब्बे में रख दिया और कहा, "जुए में क्रेडिट का कोई आधार नहीं होता, गुमान सिंह!"
‘‘क्यूँ ऽ? साला हम भाग जायेंगे?’’
“भाई, भागने का सवाल ही नहीं है!” मैंने शांत भाव से कहा।
"अच्छा!" गुमान सिंह ने दांत पीसते हुए कहा और उठ खड़ा हुआ।
फिर अगली शाम खेल के लिए हम सफेद शॉर्ट्स और टी-शर्ट पहनकर हॉकी खेलने मैदान गए। गुमान सिंह ने सुबह से मुझसे बात नहीं की थी। हम दोनों की मुलाकात मेस में लंच के दौरान हुई थी, और उससे पहले सुबह पी.टी. के दौरान। लेकिन गुमान सिंह मुझे देखते ही दूसरी तरफ देखने लगे थे। मैंने भी उनसे मिन्नतें न करने का फैसला किया था। अगर वो बात नहीं करेंगे तो नहीं करेंगे। भाड़ में जाओ!
उस दिन जब हम हॉकी खेलने मैदान में गए, तो बलबीर सिंह वहाँ मौजूद थे। उन्होंने हमसे कहा, “आज का मैच जीतने वाली टीम को जालंधर भेजा जाएगा!” जालंधर में हॉकी टूर्नामेंट होने वाला था। आज मैं अपने हुनर को आजमाने वाला था। खेल शुरू हुआ। मैंने गेंद पर नियंत्रण पाया और सेंटर फॉरवर्ड से गुमान सिंह की टीम में घुस गया। मैंने गेंद को किक मारकर गुमान सिंह के गोलकीपर को चकमा दे दिया। मैंने एक के बाद एक तीन गोल दागे। एक घंटे के मैच में, पहले आधे घंटे का खेल ही असली होता है! उसके बाद खिलाड़ियों में

दौड़ने की हिम्मत नहीं रहती। बाकी के आधे घंटे में रक्षात्मक खेल खेलना मुमकिन है! अब हमारी टीम जालंधर जरूर जाएगी! गुमान सिंह मुझसे बहुत नाराज़ थे। कल रात क्लब में भी ऐसी ही घटना हो चुकी थी, ये तो शर्मनाक है! अंतराल के बाद खेल फिर शुरू हुआ। बलबीर सिंह गुमान सिंह की टीम का हौसला बढ़ाने लगे, "शाबाश गुमान! आगे बढ़ो!"
मैंने तीन बार गुमान सिंह की स्टिक से गेंद छीनी और अपने खिलाड़ी को पास कर दी। चौथी बार, गुमान सिंह ने दुश्मन पर हमला करते हुए अपनी हॉकी स्टिक घुमाई और मेरे घुटने पर लग गई। दौड़ते-दौड़ते मैं गिर पड़ा। मैं अपना घुटना हाथ में पकड़कर बैठ गया। मुझे बहुत दर्द हो रहा था। बलबीर सिंह मैदान पर आया। मैंने उसे आवाज़ दी,-
‘‘जान बूझकर गुमानने मारा है!’’
"अरे छोड़ो भाई! कोई भी जानबूझकर ऐसा नहीं करता!" बलबीर ने कहा। उन्होंने मुझे उठाया और मैदान में बने मंडप में ले आए। उन्होंने सैन्य अस्पताल को फोन किया और एम्बुलेंस मंगवाई। उन्होंने तुरंत मेरे पैर की तस्वीरें लीं। बाएँ घुटने की हड्डी तीन टुकड़ों में टूट गई थी!
एक महीने तक मेरा पैर बंधा पड़ा रहा। जब मेरे माता-पिता को पता चला, तो वे मुझसे मिलने आए। जब मैं गुमान सिंह से बदला लेने का सपना देख रहा था, तभी अमृतसर में उनके तबादले का आदेश आ गया। उनके लिए विदाई पार्टी रखी गई। खूब दावत हुई। लेकिन उस समय मैं अस्पताल में था। उसके बाद मैं गुमान सिंह से कभी नहीं मिला। लेकिन उन्होंने यह सुनिश्चित कर दिया था कि मैं उन्हें जीवन भर याद रखूँ। एक महीने बाद प्लास्टर हटा दिया गया; लेकिन कटोरे का एक टुकड़ा ठीक से फिट नहीं हुआ। मुझे एक और ऑपरेशन करवाना पड़ा!
डॉक्टरों ने मुझे सेना में अधिकारी के रूप में काम जारी रखने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया! मैं चल तो सकता था; लेकिन दौड़ना नामुमकिन था। मेरे लिए हॉकी-फुटबॉल खेलना भी नामुमकिन था!
गुमान सिंह! मुझे लगा था कि गुमान सिंह के खिलाफ कोई ‘अनुशासनात्मक कार्रवाई’ होगी; लेकिन मैदान पर मौजूद बलबीर सिंह ने सबको बताया कि समर को गुमान की हॉकी स्टिक गलती से लगी थी; उसने जानबूझकर नहीं मारा था! खैर, जब इतना बड़ा अधिकारी फैसला सुनाएगा तो क्या होगा?
मेरा सैन्य करियर इतने अप्रत्याशित तरीके से समाप्त हुआ! सैन्य वर्दी पहनने और सीने पर बैज लगाने के मेरे सपने चकनाचूर हो गए। इसके बजाय, मुझे टूटे हुए बाएं पैर के साथ सेना से सेवानिवृत्त होना पड़ा!
भवानी नगर की वापसी! आजकल बच्चे एक खास तरह की गेंद से खेलते हैं, जिसमें एक लंबी रबर की पट्टी लगी होती है। गेंद चाहे कितनी भी तेज़ी से फेंकी जाए, फेंकने वाले के हाथ में वापस आ जाती है। मेरी हालत भी उस गेंद से अलग नहीं थी! मैं भवानी नगर से रत्नपुर गया। वहाँ से जल्दी लौट आया। मैंने सेना में भर्ती हो गया। वहाँ नाम कमाने का सपना देखा था; लेकिन मेरा सैन्य जीवन भी अचानक समाप्त हो गया। फिर वही यक्ष वाला सवाल - अब आगे क्या?
मैं खाना खाने बैठा था। माँ रसोई में थीं। अमर बाहर वाले कमरे में पढ़ाई कर रहा था। अमर थोड़ा अनाड़ी था, पर दिल से भले इंसान थे। उन्हें मेरा

जल्दबाज़ी वाला व्यवहार पसंद नहीं था। लेकिन उन्होंने मुझे कभी अक्ल सिखाने की कोशिश नहीं की। पिताजी ऊपर थे। अब तक उन्होंने शराब पीना काफी कम कर दिया था। डॉक्टर ने उन्हें चेतावनी दी थी कि अगर वे ज़्यादा शराब पिएंगे तो उन्हें सिरोसिस हो जाएगा और कोई भी इलाज काम नहीं आएगा।
मेरी माँ ने मुझसे कहा, "समर, मैं अब पहले की तरह घर के काम नहीं कर सकती। मुझे बार-बार अस्थमा के दौरे पड़ते हैं। मेरी बहू को अब घर आ जाना चाहिए!" मैंने अपनी माँ की ओर देखा, मेरे हाथ में अभी भी घास थी, और मैंने कहा, "बेटा? मैं अभी तक स्थिर नहीं हुआ हूँ। तुम यह ज़िम्मेदारी मुझ पर क्यों डाल रहे हो?"
"अब जाओ और खेत वाले अपने बंगले में रहो! कुसप्पा कह रहे थे कि समरबाबू का यहाँ आकर रहना अच्छा होगा; नहीं तो मेरे बच्चे भविष्य में तुम्हारे साथ ईमानदार कैसे रहेंगे? इसलिए अब कहीं बाहर जाने के बारे में सोचना भी मत! खेत वाले बंगले को रंगवाओ, और कभी-कभार वहाँ जाकर रहो! अगर तुम खेती पर ध्यान दोगे तो तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी! मुझे वहाँ झील के किनारे की हवा बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती! वरना मैं भी वहीं आकर रहने लगता!"
शादी! इसमें कोई शक नहीं था कि मैं शादी की उम्र का हो चुका था। जब भी मैं जवान लड़कियों को देखता, तो बहुत घबरा जाता! पुणे में उस दिन पामिला की नंगी जांघें देखकर मेरे मन में कितने अजीब ख्याल आए थे? कुछ ऐसा ही तब होता जब मैं उस धोबिन की बेटी को अपने सामने देखता! रात को जब मैं सोने जाता, तो ऐसा लगता जैसे मैंने आज तक जितनी भी खूबसूरत लड़कियां देखी हैं, वे सब मेरे सामने कतार में खड़ी हैं, बस थोड़े से कपड़े पहने हुए! मेरे मन का मुगल बादशाह वेश्यालयों में चला जाता! ओह! ये मेरे मन की कमजोरी है। मेरी माँ कहती है, मुझे तो बस उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिए!
चावल पर घी डालते हुए उसकी माँ ने कहा, "नासिक के शंकरलाल परदेशी का पत्र आया है। उनकी बेटी ने इस साल मैट्रिक पास कर लिया है और वो बिल्कुल ठीक लग रही है। इतना ही नहीं, उनके एक बेटा और एक बेटी भी है! वो तुम्हारे सारे खर्चे उठा लेंगे और तुम्हें जीवन भर उनका सहारा मिलेगा!"
"कम से कम लड़की की एक तस्वीर तो मांग लो!"
"फोटो की क्या ज़रूरत है? तुम खुद जाकर देख लो!"
"ओह, लेकिन—"
"चलिए पहले उन्हें एक पत्र भेजते हैं!"
"चे: चे: मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा। मैं पहले लड़की के चरित्र की बाहरी तौर पर जाँच करूँगा। हम उसके रूप-रंग, उसके दोस्तों, उसके स्वभाव के बारे में विस्तार से जाँच करेंगे, और उसके बाद ही हम सब लड़की से मिलने जाएँगे!" "ऐसा करो। लेकिन उस लड़की को मना मत करना! वे अच्छे लोग हैं! उनके पास एक छोटा सा अंगूर का बाग भी है!"
"माँ, मैं किसी लड़की से शादी करना चाहता हूँ, अंगूर के बाग से नहीं!"

"सच में नहीं, समर, लेकिन तुम्हारा स्वभाव ऐसा है कि तुम किसी के साथ ज्यादा देर तक नहीं टिक पाती, इसलिए मुझे लगता है कि तुम्हें अच्छे लोगों का सहारा मिलना चाहिए!"
"यह एक भ्रम है, माँ! शादी के बाद कोई भी शादी करने की जल्दी में नहीं रहता! सारी लालसाएँ शादी से पहले ही होती हैं। आपको मुझसे ज़्यादा अनुभव है! लेकिन मैं यह अपने अनुभव से कह रहा हूँ। शादी के बाद भी माता-पिता अपनी बेटी से उतना प्यार नहीं करते! वे यह बात नहीं भूल पाते कि वह किसी और की है। इसलिए मुझे ऐसी पत्नी चाहिए जो अपने परिवार का घमंड न करे और परिवार की प्रतिष्ठा पर ज़रा भी गर्व न करे! मुझे एक गरीब आदमी की बेटी चाहिए, बस एक ही शर्त है कि वह देखने में सुंदर हो!"
जब मेरी माँ ने देखा कि मेरी थाली खाली है और उन्होंने चावल का कटोरा दोबारा उठाया, तो मैंने कहा, "बस करो! मेरा पेट भर गया है!"
"थोड़ा और खा लो! जब से सेना में भर्ती हुए हो, तब से कम खाना खा रहे हो! पिताजी, आप इतने निराश कैसे हो गए कि भर्ती हो गए! आप इतने कमजोर हो गए हैं कि पैरों पर बैठे हैं!"
जब मैं पेड़ों के झुरमुट में गया और अपने हाथ धोए, तो मैंने कहा, "जो होना था वही हुआ! अगर सेना में ऐसा नहीं हुआ होता, तो बहुत पहले ही मेरी टांग टूट गई होती!"
मुझे दैवीय विचार बिल्कुल पसंद नहीं था; लेकिन मेरे जीवन में कुछ ऐसी अकल्पनीय घटनाएँ घटीं जिन्होंने अनजाने में ही मुझे दैवीय विचार पर विश्वास दिला दिया। रत्नपुर से मेरा भाग निकलना! मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि रत्नपुर का महाराजा मेरी जान के साथ कुछ करने की योजना बना रहा है? लेकिन राजकुमारी ने मुझे यह विचार दिया और मुझे वहाँ से बचा लिया! क्या यही दैवीय शक्ति की महिमा नहीं है?
खाना खाने के बाद, मैं तीसरी मंजिल पर अपने कमरे में गया, तभी मेरी माँ ने फिर कहा, "ओह, विदेशियों के पत्र आ गए हैं। कम से कम आकर लड़की को देख तो लो, ताकि उन्हें मेरी बात समझ आ जाए!"
"ठीक है, ठीक है, मैं उस लड़की से मिलने आता हूँ। अगर मुझे वो पसंद आई, तो हम सब साथ चलेंगे!"
"अगर तुम ऐसा कर भी दोगे, तो भी यह मेरा नहीं होगा!"
जब मैं सीढ़ियों से ऊपर जा रहा था, अमर मेज पर बैठकर किताब पढ़ रहा था। उसने मुझे पास बुलाया और कहा, "दादा, इधर आओ!"
"क्या, अमर?" हम दोनों भाई बहुत कम बोलते थे! लेकिन मैं अमर से बहुत प्यार करता था और अमर भी मुझसे बहुत प्यार करता था! जब मैं उसके पास गया, तो उसने मुझे एक पैकेट थमा दिया - खुला हुआ!
"दादा, माफ कीजिए! इस पत्र पर तो आपका नाम लिखा था; लेकिन मुझे लगा कि यह मेरा नाम है; इसलिए मैंने इसे खोला और पढ़ना शुरू कर दिया; लेकिन जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि यह मेरा नाम नहीं है, मैंने इसे मोड़कर रख दिया!"
"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है, मेरे प्यारे बेटे!" मैंने अमर के घुंघराले बालों को सहलाते हुए कहा और पत्र लेकर ऊपर चली गई।

दूसरी मंज़िल पर पापा चश्मा लगाए कुछ पढ़ रहे थे; बगल में व्हिस्की का आधा खाली गिलास रखा था! मुझे लगा पापा हमारी तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं। हमें धीरे-धीरे ऊपर जाना चाहिए। लेकिन किताब से नज़र हटाए बिना पापा बोले, "समर, प्लीज़ इधर आओ!"
मैंने चिट्ठी को अपनी जींस की जेब में डाला और उनके सामने खड़ा हो गया। जब आप नासिक जाएं, तो एक काम जरूर करें!
‘‘जी?’’
"राज-क्षत्रिय ज्ञातिया संघटना का एक कार्यालय है, उस कार्यालय में जाइए और पिछले चार वर्षों का मेरा शेष चंदा अदा कर दीजिए, अदा कर दीजिए! जाते समय पैसे अपने साथ ले जाइए!"
‘‘जी!’’
"अगर तुम्हें वो विदेशी लड़की पसंद है, तो उसे वहाँ से ले आओ; हम दोनों आ जाएँगे। तुम अब ज़्यादा देर अकेले नहीं रह पाओगे। उसे कभी-कभी अस्थमा हो जाता है!"
मैं वहाँ सिर झुकाए खड़ा रहा। दरअसल, मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि अमर ने मुझे जो पत्र दिया था, वह किसने लिखा था।
मैं ऊपर आया। मैंने अपनी जेब में रखा लिफाफा खोला। उससे पहले, मैंने चिट्ठी पर लिखा पता एक बार फिर देखा। यह बिल्कुल वैसा ही होना चाहिए जैसा अमर ने बताया था। पहली नज़र में 'S' अक्षर 'A' की तरह लिखा हुआ था। यही अमर के हंगामे का कारण रहा होगा। हमारे घर में आमतौर पर कोई भी दूसरों की चिट्ठियाँ खोलकर नहीं पढ़ता था। पापा ने हमें बचपन से ही यही सिखाया था। मैंने चिट्ठी पढ़ना शुरू किया,—
"मेरी प्यारी ग्रीष्म ऋतु,
इस पत्र को देखकर शायद आपको थोड़ी हैरानी हो! क्योंकि आपके यहां से जाने के बाद से मुझे आपसे कोई खबर नहीं मिली है!
पत्र पढ़ते समय मुझे समझ नहीं आया कि यह किसने लिखा है, इसलिए मैंने पत्र के अंत में हस्ताक्षर देखे; यह राजकुमारी रत्नप्रभा राजे के हस्ताक्षर थे। फिर मैंने दोबारा पढ़ना शुरू किया:
"मैंने उस रात तुम्हें बचाया और अगली सुबह मैं तुम्हें महल में मचे हंगामे के बारे में बताऊँगी! पिताजी बहुत क्रोधित थे। महल के सभी पहरेदार कतार में खड़े थे। पिताजी ने खुद उन्हें कोड़े मारे। बेचारे लोगों को हल्के से पीटना पड़ा। हमने तुम्हारे कमरे के पास जो रस्सी बाँधी थी, ताकि उन्हें गुमराह किया जा सके, उसकी भी जाँच की गई। नौकरों और दासियों को जवाब देने का मौका दिया गया। बदमाश इधर-उधर भाग गए। लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। तुम ट्रेन में सुरक्षित थीं। दोपहर में पिताजी ने मुझे भी बुलाया। मैं गई।" गुस्से में भरे पापा अपने लिविंग रूम में हाथ पीछे बांधकर इधर-उधर घूम रहे थे। जब उन्होंने मुझे देखा, तो वे दहाड़ उठे।
‘यह सब क्या बकवास है?’
मैंने उलझन में पूछा, "क्या हुआ पापा?"
"सुबह से ही इतनी अफरा-तफरी मची हुई है, क्या तुम्हें कुछ पता नहीं?"

"मैं यह समझता हूं, लेकिन गर्मियों की छुट्टियां आज से शुरू होनी थीं, है ना?"
"वह जाना तो चाहता था, लेकिन भवानी नगर नहीं! मैं उसका जन्म प्रमाण पत्र बदलवाने वाला था। उस कमीने ने सभी शाही परिवारों के सामने रत्नपुर को अपवित्र कर दिया था।"
लेकिन बाद में आपने उसकी प्रशंसा की और उसे कुछ दिनों के लिए महल में कोच के रूप में रखा!
‘यह एक नाटक था! यह एक नाटक था! मैं उस पर पूरा भरोसा करके उससे बदला लेना चाहता था। जब तक वह भवानी नगर टीम में था, वह टीम अजेय रहेगी। मैं उससे अपने खिलाड़ियों को उसकी खेल तकनीक सिखाऊंगा और फिर एक दिन मैं उसका गुलाम बन जाऊंगा’—
पिताजी अचानक चुप हो गए। लेकिन मैंने वह पहचान लिया जो मैं पहचानना चाहती थी। मुझे पिताजी की साजिश के बारे में बहुत पहले से पता था; इसीलिए मैंने तुम्हें बचाने की कोशिश की थी। पिताजी ने उस दिन कुछ नहीं खाया। वे दिन भर बेचैन रहे। उन्हें मुझ पर शक था। मुझे रात को वापस बुलाया गया।
‘रत्ना, क्या तुमने यह कर दिया? है ना?’
पापा ने सीधे मुझ पर आरोप लगाया। तब मैंने कहा, 'आखिरकार आपको मुझ पर शक हो ही गया?'
"तुम्हारी मदद के बिना वह यहाँ से नहीं निकल सकता!"
"हम कुछ गलत समझ रहे हैं!"
"रात की ड्यूटी पर तैनात आपकी नौकरानियां उस सुबह कब लौटीं?"
'हमेशा की तरह सुबह-सुबह का समय रहा होगा! मुझे कुछ याद नहीं!'
‘तुम झूठ बोल रही हो! उस दिन रात की शिफ्ट में काम करने वाली एक नौकरानी पूरे दिन महल में थी। तुमने ही समर को साड़ी पहनने और मुख्य द्वार से बाहर जाने के लिए कहा था। तुमने ही पति को गुमराह करने के लिए खिड़की पर रस्सी बांधी थी! क्या तुमने अपने असली पिता को धोखा दिया?’
'क्या आपको यकीन है?'
‘बाय ऑल मीन्स!’
"तो फिर मुझे बताओ कि तुम मुझे क्या सजा देना चाहते हो!"
मैंने भी इसके विपरीत रुख अपनाया। लेकिन मज़े की बात यह है कि वे मुझे ज़रा भी सज़ा नहीं दे सके। धीरे-धीरे उनका गुस्सा शांत हो गया। उन्हें लगा कि तुम भवानी नगर से चिट्ठी भेजोगे या भवानी नगर के महाराजा को सब कुछ बता दोगे। लेकिन मैंने तुम्हें पहले ही ऐसा कुछ न करने की चेतावनी दे दी थी, इसलिए अच्छा हुआ!
आज आपको यह विशेष पत्र लिखने का कारण यह है कि मेरी शादी हो रही है! यह तो होना ही था, देर-सवेर। इसमें कुछ भी अप्रत्याशित नहीं है। लेकिन मुझे एक अजीब सी चिंता सता रही है। शादी के बाद मैं शिकार, नृत्य, चित्रकला जैसे शौक नहीं कर पाऊंगी। जिस परिवार में मेरी सगाई रावेर के राजकुमार से हो रही है, वह बहुत ही रूढ़िवादी है! मैंने मठ में पढ़ाई की, लड़के-लड़कियों के साथ खेली और पली-बढ़ी। मुझे लगातार इस बात का अफसोस सता रहा है कि रावेर

के महल में मैं अपने किसी भी पसंदीदा शौक को पूरा नहीं कर पाऊंगी! लेकिन मैं क्या कर सकती हूं? मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा! अगर मैं किसी आम परिवार में पैदा हुई होती, तो मैं कहीं भाग जाती! शायद मैं भी आपके पास ही आ जाती! मेरी शादी एक महीने में होने वाली है! आपको शादी में बुलाना मुझे वापस पिंजरे में बुलाने जैसा होगा! इसलिए ऐसा करने की झंझट में मत पड़िए! कौन जाने इस जीवन में हम कब फिर मिलेंगे, लेकिन मेरा अंतर्मन कहता है कि हम कहीं न कहीं जरूर मिलेंगे। कम से कम आज तो मेरे दिल में यही उम्मीद है! रत्नप्रभा राजे।
राजकुमारी का पत्र पढ़ते ही मेरी पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। मुझे रत्नपुर में बिताए दिन याद आ गए। मुझे महाराज का षड्यंत्रकारी रवैया याद आ गया। 'सच में, उस दिन वे मेरे साथ क्या करेंगे? कौन जाने? राजकुमारी को मुझ पर दया आ गई और उन्होंने मुझे महल से सुरक्षित बाहर भेज दिया। क्या मैं इस जीवन में उनकी इस कृपा का बदला चुका पाऊँगा?...'
मैं काफी देर तक बिस्तर पर लेटी सोचती रही। आधी रात के बाद भी मुझे नींद नहीं आई। अगले दिन मुझे नासिक जाना था। मेरी माँ अब पहले की तरह काम नहीं कर रही थीं। मैं उनकी देखरेख में एक अच्छी बहू बनना चाहती थी। कौन जाने, शायद अब तक भटकती हुई मेरी जिंदगी शादी के बाद आखिरकार स्थिर हो जाए! मेरा पैर पूरी तरह ठीक हो गया था, लेकिन चलते समय मैं थोड़ा लंगड़ाता था। मेरे पुराने दोस्त मुझसे कहते थे कि मुझे लंगड़ाने का एहसास नहीं होता। मुझे लगता है कि मैं 'स्टाइलिश' होकर चल रहा हूँ। जो भी हो; कभी-कभी मेरे घुटने की नस में दर्द होता था। यह गुमान सिंह की लोगों को धोखा देने की सज़ा थी। भवानी नगर आने के बाद से मैंने उन चश्मों को एक डिब्बे में रखा हुआ था। मैं एक-दो बार क्लब में खेलने गया था; लेकिन मैं उन चश्मों को अपने साथ नहीं ले गया। मेरा एकमात्र इरादा अपने गृहनगर में 'चारसोबिसगिरी' न करने का था। कम से कम उस समय तो यही मेरा इरादा था!
नासिक! मैं इससे पहले चार-पाँच बार नासिक जा चुकी थी। हालाँकि हम शाही खानदान से थे और खून से क्षत्रिय थे, महाराष्ट्र में दो पीढ़ियाँ बिताने के कारण हम महाराष्ट्रीयन संस्कृति में घुलमिल गए थे। मैंने अपनी माँ के साथ वहाँ स्नान भी किया था। मुझे त्र्यंबकेश्वर अच्छी तरह याद था। लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे उस इलाके की नदी में स्नान करना कभी पसंद नहीं आया। हद से ज़्यादा गंदगी! कोई गंदे कपड़े धो रहा होता है, तो कोई किनारे पर हाथ में पत्थर का कपड़ा लिए बैठा भजन गा रहा होता है और शरीर मल रहा होता है। हम उस पानी में 'हर गंगा' की तरह डुबकी लगाते थे और बड़े श्रद्धा से उसे पीते थे! छी छी!....
नासिक पहुँचते ही मुझे नासिक की पुरानी यादें ताजा हो गईं। मैंने बचपन में विदेशियों का घर देखा था; इतने सालों बाद उसे ढूंढना मेरे लिए आसान नहीं होता। अपना सूटकेस हाथ में लिए मैं विदेशियों की गली के कोने पर गया और वहाँ पानपत्तीवाले से पूछा,—
"शंकरलाल परदेशी का महल क्या है?"

“‘शंकरलाल परदेशी? इस गली में दो शंकरलाल हैं। आपको कौन सा चाहिए?’’ ये बात मेरे होंठों पर थी, मैं उसे कहना चाहता था, ‘जिसकी सौतेली बेटी है, वही शंकरलाल है!’’ लेकिन ऐसा कहना अच्छा नहीं लगता। इसलिए मैंने कहा,—
उनके पास एक अंगूर का बाग है।
"दोनों अंगूर के बाग शंकरलाल के हैं। आपको कौन सा चाहिए?"
अब ये पंचायत है! मुझे अलीबाबा और चालीस चोर याद आ गए। मैंने एक पल सोचा और फिर कहा, "ये हमारे राजसी और क्षत्रिय कबीलों के सरदार हैं। इनका अंगूर का बाग़ त्रिंबकेश्वर जाने वाली सड़क पर ही है!"
तभी, सामने से एक कार आई और दुकानदार की दुकान के सामने रुक गई। ड्राइवर के बगल में बैठे सज्जन ने हाथ में दस रुपये का नोट लिए दुकानदार से कहा, "गोल्ड फ्लेक के चार पैकेट ले लीजिए!"
दुकानदार ने कांच की अलमारी से सिगरेट के पैकेट निकालते हुए मुझसे कहा, "ये शंकरलाल हैं। इनसे पूछिए। शायद आपको यही चाहिए हो!"
मैं कार के पास गया, उस सज्जन को नमस्कार किया और कहा, "मैं समर ठाकुर हूं, मैं भवानी नगर से आया हूं!"
उस सज्जन ने चश्मे के पीछे से मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा और चेहरे पर मुस्कान लिए कहा,—
"आप कौन हैं धीरजलाल ठाकुर?"
मैं उनका बेटा हूँ!
"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"
"मैं पता ढूंढ रहा था, इस पर्चे बांटने वाले ने कहा, यहां दो शंकरलाल हैं, विदेशी; इसीलिए मैं थोड़ा भ्रमित हो गया था!"
उस सज्जन का चेहरा एक पल के लिए गंभीर हो गया। लेकिन अगले ही पल वह ज़ोर से हँसे और बोले, "चलो, गाड़ी में बैठो। तुम मुझसे मिलना चाहते थे!"
मैंने कार का दरवाजा खोलकर बैठते हुए पूछा, "क्या तुमने चिट्ठी भेज दी?" "इस खंडहर से मेरे अलावा और कौन पत्र भेजेगा?"
वह इतने आत्मविश्वास से बोल रहे थे कि मेरी हिम्मत ही नहीं हुई यह पूछने की, "शंकरलाल, क्या आप ही हैं जिन्होंने मुझे अपनी बेटी से मिलने के लिए बुलाया था?" गाड़ी एक आलीशान बंगले के सामने आकर रुकी। चौकीदार ने विनम्रता से आगे बढ़कर बंगले का लोहे का गेट खोला। गाड़ी बीच में बने रेतीले टीले पर रुकी और बरामदे में प्रवेश किया। बंगले के चारों ओर तरह-तरह के देसी और विदेशी फूल खिले हुए थे। कोने में लगा छोटा चीनी सागौन का पेड़ इतना खिला हुआ था कि उसकी खुशबू से पूरा बंगला महक रहा था। बरामदे में गाड़ी रुकते ही शंकरलाल बाहर निकले। उन्होंने घुटनों तक लंबा रेशमी कॉलर वाला कोट पहना हुआ था और उनके सुंदर सफेद बाल पीछे की ओर कंघी किए हुए थे। शंकरलाल ने मेरा हाथ पकड़ा और मुख्य हॉल में आकर बोले,—
"क्या ठाकुर साहब अभी भी साधना कर रहे हैं?"
"वे कभी-कभार अदालत जाते हैं!"
"कृषि-कृषि के बारे में क्या कहा जाता है! क्या यह घर तक ही सीमित है या कुलों द्वारा की जाती है?"

वे कुछ भी कर सकते हैं!
"एक दिन वो मालिक बनेगी! अभी तुम्हारे साथ क्या चल रहा है?" शंकरलाल ने मुझे सोने का एक टुकड़ा दिखाते हुए पूछा।
"मैं कुछ दिनों के लिए सेना में था, लेकिन खेल के दौरान हॉकी स्टिक से मेरे पैर में चोट लग गई, इसलिए मैं विकलांग हो गया।"
अरे बाप रे! यह कहाँ चला गया?
मैंने अपनी पैंट के ऊपर अपना घुटना उठाकर उस जगह की ओर इशारा किया। "लेकिन क्या तुम चल सकते हो?"
"बहुत बढ़िया! इसे कोई आसानी से पहचान नहीं पाएगा!"
और मान लीजिए, अगर हम इसे स्वीकार कर भी लें, तो इसमें क्या हर्ज है? अरे, साधु?
एक नौकर दौड़ता हुआ आया।
"अल्का क्या कर रही है?"
कॉलेज जाने की तैयारी कर रही हूँ!
मुझे उसे नीचे आने के लिए कहना चाहिए! और चाय लाने के लिए भी कहना चाहिए! ‘‘जी ऽ!’’
मैंने उस हॉल का निरीक्षण करना शुरू किया जहाँ हम बैठे थे। एक ऊँचा सोफा सेट, किनारों पर मखमल से ढके दो दीवान, कोनों में चीनी शैली के लैंपशेड, दीवार पर दो बड़ी तेल चित्रकलाएँ। नीचे एक गहरा लाल कश्मीरी कालीन। जब मैं हॉल को देख रहा था जहाँ से मुझे ऐश्वर्या की एक झलक मिली, तभी अलका धीरे- धीरे बीच की गोलाकार सीढ़ियों से नीचे उतरी।
एक विदेशी की बाईस वर्षीय बेटी सलीके से सजी-धजी थी। उसका सादा मेकअप उसकी खूबसूरती में झलक रहा था। उसने अनजाने में ही अपनी आँखों के कोनों पर मस्कारा की एक लकीर खींच रखी थी। उसने अपनी धनुषाकार भौहों पर आइब्रो पेंसिल से निशान बना रखा था। उसने मेरी तरफ देखा और अपने कंधों से बहते हुए कपड़े को ठीक किया। अब तक मैंने कई खूबसूरत लड़कियों को करीब से देखा था। अगर मैं कहूँ तो, भवानी नगर में हमारा घर कॉलेज रोड पर था। यही वो सड़क थी जिससे लड़कियाँ कॉलेज जाती थीं। मैं रात के ग्यारह बजे सड़क पर बैठा था और सड़क पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। मुझे इतनी सारी खूबसूरत लड़कियाँ दिखाई दे रही थीं। क्या पामिला, जो एक दिन पहले पुणे में मेरे साथ आई थी, कम खूबसूरत थी? और तो और, रत्नपुर की राजकुमारी, रत्नप्रभा? कुलीन सुंदरता की साक्षात मूर्ति! लेकिन इन सबसे बढ़कर, मुझे अलका की सुंदरता में कुछ ऐसा महसूस हुआ जिसने मुझे और भी मोहित कर लिया! उसकी एक व्यंग्यात्मक नज़र ने मुझे आहत कर दिया।
"अल्का, ये समर ठाकुर हैं। धीरज ठाकुर भवानी नगर में वकील हैं, उनके बेटे! वो कुछ दिनों के लिए सेना में थे!"
मैं उठा और अल्का को नमस्कार किया।
अलका ने एक हाथ में किताबें पकड़े हुए मेरा अभिवादन किया और शंकरलाल से कहा,—
"पापा, आज मेरे पास सिर्फ एक घंटा है। मैं बाद में वापस आऊँगी!"

"लेकिन हमें जाकर देखना क्यों चाहिए?" शंकरलाल ने अपनी नाक से धुआं निकालते हुए धीरे से पूछा।
"हाँ! अब तर्क का समय आ गया है!"
शंकरलाल ने मजाक का नाटक करते हुए कहा, "मुझे समझ नहीं आता कि तर्क सीखने के लिए कॉलेज क्यों जाना पड़ता है! तर्क सिखाया नहीं जा सकता, अल्का, यह जन्मजात होना चाहिए! इसमें क्या गलत है?"
मैंने मुस्कुराकर सिर हिलाया।
अल्का ने मेरी तरफ फिर से देखा। मैं कोने में रखे लैंपशेड को घूरता हुआ बैठा रहा। तभी, जब भिक्षु चाय लेकर आया, अल्का ने अजनबी से कहा, "मैं अभी आती हूँ, पापा!"
"ठीक है, ठीक है!"
शंकरलाल ने खुद ट्रे से चाय का प्याला उठाया और मुझे थमा दिया। मुख्य द्वार से बाहर जा रही अलका को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "चलो यार! हमें मधुबन जाना है। आज मेरी गाड़ी खराब हो गई है!"
जब अल्का खुद गाड़ी चलाकर कॉलेज गई, तो शंकरलाल ने मुझसे कहा, "वह पढ़ाई में बहुत अच्छी है! दो साल पहले उसने केंद्र में सामाजिक सेवा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। मुझे उसकी शिक्षा पर एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ा! उसकी सारी शिक्षा छात्रवृत्ति से हुई है!"
मैं कोट की जेबों में हाथ डाले और चेहरे पर मुस्कान लिए सुन रहा था। शंकरलाल कह रहे थे, "एक लड़का और एक लड़की!"
"वे कहां हैं?"
"वह मुंबई में है!"
"क्या आपको लगता है कि आप सीख रहे हैं?"
आप कहाँ पढ़ रहे हैं? मैं एक दवा कंपनी में काम कर रहा हूँ। समरबाबू, मैं क्या कहूँ, भाग्य इंसान को बहुत कुछ देता है, लेकिन क्या आप बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करना चाहते? उसका स्वभाव तो चमत्कारी है! मैंने कहा, हे पिताजी, ऐसी संपत्ति है। अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर आराम से मधुबन में रहने चले जाइए; लेकिन मैंने आपकी बात नहीं मानी! गोरेगांव में एक ब्लॉक है। कहते हैं कि पत्नियाँ और बच्चे मुंबई छोड़कर नहीं जाने चाहिए! पता नहीं उस मुंबई में है भी या नहीं! इस अल्का ने इतनी बार शादी कर ली कि मेरी ज़िम्मेदारी ही खत्म हो गई! समरबाबू, इस जीवन में मुझे कितने लोगों की चिंता करनी है?
मैं लगातार सिर हिलाता रहा।
शंकरलाल ने मुझे अपने काम का इतिहास सुनाते हुए कहा, “तीस साल पहले जब मैं नासिक आया था, तब मेरे पास पहनने के लिए कपड़े भी नहीं थे। मुझे एक वीड़ा कताई कारखाने में आठ आना प्रतिदिन की मजदूरी पर नौकरी मिल गई। मालिकों ने मुझ पर भरोसा किया। मुझे वीड़ा कारखाने में मुकदम के पद पर पदोन्नत किया गया! धीरे-धीरे कारखाना मेरे हाथ में आ गया; लेकिन कौन जाने मालिकों के मन में क्या चल रहा था! उन्होंने कारखाना बेच दिया और अंगूर का बाग लगाने का फैसला किया! उस समय अंगूर के बाग बहुत कम थे!”

"तो ठीक है?"
"तो क्या हुआ, आपने जमीन खरीदी, अंगूर के पौधे लगाए; लेकिन चार महीने के भीतर ही मालिक अचानक छोड़कर चला गया! कोई भी व्यवसाय कभी लाभदायक नहीं होता!"
उनका उत्तराधिकारी कौन है?
"मेरी एक पत्नी थी; मेरी दो बेटियाँ थीं। लेकिन वे खेती-बाड़ी बहुत कम करती थीं? सारी ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई। मैंने बेटियों की शादी करवा दी। मकान मालकिन उनकी देखभाल के लिए मौजूद थीं।"
"तो यह मूल संपत्ति आपकी नहीं है?"
शंकरलाल यह सुनकर हँसे और बोले, "संपत्ति किसी की नहीं होती। क्या कोई व्यक्ति जाते समय उसे अपने साथ ले जाता है? यह ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई है! अब जब अलका की शादी हो गई है, तो बस बात खत्म..."
शंकरलाल अपनी मूल स्थिति में लौट आया। उसके कथन से मुझे यह स्पष्ट हो गया कि वह अलका के लिए जल्द से जल्द विवाह की व्यवस्था करने के लिए उत्सुक था। "अच्छा, अब आप ऊपर जाइए, नहा लीजिए, वगैरह। अलका जल्दी ही आ जाएगी। फिर हम मधुबन चलेंगे। मैं आपको अपना अंगूर का बाग दिखाऊँगी। देखिए एक आदर्श माली कैसा होता है! अरे साधु! बच्चों को अतिथि कक्ष में ले जाइए!"
मैं भिक्षु के साथ उस हॉल की गोलाकार सीढ़ियों से ऊपर गया। सामने अलाका का कमरा था। कमरे का दरवाजा खुला हुआ था।
"इसके लाभ अनगिनत हैं!" भिक्षु ने बिना पूछे ही मुझसे कहा।
उस कमरे के दरवाज़े पर ही मुझे इत्र की खुशबू महसूस होने लगी। माघा के जाने से पहले अल्का ने मेरे ऊपर जो इत्र छिड़का था, उसकी कुछ बूँदें अभी भी हवा में तैर रही थीं। सामने ड्रेसिंग टेबल पर ढेर सारे सामान रखे थे। बगल में एक अलमारी थी, जो बंद थी, लेकिन मैं अंदाज़ा लगा सकती थी कि उसमें कितनी तरह की साड़ियाँ होंगी। साधु ने मेरे लिए अतिथि कक्ष का दरवाज़ा खोला। मैंने अपना बैग मेज़ पर रखा और जूते उतारे। मैंने साधु से कहा, “मैं थोड़ी देर में स्नान कर लूँगी। गर्म पानी की एक बाल्टी लाकर स्नानघर में रख दीजिए!”
भिक्षु हँसते हुए बोला, "गुरुजी, गर्म पानी बाथरूम में है! क्या आपने गर्म पानी का बटन दबाया था?"
"क्या ऐसा है? तो फिर ठीक है!"
और मुझे क्या लाना चाहिए?
मुझे कुछ नहीं चाहिए!
भिक्षु के जाने के बाद, मैंने कमरे का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया और पैर फैलाकर पलंग पर लेट गई। उसी क्षण मेरे मन में एक विचार आया, क्या इस अल्का से शादी करके मेरा लक्ष्य पूरा हो जाएगा?... दरअसल, मुझे एक ऐसी बहू चाहिए थी जो गरीब हो और मेरी माँ के यहाँ काम करती हो! यह एक करोड़पति पिता की लाडली बेटी है! वह खुद कॉलेज जाती है! फैशनेबल है! क्या सिर्फ एक गुण - उसकी सुंदरता - के आधार पर उसका चुनाव करना सही है?

तभी नीचे से एक अजनबी ने आवाज़ दी, "समरबाबू! क्या आप ठीक हैं? देखो, अलका आ गई है!"
मैं बिस्तर से उठा। मैंने कहा, "क्या यह इतनी जल्दी चला जाता है और तुरंत वापस आ जाता है? तुमने इतने कम समय में किस तरह की तर्कशक्ति सीख ली है?" नहाने और कपड़े बदलने के बाद मैं नीचे आया। वे दोनों मेरा इंतज़ार कर रहे थे। अल्का गाड़ी चलाने के लिए बैठ गई। मैं उसके बगल में बैठा था। शंकरलाल पीछे बैठा सिगरेट का आनंद ले रहा था, उसके पैर किसी पेड़ पर बैठे शेतजी की तरह फैले हुए थे।
चौदह एकड़ में फैले अंगूर के बाग, बीच में 'मधुबन' लिखा हुआ एक बंगला। बंगले में बेंत का फर्नीचर था, लेकिन गद्दे रबर के फोम से बने थे! फोन था। बिजली थी। नौकर थे। किसी चीज की कमी नहीं थी! अलका की मोहक सुंदरता के आगे, मुझे अब अपनी माँ की देखरेख में एक गरीब बहू की जरूरत महसूस नहीं होती थी। अलका की निगाहों, मुस्कान और बातों में एक अलग ही आकर्षण था, एक मोहक मोह। मधुबन पहुंचे शंकरलाल ने अलमारी से बोतल निकाली और उसे मेज पर रखते हुए मुझसे कहा,-
"अल्का आपको पूरा बगीचा दिखाएगी। मैं थोड़ी देर आराम करने जा रही हूँ!" चौदह एकड़ का बगीचा था, लेकिन स्वच्छता सराहनीय थी। सीमेंट में लोहे के कोण लगे हुए थे। ऊपर एक तार की जाली थी और उस जाली पर जटिल नक्काशीदार पत्तियों वाली लताएँ थीं। मैं वहाँ अंगूर के फूल खिलने के मौसम में गया था! अल्का मुझे जानकारी दे रही थी...
‘‘ये लताएँ अनाबेशाही की हैं। इसके आगे वाली पंक्ति काली साहब की है, फिर ये पंक्तियाँ दिखाई देती हैं, ये थॉमसन सिडलेस की हैं और इसके आगे वाली पंक्ति चयन सात की है!’’
मैंने पूछा, "तुम्हें कौन सा पसंद है?"
"मुझे तो अंगूर पसंद ही नहीं हैं!" अल्का ने अपनी आँखें मनमोहक ढंग से झपकाते हुए कहा।
"आश्चर्य!"
"ओह, उसे देखते ही मेरी नाक से बदबू आने लगती है!"
"यह सच है! हमारे भवानी नगर में गन्ने के खेत हैं; लेकिन मुझे वहां जाकर गन्ने का रस पीने का मन नहीं करता!"
"मुझे गन्ने का रस बहुत पसंद है!" अल्का ने कहा।
"हमारे पास कुछ चने हैं। पापा के कुछ पुराने दोस्त उन्हें जग में भरकर घर लाते हैं; लेकिन पापा उन्हें क्या कहते हैं, क्या आपको पता है?"
वे क्या कहते हैं?
"काश मैं भी इतनी स्वादिष्ट शराब बना पाता!"
अरे बाप रे! तो हमारे पापा और तुम्हारे पापा का व्यवहार बिल्कुल एक जैसा है! पापा हर मौसम में इन ज़्यादा पके हुए अंगूरों को किण्वित करके भट्टी में शराब बनाते हैं! उन्हें तो शराब खरीदना भी पसंद नहीं है!

"लेकिन क्या, तुम ये सब छोड़कर भवानी नगर में रहना चाहोगी?" मैंने अचानक अलका से पूछा। उसने मुझे अजीब नज़रों से देखा और बोली, "तुम्हारा क्या मतलब है? मुझे समझ नहीं आ रहा है।"
"क्या तुम्हारे पिता ने तुमसे कुछ नहीं कहा?"
"क्यों नहीं?"
मुझे लगा तुमने ही कहा था!
"आपको क्या लगता है उन्होंने क्या कहा होगा?"
मुझे लगा था कि आपको शायद इस बात का अंदाजा होगा कि मुझे यहाँ क्यों बुलाया गया है!
"मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है!" अल्का ने ईमानदारी से कहा।
मुझे लगा कि मैंने यह विषय बेवजह उठाया था। मुझे पूरा यकीन था कि शंकरलाल ने अलका को मेरे आने का मकसद नहीं बताया था। हम बातें करते-करते मधुबन लौट आए। शंकरलाल ने मुस्कुराते हुए कहा, "समरबाबू, आपको बगीचा कैसा लगा?" "बहुत अच्छा!"
"पापा!" अल्का ने बीच में कहा, "क्या आपने उसे जानबूझकर अपने घर बुलाया है?"
"हां," शंकरलाल ने थोड़ा असमंजस में आकर कहा।
"किसलिए?"
"लो इसे!" शंकरलाल ने बड़ी मुस्कान के साथ मुझसे कहा, "मुझे समझ नहीं आता कि कॉलेज में इन लड़कों को किस तरह की बेवकूफी भरी बातें सिखाई जाती हैं! आजकल की लड़कियाँ क्यों नहीं समझतीं कि हमारे परिवार का एक सुंदर युवक उनके घर क्यों आता है? और उन्हें तर्क-वितर्क करना आता है!" शंकरलाल ने अपने सामने रखा गिलास खाली किया और मेरी और अलका की तरफ देखने लगा, और फिर अलका शरमा गई! शरमाने के बाद वह बहुत खूबसूरत लग रही थी। मेरा मन किया कि मैं उसकी कमर में हाथ डालकर उसे फिर से बगीचे में ले जाऊँ! लेकिन यह मुमकिन नहीं था! नौकर दूसरे कमरे में खाने की थालियाँ लगाने लगा था। चिकन करी की महक गायब हो चुकी थी। नाक से सिगरेट का धुआँ निकालते हुए शंकरलाल ने मुझसे कहा, "धीरजलाल और मैंने कई बार साथ में शराब पी है! हम दोस्त हैं, अब से हमारी दोस्ती खून के रिश्ते से जुड़ जाएगी! क्या तुम्हें अलका पसंद है?" मैंने शर्म से अपना सिर झुका लिया। तब मुझे पता चला कि अल्का न केवल सबकी चहेती थी, बल्कि बेहद पसंद की जाती थी। उसका व्यवहार, उसकी बातें और उसकी मुस्कान, सब कुछ मनमोहक था।
- ०-०-०-

७
उस समय नासिक शहर में अलका जितनी खूबसूरत कोई और लड़की नहीं थी। वह कॉलेज की रानी थी। साथ ही, पढ़ाई में होशियार होने के कारण उसका व्यक्तित्व भी विशेष महत्व रखता था। सुंदरता और बुद्धिमत्ता का संगम दुर्लभ होता है। लेकिन यहाँ सुंदरता, बुद्धिमत्ता और समृद्धि का त्रिगुणात्मक संगम देखने को मिला था!
मैं शंकरलाल परदेशी के बंगले में छह दिन रुका। इन छह दिनों के दौरान, अलका और मैं बहुत करीब आ गए। अलका मेरे प्रति बहुत खुले विचारों वाली थी। उसने मुझसे मेरे पिता और माता के बारे में सारी जानकारी पूछी। जब मैंने उसे अपने अतीत के बारे में बताया, तो उसने कहा,-
आपके पास बहुत अनुभव है!
"हाँ, लेकिन अब मुझे कहीं बसने का मन कर रहा है! मुझे लगता है कि मैं इस भटकने और भागदौड़ करने से थक गया हूँ!"
"लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि उस सिख को हॉकी स्टिक से तुम्हारी पिटाई क्यों करनी चाहिए?"
"वह हमेशा फ्लश में हार जाता था, उसने मुझसे अपना बदला ले लिया!"
"वह हमेशा हारता कैसे रह सकता है? जुए में, किसी एक की हार किसी दूसरे की हार होती ही है। मुझे समझ नहीं आता कि वह इस बात को लेकर इतना प्रतिशोध क्यों लेता है!"
दरअसल, मुझे बहराम ईरानी के चोरी हुए चश्मे के बारे में अलका को बता देना चाहिए था। लेकिन उसे बताने का मतलब खुद को बदनाम करना होता। इसलिए मैंने जानबूझकर उसे चश्मे के बारे में नहीं बताया।
हमारी पसंद एक जैसी थी। मैं हमेशा से यही करती आई थी: अच्छे कपड़े पहनना, अच्छा खाना और सुखी एवं संतुष्ट जीवन जीना। अल्का भी यही करती थी। लेकिन एक मामले में वह मुझसे बेहतर थी, शिक्षा! जब मैंने उसे बताया कि मैं नकल करते पकड़ी गई थी, तो वह हंस पड़ी और नाराज़ भी हुई, और मुझसे बोली, "जब तुम्हारे दो साल पूरे हो जाएंगे, तो तुम्हें ग्रेजुएट करवाना मेरी ज़िम्मेदारी होगी!"
मैंने कोहनियों को मोड़कर हाथ बांध लिए और कहा, "कृपया मेरी एक मदद कीजिए! अब से मैं गलती से भी कॉलेज का चेहरा नहीं देखूंगी!"
लेकिन अगर मैं स्नातक होना चाहूँ तो क्या होगा?
"बेशक तुम हो। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, चाहे तुमने दो डिग्री ही क्यों न ली हो!"
मुझे अलका पसंद थी और अलका मुझे पसंद करती थी। जब मैं अपने माता-पिता को टेलीग्राम भेजने डाकघर गया, तो मैंने देखा कि एक अधेड़ उम्र का आदमी मेरा पीछा कर रहा है। मैं जानबूझकर रुक गया। वह आदमी मेरे पास आया और मुझसे पूछा, "क्या आप समरसिंह ठाकुर हैं?"
"हां तुम कौन हो?"
मैं शंकरलाल परदेशी हूँ!

मैंने आश्चर्य से पूछा, "तुमने क्या कहा?"
"मैं शंकरलाल परदेशी हूँ! मैंने ही ठाकुर साहब को चिट्ठी भेजी थी। उन्होंने ही आपको मेरी बेटी से मिलने भेजा था; लेकिन गलती से आप शंकरलाल परदेशी के घर चले गए। मैं शंकरलाल को नासिक से जानता हूँ। अगर मैं आपको उनके बारे में कुछ बताऊँगा भी, तो आप कहेंगे कि मैं स्वार्थवश बता रहा हूँ! आपको उनके और उनकी बेटी के बारे में किसी से भी पता कर लेना चाहिए! आप गलत जगह आ गए हैं!"
मैं उस सज्जन के शब्दों से स्तब्ध रह गया। मुझे यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि शंकरलाल परदेशी, जिनके साथ मैं पिछले छह दिनों से रह रहा था, बिल्कुल अलग थे।
"लेकिन वे शंकरलाल दादी को भी जानते हैं! उन्होंने हमारी दादी को भी संदेश भेजा है कि वे आकर उनकी बेटी से मिलें!"
"ऐसा करो, कुछ देर के लिए मेरे घर आओ, मैं तुम्हें सब कुछ समझा दूंगा!" मैंने कहा, "मैं अब कहीं नहीं जा सकता!"
‘‘का?’’
मैंने अल्का के सामने अपनी पसंद ज़ाहिर कर दी है। अल्का से मेरी शादी पक्की है!
"समरबाबू, मैं आपसे हाथ मिलाता हूँ। ऐसा जल्दबाजी वाला फैसला मत लो, तुम्हें जीवन भर इसका पछतावा होगा!" सज्जन ने काकुलती के पास आते हुए कहा। "लेकिन आपने इतनी देर क्यों कर दी? मुझे यहां आए छह दिन हो गए हैं। आपने मुझे पहले संदेश क्यों नहीं भेजा?"
"आप संदेश कैसे भेजेंगे? कल रात मुझे ठाकुर साहब का टेलीग्राम मिला था। समर अभी तक वापस क्यों नहीं आया! फिर मैंने छानबीन शुरू की, और तब मुझे पता चला कि मिलते-जुलते नाम वाले इस विदेशी ने आपको बेवकूफ बनाया है।"
"देखो, अब मुझे कुछ भी बताने का कोई मतलब नहीं है। ऐसा लगता है कि अल्का और मैं लगभग शादीशुदा हैं, है ना?"
"अब जब मैंने यह कह दिया है, तो मुझे खेद है। लेकिन क्या आप कम से कम यह स्वीकार करेंगे कि जिस शंकरलाल परदेशी में आपके पिताजी ने आपको भेजा है, वह वही शंकरलाल नहीं है?"
मैंने दृढ़ता से कहा, "अब इसे स्वीकार करने या अस्वीकार करने का कोई सवाल ही नहीं उठता!"
"तो फिर यह खत्म हो गया! लेकिन कृपया मेरी एक आखिरी विनती मान लीजिए," उसने रुकते हुए कहा।
"कैसे?"
"कम से कम एक बार मेरी बेटी से मिलने जाओ!"
"यह असंभव है! मैंने तुमसे कहा था कि मैं अल्का के प्रति समर्पित हूँ!" "शंकरलाल ने आपको गुमराह करके धोखा दिया है, श्री ठाकुर! मेरी बेटी को कोई और जगह मिल जाएगी! मुझे आपके प्रति इतना घमंडी होने का कोई कारण नहीं है। लेकिन मैं आपको सच बताने आया हूँ! मैं आ रहा हूँ! सामने कोने पर जो महल आप देख रहे हैं, वह मेरा ही है! शंकरलाल मुझे विदेशी, ठेकेदार कहता है! मेरे

पास एक छोटा सा अंगूर का बाग भी है। लेकिन यह मेरा अपना काम है! मैंने इसे किसी को धोखा देकर या ठगी करके हासिल नहीं किया है! मैं आ रहा हूँ!"
मैं डाकघर की ओर जा रहा था। डाकघर सिर्फ पाँच मिनट की दूरी पर था; लेकिन उस सज्जन की बातों ने मुझे आगे बढ़ने से रोक दिया! नामों की समानता के कारण ज़रूर कोई घोटाला था! डाकघर जाने के बजाय, मैं शंकरलाल कॉन्ट्रैक्टर के घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में मुझे एक पानपत्ती की दुकान दिखी। जैसे ही मैं दुकान के पास पहुँचा, पानपत्ती बेचने वाले ने हाथ जोड़कर मुझसे कहा, "नमस्कार साहब!"
"हेलो! लेकिन जब मैंने आपसे शंकरलाल परदेशी के बंगले के बारे में पूछा, तो आपने-"
"मैंने कुछ नहीं किया! मैंने तो बस आपको बताया था कि शेठ कार से आया था, उसका नाम शंकरलाल परदेशी था। लेकिन मुझे बाद में समझ आया कि आप ठेकेदार परदेशी के पास जाना चाहते थे!"
"क्या आपको पता है कि उनकी एक बेटी है?"
"जी हां। इस गली में रहने वाले सभी विदेशी मेरे रिश्तेदार हैं!" दुकानदार ने कहा।
"क्या आप अल्का को जानते हैं?"
पनपट्टीवाले ने हंसते हुए कहा, "वह नासिक को अच्छी तरह जानती है!"
"क्या इस ठेकेदार की बेटी अल्का से ज्यादा खूबसूरत है?"
पनपट्टीवाले ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "बाबूजी, मैं ठेकेदार परदेशी की रेखा पहचानता हूँ और मैं बद्या सेठ की रेखा भी पहचानता हूँ; लेकिन मैं यह नहीं बता सकता कि कौन दाईं ओर है और कौन बाईं ओर!"
‘‘का?’’
"वे दोनों मेरे रिश्तेदार हैं!"
"कुछ गड़बड़ हो गई!" मैंने कहा।
अखबार बेचने वाला बड़ा धोखेबाज था। वह अपनी बातों से मुझे और भी भ्रमित कर रहा था। मुझे पूरा यकीन हो गया था कि शंकरलाल, जिसने पापा को चिट्ठी भेजी थी, अलका का पिता नहीं था।
मैं ठेकेदार परदेशी के घर गया। वह एक कुर्सी पर लेटा हुआ था। जैसे ही हम बैठे, उसने कहा, "आओ!"
मैं उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। कुछ उलझन भरी हालत में मैंने बोलना शुरू किया, "छह दिन पहले, मैं उस पानपत्तीवाले की दुकान के पास खड़ा होकर आपसे सवाल कर रहा था। फिर..."
जब मैंने उसे सारे तथ्य समझा दिए, तो उसने शांत भाव से कहा,
"जब ऐसा मौका आता है तो वे तुम्हें अकेला छोड़ देते हैं? उन्हें अपने परिवार से ऐसा नौजवान कहां मिलेगा?"
"क्यों नहीं? अल्का बुद्धिमान और खूबसूरत है!"
"देखो, समरबाबू, मैं आचरण के कुछ सिद्धांतों का पालन करती हूँ। दूसरों का मज़ाक उड़ाकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना मेरा तरीका नहीं है। लेकिन मैं

तुम्हें यह स्पष्ट रूप से बताना चाहती हूँ: अलका से शादी करके तुम खुश नहीं रहोगे!"
लेकिन आपकी बेटी -
मैं अभी आपको यह नहीं दिखाऊंगा! क्या आप इसके लिए प्रतिबद्ध हैं?
"हाँ, लेकिन-"
"क्षत्रिय जाति का राजा एक बार दिए गए वचन को कभी वापस नहीं लेता। आपने उसे अपना वचन दिया है, है ना?"
‘‘हो.’
मैं काफी देर तक चुपचाप बैठी रही; लेकिन वह सज्जन स्पष्ट रूप से कुछ भी कहने को तैयार नहीं थे। उन्होंने बस इतना ही कहा था कि अलकाशी से मेरा विवाह सुखमय नहीं होगा, और मेरी जिज्ञासा को चरम सीमा तक बढ़ा दिया था। वे इससे ज्यादा कुछ भी बताने को तैयार नहीं थे!
मैं बिना फोन किए ही बहुत अजीब हालत में बंगले पर लौट आई! मैंने शाम को अपना सामान पैक करना शुरू किया। अलका वहाँ आई और बोली,
"ये क्या है? तुम पापा और आइना को फोन करने वाले थे, है ना?"
मैं आपको फोन करने वाला था, लेकिन मैंने खुद जाकर मिलने का फैसला किया है! ‘‘का?’’
"आसान!"
"यह काम नहीं चलेगा।" अल्का ने मेरा हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से मैंने थैले में ठूंसे हुए कपड़े बाहर निकाले। अल्का की सुंदरता मनमोहक थी; लेकिन उसके स्पर्श में एक अनोखा जादू भी था। उसके शरीर का स्पर्श एक तड़प जैसा था। मुझे उसका हाथ छोड़ने का मन ही नहीं कर रहा था!
मेरे सितारे का इंतज़ार करते हुए, पापा और मम्मी दोनों नासिक आ गए। मैं बाहर उतर गई। वहाँ उन्हें सब कुछ समझ आ गया। उन्होंने मुझे बुलवाया। पिताजी ने कहा, "क्या तुम्हें वो अल्का पसंद है?"
‘‘हो.’’
"तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है!"
तभी मां आगे आई और बोली, "उसे उस लड़की से शादी नहीं करनी चाहिए थी!" "क्यों?" पिताजी ने पूछा।
"उसका और इसका रिश्ता नहीं चलेगा!"
"आपने यह निर्णय किस आधार पर लिया?"
"महिलाएं सब कुछ समझती हैं!" मां ने प्रसन्नता से कहा।
"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा!" पापा ने कहा, "आजकल लड़के-लड़कियों को एक-दूसरे की पसंद और स्वभाव के आधार पर फैसले लेने पड़ते हैं! मैं समर के फैसले से सहमत हूँ!"
"अरे, लेकिन कम से कम आप उस ठेकेदार की बेटी को देखना तो चाहती थीं! वो बहुत अच्छी लड़की है। वो पूरे घर का ख्याल रखती है। वो खेत की भी देखभाल करती है। मुझे तो वैसी ही बहू चाहिए थी। मैं सांबर झील के आसपास का खेत नहीं देख सकती थी, मैं चाहती थी कि मेरी बहू कम से कम उसकी देखभाल तो करे!"

पिताजी ने अपनी माँ की बात पर असहमति जताते हुए कहा, "यह सरासर बकवास है! समर, तुम उसकी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती!"
आखिरकार, कुछ हिचकिचाहट के बाद, मैं उन दोनों को शंकरलाल शेठ परदेशी के बंगले पर ले आया। पापा मेरी 'पसंद' से खुश थे क्योंकि उन्हें शाम को ड्रिंक मिलने वाली थी, लेकिन मम्मी किसी वजह से नाराज़ थीं!
अल्का अपने सिर पर घूंघट डाले अपनी मां के चरणों में गिर पड़ी। उसकी मां ने उसे आशीर्वाद देने के लिए केवल अपना हाथ उठाया, लेकिन कुछ नहीं कहा!
मुझे समझ नहीं आया कि वह अल्का के बारे में ऐसा क्यों सोचती थी, लेकिन यह सच था कि वह परेशान थी!
अगर पापा और मैं एक ही पक्ष में होते तो मम्मी के विरोध की वजह से उन्हें कितना नुकसान उठाना पड़ता?
हमारी शादी की तारीख तय हो गई थी। शंकरशेठ परदेशी ने अकेले शादी के खाने पर ही चार से पाँच हज़ार रुपये खर्च कर दिए। चार दिन बाद, हमारी शादी बड़े धूमधाम से हुई। अलका नासिक छोड़कर जाने से बहुत दुखी थी। शंकरशेठ परदेशी के बेटे कुलदीप सिंह शादी में आए और उसी दिन वापस चले गए।
भवानी नगर पहुँचने के बाद, मैं इलाके के कई रिश्तेदारों से मिला। पिताजी बहुत खुश थे। पहुँचने पर शंकरशथानी ने दुल्हन को व्हिस्की का पूरा एक डिब्बा दिया था। हालाँकि, मेरी माँ मुझसे कहती रहीं, “समर, तुमने जल्दबाजी में फैसला लिया! जो लड़की राजसी-क्षत्रिय घर में आती है, वह तो शान से खड़ी होती है, लेकिन जब जाती है, तो गिर पड़ती है!”
मैंने अपनी माँ से पूछा, "तुमने किस तरह की कहावत बनाई?"
"राजा या क्षत्रिय की विवाहित पुत्री अपने घर को तभी छोड़ती है जब उसकी मृत्यु हो जाती है। वह जीवित रहते हुए घर नहीं छोड़ सकती!"
"लेकिन आप अल्का के बारे में ऐसा क्यों सोचते हैं?"
मैं आपको कुछ नहीं बताना चाहता; आप इसे अपने अनुभव से जान लेंगे!
शादी के छह महीने बाद भी, मेरी भावनाएँ नहीं बदलीं। अलका और मैं अब दो अलग-अलग इंसान नहीं रह गए थे। अलका मेरी माँ को खाना बनाने में भी मदद करती थी। लेकिन फिर भी, मेरी माँ की उसके बारे में राय बदलने को तैयार नहीं थी। बाद में, मुझे अपनी माँ पर गुस्सा आने लगा! मैंने उनसे बात करना बंद कर दिया क्योंकि मुझे लगता था कि वह बिना किसी कारण के अलका के प्रति मन में द्वेष पाल रही हैं।
अल्का ने शादी से पहले मुझसे कहा था, 'मैं शादी के बाद अपनी ग्रेजुएशन पूरी करना चाहती हूँ!' मैंने भी उसकी बात मान ली थी। भवानी नगर आने के बाद उसने कॉलेज में दाखिला ले लिया। हालाँकि, मेरी माँ को हमारा यह फैसला पसंद नहीं आया। अपनी असहमति जताते हुए उन्होंने मुझसे कहा,-
"तुमने उसके दिमाग में और क्या-क्या भर दिया?"
"मैंने उस पर दबाव नहीं डाला। वह बीए करना चाहती थी। मैं उसके रास्ते में क्यों बाधा बनूँ?"
क्या आप नौकरी करना चाहते हैं?

मुझे नौकरी क्यों करनी चाहिए? अगर मैं बीए कर लेता हूँ, तो इसमें क्या हर्ज है?
इस मामले में भी पापा हमारे साथ थे। वे हमसे आगे भी थे! उन्होंने अल्का से कहा,
"अल्का, सिर्फ़ बी.ए. करके मत रुको, लॉ में दाखिला लो! इस भवानी नगर में अभी तक एक भी महिला वकील नहीं है। तुम्हें यह सम्मान मिलना चाहिए! मैं चाहती थी कि समर वकील बने। लेकिन वो कैसा वकील बन रहा है! चाहे उसे अमर कहा जाता हो, मुझे उस पर भरोसा नहीं है। कम से कम मेरे ये क्लाइंट्स परिवार में ही रहेंगे, किसी और को देने की ज़रूरत नहीं!"
अल्का ने बड़ी विनम्रता से कहा, "आपके आशीर्वाद और प्रोत्साहन से, वह भी संभव हो जाएगा, पापा!"
अल्का ने कॉलेज जाना शुरू कर दिया।
हालांकि मेरी मां ने शुरू में अलका से मेरी शादी का विरोध किया था, लेकिन बाद में उन्होंने ज्यादा शिकायत नहीं की। अगर करती भी तो उसका कोई खास फायदा नहीं होता। शादी के बाद उनकी एक और इच्छा थी। वह घर में पालना जल्द से जल्द लाना चाहती थीं। अमर की मृत्यु के बाद पिछले बीस सालों से घर में पालना नहीं लाया गया था। इसलिए मेरी मां का मुझे जल्द से जल्द बच्चा पैदा करवाना स्वाभाविक था।
उस दिन मैं अपना रुमाल ढूंढ रही थी। ढूंढते-ढूंढते मैंने अल्का का संदूक खोला और उसमें दवाइयों की बोतलें देखीं। मैंने गर्भनिरोधक गोलियों की बोतल उठाई, उस पर लगा लेबल पढ़ा और अल्का से पूछा,
"यह क्या है? यह किसलिए है?"
अल्का कुछ नोट्स ले रही थी। उसने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "तुम वहाँ लड़ने क्यों गए थे? उस बोतल को वहीं छोड़ दो!"
मैंने बोतल हाथ में ली और उस मेज के पास गई जहाँ अल्का बैठी थी और कहा, "अगर माँ को इसके बारे में पता चल जाए तो वह क्या सोचेगी?"
"मुझे परवाह नहीं!" अल्का ने बेपरवाही से कहा।
"क्या मतलब, तुम्हें परवाह नहीं है?"
"मुझे डिग्री मिलने तक बच्चा नहीं चाहिए! क्या मुझे यह बात स्पष्ट करने की ज़रूरत है?"
उसके जवाब ने मुझे अवाक कर दिया। हालांकि, थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने कहा, "मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि तुम्हारी शिक्षा इतनी परेशानी खड़ी कर देगी!"
"तुम बेवकूफ हो, तुम्हें यह ख्याल नहीं आया!" अल्का ने अपनी नोटबुक में नोट्स लेते हुए कहा।
"लेकिन बच्चा होने के बाद, क्या आप आगे पढ़ाई नहीं कर पाएंगी?" मैंने पूछा। "असंभव! बच्चा तो कभी भी पैदा हो सकता है, लेकिन एक बार शिक्षा में रुकावट आ जाए तो वह कभी पूरी नहीं हो सकती! समर, अब तुम चुप रहो तो अच्छा होगा! मुझे आज बहुत सारे नोट्स पूरे करने हैं!"

मैं बिना कुछ कहे फर्श से नीचे उतर आया। माँ रसोई के काउंटर पर बैठी चावल चुन रही थीं। उन्हें ठीक से दिखाई भी नहीं देता था। उनकी आँखें चालीस साल की लग रही थीं। मेरी तरफ देखकर उन्होंने कहा, "समर, तुम्हारा चेहरा इतना पीला क्यों है?"
"यह कहाँ है?" मैंने चेहरे पर बनावटी मुस्कान लिए कहा।
"देखो, मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम चाहे कितना भी बदल जाओ, मैं समझती हूँ!" "ठीक है, ठीक है!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा, बात बदलने की कोशिश करते हुए, "आपमें कुछ गड़बड़ है, माँ। आपको लगता है कि चश्मा पहनने से मुझमें कुछ बदल गया है!"
मां ने यह बात नहीं मानी। शाम को मैं घर से निकल गई। मेरा दिमाग विचारों से सुन्न था। अलका के सिवा मेरे मन में कोई और ख्याल नहीं आ रहा था। आज जिस तरह से उन्होंने मेरे साथ लापरवाही बरती, वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आई। लेकिन अब मैं किसे बताऊं? मां ने आखिरी क्षण तक इस शादी का विरोध किया था। लेकिन मुझे उनकी बात पर यकीन नहीं था।
उस दिन शंकरलाल शेठ परदेशी ने मुझे नासिक में देख लिया! दरअसल ठेकेदार शंकरलाल ने मुझे बुलाया था; लेकिन अलका के पिता ने मुझे यह यकीन दिला दिया था कि मैं वही शंकरलाल हूँ। अलका की दौलत देखकर मेरी आँखें चमक उठीं। अलका की खूबसूरती ने मुझे मोह लिया। मेरी अंतरात्मा और सोचने-समझने की शक्ति गायब हो गई। मैं अलका को पाने की चाहत रखने लगा। लेकिन आज अलका ने अपना असली रूप दिखा दिया! उसे न तो मेरी और न ही मेरी माँ की कोई परवाह थी। जो भी उसकी पढ़ाई के रास्ते में आता, वह उसे तुच्छ समझती थी!
मैं काफी समय से धोंडू मास्टर नहीं गया था। फुटबॉल से मेरा रिश्ता लगभग खत्म हो चुका था। मेरे लिए पहले जितनी तेज़ दौड़ना नामुमकिन था। फिर भी, कभी-कभार फुटबॉल मैच देखने के लिए भवानी नगर चला जाता था।
धोंडू मास्टर एक बेंच पर तंबाकू से भरी एक पूरी टिकिया लेकर बैठे थे। जैसे ही मैं उनके पास पहुँचा, उन्होंने अपनी दो उंगलियाँ होठों पर रखीं और मुझे बगल में एक ज़ोरदार चुंबन दिया और मुझसे कहा,
"क्या, समर, तुम्हारी पत्नी के घर आने के बाद से तुमने बाहर जाना बंद कर दिया है?"
"ऐसा कुछ नहीं है, गुरुजी!"
"ओह, क्या आपकी पत्नी स्कूल जाती है?" शिक्षक ने मेरी जांघ पर हाथ रखते हुए पूछा।
"स्कूल नहीं, बल्कि कॉलेज!"
"हा, तो आप समझ गए होंगे कि मेरा मतलब क्या है! अच्छा, मेरे पास आपके लिए एक सुझाव है!"
"कैसे?"
"हमारी टीम में वापस आ जाओ!"
"क्यों? शोभा! क्या मैं दस फीट भी दौड़ सकती हूँ?"
"ओह, क्या गोली गोलकीपर बनेगा या नहीं? गोली को तो बहुत दौड़ना पड़ता है! गड्या, तुम्हारे टीम छोड़ने के बाद से सारा मजा ही खत्म हो गया!"

उस्ताद ने गला साफ किया और मुझसे कहा, "तुम्हारे ससुराल वालों की टीम आ गई है!"
"ससुराल वालों का घर?"
"जी हां, नासिक की टीम आ गई है। परसों हमारा और उनका मैच है। तुम गोलकीपर की भूमिका निभाओगे!"
"नहीं, गुरुजी! मैं आपका मैच देखने आऊंगा!"
भवानी नगर में हमेशा फुटबॉल मैच होते थे। शाहगंज के उस मैदान में! दरअसल, वहां कोई मैदान नहीं था। दो खेल के मैदान थे। इतने बड़े कि एक साथ पंद्रह हजार लोग बैठ सकें। फुटबॉल मैच इसी मैदान पर खेले जाते थे।
अगले दिन शाम चार बजे भवानीनगर स्पोर्ट्स क्लब और पंचवटी फुटबॉल क्लब के बीच फुटबॉल मैच था। पैर में चोट लगने के बाद से फुटबॉल में मेरी रुचि वास्तव में कम हो गई थी। लेकिन मैं उस पहलवान की तरह था जो बूढ़ा होने पर भी कुश्ती का मैच देखना नहीं छोड़ता। खेलना तो संभव नहीं था, लेकिन दूसरों को खेलते देखना सुखद था। इसके अलावा, मैंने एक बार भवानीनगर के शाहगंज मैदान को मशहूर कर दिया था।
उस दिन, मैं अपनी सामान्य जगह पर रुकने के बजाय, नासिक से आए दर्शकों की भीड़ के पीछे रुक गया। मैं नासिक निवासियों के समूह के पीछे इसलिए रुका ताकि हमारी भवानी नगर टीम के बारे में उनकी 'टिप्पणियाँ' सुन सकूँ। उनमें से किसी ने भी मुझे नहीं पहचाना।
ठीक चार बजे, दोनों टीमें शाहगंज के मैदान पर उतरीं। मेरे कई दोस्त भवानीनार टीम में थे। धोंडू मास्टर खुद भी उसी टीम के लिए खेलने वाले थे। अंपायर ने सीटी बजाई और मैच शुरू हो गया। गेंद इधर-उधर फेंकी जा रही थी। नासिक टीम के साथ मैच देखने आए पच्चीस-पच्चीस लोग कमेंट्री करने लगे।
एक ने कहा, "अरे, हमारे शंकरलाल शेठ के दामाद भी बहुत अच्छा फुटबॉल खेलते हैं!"
दूसरा: "लेकिन सेना में रहते हुए उसके पैर में चोट लग गई, इसलिए उसने खेलना बंद कर दिया!"
तीसरा: "अरे! लेकिन अल्की ने कितने लोगों को पागल कर दिया था? बिपिन सारदा, जयचंद राठौड़, चंद्या, राम धुलेकर - एक या दो, पूरे दस - उसने बारह लोगों को 'पागल' कर दिया था!"
पहले: “ओह, इसीलिए शंकरलाल सेठ उससे शादी करने के लिए इतने उत्सुक थे। हमारे इलाके में कोई भी उसे नहीं पा सका; इसीलिए शंकरलाल सेठ ने इस ‘बकरी’ को यहाँ पकड़ लिया!”
"क्या तुम उसके साथ ईमानदार रहोगे?" दूसरे ने सवाल किया।
"कौन जाने, लेकिन शंकरलाल तो वाकई बहुत बड़ा आदमी है, है ना?"
"ऐसा नहीं! आपने जमीन के मालिक को अपने नाम पर जमीन खरीदने के लिए मजबूर किया, और जमीन खरीदने के ठीक चार महीने बाद ही मालिक की मौत कैसे हो गई?" "उसने मेला को क्यों मारा?"

"राम, चले जाओ! लेकिन उसने मालिक की दोनों बेटियों की शादी करवाकर खुद को आज़ाद करवा लिया। उसने तो उन बेटियों से यह भी लिखवा लिया कि उनका उस ज़मीन से कोई संबंध नहीं है!"
"वह बहुत दृढ़ निश्चयी व्यक्ति है! जब मकान मालकिन की मृत्यु हुई, तो उसने मान लिया कि वह उसकी अपनी माँ है, ताकि लोग सोचें, 'देखो वह उस बूढ़ी औरत के प्रति कितना वफादार था!'"
"लेकिन इन सब का क्या फायदा? वो लड़का कुलदीप सिंह अपने पिता की तरफ देखता भी नहीं! वो तो अलका को भी पीटता था! वो नासिक छोड़कर इसलिए चला गया क्योंकि वो अलका के घमंड को बर्दाश्त नहीं कर सका?"
"लेकिन अल्की के बाकी लोगों को अच्छी जगह मिल गई! ऐसा लगता है कि उन ठाकुरों के भी यहाँ खेत हैं!"
"शायद, लेकिन यह हमारा अनुमान है। अल्की इस गाँव में भी नहीं रहेगी। ओह, जब उसे चार जगहों से पानी पीने की आदत हो जाएगी, तो क्या उसे एक जगह का पानी थोड़ा मीठा लगेगा?"
मेरा सिर चकराने लगा। मुझे पता चल गया कि अल्का और शंकरशेठ के बारे में मुझे अब तक क्या नहीं पता था! मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि शंकरशेठ ने संपत्ति गलत तरीके से हासिल की थी या कैसे; लेकिन यह सुनकर कि अल्का ने मुझसे शादी करने से पहले पंद्रह लोगों को शादी का प्रस्ताव दिया था, मेरा सिर चकरा गया। मैं धीरे-धीरे भीड़ से बाहर निकल गई। मैदान पर खेल पूरे ज़ोरों पर था। लेकिन अब मैं मैदान की तरफ देखना भी नहीं चाहती थी। मैं चलती रही। अल्का ने कॉलेज में जिन लड़कों को शादी का प्रस्ताव दिया था, उनके नाम मेरे कानों में गर्म तेल की तरह चुभ रहे थे।
'बिपिन सारदा, जयचंद राठौड़, चांड्या, राम धुलेकर....'
दो दिन पहले घर में वह दिल दहला देने वाली घटना घटी थी। आज यह सूची सुनकर और उसमें शंकरलाल शेठ परदेसी का इतिहास जानकर मेरा सिर सुन्न हो गया!
आज पता चला कि शंकरलाल शेठनी ने पानपत्ती की दुकान के सामने मेरा नाम सुनते ही मुझे अपनी कार में बिठाकर सीधे अपने बंगले पर क्यों ले आए। आज मुझे यह भी समझ आया कि ठेकेदार ने विदेशी अल्का के बारे में और कुछ क्यों नहीं कहा! अब यह भी स्पष्ट हो गया है कि पानपत्ती बेचने वाले ने अल्का का नाम सुनते ही हल्की सी मुस्कान क्यों दी थी। मुझे पछतावा हुआ जब मुझे याद आया कि ठेकेदार के मुझे ढूंढने आने पर मैंने उन्हें लापरवाही से जवाब दिए थे। लेकिन सबसे ज्यादा हैरानी मुझे मेरी माँ की अंतरात्मा की आवाज पर हुई! अल्का को देखते ही वह मेरे पीछे-पीछे डंडे की तरह लगी हुई थीं, नहीं चाहती थीं कि मैं इस लड़की से शादी करूँ! माँ को ऐसी क्या 'अंतर्ज्ञान' थी कि उन्हें इस शादी का विरोध करना चाहिए?
ये सब सुनकर, मेरे मन में निराशा की एक अजीब सी भावना उमड़ आई! मुझे लगा कि मैं अपना घर छोड़कर कहीं शरणार्थी बन जाऊं! मैं जहां भी मेरे पैर ले जा रहे थे, वहीं चल रहा था। मैं दौड़ नहीं सकता था, वरना पागलों की तरह भागता। मैं झील के किनारे खड़ा था। पश्चिम दिशा लाल रंग की थी। सुनहरी लाल किरणें नीले पहाड़ों पर पड़ रही थीं। वातावरण बहुत सुहावना था, लेकिन मुझे ऐसा लग

रहा था जैसे पश्चिम दिशा में आग लगी हो। मैं झील के किनारे चट्टान पर काफी देर तक बैठा रहा। सूरज डूब चुका था और अंधेरा धीरे-धीरे छा रहा था, लेकिन फिर भी मुझे उठने का मन नहीं कर रहा था।
एक-एक करके तारे आकाश में उगने लगे। हालांकि आकाश अचानक चांदनी से भर गया था, मैं अब भी उसी चट्टान पर खड़ा था!
मुझे अपनी माँ की याद आई और मेरी आँखों में आँसू भर आए। मेरी माँ मेरे घर लौटने तक खाना नहीं खाती थीं। मुझे घर जाना ही था, किसी और के लिए नहीं, बल्कि अपनी माँ के लिए।
किनारे पर मेंढकों की अजीब सी टर्राहट और बुलबुलों की चीख ने मेरी उदासी को और बढ़ा दिया था। परिवार के मना करने के बिना मैं कभी इतनी देर तक बाहर नहीं रहा था। लेकिन आज मेरे पैर घर जाने को तैयार नहीं थे, फिर भी मुझे अपनी माँ के लिए घर जाना ही था।
अल्का ऊपर पढ़ाई कर रही थी। लेकिन माँ पागलों की तरह घर-घर जाकर मेरा इंतज़ार कर रही थी। मुझे देखते ही उसने कहा, "समर, तुम इतनी देर से कहाँ थे?"
मैं अपने एक दोस्त के घर रुक रहा था!
"इतनी देर हो गई? लगभग दस बजने वाले हैं!"
"तुम खाना चाहते थे।"
"अल्का जेवाली, मुझे आज तुम्हारी ही चिंता हो रही थी!"
"क्या उसने खाना खाया?"
"हां, मैंने खाना खाने के बाद ऊपर जाकर पढ़ना शुरू किया।"
ठीक है, बड़े हो जाओ!
हाथ-पैर धोने के बाद मैं बिस्तर पर बैठ गया और बोला, "माँ, मुझे आज बिल्कुल भूख नहीं है। बस थोड़े से चावल चाहिए!"
‘‘का रे?’’
मैं अपनी माँ को जवाब नहीं दे पाई। मैंने खाने के दो निवाले निगले और खड़ी हो गई। तीसरी मंज़िल पर जाते समय पापा के कमरे में चुपके से घुसने की मेरी आदत थी। उसी आदत के चलते मैंने अंदर झाँका। पापा अपनी आँखों के सामने कोई मोटी किताब पढ़ रहे थे। मैं मुश्किल से सीढ़ियाँ उतर पाई। फिर भी, पापा समझ नहीं पाए कि उन्हें मेरा आभास कैसे हो गया। किताब से नज़रें हटाए बिना उन्होंने मुझसे कहा, "आज तो तुम देर से आई हो, समर!"
"हाँ। पापा, थोड़ी देर हो गई है!"
‘‘नाउ यू आर नॉट अलोन! यू मस्ट नॉट फर्गेट!’’
मुझे पापा की बातों पर दुख हुआ। पापा मुझे यह एहसास दिला रहे थे कि मैं अकेली नहीं हूँ; बल्कि शाहगंज गार्डन में मैंने जो सुना था, वही सब कुछ था। उस पल से मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं इस दुनिया में अकेली हूँ। मैंने पापा को शुभ रात्रि कहा और ऊपर चली गई।
अलका बेड लैंप की रोशनी में पढ़ रही थी। पहले तो मुझे उसकी एकाग्रता बहुत अच्छी लगी। लेकिन आज मैं उससे एक शब्द भी कहे बिना बिस्तर पर लेट गई।
"तुम इतने समय से कहाँ थे?" अल्का ने पूछा।

मैं कहीं भी रहूंगा!
"हूँ? कुछ तो गड़बड़ लग रही है!"
"तुम पढ़ाई करो, मुझे नींद आ रही है!"
"ठीक है! मेरे पास बेकार की बातों के लिए समय नहीं है!"
मैं बिस्तर पर लेट गया। लेकिन नींद आना नामुमकिन था। मेरा दिमाग अनगिनत विचारों से भरा हुआ था। क्या नासिक की उस लड़की की सारी बातें सच थीं? क्या इस अलका ने अठारह या उससे ज़्यादा लड़कों को बहकाया था? ज़रूर सच होगा! मुझसे कम पढ़ा-लिखा होने के बावजूद वह मुझे क्यों पसंद करती है? क्योंकि उस इलाके में उसकी शादी किसी से हो ही नहीं सकती! कम से कम अपनी जाति के किसी युवक से तो बिल्कुल नहीं! लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, अब हमें इससे निकलने का रास्ता ढूंढना ही होगा! मैं ही जिद्दी था, अगर हां, तो मैं उससे शादी कर लूंगा! दूसरों को दोष देने का क्या फायदा? लेकिन उन लड़कियों की सारी बातें सच कैसे हो सकती हैं? गांव में खूबसूरत लड़कियों के बारे में ऐसी अफवाहें तो हमेशा उड़ती रहती हैं! कौन जाने कितना सच है और कितना झूठ? इसकी पुष्टि कौन करेगा? और मान लो, अगर हमें पता चल जाए कि यह सच है तो हम क्या करेंगे? तलाक? नामुमकिन! हमारे परिवार में तलाक जायज़ नहीं है! जो लड़की शादी करके अपने ससुराल जाती है, वह मरने के बाद ही उसे छोड़ती है!... मैं काफी देर तक लेटी सोचती रही। पता नहीं कब अलका रात को मेरे बगल में आकर सो गई। लेकिन सुबह प्यास लगने से मेरी नींद खुल गई। दीपक की हल्की नीली रोशनी में मैंने अलका को गहरी नींद में सोते देखा। पानी पीने के बाद मैं फिर से बिस्तर पर लेट गई। मेरी फुसफुसाहट से अलका थोड़ी सी जाग गई। उसने अपनी साड़ी जो ऊपर खिसक गई थी, नीचे खींची। उसने अपने पैरों के पास चादर खोली और उसे अपने ऊपर ओढ़ लिया, मुझे बाहों में भर लिया और फिर से सो गई। एक पल के लिए मैंने अपना हाथ हटाने के बारे में सोचा, लेकिन फिर मैंने दोबारा सोचा। स्कूल या कॉलेज में लड़कियाँ कुछ शरारत कर दें तो उनका मज़ाक उड़ाने का क्या मतलब? वो लड़का जो फुटबॉल मैच देखने आया था, वो कोई सज्जन नहीं था! बदमाशों को सब कुछ बुरा ही लगता है... मैंने अपना हाथ अल्का के शरीर पर रखा और वापस सो गई।
- ०-०-०-

८
मैंने तय किया कि मैं अल्का की शादी से पहले की बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं दूंगा। अतीत की बातें छेड़ने से न सिर्फ मुझे परेशानी होगी, बल्कि इससे मेरे परिवार की सेहत पर भी असर पड़ेगा। मैंने सोचा कि अगर वह स्नातक होना चाहती है, तो उसे खुश रहने दो, इसलिए मैंने कुछ हद तक तटस्थ रुख अपनाया। लेकिन इसका उल्टा असर भी होने लगा। चूंकि अल्का घर पर पढ़ाई नहीं कर रही थी, इसलिए वह कॉलेज के स्टडी रूम में जाने लगी। कोई बात नहीं! मैंने परीक्षा तक उसे कुछ न बताने का फैसला किया; लेकिन धीरे-धीरे मुझे अजीबोगरीब खबरें मिलने लगीं।
तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र पढ़ाने वाले प्रोफेसर थोंब्रे का नाम अलका के साथ लिया जा रहा था। उन दोनों के अध्ययन कक्ष में साथ बैठने-खड़े होने की खबर सुनकर मेरा सिर चकरा गया। लेकिन सुनी हुई खबर पर यकीन करने से पहले, मैंने खुद यह पता लगाने का फैसला किया कि अफवाह में कोई सच्चाई है या नहीं। मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। चौथे दिन, मैंने उन दोनों को कॉलेज के बगीचे में साथ खड़े होकर बातें करते देखा। सिर्फ एक मौके पर उनके बीच कुछ होने की कल्पना करना भी अनुचित था। उसके आठ दिन बाद, अमर ने मुझे बताया कि वे दोनों कॉलेज की कैंटीन में साथ बैठे थे। लेकिन अब, मेरा होश धीरे-धीरे उड़ रहा था। मैंने अलका पर नजर रखना शुरू कर दिया।
मुझे यह बताते हुए कि उसकी सहेली के घर पर कोई कार्यक्रम है, अल्का ने मुझसे कहा, "मुझे देर हो सकती है! वहाँ डिनर का कार्यक्रम भी है!"
"ठीक है!" मैंने बिना किसी झिझक के कहा।
उस रात, मैंने उन दोनों को तालाब के पास बगीचे में हंसते-खेलते देखा और मैं आगे बढ़ गया। मैं कमर पर हाथ रखकर उनके बीच खड़ा हो गया। मैंने अल्का से पूछा, "क्या यही मेरे दोस्त के घर का कार्यक्रम है?"
"अरे! यह तो रद्द हो गया। टेलीग्राम आया है कि उसके दादाजी बीमार हैं। जब मैं घर आने के लिए निकली, तो रास्ते में मुझे सर मिल गए। उन्होंने कहा, अगर कुछ करने को नहीं है, तो चलो थोड़ी देर बगीचे में बैठकर बातें करते हैं! इसमें आपको अजीब क्या लग रहा है?"
अल्का के सवाल का जवाब दिए बिना ही मैंने थोम्बर की कमीज़ का कॉलर पकड़ा और उसे ज़ोरदार घूंसा मारा। थोम्बर गिर पड़ा, फिर संभलकर बोला, "यह तुम्हारे लिए शोभा नहीं देता, समर। अल्का मेरी छात्रा है। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि उसे दर्शनशास्त्र में अच्छे अंक मिलें, लेकिन तुमने सब गड़बड़ कर दिया!" “थोम्बारे! ये पहली बार नहीं है जब मैंने तुम दोनों को साथ देखा है। मैंने तुम दोनों को कई बार स्टडी रूम में, कॉलेज के हॉस्टल में और बगीचे में साथ देखा है। मैं इतनी बेवकूफ तो नहीं हूँ कि ये न जानूँ कि तुम उसे किस तरह का दर्शन सिखा रही हो! चलो!” मैंने अल्का का हाथ पकड़ा और उसे भी थप्पड़ मार दिया। अपना हाथ छुड़ाने की नाकाम कोशिश करते हुए उसने कहा, “बदतमीज़! बदतमीज़! मेरा हाथ छोड़ो!”

मैंने उसकी बांह पर ज़ोरदार थप्पड़ मारते हुए कहा, "मुझे नहीं लगता कि बिपिन सरदा, जयचंद राठौड़, चंद्राया, राम धुलेकर को बर्बाद करना काफी है! अरे, ये क्या है! चलो, घर चलते हैं! मैं यहाँ सड़कों पर और तमाशा नहीं करना चाहता! मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, अगर तुम दोबारा इस तरफ आई, तो मैं तुम्हारी हड्डियाँ बोरी में भरकर झील में फेंक दूँगा! समर सिंह ठाकुर मुझे बुला रहा है!"
थोंब्रे बिना कुछ कहे बगीचे के पीछे वाले परिसर से निकल गया। अल्का मेरे साथ आने को तैयार नहीं थी, वह बगीचे की घास पर सुस्त होकर बैठ गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, क्योंकि मैंने नासिक के उन लड़कों का नाम लिया था! उसने अपने दोनों हाथ आँखों के सामने रख लिए और रोने लगी।
"अल्का, यहाँ गली के मसखरे की तरह हरकतें मत करो! सीधे खड़े हो जाओ और मेरे साथ आओ, वरना मैं तुम्हें लात मार दूँगी। मेरे पैरों में अभी भी इतनी ताकत है कि मैं तुम्हें लात मार सकूँ! मैंने तुम्हें बहुत लंबी छूट दी थी! लेकिन तुम बचपन से ही बिगड़ी हुई हो! मैंने शादी से पहले की तुम्हारी सारी हरकतों को भुला देने का फैसला किया था। लेकिन मैं तुम्हें शादी के बाद भी ये हरकतें जारी नहीं रखने दूँगी! खड़े हो जाओ!"
अल्का को एहसास हो गया था कि अब मुझसे बहस करने का कोई फायदा नहीं है। मैं उसकी सच्चाई पहले से जानती थी। और तो और, मैंने आज उसे रंगे हाथों पकड़ लिया था।
घर आकर वो सीधे तीसरी मंजिल पर अपने कमरे में गई और बिस्तर पर लेटकर रोने लगी। मम्मी-पापा नीचे से ऊपर आए। पापा ने मेरी पीठ पर हाथ रखा और मुझसे पूछा,—
"क्या बात है, समर?"
"उससे पूछो कि क्या हो रहा है और क्या हुआ है। मैं तुम्हें कुछ नहीं बताना चाहती!"
"क्या हुआ बेटी, अल्का?" पिताजी ने आगे आते हुए स्नेहपूर्वक पूछा।
क्या उसके पास बोलने के लिए मुंह है?
"समर, तुम नीचे जाओ!" पापा ने मुझसे कहा, "मैं उससे अकेले में पूछ लूंगा। अरे, शुरुआत में पति-पत्नी के बीच ऐसे छोटे-मोटे झगड़े होते रहते हैं। इसलिए कोई भी कुछ भी गलत नहीं करना चाहता।"
"पापा, वो इस घर में नहीं रह सकती," मैंने चिल्लाकर कहा और नीचे आ गई। मेरी माँ भी मेरे पीछे नीचे आ गई।
"बकवास! ऐसी बातें मत कहो। वह तुम्हारी पत्नी है," जब मैं नीचे आया तो पिताजी ने ऊपर से चिल्लाकर कहा।
"पत्नी? हाँ! चरित्रहीन व्यक्ति इस घर में नहीं रह सकता! उसे कल ही यह घर छोड़ देना चाहिए!" मैं गुस्से से कांप रहा था। जैसे ही मैंने माँ को सब कुछ बताया, वह सिर हाथों में लिए बैठी रोने लगी।
फिर मैं उसकी सारी किताबें ऊपर से नीचे ले आया। मैंने उन्हें ज़मीन पर फेंक दिया और कहा, "इस शिक्षा की आड़ में वह मनमानी करने की आदी हो गई है।

सच तो यह है कि मैं आज उसे जान से मार डालने वाला था! वह बेशर्मी से उस छड़ी के साथ बगीचे में बैठी थी!"
"अरे, इसमें गलत क्या है? आखिर वो एक प्रोफेसर हैं!"
पापा सीढ़ियों से नीचे आते हुए बोले।
"लेकिन जब कोई प्रोफेसर किसी युवा छात्रा को बगीचे के एकांत स्थान पर ले जाता है, तो वह उसे किस प्रकार का दर्शन सिखाता है? पिताजी, उसका यह व्यवहार आज के जमाने का नहीं है। वहाँ उसकी शादी संभव नहीं थी; इसलिए उसके पिता ने उसे बहला-फुसलाकर मेरे गले में बाँध दिया! कम अस्सल!"
"गर्मी का मौसम! जो हो गया सो हो गया। अपने परिवार की इज्जत को दांव पर मत लगाओ। अगर तुम चाहो तो हम कल से इस कॉलेज को बंद कर सकते हैं!" पिताजी ने कहा।
मुझे यह घर में नहीं चाहिए!
फिर मेरी रोती हुई माँ रुकी और मुझ पर चिल्लाई, "वह इस घर को नहीं छोड़ेगी! हंगामा मत करो! इसीलिए तो मैंने इस शादी का विरोध किया था। शंकरलाल कॉन्ट्रैक्टर की पत्नी ने मुझे उसके बारे में सब कुछ बताया था। इसीलिए मैं तुम्हें अंत तक रोके हुए थी। समर, इस लड़की को इतना पसंद मत करो! लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुम जिद्दी थे! अब तुम कुछ नहीं कर सकते सिवाय देखने के! जो लड़की किसी राजपरिवार या क्षत्रिय के घर आती है, वह जाते समय खड़ी नहीं होती।"
मैंने कहा, "मैं इसे टेढ़े तरीके से करके खर्च करूंगा!"
“बकवास मत करो!” पापा मुझ पर चिल्लाए, “अब वो घर से बाहर नहीं जाएगी! लेकिन उसे घर से बाहर ले जाने का ख्याल भी मत रखो, ये नामुमकिन है! ठाकुर परिवार में तलाक की कोई परंपरा नहीं है। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ!”
"तो फिर आप इस बेहद बिगड़ैल लड़की को अपने घर में बहू बनाकर रखेंगे?"
पापा ने मेरे गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मारा और कहा, "तुम बाहर निकलो! जाओ!" “वो बाहर कहाँ जाएगा? तुम उसे क्यों पीट रही हो?” मेरी माँ रोते हुए बोली। वो मुझे बाहर जाने नहीं देना चाहती थी क्योंकि उसे डर था कि मैं कुछ गलत कर बैठूँगी।
मैंने वह रात सचमुच जागते हुए बिताई। ऐसा लग रहा था जैसे मैं करवटें बदल रहा हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि पापा कल क्या फैसला लेंगे! मेरी जिंदगी 33 पर आ गई थी! पढ़ाई ने सब कुछ बर्बाद कर दिया था। मैं सेना में भर्ती हुआ और एक पैर से कमजोर होकर निकला। मैंने अपना पसंदीदा शौक, फुटबॉल, हमेशा के लिए खो दिया। मेरी माँ कहती थीं कि शादी इंसान की जिंदगी बदल देती है, इसलिए अगर मैं शादी के लिए तैयार हुआ, तो यह शादी एक तरह से 'विफलता' साबित हुई। शंकरशेत परदेशी ने सचमुच मुझे बनाया! अलका की खूबसूरती ने मुझे मोह लिया था। लेकिन मैं, मूर्ख, यह भी नहीं समझ पाया था कि उस सुंदर और कोमल व्यक्तित्व के पीछे एक ऐसी औरत थी जो वासना में डूबी हुई थी! मैं परदेशी की दौलत से मोहित था। मैं अलका की बुद्धिमत्ता से मोहित था। मुझे अपनी माँ का विरोध समझ नहीं आया। अब मेरी आँखें खुल गई थीं, लेकिन क्या फायदा? जो होना था, हो चुका था! हमारे परिवार में तलाक का कोई रिवाज नहीं है! आज तक किसी

राजक्षत्रिय के घर में तलाक दिए जाने या लिए जाने का कोई उदाहरण नहीं है। कम से कम मेरी राय में तो नहीं। तो अब आगे क्या होगा?... अगर यह अलका यहीं रहना चाहती है...! ओह! अगर वह यहीं रहना चाहती है, तो मुझे यह घर छोड़ना पड़ेगा! लेकिन मैं कहाँ जाऊँगी? मेरी शैक्षणिक योग्यता क्या है? मैं एक पैर से कमजोर हूँ...
आज तक मेरे मन में महिलाओं के लिए सम्मान था। जब मैं जवान हुआ, तो मुझे भी लड़कियों को देखने की इच्छा होती थी। मेरे सामने बैठी धोबिन की बिंदी - वह भी मुझे अप्सरा जैसी सुंदर लगती थी! मैं तीसरी मंजिल की खिड़की से बच्चों के समूह को आशा भरी निगाहों से देखता था। लेकिन जैसे-जैसे मैं समझदार होता गया, मेरी दृष्टि भी धुंधली पड़ने लगी। मैं इस कहावत पर विश्वास करता था कि स्त्री एक पल के लिए पत्नी होती है और अनन्त माँ। धीरे-धीरे मुझे जीवन का अर्थ समझ में आया। जब मैं कॉलेज में था, तो मैं फुटबॉल टीम का कप्तान था! लेकिन बाद में, परीक्षा के बाद, सब मुझे कप्तान कहने लगे! कुछ लोग मुझे 'कप्तान' कहकर चिढ़ाते थे, लेकिन जब मैं सेना में भर्ती हुआ, तो कप्तान का असली पद मेरे हाथ में था। लेकिन वहाँ भी दुर्भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया! बहराम के उन चश्मों से मोहित होकर, मैंने उन्हें उठा लिया और अपने अधिकारी मित्रों को धोखा देने लगा। गुमान सिंह ने मुझे इसके लिए पूरा इनाम दिया! मेरा बायाँ घुटना हमेशा के लिए विकलांग हो गया।
लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे अलका से शादी नहीं करनी चाहिए थी! अगर उस दिन रत्नपुर महाराज ने मेरी जिंदगी बर्बाद भी कर दी होती, तो भी ठीक होता। कम से कम शादी के साथ होने वाली 'त्रासदी' तो नहीं होती। लेकिन अब मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? क्या मुझे उस शंकरशेठ परदेशी का गला पकड़कर उससे पूछना चाहिए, तुमने इतनी बुरी लड़की को मेरे गले में क्यों बाँधा?... पूरी रात हमारी नज़रें एक-दूसरे से नहीं मिलीं। अगले दिन घर में सन्नाटा पसरा हुआ था! आठ बजने के बाद भी अलका नीचे नहीं आई। आखिरकार, मेरी माँ ऊपर गईं और उसे ले आईं। मैं अमर के कमरे में बैठकर सुबह आई 'नेता' पत्रिका पढ़ रहा था। पार्टी का कोई सदस्य पापा के घर आया था।
नीचे कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। सारा काम खामोशी से चल रहा था, लेकिन यह खामोशी सबके लिए असहनीय होती जा रही थी। माँ अंदर अलका से बात करने लगीं। थोड़ी देर बाद माँ ने मुझे बुलाया। हाथ में कागज़ लिए मैं गया और रसोई के दरवाजे पर खड़ा हो गया।
"समर को चार दिनों के लिए नासिक जाना है!"
"अगर विनाशक को जाने नहीं देना है, तो उसे कहीं और जाने दो। मेरी अनुमति की क्या आवश्यकता है?"
"अरे, ऐसा मत करो। इससे निकलने का कोई न कोई रास्ता तो जरूर होगा!"
उसे अपने पिता के पैसों पर बहुत गर्व है। चलो उसके पिता के पास चलते हैं! देखते हैं वो इसे कब तक अपने पास रखते हैं!
"लेकिन मैंने तुम्हें शादी से पहले ही यह सुझाव दिया था, समर," अल्का ने कुछ गंभीर होते हुए कहा।
"कैसे?"

"मेरा स्वभाव थोड़ा स्वतंत्र है। मुझे लोगों से खुलकर बात करना पसंद है!" "मैं समझ सकती हूँ, अल्का। लेकिन मैंने कभी ज़िक्र तक नहीं किया कि कॉलेज में तुम्हारा व्यवहार कैसा था। तुम उस प्रोफ़ेसर से इतनी नज़दीकी दिखा रही थी कि उससे कोई और मतलब नहीं निकाला जा सकता था। कल तुम अपने दोस्त के पास जाने का झूठा बहाना बनाकर उससे बगीचे में मिलने गई थी। तुम्हें क्या लगा कि मैं कुछ नहीं समझूँगी?"
"थोंबारे मेरा मार्गदर्शन कर रहे थे। मुझे उनका स्वभाव पसंद आया!"
"तो तुम उससे इस तरह छुपकर मिल रही थी? अलका, नासिक जाओ और यहाँ वापस मत आना!"
मां ने तुरंत कहा, "अगर ऐसा है तो मैं उसे नहीं भेजूंगी!"
इसी बीच, पिताजी नीचे आए और पार्टी में आए लोगों को विदा करते हुए बोले, — "समर, मैं उसे नासिक ले चलता हूँ! देखो, शंकरशेठ परदेशी का एक पंजीकृत पत्र आया है! उन रखैलों की दोनों बेटियों ने उनके खिलाफ दीवानी मुकदमा दायर किया है! अंगूर का बाग उनका है, और शंकरशेठ ने उन्हें धोखा देकर उस पर हस्ताक्षर करवा लिए, यही उन दोनों बेटियों का कहना है! शंकरशेठ चाहते हैं कि मैं इस मामले को संभालूँ!"
‘‘तुम क्या कर रहे हो?’’ मैंने कहा।
"ऐसा नहीं है, समर। चाहे कुछ भी हो जाए, एक बार यह रिश्ता बन जाने के बाद इसे आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता।"
"ठीक है। लेकिन अगर वह इस घर में वापस आती है, तो मैं इस घर में नहीं रहूँगा," मैंने यह बात स्पष्ट कर दी।
पापा ने मेरी धमकी को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया।
पिताजी अलका को नासिक ले गए। वे वहाँ एक या डेढ़ महीने तक रहे। लेकिन शंकरशेठ का मामला पूरी तरह पलट गया। अदालत ने उन दोनों लड़कियों द्वारा हस्ताक्षरित स्टांप पेपर को अवैध घोषित कर दिया। अदालत ने आदेश दिया कि विदेशियों को सारी संपत्ति और पिछले तीन वर्षों की आय मालिक की बेटियों को देनी होगी। शंकरशेठ ने यह फैसला सुना और सो गए। मधुबन जा चुका था, अंगूर का बाग भी जा चुका था, मालिक की बेटियों ने नासिक के बंगले पर भी अपना दावा कर लिया था। उन्हें भी अदालत ने कैद कर लिया था। पिताजी ने उच्च न्यायालय में अपील की; लेकिन अपील पर फैसला आने से पहले ही शंकरशेठ परलोक के निवासी बन गए।
जब अल्का भवानी नगर लौटी, तो मुझे लगा कि वह सब कुछ संभाल चुकी है, लेकिन उसने मेरे साथ पहले की तरह ही कठोर व्यवहार करना शुरू कर दिया। उसका कॉलेज बंद हो गया था। उसकी अपनी माँ के साथ थोड़ी बहुत अनबन हो गई थी, लेकिन मेरे साथ उसका व्यवहार पहले जैसा ही सख्त था!
अंततः, मैंने कुछ दिनों के लिए घर छोड़ने का फैसला किया। पापा और मम्मी दोनों ही परिवार की प्रतिष्ठा और परंपराओं के प्रति श्रद्धा रखते थे। पापा को अल्का से तलाक का विचार पसंद नहीं था, और अल्का के रहते मेरे लिए घर में रहना असंभव था।

जब मैं तीसरी मंज़िल पर जाती, तो अल्का नीचे आ जाती, और जब मैं नीचे आती, तो वह ऊपर चली जाती! वह तो मुझे ज़रा सी भी हवा नहीं लगने देना चाहती थी। पापा और मम्मी की यह उम्मीदें कि समय के साथ हम किसी समझौते पर पहुँच जाएँगे, टूट गईं। मेरे पास घर छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था।
मैंने अपना बैग पैक करना शुरू किया और उसी क्षण मुझे नासिक वाली घटना याद आ गई! जब मैं बैग पैक कर रही थी, अलका आई और मेरा हाथ पकड़ लिया। उसने बैग में पैक किए हुए सारे कपड़े निकाल लिए थे। लेकिन आज वही अलका, मुझे बैग पैक करते देख, बेपरवाही से चली गई। दो जोड़ी पजामा, चार पैंट, चार कमीजें, दो कोट; एक जोड़ी टाई। बहराम का 'फ्लश फेम' वाला चश्मा और मेरी जेब में साढ़े सोलह रुपये! बस! मेरे पास बस इतना ही था।
मैं अपना बैग लेकर नीचे आई। मेरी माँ की निगाहें तेज़ थीं। उन्होंने कहा, "तुम कहाँ रहोगी? क्या करोगी? अगर तुम्हें पैसों की ज़रूरत हो तो मुझे बताना!"
"देखो माँ, ये दोनों हाथ अभी भी मजबूत हैं। इस दुनिया में अनगिनत अंधे और अपंग लोग आराम से रह सकते हैं, मुझ जैसे किसी के लिए यहाँ रहना इतना मुश्किल क्यों है? लगता है किस्मत ही चाहती है कि मैं इस गाँव को छोड़ दूं, भला उसका क्या बिगाड़ेगा?"
रास्ते में मैं गुरुजी से मिलने गया। गुरुजी ने आँखों में आँसू लिए कहा, "आओ! अगर कोई लड़की हमारे परिवार में आती, तो हम उसे निकाल देते, लेकिन तुम्हारे परिवार की यह कितनी शर्मनाक प्रथा है! जाओ, पिताजी! जहाँ भी रहो, खुश रहो!"
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आए थे। वो अपनी आँखें मलते हुए चश्मा पोंछ रहे थे। आखिर में, जब ट्रेन चलने लगी, तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कहा, "बुरा समय हमेशा बुरा नहीं होता। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। अगर तुम कुछ दिन बाहर भी रहो, तो कुछ नहीं बदलेगा। इसके विपरीत, जो लोग बाहरी दुनिया को देखते हैं, उनका अनुभव विशाल होता है! लेकिन अगर तुम्हें ज़रूरत हो, तो मुझे बताना! जाने से पहले, मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूँ। और ज़िम्मेदारियाँ बढ़ाओ, तुम्हें रास्ता मिल जाएगा।" आज तक दुनिया में जितने भी सच्चे कामयाब लोग हुए हैं, उन्होंने कभी अपने पूर्वजों के नाम या धन पर भरोसा नहीं किया!
मैं सत्ताईस साल की उम्र में घर से निकला, मेरी जेब में सिर्फ साढ़े सोलह रुपये थे। ट्रेन में चढ़ने से पहले मैंने पुणे का टिकट खरीद लिया था, लेकिन मुझे पुणे में रहने की जगह, नौकरी या किसी भी चीज़ के बारे में कोई जानकारी नहीं थी!
रात में मैंने चपातियाँ और मूंगफली की चटनी खाई जो मेरी माँ ने मिराज में मेरे लिए बनाई थी। मैं नल पर गया और पानी पिया। मैं वापस कार में बैठा और बेंच पर पैर फैलाकर बैठ गया। जीवन की नाव एक बार फिर ऐसे बह रही थी मानो उसका पतवार टूट गया हो। उसे पता नहीं था कि वह किस किनारे पर पहुँचेगी या कहीं वह किसी तूफान में बहकर नष्ट न हो जाए।

मेरे भीतर का पाप से डरने वाला सज्जन, सालास समर, उस रात नष्ट हो गया। एक दृढ़ निश्चयी बदमाश, जो महिलाओं से बदला लेगा और स्थापित दुनिया के साथ साजिशें रचेगा, जन्म ले रहा था। वह धीरे-धीरे समर सिंह ठाकुर के शरीर में प्रवेश कर रहा था। पिताजी का अंतिम आदेश, 'और अधिक देनदारियां पैदा करो और तुम्हें निकलने का रास्ता मिल जाएगा!' मेरे कानों में गूंज रहा था। कार की लय के साथ नींद मेरी आंखों में छाने लगी। मेरे सामने बैठे एक सज्जन चश्मा लगाए सो रहे थे। उनका चश्मा देखकर मुझे अपने चश्मे की याद आ गई। बहराम ईरानी, जिसका चश्मा मैंने उठाया था, वह बहराम अभी भी पुणे में होगा! अगर मैं उससे मिलूं, तो क्या वह मुझे अकेला छोड़ देगा? हम उस शिविर की ओर मुड़े भी नहीं, बस!
सुबह छह बजे ट्रेन पुणे प्लेटफार्म पर रुकी। मैं अपना बैग हाथ में लिए ही उतर गया। टैक्सी चालक गांव के बड़े होटलों के नाम बताकर उतरे हुए यात्रियों को अपनी टैक्सियों में बैठने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। एक टैक्सी चालक विनम्रता से मेरे आगे आया और बोला, “सर, चलिए होटल हेवर्ड्स चलते हैं! यह तीन सितारा होटल है! रेसकोर्स बहुत पास है!”
मैंने मन ही मन सोचा, "पुणे में फिर से रेस का मौसम आ गया है! चलो, होटल हेवर्ड्स चलते हैं!"
टैक्सी का किराया चुकाने के बाद जब मैं अपने सूटकेस के साथ हेवर्ड्स होटल की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, तभी एक बेलबॉय दौड़ता हुआ आया और बड़े ही विनम्रता से मेरा बैग ले लिया।
काउंटर पर एक सुनहरे बालों वाला पारसी बैठा था। उसने मुझे 'साहबजी' कहकर संबोधित किया। मैंने भी उसे 'साहबजी' कहकर संबोधित किया! इतने बड़े होटल में आने वाले लोग कभी कमरे के किराए के बारे में नहीं पूछते। मैंने भी नहीं पूछा; लेकिन सीढ़ियाँ चढ़ते समय मैंने बोर्ड पर लिखा हुआ पढ़ लिया। चौबीस घंटे ठहरने का किराया केवल पैंतीस रुपये था! टैक्सी का किराया और ट्रेन का टिकट काटने के बाद मेरी जेब में केवल ढाई रुपये बचे थे!
मेरा सामान कमरा नंबर सोलह में रखा गया था। मेरे जूते कालीन में एक इंच धंसे हुए थे। एक मोटा डबल गद्दा, ऊपर एक पंखा, दीवार पर लैंपशेड, एक वॉशबेसिन, एक संलग्न शौचालय - मालिक इसके लिए पैंतीस रुपये का अच्छा-खासा शुल्क दे रहा था!
नौकर ने थैला अंदर रखा और जाते हुए अभिवादन किया, "मुझे साढ़े आठ बजे नाश्ता लाना?"
‘‘हा! ठीक साडा आठ!’’
मैंने अपने जूते एक तरफ फेंक दिए और पलंग पर लेट गई। शिवरी के सूती गद्दे पर। मैं लगभग डूब ही गई थी! मैं उठी और तुरंत पंखा चला दिया। मैंने वॉशबेसिन का पानी बंद कर दिया और ड्रेसिंग टेबल के शीशे में अपनी छवि को देखने लगी! यह मेरा रोज़ का एकांत का शौक है! शीशे के सामने खड़े होकर खुद से ज़ोर-ज़ोर से बातें करना! कौन जाने समझदार लोग कभी ऐसा करते भी हैं या नहीं! लेकिन मैं अक्सर खुद को शीशे के सामने ऐसे ही पाती हूँ। मैं खुद से

बातें करती हूँ, मैं कुशल से पूछती हूँ। आज भी, शीशे में समर ने मुझसे पूछा, 'यहाँ तक आ गई हो? अब क्या?'
‘अगला, अगला। पहले नहा लो! फिर नाश्ता आएगा। जितना चाहो खा लो, और फिर हम तय करेंगे कि आगे क्या करना है! और अधिक देनदारियां पैदा करो और...’
मैंने नहाया, बाल संवारे, कपड़े बदले और बटन दबाया। ठीक 8:30 बजे, नाश्ता लाने वाला एक ट्रे में नाश्ता लेकर आया। उबले अंडे, टोस्ट, मक्खन, चाय बनाने की सारी सामग्री। उसने सारी सामग्री बीच वाली मेज पर रखी और मुझसे विनम्रतापूर्वक पूछा-
‘‘साब, लंच आप इधरही लेंगे ना?’’
“हाँ!” मैंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। “रेस कितने बजे शुरू होती है?”
‘‘दो बजे सर!’’
‘‘तो एक बजे लंच ले आना.’’
मैंने अच्छा नाश्ता किया और छत पर आ गया। मेरे बगल वाले कमरे की छत पर एक गोरा मुस्लिम युवक खड़ा था। उस लड़के ने मुझे अपनी पूरी जिंदगी में कभी नहीं देखा था, लेकिन जैसे ही उसने मुझे देखा, वह मुस्कुराया और बोला, "सुप्रभात!"
‘‘सेम टु यू!’’
‘‘केम फॉर द रेसेस?’’
"बिल्कुल!" मैंने जवाब दिया।
‘‘आप हमेशा आते है?’’
‘‘हां ऽ हमेशा नहीं, कभी वख्त मिल जाता है तो आ जाता हूँ!’’
‘‘अच्छा अच्छा! बडी खुशीकी बात है ।’’
वेटर खाली ट्रे लेने आया। मैंने उसे अपने पास बचा हुआ एक रुपया दिया और उससे कहा कि वह मुझे उस जाति के बारे में एक किताब लाकर दे! मुझे पहले से ही अंदाज़ा था कि पड़ोस में रहने वाला मुस्लिम युवक मुझसे उस जाति के बारे में बात करेगा! मेरा अंतर्ज्ञान!
जब रेस बुक आई, तो मैंने उस पर पेन से बहुत सारे निशान बनाए, और आधे घंटे के भीतर ही मुझे दूसरी तरफ से फोन आ गया।
- ०-०-०-

९
नवाब दौलत खान हैदराबाद के निज़ाम के दूर के रिश्तेदार थे। उनके पिता हाल ही में पेगंबरवासी बने थे। उन्हें जहांगीर की सारी संपत्ति विरासत में मिली थी। दौलत खान ने वही किया जो कोई व्यक्ति बिना किसी मेहनत के अचानक अपार धन-दौलत मिलने पर करता है। मुझे यकीन था कि उनके साथ आई 'नबाबी' उनकी पत्नी नहीं थी। एक असली पत्नी में कुछ लक्षण होते हैं। वह अपने पति पर वैसा ही दबाव डालने की कोशिश करती है। वह दिखावा करती है कि 'मैं हूं, इसलिए तुम हो'। वह हर बात में उनका विरोध करती है; लेकिन मज़ाक के तौर पर लाई गई यह साथी ऐसा कुछ नहीं करती। वह अपने कामों और बातों से यह जताती है कि वह जो कुछ भी करता है, वह बिलकुल सही है। वह उनका विरोध करने में पूरी तरह असमर्थ है।
दौलत खान ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। ‘तुम कौन हो?’ फिर बात बदल गई, ‘हम कौन हैं?’ ‘मैं भवानीनगर के दीवान का बेटा हूँ। घुड़दौड़ मेरा पसंदीदा शौक है। मैं अक्सर घुड़दौड़ के मौसम में पुणे और मुंबई आता हूँ!’
वह घुड़दौड़ के लिए बिल्कुल नया था। उसे लगता था कि जॉकी का नाम घोड़े का नाम है और घोड़ा ही जॉकी है! जब मैं सेना में था, तब अपने दोस्तों के साथ कुछ बार घुड़दौड़ के मैदान में गया था। लेकिन मुझे यह भी लगता था कि यह भरोसेमंद न होने वालों के लिए एक 'सम्मानजनक' जुआ है। उस समय मुझे घुड़दौड़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी और मैंने कभी इसके बारे में जानने की कोशिश भी नहीं की थी। लेकिन अब, हैदराबाद से एक अच्छी 'मंडवाले बकरी' मेरे सामने से गुजर रही थी। मुझे यकीन था कि घुड़दौड़ के मैदान का कसाईखाना उसके वध के लिए उपयोगी साबित होगा।
"अगर तुम हमेशा खेलते रहोगे, तो तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा?" दौलतखान ने मुझसे पूछा और मुझे पांच सौ पचपन सिगरेटें भेंट कीं।
"मुझे थोड़ा समझ आ गया!" मैं मुस्कुराया और उसकी सिगरेट लेकर उसे जलाया, फिर अपनी जेब से रेस बुक निकालकर मेज पर रख दी। असल में, उस दिन मेरे पास रेसकोर्स में प्रवेश करने के लिए टिकट खरीदने के भी पैसे नहीं थे। लेकिन मैंने बीस हज़ार रुपये लाने का नाटक किया था!
मैंने अपनी घड़ी देखी, सवा नौ बज रहे थे। रेस तो दो बजे शुरू होनी थी। फिर मैंने उनसे पूछा, "नबाबबसाब, क्या आपको ताश खेलने में दिलचस्पी है?"
तो हसला आणि म्हणाला, ‘‘जरूर! हैद्राबाद के रॉयल क्लबमें मैं हमेशा जाता हूँ!’’
“बहुत बढ़िया, चलो कुछ खेल खेलते हैं!” मैंने कहा, “माफ़ कीजिए,” और उठकर अपने कमरे से ताश का एक डेक और वो मशहूर चश्मा ले आया। मैंने पत्तों को चार बार फेंटा। मैं नहीं चाहता था कि उसे मेरे धोखे का ज़रा भी अंदाज़ा हो! उसने अपनी कमीज़ की जेब से चश्मा निकाला और पहन लिया। मुझे शक हुआ। “क्या इस आदमी के पास भी मेरे जैसा चश्मा है?” अपने शक को दूर करने के लिए मैंने कहा, “आपका नंबर क्या है?”
‘‘पता नही! थोडा ब्लरिंग होता था इसके वजहसे बंद हो गया!’’

उन्होंने अपना चश्मा उतारकर मेरे सामने रख दिया। मैंने ध्यान से देखा कि कहीं वह मेरे चश्मे जितना अजीब तो नहीं है और उन्हें पहनने के लिए कहा। जब तक उन्होंने चश्मे को एक खास कोण से नहीं देखा, तब तक उसमें से 'दृष्टि आवर्धन' नहीं हो रहा था! मुझे पूरा यकीन था कि नवाब को मेरे चश्मे की खामी समझ में भी नहीं आएगी।
पत्ते बांटते समय मैं रुका और उससे कहा, "माफ़ कीजिए, मैं पैसे लाना भूल गया!"
“नहीं वांडा!” उन्होंने कहा और मुझे अपने सौ रुपये उधार दे दिए। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वह जातिगत जुआरी नहीं थे। उधार पर जुआ खेलने वाले मूर्ख होते हैं। हमारा खेल चल पड़ा। हमेशा की तरह पहले तो मैंने पच्चीस रुपये हारे। नवाब खुश थे। उन्होंने नबाबी को पान बनाने को कहा। मच्छरदानी से एक अच्छा हाथ निकला। उन्होंने मेज पर रखी चांदी की डिब्बी खोली और पान बनाने लगीं। मैं अपने चश्मे के कोण से उनके पत्ते देखकर उनका अनुमान लगाने लगी। जब भी उनके पास तीन का सेट या पूरी चेन होती, मैं तुरंत 'ओपन' मांग लेती और जब मेरे पास अच्छे पत्ते होते तो खेलती रहती।
नबाबी मच्छरदानी से बाहर निकलीं। उनके हाथ में दो पत्ते थे! इस बार मैंने उन्हें ध्यान से देखा। उनका रूप-रंग अद्भुत था! मैंने इतिहास में बाजीराव की मस्तानी के बारे में पढ़ा था, उनका रूप-रंग ऐसा ही था! गोरी, चिकनी त्वचा, कमर तक लंबे बाल, वह किसी सुंदर युवती जैसी लग रही थीं, मानो किसी कुशल मूर्तिकार ने संगमरमर पर उनकी मूर्ति तराशी हो। मेरी नज़र तुरंत मेरे हाथ में रखे कार्ड पर पड़ी। नबाबी ने मुझे उनके हाथ से लिया हुआ एक पत्ता देते हुए कहा, "यह असली हैदराबादी कार्ड है, ठाकुरजी! लीजिए!" ‘‘थँक्यू!’’ मी पानाचा स्वीकार करून म्हणालो, ‘‘आपकी पेहचान मैं मेरे जिन्दगीमें खुशीका मौका समझता हूं.’’
दौलत खान दिल खोलकर हँसे और मेरे हाथ पर ताली बजाते हुए बोले, "मैं भी इसे इसी तरह समझता हूँ!"
हमें पत्ते देकर नबाबी बाथरूम चली गई। उस समय मेरे मन में जो विचार आया, उस पर मुझे शर्म महसूस हुई। ठीक यही विचार मेरे मन में तब आया था जब मैंने बहराम इरन्या को छोटी स्कर्ट में देखा था। किताबों में लिखी कहावतें, जैसे कि औरतें सबसे अच्छी होती हैं, औरतें पल भर की पत्नी और शाश्वत माता होती हैं, आदि, ऐसे समय में हवा में गायब हो जाती थीं! अलका ने औरतों के प्रति मेरा सम्मान पूरी तरह से नष्ट कर दिया था। अब से मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कोई मुझ पर चिल्ला रहा हो कि मुझे अपने जीवन में कभी किसी औरत का सम्मान नहीं करना चाहिए!
एक घंटे के खेल में मैंने दौलत खान नबाबा को 25 लाख रन से हरा दिया। मुझसे नाराज़ होने के बजाय, वे मेरी तारीफ़ कर रहे थे। नबाबी मेरे बगल वाली कुर्सी पर बैठकर हमारा खेल देख रहे थे।
एक घंटे के भीतर ही हम बहुत करीब आ गए। इस एक घंटे के दौरान मैंने दो बार हैदराबादी पान खाया और नबाब की 555 सिगरेटों में से तीन सिगरेट पी लीं।

दोपहर 12:30 बजे नवाब ने दोपहर का भोजन मंगवाया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मैं भी उनके साथ भोजन करूँ। मैं वहाँ बैठ गया और बोला, "क्यों, क्यों?" दरअसल, मैं नवाब का बहुत आभारी था; क्योंकि जब मैं होटल पहुँचा, तो मेरे पास केवल ढाई रुपये ही बचे थे।
मुझे खाना खिलाते हुए नवाब मुझे हैदराबाद राज्य के मज़ेदार किस्से सुना रहे थे। मैं भी उन्हें भवानी नगर के बारे में बता रहा था। बात करते-करते अचानक शिकार का विषय आ गया! मैंने उन्हें हमारे भवानी नगर में चीतों द्वारा काले हिरणों के शिकार के ‘रोमांचक’ खेल के बारे में बताना शुरू किया, ‘‘अच्छी नस्ल के चीतों को लाया जाता है और उन्हें पाला जाता है; उन्हें सिखाया जाता है कि वे झुंड में केवल काले हिरणों का ही शिकार करें। जब हिरणों का झुंड दिखाई देता है, तो आँखों पर पट्टी बाँधे हुए चीते को घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ी पर बिठा दिया जाता है और वह अपने मुँह से ‘ईहाहाहा’ जैसी एक खास आवाज़ निकालता है। जैसे ही चीता झुंड को देखता है, वह गाड़ी से कूदकर झुंड के आगे सीधा दौड़ने लगता है। उसे देखकर हिरणों का झुंड अपनी पूरी ताकत से भागने लगता है; लेकिन जैसे ही चीता, जो उनके पीछे दौड़ रहा होता है, झुंड में नर और मादा हिरणों को देख लेता है और उनका पीछा करता है। काला हिरण बगल में भागता है और चीते को घेरने की कोशिश करता है; लेकिन अंततः उसकी ताकत जवाब दे जाती है और तेंदुए के पंजे के वार से वह गिर पड़ता है। पल भर में तेंदुआ उसकी सींग को काट लेता है; लेकिन हिरण के मांस को नहीं छूता! यह खेल देखने में बेहद रोमांचक है!
जब मैंने उन्हें बताया कि तेंदुआ हिरण का शिकार कैसे करता है, तो दौलत खान ने मुझे हैदराबाद राज्य में जंगली सूअर द्वारा तीतर को मारने का सजीव वर्णन हैदराबादी उर्दू में दिया। नबाबी एक शब्द भी नहीं बोली। उसने बहुत कम खाया! लेकिन रुमाल से हाथ पोंछते हुए उसने कहा, -
“मुझे किसी की जान लेना पसंद नहीं है!” दौलत खान ने बिना एक पल भी देरी किए कहा, “तुम वो चिकन क्यों खा रहे हो?”
‘‘वो खानेकी चीज है!’’
‘‘तितर और हिरनभी खानेकी चीज है!’’
नबाबी यह सुनकर हंस पड़ी और पत्तों के केक बनाने लगी।
हम ठीक दो बजे रेसकोर्स पहुँचे। नबाबा ने खुद ही प्रवेश टिकट खरीदे। उन्होंने नबाबा से कहा, "सलीमा, क्या तुम वहाँ उस स्टॉल पर बैठोगी और हमारे साथ थोड़ा बहुत काम करोगी?"
दरअसल, दौलत खान बहुत ही सुंदर उर्दू-मिश्रित हिंदी बोलते थे; लेकिन अब इतने दिनों बाद मुझे उनके सटीक शब्द याद नहीं हैं। मैं अपनी टूटी-फूटी भाषा में जितना याद है, उतना लिखने की कोशिश कर रहा हूँ!
घुड़दौड़ का मैदान एक मेला है! इस मेले में भक्त सट्टेबाज होते हैं और देवता घोड़े और उन्हें चलाने वाले जॉकी होते हैं! ये देवता दस भक्तों में से एक को प्रसन्न कर सकते हैं और नौ को निराश कर सकते हैं! लेकिन फिर भी, निराश भक्त तब तक उस देवता की पूजा करते रहते हैं जब तक उनकी जेब में पैसा होता है!

दौलत खान और मैं बूथ की ओर चल पड़े। मैंने उन्हें वाकई यह यकीन दिला दिया था कि मैं माहिर हूँ; लेकिन अब मैंने कुछ घोड़ियों के नाम सुझा दिए थे और अगर मैं उन्हें हार गया, तो मेरी पोल खुल जाएगी। जब मैं इस तरह की चिंता में डूबा हुआ था, तभी अचानक मेरी मुलाकात शर्मा नाम के एक लेफ्टिनेंट से हुई। जब मैं पुणे में प्रशिक्षण ले रहा था, तब वह हमारे प्रशिक्षण केंद्र में थे। वह बहुत ही पक्के सट्टेबाज थे। मुझसे मिलते ही उन्होंने सबसे पहले मेरे पैर के बारे में पूछा। तब मैंने कहा, “पैर ठीक है; लेकिन आज के चार-छह सार्जेंटों के नाम बता दीजिए, वरना कहीं उनका दाहिना पैर भी न टूट जाए!” उन्होंने मुझे अपनी किताब में दर्ज घोड़ी की पूरी कहानी सुना दी। दौलत खान एक तरफ खड़े हो गए, मानो हम किसी निजी बात पर चर्चा कर रहे हों। शर्मा को धन्यवाद देने के बाद जब मैं दौलत खान की ओर मुड़ा, तभी शर्मा ने मुझसे कहा, “समर, समझे या नहीं?”
"किस बारे मेँ?"
"बहराम ईरानी की हत्या परसों हुई थी!"
"तुम क्या कह रहे हो? मुझे कैसे पता नहीं चला? अखबार में यह खबर क्यों नहीं है?"
"अरे नहीं, यहाँ दुबई में नहीं! वह तो पिछले महीने ही वहाँ गया था!"
"किस लिए हत्या की?"
"कितना बड़ा घोटाला! तस्करी का कोई मामला सामने आया है। मुझे कल रात क्लब में पता चला!"
सच कहूँ तो, पुणे पहुँचते ही मुझे बहराम से डर लगने लगा था। मुझे लगा था कि अगर मैं उससे मिला तो वो उन चश्मों के लिए मेरा पीछा करेगा; लेकिन जब शर्मा ने मुझे उसकी मौत की ये अचानक खबर दी, तो मैंने सचमुच राहत की साँस ली। अगर बहराम, जो गोरा, लाल आँखों वाला, हट्टा-कट्टा ईरानी था, हाथ धोकर उन चश्मों के लिए मेरा पीछा करता, तो मेरी हालत खराब हो जाती। मैं तो पहले से ही एक पैर से अपाहिज था! मैंने झूठी उदासी जताते हुए कहा, “बहुत दुखद खबर! हमने एक बहुत अच्छा दोस्त खो दिया!”
"लेकिन समर, क्या तुम्हें पता है उसके साथ क्या हुआ? पामिला के उसे छोड़ने के बाद से उसकी हालत बिगड़ती ही जा रही थी। बेकरी बंद हो गई। वहाँ दुबई से चोरी का सोना आता था और बहराम उसे ठिकाने लगाने में मदद करता था; लेकिन उनके बीच कुछ गड़बड़ हो गई। सारे झगड़े सुलझाने के लिए उन अरबों ने उसे दुबई ले जाकर मार डाला! लेकिन हम उसे समझाते रहे कि अगर वह इस तस्करी के धंधे में पकड़ा गया तो उसे पछतावा होगा! बेटे को पैसों से अजीब सा लगाव था!"
"बदकिस्मती!" मैंने शर्मा को अलविदा कहा और दौलतखान की ओर मुड़ा। यह लड़का बूथ पर कतार में खड़ा था और फटे-पुराने कपड़ों में टिकट के लिए खड़े एक एंग्लो-इंडियन लड़के की जगह काट रहा था!
मैंने मन ही मन सोचा, जब उसके पास सलीमा जैसी अप्सरा है, तो यह बेटा किसी और लड़की की तरफ देख भी कैसे सकता है?

जैसे ही मैंने उसकी पीठ थपथपाई, उसने कहा, "चलो, मुझे किस घोड़े पर सवार होना चाहिए?"
‘‘यार, तुम तो घोडीके तरफ देख रहे थे!’’
वह हँसा और बोला, "वह लड़की कितनी अद्भुत है!"
‘‘अरे भाई, तुम रेस खेलनेको आये हो या लडकियाँ देखनेको?’’
वह हँस पड़ा। मैंने उसे शर्मा द्वारा दिए गए सुझाव दिखाए और कहा, "चलो, दौड़ जल्द ही खत्म हो जाएगी..."
हम दोनों दिन भर रेसकोर्स पर रेसिंग करते रहे। मैंने जो छह टिप्स दिए थे, उनमें से तीन सही निकले। दौलत खान ने डेढ़ हजार कमाए; इस तरह मेरी इज्जत बच गई। अगर वो सब कुछ हार जाता, तो मैं मुश्किल में पड़ जाता। इस बात की प्रबल संभावना थी कि उसे लगा हो कि मुझे रेसिंग के बारे में कुछ भी समझ नहीं है। चार रेस के बाद, मैं और वो सलीमा के पास गए। बेचारी लड़की को रेसिंग के बारे में कुछ भी समझ नहीं आता था, क्या ये घोड़ियां दौड़ती हैं, क्या लोग पास आने पर चिल्लाते हैं, घोड़े पर पैसे लगाने का क्या मतलब होता है? उसे कुछ भी पता नहीं था। मैंने उससे पूछा,
‘‘आपको खेलना है?’’
‘‘कुछ समझता नहीं मुझे!’’ अदबीनं ती म्हणाली.
‘‘कुछ चायवाय पिएँगे!’’
‘‘हां जी ऽ!’’
सच तो यह है कि हमें कभी-कभार आकर उससे मिलना चाहिए था। मेले में इधर-उधर घूमना और एक महिला को तीन घंटे तक एक ही जगह पर बैठाए रखना हमारे लिए गलत था।
सलीमा हमारे साथ स्टॉल से नीचे आई; लेकिन मैंने देखा कि वह कुछ असहज थी। वह दौलत खान को कुछ बताना चाहती थी, लेकिन मुझे लगा कि वह मेरे सामने नहीं कह पाएगी। मैंने तुरंत उसकी असहजता का कारण समझ लिया। मैंने दौलत खान को स्टॉल के नीचे महिलाओं का शौचालय दिखाया और कहा, "अगर वह वहाँ जाना चाहें तो..."
लेकिन नवाब ने मेरी चतुराई को सही पहचाना और शरारती मुस्कान के साथ शौचालय चले गए। मैंने सेना अधिकारियों की बैठक में सुना था कि कुछ नवाब मूर्ख होते हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि दौलत खान को सलीमा से बात करने का भी मन नहीं था, जिसे वह अपने साथ लाए थे। एक तो मुझे शक था कि वह उनकी पत्नी नहीं है। सलीमा के प्रति उनकी उदासीनता ने मेरे शक को और बढ़ा दिया! उन्होंने सलीमा के साथ वैसा व्यवहार बिल्कुल नहीं किया जैसा एक पति अपनी पत्नी के साथ करता है।
मुझे हैरानी होती है कि रेसकोर्स पर चाय के स्टॉल सिर्फ सट्टेबाजों को लूटने के लिए ही तो नहीं लगाए गए हैं! हर चीज़ की कीमत दोगुनी है! क्या उसके पिता ने कभी डेढ़ रुपये में एक कप चाय बेची थी? मैंने देखा कि रेस परिसर में आने वाले हर व्यक्ति की सोच एक ही थी - कि वे पैसे लूटना चाहते हैं। लेकिन मुझे यह कहने का क्या हक है? मैं दौलत खान को यहाँ क्यों लाया?

आम्ही चहा घेऊन सलिमाला स्टॉलवर सोडायला गेलो, तर जागा फुल्ल! मी म्हणालो, ‘‘आप थोडी देर ठहरिए यह रेस खतम होने के बाद बहोत लोग नीचे जाते है. फिर आप बैठ लेना!’’
सलीमा ने मीठी मुस्कान दी। वह मेरे विनम्र व्यवहार से प्रसन्न थी। मेरा मानना है कि जो व्यक्ति स्त्रियों के मनोविज्ञान को समझता है, उसे दुनिया के किसी भी पुरुष को समझने में समय नहीं लगता। इसके विपरीत, मैं अपने अनुभव से कह सकती हूँ कि जो व्यक्ति स्त्रियों को नहीं जानता, वह जीवन भर धोखा खाता रहेगा। अगर मैं अलका को पहले से जानती, तो मैं ऐसा घर छोड़कर इस तरह क्यों भटकती? इसके लिए अलका को दोष देने के बजाय, मुझे अपनी कमजोर बुद्धि को दोष देना चाहिए कि मैं स्त्रियों के स्वभाव को नहीं समझ पाई। भवानी नगर छोड़ने के बाद, यह सब समझ में आने लगा। लेकिन मेरे पिताजी मुझे बार-बार चेतावनी देते थे कि 'सीखने में कभी देर नहीं होती!' इसलिए, अब से मैंने स्त्रियों के मनोविज्ञान का गहराई से अध्ययन करने का निश्चय कर लिया था। मैं सलीमा को भी इसी नजरिए से देख रही थी। मेरे अध्ययन का विषय! वह कौन हो सकती है? क्या वह यहाँ सिर्फ मौज-मस्ती करने आई है या वास्तव में किसी रिश्ते में है?
आखिरी रेस छह बजे खत्म हुई। दौलतखान, सलीमा और मैं निकलने ही वाले थे कि मेरी मुलाकात विलास से हुई। तेंगु, पांच फुट दो इंच लंबा विलास, सूट और धनुष पहने, बड़े सलीके से अपनी कार की ओर जा रहा था। मैंने उसे कितने सालों से नहीं देखा था? यह विला भवानीनगर के महाराजा के एक कर्मचारी का बेटा है! वह पढ़ा-लिखा था; लेकिन बहुत बातूनी और सलीकेदार था! उसने मेरे कुछ फुटबॉल मैच देखे थे। लेकिन उसके बाद वह भवानीनगर छोड़कर आवारा बन गया। मुझे पता चला था कि वह इस इलाके में किसी के अस्तबल में जॉकी का काम करता है। मैंने जोर से पुकारा, "विला!"
वह कार का दरवाजा खोलने ही वाला था। जैसे ही उसने मुझे देखा, वह रुक गया और मेरी तरफ कुछ कदम बढ़ाकर बोला, "समर? अरे, तुम कहाँ से हो?"
मैं दौड़ में आया हूँ!
"तुम अब कहाँ हो? क्या कर रहे हो? मैंने सुना था कि तुम सेना में हो!"
मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताऊंगा, पहले मुझे बताओ, क्या तुम अब जॉकी नहीं हो?
विलास जोर से हँसा और बोला, “ओह, पिताजी! मैं अब पूरा जॉकी बन गया हूँ! आज मेरे पास कोई घोड़ा नहीं था, इसलिए मैं आपको इस रूप में देख रहा हूँ! अगर आप अगली रेस तक रुकना चाहते हैं, तो रुकिए, मेरे पास लगातार चार रेसों के लिए घोड़े हैं; लेकिन उससे पहले हम मिलेंगे। मैं बंडगार्डन से दाहिनी ओर जाने वाली सड़क पर तीसरे बंगले के पीछे वाले कमरे में रहता हूँ। जॉकी विलास, बस यही मेरा नाम है, कोई भी मुझे जॉकी बना सकता है। लेकिन ज़रूर आइएगा। भवानी नगर के किसी से भी मिलकर अच्छा लगता है। ये कौन है?”
"अरे दौलत खान! ये हैदराबाद से हैं। ये सलीमा बेगम हैं।" विलास ने उन दोनों का अभिवादन किया और मेरी ओर ध्यान से देखते हुए पूछा, "तो क्या आप इस समय हैदराबाद में हैं?"

"अरे! हम पुणे के होटल हेवर्ड्स में मिले थे!"
‘‘तिथं उतरलाहेस?’’
‘‘हो. का?’’
"तो फिर तुम बड़े हो गए हो!" विलास ने मुस्कुराते हुए कहा, "उस होटल में बड़े लोग ठहरते हैं!"
"ऐसा कुछ नहीं, ऐसा कुछ नहीं!"
"अच्छा, लेकिन घर वापस आना! बंडगार्डन थर्ड राइट रोड, बंगलो नंबर तीन, याद है?"
"मेरे पैर में थोड़ा दर्द है, लेकिन मेरी याददाश्त अभी भी तेज है!" मैंने सिर हिलाते हुए कहा।
विलास ने पूछा, "आप लोग यहां कैसे पहुंचे?"
"आपका क्या मतलब है? टैक्सी से!"
"तो चलो, मैं तुम्हें जाने देता हूँ!" दौलत खान, सलीमा पीछे बैठी थी। मैं विलास के बगल में बैठा था। विलास ने मुझसे पूछा, "तुम इस झंझट में कब से पड़ गए?"
"लड़ाई कैसी रही?"
‘‘ही बाई कोण?’’
"सच कहूँ तो? मुझे तो अभी तक पता भी नहीं कि वो कौन है। मुझे शक है कि वो उससे कोई रिश्तेदार है, लेकिन ये उसकी पत्नी बिल्कुल नहीं है!"
"इसे कहते हैं कुलीन सौंदर्य, समर! ओह, लेकिन तुम शादीशुदा थीं, है ना?" विलास ने मुझसे पूछा, मानो उसे अचानक कुछ याद आ गया हो।
"विला, चलो इस बारे में बाद में बात करते हैं! यह कुछ मिनटों में कार में बैठकर चर्चा करने का विषय नहीं है! मैं घर से निकल चुका हूँ, अभी तक कहीं गया भी नहीं हूँ! आज सुबह तक मेरी जेब में एक भी पैसा नहीं था। पीछे बैठे इस दोस्त से मुलाकात हुई और अचानक मेरी जेब में पैसे आ गए! वाह!"
विलास ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या तुमने फुटबॉल खेलना छोड़कर फ्लश चलाना शुरू कर दिया है?"
मैं बस हंस पड़ी। लेकिन जिस क्षण मुझे एहसास हुआ कि भवानीनगर का यह आलीशान आदमी, जिसे मैं कुछ हद तक जानती थी, पुणे में है और उसने लाइसेंस प्राप्त जॉकी का दर्जा हासिल कर लिया है, उसी क्षण से मुझे सहारा महसूस होने लगा। विलास ने हमें हेवर्ड्स होटल पर छोड़ा और गाड़ी चला दी। वह इतना दुबला- पतला था कि गाड़ी चलाते समय उसे अपनी सीट के नीचे दो तकिए रखने पड़ते थे। पुणे की संकरी गलियों में, खासकर साइकिल सवारों की भीड़ के बीच, उसने बड़ी सहजता से गाड़ी चलाई। जब उसने हमें होटल पर छोड़ा, तो दौलत खान गाड़ी से उतरा और उसे धन्यवाद देते हुए बोला, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या आप यहाँ रात के खाने पर आ सकते हैं?"
"अरे नहीं! धन्यवाद नबाबजी!"
विलास गुजरते समय सलीमा की ओर एक नजर डालने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका!

चाहे आप रेस में जीतें या हारें, रेस में जाते समय जो उत्साह होता है, वह वापस आने पर कभी वैसा नहीं रहता। लेकिन आज दो बातें हुईं। शर्मा की सलाह की बदौलत दौलत खान ने 1,500 रुपये कमा लिए, और मुझे विलासिता का सुख मिल गया! साढ़े सात बज रहे थे। दौलत खान मुझे छोड़ने को तैयार नहीं था, मानो हम सालों से दोस्त हों। जब मैं अपने कमरे का ताला खोल रहा था, उसने कहा, "धुलाई करके आव, फ्लश करेंगे रात के खाने तक!"
मैं दिल खोलकर हँसी। मैंने कहा, "तुम्हें अब भी मेरे चेहरे के लाल होने का कारण समझ नहीं आया!"
घर छोड़ने के बाद यह सिर्फ दूसरा दिन था। लेकिन यह इतना रोमांचक था कि दिन भर मैं यह भूल ही गया था कि मैंने घर छोड़ा है और छोड़ने का कारण भी।
मैं शावर के नीचे खड़ी थी। मैंने स्नान किया। मैंने रेशमी कमीज़ और पजामा पहना। मैंने शीशे में देखा और अपने बाल संवारने लगी। मैं 'दुनिया अ दुनिया रंगरंगेली बाबा दुनिया रंगरंगेली' गाना गुनगुना रही थी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। मैं गई और दरवाजा खोला। दौलत खान दरवाजे पर खड़े थे। उन्होंने लखनवी जरीबुट्टी का चोला और मोगली की पतलून पहनी हुई थी। उन्होंने पूछा, "तुम्हारा ब्रांड क्या है?"
"यह वाला?" मैंने पूछा।
आप कौन से ब्रांड का पेय पीते हैं?
"हा!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "कुछ भी चलेगा!"
‘‘मेरे पास व्हिस्की है!’’
‘‘फिकर मत करो, नबाबजी! मैं तो हमेशा लेनेवाला नही हूँ! कभी कभी जस्ट फॉर द सेक ऑफ कंपनी!’’
"हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ था," उसने मुस्कुराते हुए कहा। हम उसके कमरे की ओर चलने लगे। उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया! उसी क्षण मुझे एक कहावत याद आ गई,-
भविष्य के बारे में अज्ञानता एक सुख है। वध के लिए तैयार मेमना कसाई के हाथ चाटता है, केवल इसलिए क्योंकि वह अपने भविष्य से अनजान है!
मैं दौलत खान नवाब की गंदगी साफ करने जा रहा था, लेकिन बेचारे को इसका जरा भी अंदाजा नहीं था। चलते-चलते उसने पुराने दोस्त की तरह मेरे कंधे पर हाथ रख दिया!
- ०-०-०-

१०
मुझे यह जानने की बहुत उत्सुकता थी कि सलीमा दौलत खान के लिए वास्तव में कौन थी। लेकिन जब वह मेरे सामने थी तो मैं दौलत खान से उसके बारे में कैसे पूछ सकता था? मैं दौलत खान के साथ उसके कमरे में गया और मुझे इस सवाल का जवाब मिल गया। सलीमा को कुछ खरीदारी के लिए बाहर जाना था। होटल के कुली ने उसके लिए टैक्सी मंगवाई थी। वह भी उसके साथ जा रहा था। सलीमा जाने के लिए तैयार हो रही थी। जाते समय उसने मुझसे कहा,-
‘‘आप उनको जादा नहीं पिने देना!’’
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो!"
सलीमा को आधे घंटे में अपनी 'खरीदारी' से लौटना था। लेकिन वह अब भी दरवाजे पर दुबकी हुई थी। दौलत खान ने मानो याद आने का नाटक किया, "देखो! मैं तो भूल ही गया था! क्या तुम्हें मेरे पैसे चाहिए?"
उसने ताबूत का बक्सा बाहर निकाला। मैंने उसमें नए नोटों का एक बंडल देखा। कौन जाने सलीमा क्या खरीदना चाहती थी! लेकिन दौलत खान ने अपनी उंगली होठों पर रखी, पाँच सौ रुपये के नोट गिने और उसे दे दिए। उसके साथ चल रहे होटल के लड़के से उसने कहा, "अपना ख्याल रखना और जाओ!"
उसने अपना सिर हिलाया। इस तरह से कि उसका मतलब था, 'मैं हमेशा ऐसे जोखिम भरे काम करता हूं।'
सलीमा चली गई। लेकिन मेरे मन में एक शंका पैदा हो गई, "क्या वह वापस आएगी?" दौलतखान ने ड्रेसिंग टेबल से टूटा हुआ कांच उठाया और उसे उस टेबल पर ले आया जहाँ मैं बैठा था। उसने गद्दे के नीचे से व्हिस्की की बोतल खोली।
‘‘आपको सोडा चाहिए या पानी चलेगा?’’
‘‘पानी चलेगा!’’
वह हँसा और बोला, "जब तुम शराब पीते हो तो तुम्हें दर्द होता है!"
गिलास भर दिए गए। गिलास आपस में टकराने की आवाज़ आई। सबने एक-दूसरे का उत्साह बढ़ाया और जैसे ही मैंने पहला घूंट लिया, मैंने दौलत खान से पूछा, "माफ़ कीजिए नबाब जी, ये बीबीजी कौन हैं?"
दौलत खान के लिए मेरा सवाल अप्रत्याशित था। उन्होंने एक गहरी सांस ली। उन्होंने सिगरेट जलाई और कहानी सुनाना शुरू कर दिया। सलीमा की वह कहानी सुनते-सुनते मैं उसमें खो गया। दौलत खान ने मुझे बताना शुरू किया,- हैदराबाद के नवाब अपनी अपार दौलत के लिए पूरी दुनिया में मशहूर हैं! लेकिन बाहरी दुनिया को उनके वेश्यालयों के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। परंपरा के अनुसार, एक बड़ा वेश्यालय होना ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता था! महल का एक हिस्सा इस वेश्यालय के लिए आरक्षित था। इसमें लगभग साढ़े तीन सौ औरतें रहती थीं। लेकिन क्या होगा अगर नवाब और उनकी मुलाकात साल में एक दिन भी न हो? इस वेश्यालय की औरतों को बाहरी दुनिया के संपर्क में आने की ज़रूरत ही नहीं थी। उनकी देखभाल नवाब की खास भरोसेमंद औरतें करती थीं। कड़ी सुरक्षा! भरपूर खाना-पीना! लेकिन समरबाबू, क्या होगा अगर युवतियों को सिर्फ़ खाना-पीना ही मिले?

"बिल्कुल नहीं! कोई शरीर को कैसे त्याग सकता है?"
"तो मेरा यही मतलब है! उनमें से कुछ महिलाएं अपनी देखभाल करने वाली पवित्र महिलाओं को बहला-फुसलाकर महल के पुरुषों के साथ संबंध बना लेती थीं! कुछ महिलाएं इस संबंध के कारण गर्भवती हो जाती थीं! नवाब को लगता था कि वे उसी से गर्भवती हुई हैं! ऐसी गर्भवती महिलाओं को अलग रखा जाता था और बच्चे के जन्म तक उनकी देखभाल की जाती थी। अगर लड़का पैदा होता, तो महिला को सौ रुपये गुजारा भत्ता मिलता। अगर लड़की पैदा होती, तो डेढ़ सौ रुपये मिलते!" "इतना अंतर क्यों?"
"लड़की पर ज्यादा जिम्मेदारी होती है, है ना?"
‘‘अच्छा!’’
"बच्चे को जन्म देने के बाद उस महिला को वेश्यालय से मुक्त कर दिया जाना था!"
‘‘ते का?’’
"नबाबासाहेब का दोबारा बच्चे को जन्म देने वाली महिला के साथ कभी भी 'पसंद' जैसा रिश्ता नहीं होता!"
"अरे बाप रे!"
"हमारे राज्य में बाद में पैदा होने वाली संतानों को कुछ हद तक 'विशेषाधिकार प्राप्त' माना जाता था! उन्हें विवाह और नौकरियों के मामले में रियायतें मिलती थीं! मेरे जैसे कई नवाब हैं जो स्वयं नवाब नहीं हैं, लेकिन नवाब से रक्त संबंध होने का दावा करते हैं। वे नवाब की कोख से एक सुंदर स्त्री का जन्म होना अपने लिए सम्मान की बात समझते हैं। इस सलीमा की माँ, ज़ेबुन्निसा, एक बहुत ही सुंदर महिला हैं।"
"क्या वे अभी भी वहां हैं?"
"हाँ! वो पचास साल की हैं, पर उन्हें अब भी पैंतालीस साल की ही लगती हैं! मिरागंज इलाके में उनका एक बंगला है। सलीमा अविवाहित हैं। वो मेरे जैसे तथाकथित नवाबों के साथ ही घूमती-फिरती हैं! लेकिन वो कैसी हैं?"
मैंने व्हिस्की का एक बड़ा घूंट लिया और कहा, "मुझे लगा कि वह तुम्हारी पत्नी है!"
"यही तो उसकी प्रतिभा है! वह इतने बड़े-बड़े नामों के साथ काम कर चुकी है, लेकिन हर किसी को ऐसा लगता है जैसे वे पहली बार इसका आनंद ले रहे हों!" “आपने बहुत अच्छा काम किया, नबाबसाब!” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। मुझे अंदर ही अंदर गर्मी महसूस हो रही थी। पता नहीं ये पेट में व्हिस्की की वजह से था या सलीमा के बारे में सच सुनकर।
"लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि जब तुम इतनी खूबसूरत सलीमा के साथ थे, तब रेसकोर्स पर उस एंग्लो-इंडियन बच्चे को क्यों घूर रहे थे!"
दौलत खान जोर से हँसे और बोले, "भगवान ने इतने सारे फूल बनाए हैं, हर एक की अपनी अलग 'सुगंध' है!"
‘‘कमाल कर दिया!’’

"समरबाबू, एक बार हैदराबाद आ जाइए। मैं आपको एक के बाद एक इतनी सारी चीजें दिखाऊंगा, बस! आप दोबारा आने के लिए नहीं कहेंगे! सलीमा, मुझे कहाँ जाना चाहिए? क्या आपने कभी हैदराबाद का मांसाहारी खाना खाया है?"
"मैंने अभी तक हैदराबाद देखा भी नहीं है, तो मैं इन सब चीजों का अनुभव कैसे कर सकता हूँ?"
‘‘अरे यार! एक दफे आ जाना! मेरे मेहमान बनकर आव!’’
दरवाजे पर दस्तक हुई। मैं उठा और दरवाजा खोला। सलीमा खरीदारी करके लौट आई थी। उसके जाने के समय मैंने उसे जिस नजर से देखा था, उसके लौटने के बाद वह नजरिया बदल गया था। मैंने दो गिलास व्हिस्की पी ली थी और सलीमा की कहानी समझ गया था। बेशक, उसे देखने का मेरा नजरिया भी बदल गया था।
"मुंबई से पुणे तक हवाई यात्रा बहुत महंगी है!" उसने रूमाल से अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा।
‘‘आप कौनसे मार्केटमें गये थे!’’
‘‘इधरही कॅंप में!’’
‘‘ये कॅंपवाले लोग बहोत महेंगे है! गाव मे जाना था! लक्ष्मी रोड!’
‘‘वह साथ आयेला लडका बोला यही जाएंगे!’’
मैंने मन ही मन कहा, "उस बदमाश को ज़रूर कुछ कमीशन चाहिए होगा!"
दौलत खान को हमारी सस्ती-महंगी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी नज़र में यह चर्चा व्यर्थ थी। पैसा खर्च करने के लिए होता है, और उनकी समझ में खर्च करते समय सस्ती-महंगी बातें करना मूर्खता थी। उन्होंने मुझसे कहा, "चलो, समर!"
आठ बज चुके थे। खाने का अभी थोड़ा समय था। सलीमा मेरे दिमाग में छाई हुई थी। व्हिस्की का नशा उतर चुका था। बाहर आकर सलीमा दीवार के उस पार गई और कपड़े बदलने लगी। मैं चश्मा लगाए ताश खेल रहा था। दौलतखान के बैग में नोटों का बंडल मेरी आंखों के सामने था। लेकिन उसे यूं ही बाहर निकाल देना बेवकूफी होती। अनजाने में ही मैं उसे पैसे देना बंद करना चाहता था। लेकिन ऐसा करते समय यह भी जरूरी था कि सलीमा दखल न दे। अगर उसे पता चल गया कि मैं उसे बेवकूफ बना रहा हूं तो क्या होगा? जैसे मेरी नजर दौलतखान के नोटों पर थी, शायद उसकी भी होती! इसलिए कुछ उपाय करना जरूरी था ताकि उसे मेरे इरादों का पता न चले...
उसने कपड़े बदले और हमारे खेलने की जगह के पास बैठ गई। मैंने दौलत खान से मज़ाक में कहा, "बीबीजी, आप नीचे वाला खेल देख रही हैं!"
“तो मुझे क्या करना चाहिए?” दौलतखाना ने मुझसे पूछा।
मी ग्लासाकडे बोट दाखवलं तेव्हा दौलतखान म्हणाला, ‘‘वैसा वो कभी कभी लेती है, लेकिन आपके सामने शरमाएंगी!’’
“इसमें शर्मिंदा होने वाली क्या बात है?” मैंने उठकर तीसरा गिलास लाते हुए कहा और उसे मेज पर रख दिया। दौलत खान ने उसमें एक पेग शराब डाली। मुझे लगा था कि सलीमा हिचकिचाएगी, शर्मिंदा होगी या उसका चेहरा लाल हो जाएगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसने बस गिलास उठाया; हमारा हौसला बढ़ाया और गिलास अपने होठों से लगा लिया। मुझे हैरानी हुई कि सलीमा, जिसने मुझे दौलत खान को

ज़्यादा शराब न पीने देने के लिए कहा था, इतनी निडरता से शराब का गिलास उठाकर अपने होठों से लगा लेगी!
हमारा खेल जारी रहा। हमेशा की तरह, मैं शुरुआती कुछ गेम हार गया। फिर मैंने दौलत खान को उन गिलासों के ज़रिए उसके हाथ में मौजूद कार्डों का अंदाज़ा लगाकर बेवकूफ़ बनाना शुरू कर दिया। लेकिन हर बार जब वह गेम हारता, तो गिलास में बची हुई व्हिस्की खत्म करके उसे वापस गिलास में डाल देता। हर गेम के साथ उसकी जेब खाली होती जा रही थी और मेरी जेब भरती जा रही थी। सलीमा घूंट-घूंट करके हमारा खेल देख रही थी। वह लगातार मेरी तारीफ़ कर रही थी कि मैं अपने प्रतिद्वंदी पर कितनी सटीकता से खेल रहा था। लेकिन मूर्ख दौलत खान ईर्ष्या से खेल रहा था। वह गेम को बढ़ा रहा था ताकि वह अपना हारा हुआ पैसा तुरंत जीत सके। पहला गेम एक रुपये का था, जिसे उसने दस रुपये में बदल दिया। मुझे उसमें कुछ भी नहीं खोना पड़ा। जब तक मुझे अपने गिलासों में दिख रहे संकेतों से पता था कि उसके हाथ में कौन से कार्ड हैं, मुझे किसी बात की चिंता नहीं थी। मैं बहुत सावधानी से पी रहा था!
हमें रात के खाने के लिए भोजन कक्ष में जाना था, लेकिन मैंने वेटर से कहा कि हमारा खाना ऊपर भेज दे। खाना आ गया। लेकिन दौलत खान को खाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह मुझसे हारे हुए सारे पैसे वापस जीतना चाहता था। हमने थोड़ा सा खाया। वेटर थालियाँ नीचे ले गया। तुरंत ही दौलत खान ने मुझसे कहा,-
‘‘चलो समरबाबू, आज रातभर खेलनेका!’’
‘‘बस्स हो गया अब, कल खेलेंगे!’’ मी म्हणालो.
‘‘नहीं नहीं! ऐसा नहीं. एक तो मुझे खतम कर दो या तुम खतम हो जाव!’’
‘‘अच्छा ऽ ऽ अच्छा -’’
मैं उसकी बात समझ गया। वह तब तक खेलना चाहता था जब तक उसका या मेरा सारा पैसा खत्म न हो जाए। आखिर वह नशे में था। और मेरे चश्मे कमाल के थे! उसके पिता भी मेरी चालों को नहीं समझ पाते।
सलीमा ने उससे कहा, "बस करो अब। मैं कल सुबह खेलूँगी!" लेकिन दौलत खान सुनने के मूड में नहीं था। वह ईर्ष्या से जल रहा था। जैसे ही उसके पास पैसे खत्म होते, वह उन्हें अपने थैले से निकाल लेता। सुबह के दो बज रहे थे, फिर भी हम खेलते रहे। सलीमा को जम्हाई आई और वह कुर्सी पर ही सो गई। उसके कंधों से कंबल गिर गया था। नींद में भी उसकी सुंदरता ने मुझे मोहित कर लिया। अचानक, दौलत खान का थैला खाली हो गया। अंत में, उसे व्हिस्की की आधी बोतल मिली। उसने उसे उठाया, कुर्सी पर बैठ गया और बोला,
‘‘तुमने सब जीत लिया. अब मेरे पास कुछ भी नहीं. अगर ये आखरी डाव भी तुमने जिता तो-’’
"यह क्या है?" मैंने आश्चर्य से पूछा।
‘‘तो आप सलिमाके साथ सो जाइए!’’
हमारी तेज़ बातचीत से सलीमा जाग गई थी। दौलत खान की बातें उसके कानों तक पहुँचीं और उसने शर्म से मेरी तरफ देखा और अपना सिर झुका लिया। जब मैंने पढ़ा कि द्वंद्वयुद्ध में हारने वाले पांडवों ने अंततः द्रौपदी से विवाह

कर लिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। लेकिन आज कुछ बहुत अलग हो रहा था। दौलत खान, जो फ्लश में अपना सारा पैसा हार चुका था, सलीमा के बदले मुझसे आखिरी दांव खेलने का अनुरोध कर रहा था। मैंने कहा, "मैं खेलूँगा, लेकिन सलीमा का अपमान मत करो।"
सलीमा ने दौलत खान की तरफ देखा और तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ मुस्कुराई। दौलत खान ने खाना खाने के बाद भी आधा गिलास व्हिस्की पी रखी थी। पिछला मैच भी वह हार गया था। लेकिन अब उसे किसी बात का होश नहीं था। वह कुछ अस्पष्ट बड़बड़ा रहा था, मानो बेहोश हो। वह कुर्सी पर ठीक से बैठ भी नहीं पा रहा था, तभी सलीमा ने मुझसे कहा, "वह नशे में चूर होगा!"
सलीमा और मैंने उसे दोनों तरफ से पकड़कर चारपाई तक ले गए और लिटा दिया। दौलत खान, जो अधमरा था, चिल्लाया, "अब तुम दोनों जाओ, जाओ, मजे करो!"
मैंने कार्डों का जोड़ा उठाया और उन्हें अपनी जेब में रख लिया। मैंने अपने चश्मे को उसके कवर में रखने की कोशिश की और कवर को अपनी पतलून की जेब में डाल दिया। लेकिन मेरी पतलून की दोनों जेबें नोटों से भरी हुई थीं। मेरे लिए वो चश्मा मेरी जेब में रखे सभी नोटों से कहीं अधिक कीमती था। बस यूं ही, मैंने उसे अपनी जेब में रख लिया। सलीमा उठकर घास पर खड़ी थी। सुबह के 2:30 बज रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी। कार्ड बिखेरने के बाद, मैंने सलीमा से कहा,-
‘‘मैं जा रहा हूँ. दरवाजा बंद कर लो!’’
लेकिन सलीमा ने कुछ नहीं कहा। वह बस छत पर खड़ी रही।
मैं सीधे छत पर उसके पास गया और कहा, "मैं जा रहा हूँ!"
वह अभी भी गतिहीन है!
अंत में मैंने उसका हाथ छुआ और कहा, "मैं जा रहा हूँ!"
सलीमा ने पीठ फेर ली और मेरी गर्दन में बाहें डाल दीं। मेरे गले साफ होने तक मेरे सिर में छाई व्हिस्की की धुंध छटपटा रही थी। एक और नशा छा गया। सलीमा के भूरे बालों की खुशबू नाक के रास्ते मेरे दिमाग में घुस गई। जब वह मुझे गले लगाए हुए थी, मैं उसे अंदर ले आया। मैं पलंग पर बैठ गया। दौलत खान दूसरी तरफ खर्राटे ले रहा था - और मैं?
उसके बाद सलीमा मुझे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी।
‘‘इधर सो जाइए थोडी देर!’’
मैंने दौलत खान के कोट को सवालिया निगाहों से देखा। उसने तिरस्कार भरे लहजे में कहा, "वह कल दस या ग्यारह बजे तक नहीं उठेगा।"
उसके कहने पर, मैंने कुछ देर तक उसे बाहों में भरकर सोया। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे सलीमा के साथ इतना मज़ा आएगा।
सलीमा पूरी तरह से खुली हुई थी। यह उसका निजी मामला था; लेकिन वह इस प्रांत में मूर्ख और लापरवाह व्यक्ति को अच्छी तरह समझती होगी। अन्यथा, वह मुझसे इस तरह व्यवहार न करती। जैसे ही बाहर तीन बजे की घंटी बजी, मैं उठ खड़ी हुई और सलीमा की पीठ की ओर हाथ हिलाते हुए बोली, "अब जाओ! तीन बज गए हैं!"
उसकी आँखों में भी आँसू थे, और वह मेरे पीछे-पीछे अंदर से दरवाजा बंद करने आई। इससे पहले कि मैं दरवाजा खोल पाता, उसने कहा, "यहाँ मत रुको!"

‘‘क्यूँ?’’
‘‘सुबह वो होशमें आयेगा और कहेगा रातको मुझे शराबींमें फसाया!’’
‘‘ऐसा कभी हुवा है?’’
‘‘बार बार होता है, झगडेभी करता है!’’
“वाह! आपने तो कमाल कर दिया! मैं अब यहाँ से चलती हूँ!” सलीमा हँसी। मैं समझ गई कि मेरे प्रति उसके इस स्नेह का क्या अर्थ है। दरवाज़े की कुंडी खोलने से पहले ही मैंने सलीमा को गले लगाया और चूमा। दौलत खान बिस्तर पर लेटा हुआ था और लयबद्ध तरीके से खर्राटे ले रहा था। सही मायने में, आज मैंने उससे उसकी सारी दौलत छीन ली थी।
- ०-०-०-

११
मैं कमरे में आया। मैंने अपनी जेब में रखे नोटों को बिना गिने ही सूटकेस में ठूंस दिया। गिनने का समय कहाँ था? जैसा कि सलीमा ने सुझाव दिया था, मुझे भोर होने से पहले होटल छोड़ना था।
जब मैं नीचे आया, तो होटल का दरवाज़ा अंदर से बंद था! होटल का गार्ड काउंटर के पास सो रहा था। मैंने उसके तकिए के नीचे ताले की चाबी का गुच्छा देखा। मैंने उसे धीरे से खींचा। मैंने होटल का बिल चुकाए बिना ही निकल गया। पुणे में सन्नाटा पसरा हुआ था। एक ट्रक तेज़ आवाज़ करते हुए, बत्ती जलाकर निकल रहा था। हवा में घना कोहरा था। लेकिन मुझे स्टेशन पहुँचना ही था। कैंप की सीमा पार करके थोड़ा आगे जाने पर, मैंने एक कोने में खड़ी टैक्सी देखी। टैक्सी ड्राइवर ने शायद नगर निगम की बत्ती के नीचे टैक्सी खड़ी की होगी ताकि उसे पता चल जाए कि यह टैक्सी है। लेकिन ड्राइवर ने खिड़कियाँ बंद कर रखी थीं और पीछे की सीट पर पैर मोड़कर गहरी नींद में सो रहा था। मैंने खिड़की पर दस्तक दी। टैक्सी ड्राइवर झट से उठ बैठा। पता नहीं वह नींद में भी किसी ग्राहक का इंतज़ार कर रहा था या नहीं! उसने दरवाज़ा खोल दिया। ‘‘चलो स्टेशन चलते हैं!’’ मैंने कहा।
उसने मुझे बहुत परेशान किया। मैंने अपनी घड़ी देखी और पूछा, "कौन सी ट्रेन जा रही है?"
‘‘बम्बई!’’
‘‘चलो, अभी पाँच बजे एक्सप्रेस है!’’
मैंने अपनी घड़ी देखी। 4:30 बज रहे थे। मैंने राहत की सांस ली और ड्राइवर के बगल में बैठ गया।
"आप कहाँ से आए हैं?" उसने गर्मजोशी से पूछा।
"मेजर!" उस बेटे से यह पूछने का क्या कारण था कि मैं कहाँ से आया हूँ? लेकिन यह तो उसका स्वभाव था!
हम स्टेशन पहुंचे और मुंबई जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई। टैक्सी का किराया चुकाने के बाद मैंने फर्स्ट क्लास का टिकट खरीदा। धीरे-धीरे प्लेटफार्म भरने लगा। कुछ चाहने वाले मेरे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में आए। मैं खिड़की के पास बैठी थी। मेरे पैरों के पास एक सूटकेस रखा था। मुझे अक्सर उसमें रखे पैसों को गिनने का मन करता था; लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कर सकती थी।
स्टेशन पर लगी बड़ी घड़ी की सुई ने ठीक पाँच बजाए और ट्रेन के इंजन ने हॉर्न बजाया। धीरे-धीरे ट्रेन चलने लगी।
मेरी यात्रा का पहला दिन बहुत आनंदमय था। वो दौलत खान कौन था? वो सलीमा कौन थी? एक ही दिन में सारा हंगामा मच गया। भवानी नगर में सब्ज़ी बेचने आई औरतें जैसे ही अपना पहला धान बेचतीं, उन्हें जो चावलीवाली मिली होती, वो उसे माथे पर लगातीं, कमर थपथपातीं और कहतीं, “भवानी, भवानी बन गई है।” मेरे धंधे की भवानी इतनी मज़बूत हो गई थी। मैंने न सिर्फ हज़ारों रुपये कमाए थे, बल्कि एक बेहद खूबसूरत औरत का साथ भी पाया था। नैतिकता और अनैतिकता, धर्म

और अधर्म के विचार मेरे मन में कभी आए ही नहीं। अब से मैं इसे जीवन में कभी नहीं छोड़ने वाला था। जिस अलका को मैंने पत्नी के रूप में स्वीकार किया था, वो बहुत ही शरारती थी। नहीं, असल में, मुझे अलका को खत्म कर देना चाहिए था। लेकिन मेरी माँ ने कसम खाकर मेरे लिए मुश्किल खड़ी कर दी थी। इसके विपरीत, उन्होंने मुझे सलाह दी कि जब तक सारा गंदा माहौल शांत न हो जाए, तब तक मैं गाँव छोड़ दूं। मेरी नज़र में यह कायरता थी, लेकिन मेरी माँ ही मेरे जीवन की सबसे कमज़ोर कड़ी थी। मैं सिर्फ़ अपनी माँ की वजह से ही स्वस्थ रह पाया। मैं अल्का को मार डालता और उसे कहीं गायब कर देता। माँ! माँ, अगर तुमने बीच में दखल न दिया होता तो...!
गाड़ी तलेगांव से निकलकर रफ्तार पकड़ने लगी। जल्द ही हम लोनावला पहुँच गए। शीशे की खिड़की से भी ठंड महसूस हो रही थी। मेरे सामने बैठे सज्जन ने सिगरेट जलाई। मुझे खुद सिगरेट पीना पसंद नहीं है, लेकिन जब कोई और सिगरेट पीता है तो उसकी महक मुझे अच्छी लगती है।
यात्रा पर निकलने से पहले स्नान करने की हमारी परंपरा थी। उस रात सलीमा के साथ जो घटना हुई, वह भी उसी परंपरा का हिस्सा थी! बिना स्नान किए बाहर जाना ठीक नहीं था। लेकिन किसकी बेटी के पास इतना समय होता है?
खंडाला से निकलते ही सुरंग में सन्नाटा छा गया। ट्रेन कुछ देर तक घोर अंधेरे में चलती, और कभी-कभी उजाले में! बरसाती मौसम अभी-अभी समाप्त हुआ था। पहाड़ों की चोटियाँ हरी-भरी थीं। सूरज पूरब से झाँक रहा था। घाटियों पर छाई धुंध छंटने लगी थी। पेड़ों की चोटियाँ चमकने लगीं। एक तरफ ऊँची चट्टानें थीं और दूसरी तरफ गहरी घाटी, जिसमें से ट्रेन धीमी गति से लयबद्ध ध्वनि उत्पन्न करते हुए गुजर रही थी। मानसून के समाप्त होने के कारण पटरी की मरम्मत का काम चल रहा था। रेलवे कर्मचारियों को उतारने के लिए एक्सप्रेस ट्रेन जगह-जगह धीमी हो रही थी।
घाट समाप्त हुआ और गाड़ी समतल मैदान पर चलने लगी। कर्जत के चारों ओर मीलों तक फैले हरे और पीले धान के खेत बेहद खूबसूरत लग रहे थे।
करजत से एक धनी मुस्लिम परिवार हमारे डिब्बे में आया। लेकिन इस महिला ने अपने नाखूनों तक काला रेशमी नकाब ओढ़ा हुआ था। उसकी आँखों पर एक छोटी सी जाली लगी हुई थी। मैंने उसके पैरों की ओर देखा। एकदम सफेद, सफेद पैर! मेहंदी से रंगे नाखून। उसी क्षण मुझे सलीमा की याद आ गई!
सलीमा दौलत खान के साथ ऐसा धोखा क्यों करेगी? वह उसे यह क्यों बताएगी कि सुबह उठते ही वह नशे में मुझसे झगड़ा करेगा? असल में, वह तो उसके साथ मजे करने आई थी। कुछ पलों के लिए मुझ जैसे साथी पर इतना भरोसा करने का क्या कारण था? सिर्फ एक ही कारण! मैंने उसे संतुष्ट किया था। बदले में उसने मुझे यह सलाह दी। वह उसके साथ इतना ईमानदार कैसे हो सकता है? रेसकोर्स पर फैशनेबल लड़कियों को देखकर तो वह पिघल जाता! लेकिन सुबह उठते ही मैं उसे अपने 'गुल' से जरूर धो डालूँगी! नहीं तो, मैंने उसका पैसा चुरा लिया! क्या ये चश्मा पहनकर किसी और के साथ खेलना सरासर धोखा नहीं है? अपने प्रतिद्वंदी के पत्ते जानते हुए खेलना चोरी नहीं है, बल्कि कुछ और है?...

करजत से निकलते ही ट्रेन और भी तेज़ चलने लगी। नेरल स्टेशन पर खड़ी छोटी ट्रेन, उसके नीले डिब्बे, मेरे ठीक पीछे थे। मेरे मन में एक ख्याल आया, ‘क्या मुंबई जाने की बजाय माथेरान जाऊं? मैं आराम से चार-आठ दिन होटल में रह सकता हूं!... सीज़न अभी खत्म नहीं हुआ है, इसलिए वहां ज्यादा भीड़ नहीं होगी! लेकिन ये सब झंझट तो कल्याण में ही खत्म हो जाएगा! मुझे कल्याण में उतरकर वापस नेरल आना ही पड़ेगा!... नहीं, मुझे माथेरान ही जाना है!’ मैं अपना सूटकेस पैरों के नीचे दबाकर दरवाजे तक गया और वहीं खड़ा हो गया। कल्याण पहुंचने में बहुत समय लगेगा। मुझे पूरा रास्ता वापस जाना पड़ेगा; लेकिन कोई चारा नहीं था। अब, अगर मैं मुंबई जा भी जाऊं, तो मुझे वहां क्या अपॉइंटमेंट करना है?
और यह कितना बड़ा आश्चर्य था। नेरल से निकलने के बाद, अगले स्टेशन पर सिग्नल मिलते ही एक्सप्रेस के पहिए चरमराहट के साथ रुक गए। बिना एक पल भी देरी किए, मैं उतर गया। एक्सप्रेस उस स्टेशन पर नहीं रुक रही थी, इसलिए जब स्टेशन मास्टर ने मुझे उतरते देखा, तो वह आगे आया और मुझसे बोला,-
‘‘इधर क्यूँ उतरे?’’
‘‘गाडी खडी हो गई, उतर गया!’’
‘‘आपके पास टिकट है?’’
मुस्कुराते हुए मैंने मुंबई की अपनी फर्स्ट क्लास टिकट निकाली और उसके सामने रख दी। उसने कुछ झिझकते हुए कहा, "माफ़ कीजिए!"
सिग्नल गिरते ही एक्सप्रेस ट्रेन आगे बढ़ गई। मैंने स्टेशन मास्टर से पूछा जो वापस आ रहे थे,-
‘‘नेरळ जाने के लिए लोकल कब है?’’
‘‘अभी दस-पंधरा मिनिटमें आ जाएगी, लेकिन आपको वो प्लॅटफॉर्मपर जाना पडेगा!’’
दरअसल, अगर मैं कर्जत में उतरा होता तो बेहतर होता। लेकिन अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया, मैं उसके साथ क्या करूँ?
मैं प्लेटफार्म पर सीमेंट की बेंच पर बैठकर लोकल ट्रेन का इंतज़ार कर रहा था। उसी समय एक ख्याल मेरे मन में घर कर गया। अफसोस की बात है कि मैंने दौलत खान को लूटा, लेकिन उस होटल का बिल चुकाकर मैंने क्या हासिल किया? दौलत खान हैदराबाद वापस चला जाएगा! हम जीवन में फिर मिलेंगे या नहीं, यह कहना नामुमकिन है... लेकिन अगर हेवर्ड्स होटल वापस जाने का समय आ गया तो? क्या होटल मालिक मुझे अंदर कदम रखने देगा!...
स्टेशन के पीछे एक डाकघर था। मैं वहाँ गया और मनी ऑर्डर का फॉर्म भरा। मैंने होटल मालिक को सौ रुपये भेजे और पर्ची पर नीचे लिखा, "चूँकि मुझे सुबह जल्दी होटल छोड़ना पड़ा, इसलिए मैं बिल का भुगतान नहीं कर सका। कृपया 100 रुपये स्वीकार करें - कमरा नंबर 23 का पर्यटक।" किसी कारणवश, मैं होटल मालिक को धोखा नहीं देना चाहता था। पहली बात तो यह थी कि मैं पुणे दोबारा आने की संभावना को नकार नहीं सकता था, और दूसरी बात, पूरी दुनिया के साथ बेईमानी करना ठीक नहीं था!

बस एक ही समस्या थी: मनी ऑर्डर बनाकर नेरल के लिए लोकल टिकट लेना और प्लेटफॉर्म पर आना, और फिर उल्हासनगर से कर्जत जाने वाली लोकल ट्रेन पकड़ना।
जब मैं नेरल पहुँचा तो मुझे बहुत भूख लगी थी। मैं दिवाडकर के भोजनालय गया और पेट भरकर खाना खाया। 'जुकजुक' ट्रेन दस बजे चलने वाली थी। मैंने अभी तक माथेरान नहीं देखा था; लेकिन मैंने सुना था कि सीज़न के दौरान वहाँ मुंबईकरों की बहुत भीड़ होती है।
छोटी सी ट्रेन दो घंटे से चल रही थी। इंजन घुमावदार सड़क पर ट्रेन को ऊपर ले जा रहा था। लेकिन जब आप ऊंट की पूंछ पर पैर रखते, तो वह ऐसे मुड़ती और घूमती जैसे इंजन और आखिरी डिब्बा बार-बार एक-दूसरे से टकरा रहे हों। यह बहुत मज़ेदार था। परशा के कुछ बच्चे चिप्स चबाते हुए बातें कर रहे थे और अपनी पिछली यात्रा को याद कर रहे थे। जैसे-जैसे ट्रेन ऊपर चढ़ने लगी, ठंड बढ़ती गई। लेकिन ऊपर से प्राकृतिक सुंदरता को देखकर ठंड का कोई असर नहीं दिखता था!
दो घंटे बाद, ट्रेन माथेरान स्टेशन पर पहुँची और रुक गई। रास्ते में एक पानी के पड़ाव पर रुकी थी। होटल एजेंट स्टेशन के बाहर जमा थे। मुझे पंढरपुर के उन बड़े-बड़े जमावड़ों की याद आ गई! श्रद्धालु ट्रेन से उतरने की जगह के चारों ओर जमा थे। बस यही हाल है!
मैंने एक आलीशान होटल में रुकने का फैसला किया था। मुझे माथेरान इसलिए बहुत पसंद था क्योंकि यहाँ मशीनों का आना मना था। इसलिए एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे हम पृथ्वी से किसी दूसरे ग्रह पर आ गए हों!
होटल ‘रूबी’! नाम अच्छा लगा, इसलिए मैं वहाँ गया, लेकिन यह वास्तव में आकर्षक लग रहा था। इमारत के बाहरी हिस्से से लेकर अंदर के फर्नीचर तक, सब कुछ गहरे लाल रंग से रंगा हुआ था। होटल के पारसी मालिक की नाक का अगला हिस्सा भी उसी रंग का था। सफेद पोशाक पहने लड़के ने विनम्रता से मेरे हाथ से बैग लिया और उसे मेरे कमरे में ले गया। चलते-चलते उसने मुझसे पूछा, "शेठ, क्या आप पुणे से हैं?"
‘‘का?’’
पूछना तो आसान है!
"लेकिन आपको ऐसा पूछने की ज़रूरत क्यों महसूस हुई?"
"हमारा 'महारथी' मानुस गलती से इस होटल में आ गया!"
‘‘का?’’
"इसमें अतिरिक्त पैसा लगता है और बगल वाले होटल मालिक हंगामा कर रहे हैं!" "प्रचार नहीं, बल्कि प्रचार?"
"बस यही बात है! हमारी सेठ यही कहती रहती है!"
कमरे का दरवाजा खोलकर अंदर आते ही मुझे बहुत खुशी हुई। यहाँ सब कुछ लाल था! गद्दे पर बिछी चादरें, कुर्सियों के कुशन, यहाँ तक कि छत का पंखा भी लाल था! ऐसा लग रहा था मानो उससे आने वाली हवा भी लाल हो!
जैसे ही लड़के ने ड्रेसिंग टेबल का शीशा पोंछना शुरू किया, मैंने उससे पूछा, "ये लोग किस तरह का प्रचार कर रहे हैं?"

‘‘हम यात्री को लुभाते हैं!’’
"अरे वाह, व्यापार में ऐसे ही काम होता है! आप किस गांव से हैं?"
"ठाकुरली का!"
आप यहां कितने वर्षों से हैं?
सातवां वर्ष शुरू हो चुका है!
"वाह! आपने अपना नाम क्या बताया था?"
"मेरा नाम लक्ष्मण है। लेकिन मेरे गुरु मुझे 'लचमन' कहकर पुकारते हैं; इसीलिए सब मुझे लक्ष्मण कहते हैं!"
"मैं भी यही कहूंगा, लचमैन! देखो, तुम्हारा नियोक्ता आवास के लिए कितना शुल्क लेता है?"
"रोजाना पचास!"
और अगर आप नाश्ता करना चाहें तो क्या होगा?
"नाश्ता दस रुपये का है, दोपहर का खाना पंद्रह रुपये का है, रात का खाना पच्चीस रुपये का है!"
"बस इतना ही! देखो, लखमन, मुझे शाम के लिए एक स्वेटर खरीदना है। मुझे कुछ कपड़े भी खरीदने हैं!"
"सेठ का फायदा क्यों उठाना चाहिए?"
‘‘का?’’
“लोग कहते हैं कि एक रुपये का सामान दो रुपये का हो गया है!” मैं हँसते हुए बोला, “मैं बताता हूँ! सामान की कीमत कितनी बढ़ानी पड़ेगी? तब तो कीमत भी बढ़ ही जाएगी!”
"सैयब, अगर तुम सारे पॉइंट्स नहीं देखोगे, तो तुम्हें घोड़ा मिलेगा!" "क्यों? क्या तुम चल नहीं सकते?"
नहीं! एक यहाँ, दूसरी वहाँ। हमारे चाचा की घोड़ी सबसे अच्छी है! सफ़ेद बालों वाली! जब परस्या के बच्चे वध के लिए आते हैं, तो वे उसी घोड़ी के लिए मरते हैं!
"तो? फिर मुझे उस घोड़ी को देखना ही होगा! लेकिन अरे यार, लचमन, क्या यहाँ कोई क्लब वगैरह हैं?"
"क्लबिंग जैसा कुछ नहीं है। सैनिक, डॉक्टर और चिक्कीवाला सेठ सब खेल रहे हैं!"
"कहाँ?"
"चिक्कीवाला शेठ के घर पर है! लेकिन साहब, सच कहूं तो, आप वहां मत जाइए!" ‘‘का?’’
"वो चिक्कीवाला शेठ सबको हरा देता है!"
मैंने मन ही मन सोचा, क्या इस शेठ के पास भी मेरे जैसे चश्मे हैं?
"ठीक है लखमन, मैं पहले नहा लेता हूँ। फिर तुम दोपहर का खाना ले आना!"
लछमन के जाने के बाद, मैंने अंदर से दरवाजा बंद कर दिया और सूटकेस खोलकर सबसे पहले पैसे गिने। पंद्रह हज़ार छह सौ अस्सी! दौलत खान मर गया! अब वो अपनी ज़िंदगी में कभी किसी के साथ 'फ्लश' नहीं खेलेगा!

मुझे सलीमा याद आ गई! उसका रूप कैसा था? आधी रात की वो घटना! उसके बाद दर्जनों औरतें मेरी ज़िंदगी में आईं और गईं। लेकिन कोई भी सलीमा की बराबरी नहीं कर सकी। उसकी आहों में भी मुझे मदहोश कर देने वाला एहसास होता था, और इसलिए मैंने पुणे लौटते समय होटल हेवर्ड्स में सौ रुपये भेज दिए, वो भी शांत मन से।
नहाने के बाद मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ! लछमन दोपहर का खाना लाया था। अंग्रेजी शैली का खाना देखकर मैंने उससे पूछा,-
"इसे आपके लिए कौन बनाता है?"
‘‘सेठानी.’’
"तुम क्या कह रहे हो? रसोइया नहीं?"
खाना पकाने का मौसम! एक आम रसोइए को बिना कुछ किए डेढ़ से दो सौ रुपये कौन देगा? आप जैसा ग्राहक महीने में एक बार जरूर आएगा!
"शेठ बनना और कौन चाहेगा!"
"शेठ, शेथानी, और उनका एक भतीजा है, वह हर साल इधर-उधर घूमता है! वह पिंडक्रम है!"
"तो यह सेठ किसके लिए इतना कमाता है?"
"कौन जानता है?"
"लखमन, मुझे कल रात बिल्कुल नींद नहीं आई! मैं अब सोने जा रही हूँ। चार बजे चाय लेकर आना और अपने चाचा से कहना कि घोड़ी भी ले आएं! मैंने कई सालों से घुड़सवारी नहीं की है!"
मैं दोपहर का भोजन लेकर छत पर आया। दूर तक फैले सह्याद्री पर्वतमाला के नीले शिखर, माथेरान की चोटी पर घने जंगल और इन सबके साथ व्याप्त शांति मन को सुकून दे रही थी।
जब मैं घर से निकला, मेरे पास सिर्फ साढ़े सोलह रुपये थे, और मुझे नहीं पता था कि कहाँ जाऊं या क्या करूं। माथेरान के आलीशान रूबी होटल में रोज़ सौ रुपये खर्च करने की भी मुझे परवाह नहीं थी। एक मेहनती इंसान को खर्चों की चिंता करनी चाहिए। मैंने क्या-क्या कष्ट झेला था? मुझे पैसे मिले और सलीमा जैसी युवती के साथ समय बिताने का मौका मिला, जो एक उच्च मुस्लिम परिवार से ताल्लुक रखती थी।
मैं लाल चादर ओढ़कर पलंग पर लेट गया और अचानक मुझे घर की याद आ गई। माँ क्या कर रही थीं? अलका कहाँ थी? क्या मेरे घर से जाने का उस पर कोई असर हुआ था?... मुझे माँ और पिताजी के व्यवहार पर आश्चर्य हुआ जिन्होंने मुझे अलका को घर पर छोड़कर कुछ समय के लिए बाहर जाने की सलाह दी थी। वे मेरी अनुपस्थिति में अलका का 'दिमाग धो' रहे थे! लेकिन मैं ऐसी दुष्ट पत्नी से दोबारा सुलह नहीं करना चाहता था। अलका के व्यवहार के कारण, मैंने नैतिकता के सभी बंधनों को त्याग दिया था और इस अछूत जीवन को स्वीकार कर लिया था, इसीलिए जब मैंने दौलत खान को धोखा दिया था, तब मुझे कुछ भी गलत नहीं लगा था। यहाँ तक कि जब मैंने सलीमा को अपनी बाहों में लिया था, तब भी मुझे कुछ गलत नहीं लगा था! लेकिन अब मुझे यह जीवन अच्छा लगने लगा था। इसमें एक रोमांच था। मुझे कल की चिंता नहीं थी। इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है, और

मैं किसी का नहीं हूँ! खूब पैसा कमाना और उसे गंवा देना मेरी जिंदगी का फॉर्मूला बन गया था... इसी बारे में सोचते-सोचते मुझे नींद आ गई, सालों बाद इतनी अच्छी नींद आई थी। दरवाजे की तरफ देखते-देखते मुझे उठना पड़ा। लछमन चाय की ट्रे लेकर दरवाजे पर खड़ा था। अंदर आते ही उसने मुझसे कहा,-
"घोड़ा नीचे गिर गया है!"
चेहरा धोने के बाद मैंने चाय पी और माथेरान के दर्शनीय स्थलों को देखने निकल पड़ी। लेकिन मुझे लगाम पकड़े हुए आदमी के साथ घोड़े की सवारी करने का विचार पसंद नहीं आया। मैंने लछमन के चाचा से कहा, "देखिए, आप यहीं रुकिए, मुझे घुड़सवारी का अच्छा अभ्यास हो जाता है!"
"पान साहब, आप सड़कों को कैसे समझते हैं?"
"तुम सही समझ रहे हो, रुको!" जैसे ही मैंने उस पर दो दस-दस रुपये के नोट फेंके, वह वहीं रुक गया। मैं माथेरान के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए उस सफेद घोड़ी पर सवार होकर निकला था। सबसे पहले, मुझे एक स्वेटर खरीदना था। इसलिए, रास्ते में पूछताछ करने के बाद, मैंने घोड़े को बाजार की ओर मोड़ दिया।
- ०-०-०-

१२
मैं बचपन में बहुत सारी अंग्रेज़ी फ़िल्में देखा करता था। उस समय मेरे पास सस्ता टिकट होता था, थर्ड क्लास का! उनमें से मुझे लड़ाई वाली फ़िल्में बहुत पसंद थीं! उस समय मुझे उन तंग पैंटियों, सिर पर मोटी टोपी और कमर पर पिस्तौल लिए लोगों की बातें बिल्कुल समझ नहीं आती थीं। लेकिन जब स्क्रीन पर लड़ाई शुरू होती, तो मेरा खून भी खौल उठता था। मैं फ़िल्म के विलेन को मन ही मन दो-तीन गोलियां भी मारता था, जैसे 'थिन्शूཁथिन्शूཁ'।
बाद में, जब मैं भवानीनगर में महाराजा की टीम में था, तो मुझे कभी-कभी घुड़सवारी का मौका मिलता था; लेकिन भवानीनगर के महाराजा अक्सर मुझे घुड़सवारी की अनुमति देने से इनकार कर देते थे। वे कहते थे, 'तुम हमारी फुटबॉल टीम के मुख्य स्तंभ हो। अगर तुम घोड़े से गिरकर अपना पैर तोड़ लो तो क्या करोगे?'
आज बिल्कुल यही हुआ! हालाँकि मेरा एक ही पैर है, लेकिन वह दौड़ने के लिए बहुत कमजोर है। माथेरान के दर्शनीय स्थलों को घोड़े पर बैठकर देखने की लाचमैन की सलाह मुझे एक तरह से सही लगी।
माथेरान गांव से होकर घोड़े पर सवार होकर जाने में किसी को कोई खास बात नहीं लगती थी। क्योंकि वहां आने-जाने वाले सभी यात्री, चाहे जवान हों या बूढ़े, घोड़ों पर ही यात्रा करते थे। लेकिन उनकी यात्रा और मेरी यात्रा में एक फर्क था! उनके घोड़े का मालिक लगाम हाथ में पकड़े हुए आगे-आगे चलता था। मैंने अपनी सफेद घोड़ी के मालिक को होटल में ही रुकने के लिए मजबूर कर दिया था।
माथेरान के लोग घोड़ों पर सवार लोगों को देखने के आदी थे। लेकिन जब मैं बाज़ार से गुज़रा, तो कई लोगों की निगाहें मुझ पर टिक गईं। वजह यह थी कि मेरी घोड़ी की लगाम थामे उसका मालिक मेरे साथ नहीं था और मैं सरपट दौड़ रहा था। मेरा कद, चेहरा और रंग, सब देखने लायक थे। खासकर मेरी भौहें! किसी को अपनी तारीफ़ ज़्यादा नहीं करनी चाहिए, लेकिन यह भी नहीं कहना चाहिए कि उनमें क्या खास है? मेरी धनुषाकार भौहें मानो मेरे गोरे माथे पर तराशी गई हों। मेरी नाक भी सीधी थी। मेरे होंठों पर तलवार जैसी मूंछें बनाने में कोई मेरा हाथ नहीं पकड़ सकता था। और अंत में, मेरी आँखें। मेरी आँखें भेदक और रहस्यमयी थीं। कुछ कहो तो सही! लेकिन जब मैं किसी से कुछ कहना शुरू करता, तो मेरी आँखों में ऐसा भाव उभर आता कि सामने वाला व्यक्ति सचमुच मेरी कही हर बात को महसूस कर लेता!
इस प्रभावशाली व्यक्तित्व के बावजूद, अल्का ने मुझे धोखा दिया होगा! माथेरान जैसी खूबसूरत जगह पर उसका नाम लेना तो दूर की बात है। बीच, बदमाश, बदनाम!
माथेरान के लोगों की निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं। एक तो मेरे घोड़े के आगे कोई नहीं चल रहा था, और दूसरा, पुणे और मुंबई से यहाँ आए लोगों का घोड़ों से संपर्क केवल तांगा या विक्टोरिया में सवारी करते समय ही हुआ था! इसलिए, बच्चों से लेकर बड़ों तक, जो मनोरंजन के लिए घोड़े की सवारी कर रहे थे,

सबके चेहरे पर एक अजीब सा डर छाया हुआ था। ये सब कहाँ जाकर रुकेगा और क्या हमें चोट लग जाएगी?
मेरे चेहरे पर डर का नामोनिशान भी नहीं था। भला ऐसा कैसे हो सकता था? जब मैं कुछ साल भवानी नगर के महल में रहती थी, तो सुबह घुड़सवारी करना मेरी दिनचर्या का हिस्सा था। महाराज मुझसे डरते थे, लेकिन मुझे घुड़सवारी बहुत पसंद थी!
मैंने घोड़ी को रेडीमेड कपड़ों की दुकान के सामने एक ऊंचे देवदार के पेड़ से बांध दिया और अंदर चली गई। "मुझे स्वेटरों के बारे में बताओ! वे ऊन के हैं!"
"पूरा या आधा?" दुकानदार ने पूछा, उसका चेहरा फुटबॉल की तरह गोल था और होंठ लाल थे।
‘‘फुल!’’
‘‘देखो साब, मेरेपास एक इंपोर्टेड चीज है, लेकीन थोडी महेंगी है!’
‘‘अरे भाई, बतावो तो!’’
उसने दुकान का पर्दा खोला और एक हार्डबोर्ड का डिब्बा लेकर अंदर चला गया। उसने मेरे सामने उसे खोला। गोल गले, लंबी आस्तीन, गहरे नीले रंग और किनारे पर लाल बेल की डिज़ाइन वाला 'मेड इन स्विट्जरलैंड' स्वेटर तुरंत मेरी नज़र में आ गया।
"कीमत क्या है?" उसने अपनी पैंट की जेब में हाथ डालते हुए पूछा।
‘‘चार सौ.’’
उन्हें लगा कि मैं असभ्य व्यवहार करूँगी; लेकिन मैंने उनके सामने चार सौ रुपये के नोट फेंक दिए और स्वेटर की दुकान में जाकर उन्हें पहन लिया। शाम के लगभग पाँच बज रहे थे और ठंड धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी।
मैंने स्टोर के पूरे आकार वाले दर्पण में देखा और स्वेटर मुझ पर ऐसे फिट हुआ मानो कंपनी ने इसे सिर्फ मेरे लिए ही बनाया हो।
लाचमैन ने मुझे माथेरान के नक्शे वाली एक छोटी सी पुस्तिका दी थी। मैंने उसे खोला और देखा।
शाम का समय बॉम्बे पॉइंट देखने के लिए सबसे अच्छा होता है, ऐसा कहा जाता था। मैंने बहुत सुना था कि इतनी ऊंचाई पर स्थित पहाड़ी स्टेशन से सूर्यास्त देखना एक अनोखा अनुभव होता है। आज यह अनुभव अपने आप ही साकार हो गया। मैं बाजार से सीधे सनसेट पॉइंट पहुँच गया। मुझे लगा था कि वहाँ कोई नहीं होगा। लेकिन वहाँ बच्चों और बड़ों समेत 150 लोगों की भीड़ थी, जो अलग-अलग जगहों पर बैठे थे!
जैसे ही सूरज क्षितिज के करीब पहुंचा, उसके चारों ओर बना घेरा इंद्रधनुष के सातों रंगों - लाल, गुलाबी और नीले - को प्रदर्शित करता हुआ प्रतीत हुआ। अचानक, यह प्रदर्शन रुक गया। ऐसा लगा मानो आसमान के शून्य से एक विशाल लाल फुटबॉल पश्चिम क्षितिज की ओर लुढ़क कर आ गिरी हो, मानो सुबह-सुबह किसी ने उसे ज़ोर से लात मारी हो!
सूर्यास्त के बाद अचानक ठंड बढ़ गई। मैं घोड़ी को लेकर होटल रूबी की ओर दौड़ पड़ा। यह नेक स्वभाव वाली घोड़ी, जो हमेशा अपने मालिक के पीछे-पीछे

चलती थी, आज आज़ादी से दौड़ने को पाकर बहुत खुश थी। रास्ते में मुझे एक बड़ी चिक्की की दुकान दिखी।
मैं वहाँ खड़ा होकर घोड़ी को पाँच रुपये का मूंगफली का केक खिला रहा था। दुकानदार और उसके सामने पैंट और कमीज़ पहने बैठा एक युवक हैरानी से एक-दूसरे को देखने लगे। एक घोड़ी के लिए पाँच रुपये का केक? लगता है कोई बड़ा असमिया आदमी होगा। शायद कोई फिल्म स्टार... मैंने उनकी आँखों के भाव देखे। बिना मेकअप के भी मैं किसी फिल्म स्टार जैसी दिख रही थी। जब दुकानदार मुझे प्रशंसा भरी निगाहों से देख रहा था, मैं काउंटर पर गई और बोली-
"क्या मुझे हाथ धोने के लिए थोड़ा पानी मिल सकता है?"
"जी हां! क्यों नहीं? अंदर आ जाओ!"
मैं थोड़ा आगे बढ़ा। लड़के ने अपने हाथों पर पानी डाला। घोड़ी की लार से चूजे का रस उसकी हथेलियों पर फैल गया था। मैं अंदर आया और अपनी जेब में रखे रूमाल से हाथ पोंछे। मालिक के सामने बैठा युवक जैसे ही आया, वह खड़ा हो गया और मुस्कुराते हुए बोला, -
मैं पी.एस.आई. नेरल और माथेरान हूँ!
"अरे! आपसे मिलकर खुशी हुई! तो यहाँ कोई अलग पुलिस स्टेशन नहीं है?"
"नहीं! यहाँ छह महीने तक कोई नहीं आता। स्थानीय लोग, मजदूर, किसान वहीं रहते हैं। यहाँ की बारिश उन्हें छह महीने तक बाहर नहीं निकलने देती। तो फिर 'अपराध' कैसे हो सकता है? मैं तो छह महीने तक वहीं फंसा रहता।"
"इसका मतलब है माथेरान को छह महीने और नेरल को छह महीने! यह तो अच्छी बात है!"
"यहां पर्यटकों के आने के सीजन में ही थोड़ी-बहुत आपराधिक घटनाएं होने की संभावना रहती है!"
"किस प्रकार?"
"छोटी-मोटी चोरी, कभी-कभी प्रेमी-प्रेमिका के बीच मतभेद के कारण संज्ञेय अपराध बन जाती है! लेकिन ऐसा बहुत कम होता है!"
"तब फिर आपको बार-बार आने का कोई कारण ही नहीं होगा!"
"दरअसल, ऐसा नहीं होना चाहिए; लेकिन जब वी.आई.पी.जे. आते हैं, तो हमें सुरक्षा के लिए आना पड़ता है! अगर आप ऐसा कहते हैं, तो यहाँ और कोई काम नहीं है!"
फौजदार होने के नाते वो बहुत बातें कर रहा था! मैं सब कुछ सुन रहा था! चिक्कीवाले ने चाय मंगाई। हम तीनों साथ में चाय पीने लगे। फिर चिक्कीवाले ने पूछा, -''
"आप कहाँ उतरे थे?"
"होटल रूबी!"
"तो? मेरा मतलब है हमारे नस्रवानजी से!" चिक्कीवाला ने फौजदार की ओर देखते हुए कहा।
"क्या तुम अकेले हो या-"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "वह इकलौता है!"

बेचारा मुझसे बड़ी उत्सुकता से पूछ रहा था। दरअसल, वह मेरे बारे में जानने के लिए उत्सुक रहा होगा क्योंकि मैंने घोड़ी को पाँच रुपये के चने खिला दिए थे। मुझे ऐसा लग रहा था कि जो भी मुझे पहली बार देखता, वह मुझसे बस चार शब्द ही कहना चाहता! बस जिज्ञासावश।
"अच्छा, ठहरने की अवधि कितनी है?"
"अभी कुछ तय नहीं हुआ है; लेकिन मैं एक सप्ताह रुकना चाहता हूँ। यहाँ का माहौल बहुत ही सुंदर है! मैं मगशी में सूर्यास्त देखने के बाद यहाँ आया हूँ।"
"क्या आप आज शाम हमारे साथ खेलने आना चाहेंगे?"
अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया। वह तो चिक्कीवाला था, फौजदारों का दोस्त जिसके बारे में लक्ष्मण बात कर रहा था! मैंने ऐसा दिखाया जैसे मुझे उसके बारे में कुछ पता ही नहीं था और कहा, "मैं तो बस यही पूछ रहा था कि शाम को यहाँ समय कैसे बिताऊँ!"
शाम को सैनिकों ने मुझे अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। जब मैं होटल पहुँचा, तो घोड़ी की मालकिन मेरा इंतज़ार कर रही थी। घोड़ी से उतरते ही मैंने उसे लगाम थमा दी और कहा, "यह एक बेहतरीन घोड़ी है! कल दोपहर मेरे लिए कुछ ताज़ा दूध लाना! जब तक मैं यहाँ रहूँ, तब तक हर दिन इसका दूध मेरे लिए बचाकर रखना!"
‘‘जी साहेब!’’
"अरे, लेकिन आपने मुझे उसका नाम नहीं बताया!"
‘‘रूपाली!’’
"रूपाली? तुमने तो इसका नाम भी एक लड़की के नाम पर रख दिया! लेकिन सच कहूँ तो, यह जानवर बहुत ही नेक है।"
मैंने रूपाली की पीठ थपथपाई और कहा, "रूपाली, मैं कल फिर आना चाहता हूँ!" रूपाली, जो मुझसे पाँच रुपये का केक का टुकड़ा खा रही थी, म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ निकाल रही थी और स्नेह भरी आँखों से मुझे अलविदा कह रही थी।
मैं होटल गया और नहाया। मैंने कपड़े बदले, चश्मा लिया और चिक्कीवाले के घर चला गया। रास्ते में, मैं लक्ष्मण को बताना नहीं भूला कि मुझे रात का खाना नहीं खाना है।
जब तक मैं वहाँ पहुँचा, डॉक्टर भी आ चुके थे। मुझे उन्हीं के कार्डों पर खेलना पड़ा। तब मेरे चश्मे का क्या फायदा? लेकिन इस बार मैंने एक अनोखी तरकीब अपनाई। जब मैंने पहली बार खेलना शुरू किया, तो मैंने अपने हाथ में आने वाले कार्डों पर अपने नाखून से कुछ खास जगहों पर निशान लगाना शुरू कर दिया। इक्का से लेकर गुलाम तक, हर सूट के चार-चार कार्ड बारी-बारी से मेरे हाथ में आए; लेकिन मैंने कार्डों के डिज़ाइन पर अपने नाखून से इतने हल्के निशान बनाए कि उन तीनों को ज़रा भी शक नहीं हुआ। बेशक, मुझे पहले आठ-दस गेम हारने पड़े; लेकिन जब मैंने उन तीनों के हाथों में मौजूद कार्डों को सही- सही पहचानना शुरू किया, तो वे सब एक-एक करके मेरे हाथ से निकल गए। मुझे दो सौ रुपये का नुकसान हुआ, लेकिन कार्डों की पहचान हो जाने के बाद, मैंने उन तीनों को हरा दिया।

ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह बजे थे। चिक्कीवाले ने अलमारी से एक बोतल निकाली। पुलिसवाले ने मुझसे कहा, "समर बाबू, इसे स्वीकार करो! अब तक मुझे यही लगता था कि फ्लश में मुझे कोई नहीं हरा सकता; लेकिन आज तुमने कमाल कर दिया।"
चिक्कीवाले ने गिलास भर दिया। डॉक्टर ने सोडा डाला। सोडा की बोतलें खुलते ही नीचे से लड़का फरसान की एक थाली लेकर आया और उसके सामने रख दी। जब वे पीने लगे तो चिक्कीवाले ने कहा, "आपने ये चीज़ पहले कभी नहीं चखी होगी!" "अरे! इसमें ऐसा क्या खास है?"
"यह शुद्ध केले से बनी शराब है। माथेरान के आसपास रहने वाले वारली लोग इस काम में माहिर हैं।" शराब से सचमुच पके केले की खुशबू आ रही थी।
जब सैनिकों ने बहुत कम पानी पिया, तो मैंने उनसे पूछा, "आप इतनी लापरवाही क्यों बरत रहे हैं?"
"सबसे पहली बात तो यह है कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, और दूसरी बात यह है कि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि चौकी पर किस समय किस तरह की मुसीबत आएगी। इसलिए बेहतर होगा कि हम सतर्क रहें!"
"यह तो बहुत बढ़िया है!"
"लेकिन समरबाबू, हमें थोड़ा आश्चर्य है कि आप अकेले माथेरान आए हैं! आप जैसे नौजवान का अकेले होटल में ठहरना थोड़ा अजीब लगता है, है ना?" डॉक्टर ने माथे पर हाथ फेरते हुए और सबकी ओर देखते हुए कहा, और अपने सामने रखी थाली में फरसान का कटोरा भर दिया।
मुझे कुछ कहना ही था। मैंने कहा, "श्रीमती कॉलेज में पढ़ रही हैं। उनकी परीक्षाएं सिर्फ दो महीने दूर हैं। इसलिए, अगर मैं घर पर रहूँगी तो उनकी पढ़ाई में 'बाधा' आएगी; इसलिए मैंने एक या दो महीने के लिए बाहर जाने का फैसला किया है।"
"कितना बड़ा बलिदान!"
मीटिंग पूरे जोश में चल रही थी। आधे घंटे बाद, खाने की प्लेटें ऊपर आ गईं। मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगा दी गईं। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं इस कंपनी के इतने करीब आ जाऊँगा!
यह बहुत ही बढ़िया मिश्रित भोजन था। चिकन करी, मछली फ्राई, बिरयानी! मैंने पूछा, "क्या यह एक नियमित आयोजन होगा?"
"छे: हाँ! मेहमान आने पर कभी-कभी ऐसा ही होता है! अभी एक और कार्यक्रम होना बाकी है!"
"क्या?" मैंने हैरानी से पूछा।
"गाना! आपको शास्त्रीय संगीत पसंद है, है ना?"
"हाँ, मुझे यह पसंद है; लेकिन मुझे इसका बहुत कुछ समझ नहीं आता!"
"हम भी तुम्हारी ही तरह हैं!"
चिक्कीवाला बहुत दिलचस्प था। हम उसके अपार्टमेंट से पीछे की सीढ़ियों से नीचे उतरे और अंधेरे में एक फर्लांग तक चले। डॉक्टर लड़खड़ा रहा था, चिक्कीवाला इधर-उधर डगमगा रहा था। मैं और सिपाही ऐसे चल रहे थे मानो हमने कुछ पिया ही न हो।

गायिका युवा थी; लेकिन मुझे साफ महसूस हो रहा था कि मीटिंग में बैठने से पहले उसने मेकअप पर काफी समय बिताया होगा। सलीमा की असली खूबसूरती देखने के बाद, मुझे ब्लश और पाउडर से ढके चेहरे वाली उस युवती में कोई आकर्षण नहीं दिखा। लेकिन जब उसने गाना शुरू किया, तो मैं भी उन तीनों के साथ सिर हिलाने लगा। खासकर उसके गाए ग़ज़लों में एक अलग ही लय थी। अनजाने में ही हमारे श्रोता उस लय के साथ तालियाँ बजाने लगे। हर गाने के बाद, सबने दस-दस रुपये दान किए। मैंने सौ रुपये का नोट फेंक दिया। उसने उसे उठाया, माथे पर रखा, नोट को चूमा और अपनी कालिख से भरी आँखों से मेरी तरफ देखा, लेकिन मैंने कभी इतनी बड़ी रकम दान करने की उम्मीद नहीं की थी। मैंने कई लोगों को नि:शुल्क दान करके प्रसिद्धि हासिल करते देखा था। लेकिन उनकी उदारता के पीछे स्वार्थ था, शोहरत! मुझे शोहरत नहीं चाहिए थी, और सौ रुपये खर्च करने के पीछे कोई 'इरादा' नहीं था।
जब मैं होटल रूबी पहुँचा तो सुबह के दो बज रहे थे। चिक्कीवाले ने जिस 'बनाना' जैसे माहौल की तारीफ की थी, वह अब गायब हो चुका था। लेकिन माथेरान जैसे इस अनोखे इलाके में इन लोगों से मिलकर मुझे थोड़ी तसल्ली मिली। एक तरफ तो मुझे जी भर के फ्लश खेलने का मौका मिलेगा और दूसरी तरफ माथेरान के खूबसूरत नज़ारों में अलका ने मेरे दिल पर जो गहरा घाव किया था, उसे भरने में मदद मिलेगी। जब मैंने पैसे डाले, तो वह मुझे इस तरह देख रही थी कि मुझे लगा कि क्या मैं उस पैसे के बदले उससे कुछ चाहता हूँ? आज तो ऐसी कोई इच्छा नहीं थी। सलीमा के साथ बिताए समय के बाद, मैं किसी और औरत को उस नज़र से लंबे समय तक देखना नहीं चाहता था!
ग्यारह बज रहे थे। लखमन कमरे में आया और बोला, "महोदय, क्या आपको कुछ कागजात लाने हैं? मैं थाने जा रहा हूँ!"
"एक-दो मराठी अखबार ले आओ!"
मैंने चाय पीते हुए कल रात की जीती हुई रकम गिनी। उन तीनों से मुझे इतनी बड़ी रकम नहीं मिली थी, सिर्फ ढाई हजार!
जब मैं शेव कर रहा था, लछमन एक कागज लेकर आया। मेरे गाल पर साबुन लगा हुआ था, मैंने 'सकाल' की ओर एक नज़र डाली।
हे भगवान! कितनी भयानक खबर है! होटल हेवर्ड्स में ठहरे एक मुस्लिम व्यक्ति ने अपनी प्रेमिका की चाकू से हत्या कर दी और फिर आत्महत्या का प्रयास किया। उसकी हालत गंभीर है और उसे सैसून अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है!
मुझे इसमें कोई शक नहीं था कि यह युवक दौलत खान था, और वह लड़की सलीमा ही होगी। मुझे यह भी उम्मीद थी कि मेरे जाने के बाद दौलत खान सलीमा को थोड़ा छेड़ेगा; लेकिन मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह उसकी हत्या कर देगा! उस खबर का सार सुनकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा – ‘पुलिस आगे की जांच कर रही है!’
मैंने कुछ बेवकूफी भरा काम कर दिया था। मैंने अपने नाम से होटल मैनेजर को सौ रुपये भेज दिए! और तो और, जब दौलत खान और सलीमा बगल वाले कमरे में थे, तब मैं वहीं थी। पुलिस को यह जरूर पता होगा! पता नहीं क्यों, मुझे लगने लगा कि

सलीमा की मौत के लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ। दरअसल, मेरे लिए पुणे वापस जाकर पुलिस से संपर्क करना जरूरी हो गया था। मैं दुविधा में थी। क्यों कोर्ट केस में पड़ूँ? मैंने सोचा।
लगभग बारह बजे माथेरान के सैनिक मेरे पास आए और बोले,
"समरबाबू, मुझे आपको तुरंत पुणे ले जाने का आदेश मिला है!"
"किस बारे मेँ?"
"कौन जाने! लेकिन पुलिस को आदेश मिला है कि प्रवासी पुलिस द्वारा समर धीरजलाल ठाकुर से तत्काल पूछताछ की जानी है!"
"ठीक है। मैं आधे घंटे में तैयार हो जाऊंगी।"
मैंने एक पल सोचा। अगर हम इतनी बड़ी रकम अपने साथ ले जाते हैं, तो पुलिस और भी ज़्यादा हंगामा खड़ा कर देगी! अब पुलिस से बचना नामुमकिन था! एक तो मेरा नाम सामने आ चुका था, और दूसरा, मैंने उस आधी रात को होटल मालिक को पैसे दिए बिना ही लॉज छोड़ दिया था! क्यों? किसलिए? इसमें तो बहुत समय लग जाएगा। खैर, जब हत्या जैसे अपराध की बात होती है, तो लोगों में खूब चर्चा होती है! ये कैसा बड़ा घोटाला हो गया है? मैंने लखमन को फोन किया! वो तुरंत आ गया। सलीमा! सलीमा की हत्या? हे भगवान...! वह मूर्ख इतनी खूबसूरत युवती पर हथियार उठाने की हिम्मत कैसे कर सकता है? आखिर ऐसा क्या हुआ होगा कि उसने उसे मार डाला? जब मैंने जुए में अपने सारे पैसे हार दिए थे, तब उसने मुझसे कहा था, "अगर मैं इस आखिरी खेल में भी हार गया, तो तुम सलीमा के साथ सोओगे!" मुझे यह भी समझ नहीं आया कि इतनी बेशर्मी से बोलने वाला दौलत खान सलीमा को क्यों मारेगा। दो कांस्टेबल मेरे साथ आए। उन्होंने मुझे पुणे पुलिस के हवाले कर दिया और वापस चले गए। पुणे इंस्पेक्टर ने मुझसे सवालों की झड़ी लगा दी।
श्री ठाकुर, क्या आप पच्चीस तारीख को होटल हॉवर्ड्स के कमरा नंबर तेईस में ठहरे थे?
"हाँ!"
"आपने हैदराबाद के दो यात्रियों, दौलत खान और सलीमा को देखा, जो आपके बगल में उतरे। आपने दौलत खान के साथ ड्रिंक भी ली। आपने ताश भी खेला!"
"हाँ!"
"तुम दोनों उस दिन रेसकोर्स गए थे!"
"सही!"
"उस दिन दौलत खान हारा था या जीता था?"
"उसने ढाई हजार जीते!"
"क्या उस दिन जब सलीमा खरीदारी करने गई थी, तब आप और दौलत खान फ्लश खेल रहे थे?"
"आपको यह कैसे समझ आया?"
"हम बाद में देखेंगे कि आपको समझ में आता है या नहीं, लेकिन पहले मेरे सवाल का जवाब दीजिए?"
"खेला!"
कौन हारा? कौन जीता?

"मैं जीत गया!"
"कितना?"
"दो या तीन हजार होंगे। मैंने उन्हें गिना नहीं!"
इंस्पेक्टर ने मुझे अपने सामने रखा सूटकेस खोलने को कहा। मैंने उसे खोल दिया। इंस्पेक्टर ने कपड़े, तौलिया, सब कुछ उठा लिया। मेरी जेब में दो-ढाई हज़ार थे, जो मैंने मेज पर रख दिए!
"श्री ठाकुर, आपके पास और अधिक धन होना चाहिए।"
“बस इतना ही!” मैंने हाथ हवा में उछालते हुए कहा। उसी क्षण इंस्पेक्टर ने अपने अधीनस्थ सब-इंस्पेक्टर से कहा, “माथेरान जाकर स्थानीय पुलिस अधिकारी से उस कमरे की तलाशी लेने को कहिए जिसमें यह आदमी ठहरा हुआ था!”
"जी श्रीमान।"
फिर उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा, "श्री ठाकुर, छब्बीस तारीख की सुबह-सुबह होटल छोड़ने का आपका क्या कारण था?"
यह सवाल मेरे लिए बिलकुल अप्रत्याशित था। लेकिन अब मुझे जवाब देना ही होगा। थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने कहा,-
मैं कुछ समय के लिए ताज़ी हवा लेने निकला हूँ। मैं दो दिन के लिए माथेरान गया हूँ!
"तुम झूठ बोल रहे हो! नेरल से पहले जिस स्टेशन पर तुम उतरे थे, वहाँ तुमने स्टेशन मास्टर को जो टिकट दिया था, वह मुंबई का था। इसका मतलब है कि तुम दुविधा में थे! तुम मुंबई जाने के इरादे से ट्रेन में चढ़े थे; लेकिन सही समय पर तुमने माथेरान जाने का फैसला किया, क्या मैं सही कह रहा हूँ?"
मुझे उस पुलिस अधिकारी की बुद्धिमत्ता पर बहुत गर्व हुआ। वह सब कुछ कैसे समझ लेता था? मुझे याद आया! मैंने उसी थाने से सौ रुपये का मनी ऑर्डर दिया था! मैंने वह मनी ऑर्डर अच्छे इरादे से दिया था, होटल मालिक को शर्मिंदा करने के लिए नहीं; लेकिन उसी वजह से पुलिस को मेरी हर गतिविधि के बारे में पता लगाना पड़ा।
आपने अपना मन क्यों बदल लिया? क्या आपकी मनोदशा अस्थिर हो गई थी?
"नहीं, मैं माथेरान देखना चाहता था। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा!" "तुम्हारा व्यापार?"
"अभी कुछ नहीं! मैं कुछ समय सेना में था!"
"मुझे पता है कि!"
"क्या आपको भी यह पता था?" मैंने आश्चर्य से पूछा।
"बेशक! अच्छा, आप व्यापार की बात तो नहीं कर रहे? आप इतने महंगे होटलों में कैसे ठहर सकते हैं? खैर, यह मेरा विषय नहीं है! बताइए, क्या आप मुझे एक कारण बता सकते हैं कि दौलत खान सलीमा को क्यों मारना चाहता था?"
"मुझे बिल्कुल पता नहीं, महोदय! लेकिन एक बात निश्चित है, वह बहुत ज़्यादा शराब पी रहा था। हो सकता है उसने नशे की हालत में बेहोशी में ही उसकी हत्या कर दी हो!"
"वह उस समय निश्चित रूप से नशे में था; लेकिन हमें उसका मकसद जानना होगा! मुझे लगा शायद आप मुझे कोई सुराग दे सकें!"

मुझे खेद है! मैं आपको कोई सुराग नहीं दे सकता!
‘‘इट्स ऑल!’’
कहाँ है वह?
‘‘ससूनमधे. यू वॉन्ट टु सी हिम?’’
"हाँ, हम दो दिन साथ रहेंगे। अगर ऐसा है, तो मैं कहूँगी कि आकर मिलें!"
अरे बाप रे! लेकिन कृपया हमारी अनुमति के बिना पुणे मत छोड़िए। आपका यहाँ का स्थानीय पता क्या है?
मैंने तुरंत विलास जॉकी के घर का पता बताया, "बंडगार्डन रोड नंबर तीन, बंगला नंबर तीन।"
‘‘अच्छा!’’
मैं अपना बैग लेकर उठा। इंस्पेक्टर ने मुझे पुलिस की गाड़ी में अस्पताल भेजने का इंतज़ाम किया। इंस्पेक्टर ने इतनी तैयारी कर रखी थी कि पुणे से निकलने से लेकर नेरल पहुँचने तक की मेरी हर जानकारी उसने नोट कर ली थी, इसलिए मुझे पूरा यकीन था कि वह दौलत खान और मेरी बातों पर नज़र रख रहा होगा।
दौलत खान जिस वार्ड में भर्ती थे, उसके बाहर एक सिपाही बंदूक लिए खड़ा था। अंदर एक नर्स थी। दौलत खान ने मुझे देखते ही कहा,-
‘‘आवो भाई समर, देखो ये क्या हो गया?’’
मैंने भी उससे पूछा, "क्या हुआ?"
तेव्हा तो म्हणाला, ‘‘गॅलरीकी दिवार खुली थी. रातको कोई आदमी गॅलरीमें चढकर आया और रूममें इधरउधर ढूंढने लगा. सलिमाने उसको देखा और वो चिल्लाई, तो उसने सलिमाको स्टॅग किया! मैं उठकर उसको पकडा, लेकिन सालेने मेरे उप्पर भी दो ‘स्टॅग’ किया! ये पुलिसवालोने मुझे खालीपिली गिरफ्तार कर लिया है!’’ दौलत खान ने मुझे एक अजीब सच बताया! पास खड़ी नर्स के चले जाने के बाद, दौलत खान ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा,-
‘‘समर, अभी मुझे अकेला तू रिहा कर सकता है!’’
‘‘वो कैसा?’’
‘‘तुम बोल देना पुलिसवालोंको, दौलतखान सलिमाको बहोत प्यार करता था!’’
दौलत खान का झूठ बेवजह था। वह सलीमा से ज़रा भी प्यार नहीं करता था। अगर ऐसा होता, तो वह बेशर्मी से यह न कहता कि पिछले खेल में मुझसे हारने के बाद तुमने उसके साथ मजे किए! दौलत खान ने पुलिस के सामने और मेरे सामने अपने बचाव में अलग-अलग बातें कहना शुरू कर दिया था। लेकिन उसके बयान का कोई सबूत नहीं था। दौलत खान ने पुलिस को यह बिल्कुल नहीं बताया था कि मैंने उसे फ्लश में हरा दिया था! वह ऐसा क्यों नहीं बताता? लोग एक जुआरी की बात पर कितना भरोसा करेंगे? लेकिन मैंने अपनी ईमानदारी साबित करने के लिए पुलिस को बताया कि मैंने थोड़े पैसे जीते थे!
दौलत खान पर दो आरोप लगने वाले थे, एक सलीमा की हत्या का और दूसरा आत्महत्या के प्रयास का! इस मामले में मुझे दौलत खान के प्रति ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी। मैंने पापा को तार के ज़रिए फ़ोन करने का फ़ैसला किया ताकि मेरा नाम इस मामले से न जुड़े और पुलिस मेरे बारे में कोई बहस न करे।

अस्पताल से मैं सीधे विलास जॉकी के घर गया। उनकी पत्नी ने मुझे पहचाना तक नहीं। विलास बाहर गए हुए थे। मैं काफी देर से उनके बरामदे में खड़ा होकर उन घोड़ों और रेसों की तस्वीरें देख रहा था जिनमें विलास ने जीत हासिल की थी, तभी विलास आ गए।
"गर्मी का मौसम! अरे, उस होटल में क्या खराबी है?"
जैसे ही मैं दरवाजे से अंदर दाखिल हुआ, उसने मुझसे पूछा, "उस जमाने का नवाब दौलत खान - उसने अपने साथ लाई औरत को चाकू मारकर मार डाला, और अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए उसने जंबिया से अपने पेट पर दो जगह वार कर लिए! तुम उस होटल में क्यों रुके थे, यह घर तुम्हारे लिए अनजान क्यों था? और हद तो तब हो गई जब तुम्हारी शादी को अभी छह महीने ही हुए हैं और तुम इस तरह गांव में घूम रहे हो, ये सब क्या बकवास है?"
"मेरी जिंदगी एक 'त्रासदी' बन गई है, विलास! मैं तुम्हें सच बताऊंगी, लेकिन इस नवाब के घोटाले में उलझने का कोई फायदा नहीं है। मैं तुमसे कह रही हूं कि पापा को टेलीग्राम से फोन करो!"
"इसे ले लो! जब चाचा आएंगे, तो पुलिस अपने आप तुम्हारा पीछा करना बंद कर देगी!"
"आप कहा चले गए थे?"
"अरे, समर, मैं अपनी हालत के बारे में क्या कहूँ! सुबह मैं अभ्यास के लिए जाती थी, और जब वहाँ से वापस नहीं आती थी, तो बच्चों को स्कूल छोड़ने जाती थी। दोपहर में फिर लंच लेने जाती थी! और फिर शाम को उन्हें वापस ले आती थी!" "लेकिन क्या आप नौकर रखकर ये सब काम नहीं कर सकते?"
"नौकर?" विलास ने अपने सिर पर पहनी हुई टोपी को खूंटी पर टांगते हुए और रुमाल से माथे का पसीना पोंछते हुए कहा, "पिछले एक साल से मुझे कोई भरोसेमंद ड्राइवर नहीं मिल पाया है। कोई भी महिला घर का काम नहीं कर सकती!" ‘‘का?’’
रसोई की ओर देखते हुए विलास ने धीमी आवाज़ में कहा, "हमारी बेटी का स्वभाव ही अजीब है। कोई नौकर या ड्राइवर आठ दिन से ज़्यादा नहीं टिक पाता। लेकिन मुझे थोड़ा सिरदर्द हो रहा है! इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि तुम शादी के छह महीने के भीतर ही घर से भाग गई!" विलास ने सोफे पर बैठते हुए और अपने जूते उतारते हुए कहा।
"लेकिन विलास, अगर मुझे कभी मेरी साली जैसी विचित्र स्वभाव वाली पत्नी मिल जाती, तो मैं उसे ज़रूर मना लेता!"
चलो अपनी खुशियों और दुखों के बारे में बात करते हैं! तुम्हें खाना खाना है, है ना? अपने हाथ-पैर धो लो!
विलास अपनी पत्नी से लगातार कहता रहता था, "देखो, इंदु, क्या यह समर हमारे भवानी नगर से है? उसके पिता भवानी नगर के महाराजा के कानूनी सलाहकार थे। उसके दादा और मेरे पिता एक ही जगह रहते थे। लेकिन वह मुझसे ज्यादा मेलजोल नहीं रखता था। वह हमेशा ऊंचे तबके के लोगों के साथ ही रहता था। वह शाही फुटबॉल टीम का कप्तान था! एक समय वह भवानी नगर से बहुत जुड़ा हुआ था!" "लेकिन भाभी, विलास ने भवानीनगर छोड़ने का बहुत अच्छा काम किया!"

“तुमने क्या भला किया?” जैसे-जैसे मैं और ज़्यादा चपातियाँ खाता जा रहा था, विलास की पत्नी ने कहा, “इस पुणे में घर में रखने लायक एक भी ईमानदार आदमी नहीं है! सब चोर हैं! अगर ड्राइवर रख लो, तो वो पेट्रोल चुराकर बाहर बेच देता है! अगर घर में काम करने के लिए औरत रख लो, तो वो कमर पर चपातियों का गट्ठा लपेटकर ले जाती है! हमें एक अनाथ लड़की चाहिए जो हमारे घर में हमेशा के लिए रहे - ऐसी लड़की जो इस घर को अपना समझे!”
"देखते हैं। हमारे राधापुर, विराले, नाधवाडे इलाकों के बेहद गरीब परिवारों की बेटियां भवानी नगर में काम कर रही हैं। जब मैं जाऊंगा तो उन पर नजर रखूंगा, और अगर विलास को अभी कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं उनका ड्राइवर-सह-निजी सचिव बनकर रहने को तैयार हूं! मैं भी बेरोजगार हूं!"
"क्या? क्या तुम मेरे ड्राइवर बनोगे?"
"निजी सचिव कहो! ड्राइवर मत कहो! मैं कब तक इस तरह गाँव-गाँव भटकता रहूँगा? इसके अलावा, न केवल समाज बल्कि पुलिस भी ऐसे लापरवाह व्यक्ति पर शक करती रहती है! अगर मुझे शाम को एक-दो घंटे खेलने का मौका मिल जाए, तो बस इतना ही काफी होगा!"
"इसके लिए आपको बाहर जाने की क्या ज़रूरत है?" विलास ने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा।
मैं अपने आदमी के साथ कभी नहीं खेलती!
‘‘अच्छा अच्छा!’’
मैंने पापा को टेलीग्राम भेजा और वो अगले ही दिन पुणे में थे!
पिताजी को पूरी बात बताने के बाद उसने कहा, "मैं उस होटल में सिर्फ एक रात के लिए रुका था, इसलिए पुलिस मुझे इस मामले में फंसाने की कोशिश कर रही है!" मेरे पापा कितने तैयार हैं! उन्होंने मेरी सारी बातें शांति से सुनीं और कहा, "मुझे समझ आ गया! आपको और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, मैंने यह भी अंदाज़ा लगा लिया था कि आप उसी सुबह होटल से क्यों निकले थे। लेकिन बताइए, वो दौलत खान कहाँ है?"
"ससून में!"
"ठीक है! मैं अपना स्नान पूरा कर लेती हूँ और हम उससे तुरंत मिलते हैं!" "उसे इंस्पेक्टर की अनुमति के बिना नहीं देखा जा सकता, पिताजी। क्या वह अभी भी पुलिस हिरासत में है?"
"ओह! तो चलिए पहले उस इंस्पेक्टर से मिलते हैं, ठीक है? मैंने उनके बारे में सुना है! वह बहुत ही चतुर पुलिस अधिकारी हैं! कोई भी उनके साथ मामला सुलझाने में मदद नहीं करेगा!"
पापा ने नहाना खत्म किया, चाय पी और हम सीधे पुलिस स्टेशन चले गए।
जब पिताजी ने धाराप्रवाह अंग्रेजी में निरीक्षक से अपना परिचय दिया, तो काटकर खड़ा हो गया और उसे बैठने के लिए कहा।
"अच्छा! श्रीमान काटकर, हालांकि मैं अपने बेटे के लिए यहां आया हूं, मैं दौलत खान की ओर से एक कानूनी नोटिस दाखिल करना चाहता हूं! मैं उनसे बात करना चाहता हूं!"

कटकर ने बड़ी मुश्किल से मेरी तरफ देखा और कहा, "समरबाबू, हम आपको इसमें शामिल नहीं करने वाले थे; लेकिन आपने ठाकुरसाहब को संपत्ति की रक्षा के लिए क्यों बुलाया!"
डैडी टाडकन ने कहा, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा कहने की? इस देश में हर किसी को अपनी रक्षा करने का अधिकार है!"
पुलिस विभाग के पास भले ही लाखों अधिकार हों, लेकिन आपराधिक कानून बनाने वालों ने आरोपी को एक लाख एक अधिकार दिए हैं! काटकर दौलत खान से मिलने आने वाले पिताजी को मना नहीं कर सका! पुलिस को यह बात समझ में आ ही गई कि मेरे साथ मुरब्बा का वकील खड़ा था, क्योंकि उसने पिताजी को फोन किया था।
मेरे पिता और मैंने दौलत खान से निजी तौर पर मुलाकात की। मेरे पिता ने कहा कि दौलत खान का रुख बहुत अच्छा था। बंदूक होटल से सौ फीट दूर मिली थी। यह अनुमान लगाने की काफी गुंजाइश थी कि हमलावर ने जाते समय उसे वहीं फेंक दिया होगा।
पुलिस ने मुझे इस मामले में फंसाने की कोशिश नहीं की, लेकिन मुझसे एक महत्वपूर्ण गवाह के तौर पर पूछताछ की गई।
अगले दिन मैं माथेरान पहुंचा और होटल रूबी में चेक-इन किया।
लछमन ने मुझसे पूछा, "समर साहब! आपने इसे छिपाने के लिए क्या किया? आपने मुझे वह जहर क्यों दिया?"
मैंने घबराकर पूछा, "क्या तुमने बैग खोला?"
"तो क्या हुआ! इतने सारे नोट! मेरे पिता ने भी, मेरे दादा ने भी इतने सारे नोट कभी नहीं देखे!"
"तुमने वो बैग कहाँ रखा?"
"हमारे घर के आंगन में भैंसों का बाड़ा है!"
"आपने किसी को नहीं बताया, है ना?"
उसने अपना हाथ अपनी गर्दन पर रखा और अपने माता-पिता के प्रति शपथ ली। "अच्छा, जल्दी करो। ले आओ, मुझे दोपहर की ट्रेन से अभी जाना है!"
"सर, पुलिस ने आपके कमरे की तलाशी ली। उन्होंने गद्दे और तकिए फाड़ दिए, बाथरूम भी खंगाला। लेकिन उन्हें कुछ मिला कैसे? उन्होंने मुझे फोन किया और धमकाया, लेकिन मैंने अपने कान बंद कर लिए। आप अपने 'ऐच' से धोखा नहीं कर सकते, साहब!"
मैंने उसकी पीठ थपथपाई और कहा, "मुझे यही यकीन था, इसीलिए मैंने भरोसे के साथ तुम्हें यह दिया था। जाओ! इसे वापस ले आना, मेरे दोस्त!"
दुनिया इसलिए चल रही है क्योंकि दुनिया में हर कोई मेरी तरह धोखेबाज और विश्वासघाती नहीं है, वरना दुनिया बहुत पहले ही ढह चुकी होती। उस थैले में हज़ारों रुपये थे। लेकिन एक भी नोट गायब नहीं था। लक्ष्मण जानता था कि उसमें क्या है। अगर वह उसे ले लेता और लूट लेता तो मैं क्या कर सकता था? मैंने अपने जीवन में कई बार समाज के निचले तबके में ऐसी ईमानदारी और निस्वार्थता देखी है। इसके विपरीत, मेरा पक्का मानना है कि समाज का कोई और तबका इतना स्वार्थी, धोखेबाज और षड्यंत्रकारी नहीं है जितना कि ऊपरी तबके के लोग! खुद देख लो! मैंने उस दौलतखान को रंगे हाथों लूट लिया। इतना ही

नहीं, बल्कि सलीमाशी... बेचारी चली गई! पता नहीं वो पुणे मेरे साथ सोने और फिर मरने आई थी या नहीं!
अगर मैं लछमन को सौ रुपये देने की कोशिश करता, तो वह लेता ही नहीं! आखिरकार, मैंने जबरदस्ती उसके जेब में सौ रुपये डाल दिए।
हम पुणे वापस आ गए।
पिताजी ने कैंप में एक होटल में चेक-इन किया था। 'सिंग सियांग' नाम का एक चीनी होटल!
सलीमा की हत्या के बाद, उसकी मां हैदराबाद से आई और उसका शव, जिसे मुर्दाघर में रखा गया था, दफनाने के लिए हैदराबाद ले गई। मुझे उसका शव देखने का भी मौका नहीं मिला।
सलीमा ने मुझे दौलत खान के चरित्र के बारे में कुछ जानकारी दी थी, इसलिए मैं बाल-बाल बच गया। अगर उसने मुझे यह बात याद दिलाई होती, तो वह मुझे धोखा नहीं देता! अगर रोहिली जैसा लंबा-चौड़ा और तगड़ा दौलत खान मुझ पर टूट पड़ता, तो मैं उससे कैसे लड़ पाता? मैं एक पैर पर खड़ा नहीं हो सकता था!... सलीमा! अब तो तुम पैगंबर बन गई हो। लेकिन मैं तुम्हारा एहसान चुकाए बिना नहीं रहूंगा। मैं सिर्फ तुम्हारी सलाह पर ही बच पाया! मैं इस मामले में दौलत खान की बिल्कुल भी मदद नहीं करूंगा!...
एक तरफ तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, और दूसरी तरफ पापा ने अपने वकील का पत्र लेकर हठपूर्वक केस लड़ने की तैयारी शुरू कर दी थी! मेरी स्थिति बहुत अजीब थी!
पापा पुणे में कुछ दोस्तों से मिले और होटल लौट आए। मैं उनके कमरे में पागलों की तरह इधर-उधर घूम रहा था। पापा ने मुझे देखते ही कहा,
"कल से तुम कहां गायब थे?"
मैं अभी-अभी माथेरान से आया हूँ!
"क्यों? क्या तुम किसी और को भी वहाँ ले गए थे या क्या?"
"अरे! कुछ तो हुआ!"
पापा हँसे। अंदर आते ही उन्होंने अपना कोट उतारा। उन्होंने अपनी टाई खोली, जूते उतारे और अपने बैग से व्हिस्की की बोतल निकाली। मैंने मेज पर एक गिलास रख दिया। फिर पापा बोले, "एक और गिलास ले लो!"
"क्यों?"
"तुम्हारे लिए! मुझे पता है तुम शराब पीते हो। आज तक तुमने मेरे सामने सिगरेट तक नहीं पी है। लेकिन आज तुम मेरे साथ शराब पियोगे और सिगरेट पियोगे! चलो, अपनी ज़िंदगी के कीमती पल बर्बाद न करें!"
पापा की चीख सुनकर मैं स्तब्ध रह गया! मुझे तो यह भी लगा कि कहीं वो अभी-अभी कुछ ही दूर पर मर तो नहीं गए।
मेरे जैविक पिता, एक दोस्त की तरह, शराब पीने और सिगरेट पीने पर जोर दे रहे थे, और मैं, एक अजीब मानसिक स्थिति में, आज पहली बार उनके सामने शराब पीने वाला था, अपना गिलास उनके गिलास से टकराकर।
- ०-०-०-

१३
दो पेग लेने के बाद, पिताजी ने मुझसे पूछा, "समर, मुझे सच बताओ, दौलत खान ने सलीमा को किस कारण से मारा था?"
"मुझे बिल्कुल पता नहीं, पापा!"
"क्या तुम झूठ बोल रहे हो? अरे, मैं आज तुमसे तुम्हारे पिता के रूप में नहीं, एक दोस्त के रूप में पूछ रहा हूँ, मुझे बताओ?"
"नहीं, पापा!"
‘‘यू आर ए फर्स्ट क्लास स्काँड्रल!’’
मुझे पता था कि पापा कभी-कभी शराब पीने के बाद बहुत गुस्सा हो जाते थे। लेकिन ऐसे समय में, दूसरे व्यक्ति को शांत रहना पड़ता था!
"समर, उस रात तुमने उसे लूट लिया और कायरों की तरह भाग गए। तुम सीधे रास्ते पर नहीं गए होंगे; तुम्हारा उस सलीमा के साथ ज़रूर कोई न कोई संबंध रहा होगा!"
"आप ऐसा क्यों कहते हैं?"
"दौलत खान चिक्कर पीने के बाद तुमने उसे खूब धोखा दिया! सलीमा जानती थी कि अगले दिन जब दौलत खान को पता चलेगा कि उसने नशे में पैसे गंवा दिए हैं, तो वह तुम्हें आसानी से नहीं जाने देगा! सलीमा ने तुम्हें वहाँ से जाने की सलाह दी होगी, और वह भी किसी इनाम के लिए! समर, मैं तुम्हारा पिता हूँ, याद रखो!"
"लेकिन पिताजी, आपने ऐसा तर्क क्यों दिया?"
"क्योंकि तुम्हारी सारी हरकतें संदिग्ध लग रही थीं? तुम माथेरान क्यों गए थे?" पापा ने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा।
"पुलिस मुझे यहाँ खड़ा करके लाई थी; मेरे सारे कपड़े और सामान वहीं छूट गए थे!"
"समझ गया!" पिताजी ने तिरछी नज़र से मेरी ओर देखते हुए कहा।
"लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, पापा, ऐसा नहीं होना चाहिए था!"
"यह सच है; लेकिन ऐसा ही होता है! जो एक ही समय में तीन चीजों में लिप्त हो, उसका क्या हाल हो सकता है: एक औरत, एक शराब और जुआ? हर आदमी का कोई न कोई शौक तो होना ही चाहिए! लेकिन एक समय में सिर्फ एक ही! क्या तुम्हें औरत नहीं चाहिए? तो सिर्फ औरत! खुशाल उसे कितनी दूर तक ले जाए? अगर तुम्हें शराब चाहिए, तो पी लो! अगर तुम्हें जुआ खेलना है, तो जुआ खेलो! लेकिन जब ये तीनों एक साथ आते हैं, तो ऐसा बवाल मच जाता है! दौलत खान ने भी यही बेवकूफी की थी! लेकिन मेरा बेटा होशियार है! उसने तो पहले ही तय कर लिया है कि मैं कल अदालत में क्या बचाव करूंगा!"
"ये झूठ है, पापा! ऐसा बिलकुल नहीं हुआ जैसा वो कह रहा है।" पापा उस पर हँसे और बोले, "मुझे भी पता है; लेकिन दौलत खान अब मेरा साथी है। मुझे उसे रिहा करवाने के लिए हर संभव कोशिश करनी होगी!"
"ज़रूर, कर लो। लेकिन मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूँगा!"
‘‘व्हॉट डु यू मीन?’’

"पुलिस ने इसी उद्देश्य से मेरा बयान दर्ज किया है। मुझे अदालत में गवाह के तौर पर भी बुलाया जाएगा। लेकिन मैं ऐसा कोई जवाब नहीं दूंगा जो दौलत खान के लिए उपयोगी हो!"
"आपका क्या मतलब है?"
मैं बिना कुछ कहे खड़ी हो गई। मैंने माथेरान से लाया हुआ अपना सूटकेस खोला और पापा के सामने पाँच हज़ार रुपये रखते हुए कहा, "आपको दौलत खान का मुकदमा चलाना होगा, यही उसकी फीस है! लेकिन जब मैं अदालत में गवाह बनकर आऊँगी, तो मैं उसके खिलाफ गवाही दूँगी!"
"क्या तुम मूर्ख हो? समर, तुम मूर्खों जैसी हरकतें क्यों कर रही हो? क्या तुम्हारा यह दोहरा रवैया बेतुका है? तुम उस पर मुकदमा चलाने के लिए फीस देती हो और कहती हो कि तुम अदालत में उसके खिलाफ गवाही दोगी, इसका क्या मतलब है?"
"आप समझते हैं इसका क्या मतलब है! भले ही सलीमा मर गई हो, मैं उसके प्रति कृतघ्न नहीं होऊंगी! पिताजी, आपने कभी नहीं देखा कि सलीमा कैसी थी, कैसी स्वभाव की थी! बस एक बार! बस एक बार उसने मुझसे बात की थी-"
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे शराब के नशे में मैं पागल हो रही हूँ, कहीं मैं कुछ ऐसा न कह दूँ जो मुझे नहीं कहना चाहिए, और वो भी अपने असली पिता के सामने! मैंने खुद को संभाला और कहा, "पापा, जब मैं अस्पताल में दौलत खान से मिली, तो उन्होंने मुझसे कहा था, अदालत को बता देना कि दौलत खान सलीमा से बहुत प्यार करते थे!"
"जी हाँ! और अगर आप ऐसा कहेंगे तभी उसका आगे का बयान स्वीकार किया जाएगा! जब चोरों ने उस पर हमला किया, तो दौलत खान भागने लगा, लेकिन चोरों ने उसे भी चाकू मार दिया!"
"ये झूठ है पापा! वो सलीमा से प्यार भी नहीं करता था!" मैंने अपने सामने रखे गिलास में बची व्हिस्की खत्म की और नैपकिन से अपने होंठ पोंछे।
उस समय पिताजी ने मेरे सामने सिगरेट का डिब्बा खोला और कहा, "लो! तुमने शराब पी ली है, अब एक सिगरेट भी पी लो; लेकिन मुझे सच बताओ!"
जब मैं नशे में होता था तब भी अपने पिता के सामने सिगरेट पीने में थोड़ा हिचकिचाता था; लेकिन आज वह मुझे मेरी इच्छा के अनुसार सब कुछ करने के लिए मजबूर कर रहे थे।
"समर, खुलकर बोलो! अपने मन की बात कहो! ऐसी बात को अपने मन में ज्यादा देर तक रखना ठीक नहीं है। तुम्हें इसे बाहर निकाल देना चाहिए!" पापा ने मेरे खाली गिलास में और व्हिस्की डालते हुए कहा।
सिगरेट और शराब! आप कितनी भी सिगरेट पी लें, उनसे आपको शराब जैसा एहसास नहीं होगा, और अगर आप बिना सिगरेट पिए आधी बोतल व्हिस्की भी पी लें, तो आपके पेट में कोई तकलीफ नहीं होगी, लेकिन जब आपके माता-पिता सिगरेट जलाते हैं, तो आपको चक्कर आने लगते हैं। मैं नशे में था, लेकिन अब जब मैंने सिगरेट पी ली है, तो अनजाने में मैंने वो बातें कह दीं जो मैंने न कहने का फैसला किया था, "पापा, आप कहते हैं कि दौलत खान सलीमा से प्यार करता था, लेकिन ये झूठ है!"

"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
"जब उस रात उसने एक ही बार में अपने सारे पैसे हार दिए, तो उसने मुझसे कहा, 'अगर तुम आखिरी हाथ जीत जाओ, सलीमा-'"
"पिताजी मेरी बातें ध्यान से सुन रहे थे। उनके चेहरे पर गंभीरता थी। मानो उन्होंने शराब न पी हो, उन्होंने मुझसे कहा, 'बोलो बेटा, बोलो! आज मैं तुम्हारा दोस्त हूँ! अगर मैं आखिरी मैच हार गया, तो सलीमा तुम्हारी है, क्या उन्होंने ऐसा नहीं कहा था?"
मैंने गर्दन झुकाकर कहा, 'हाँ।'
बस! और इसी वजह से ये सब हुआ!
"किस प्रकार?"
"मैं सोच रही थी कि उसने तुम्हें जाने में मदद क्यों की; लेकिन अब बात सुलझ गई! एक महारानी भी सुखद यौन संबंध के लिए अपने ही गुप्तांगों को लात मारती है! इतिहास में भी इसके उदाहरण मिलते हैं! दौलत खान सुंदर था; उसके पास बहुत धन था; लेकिन 'उन' विज्ञानों में, वह अनुभवहीन ही होगा, इसमें कोई शक नहीं! अब मुझे बात समझ आ गई! लेकिन समर, मुझे तुम्हारा 'विरोधाभासी' व्यवहार पसंद नहीं आया! मान लो कि उस रात उसने तुम्हें सुख दिया या तुम दोनों ने एक-दूसरे को सुख दिया; लेकिन अब वह जीवित नहीं है! और अगर तुम इस मामले में दौलत खान की मदद नहीं करोगे, तो उसे भी शायद फांसी हो जाएगी, अगर अदालत दया दिखाती है, तो उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई जाएगी!"
"मैं आपकी मदद नहीं कर सकती, पापा!"
"एक रखैल के लिए आपके मन में इतना सम्मान है? और वह भी उसकी मृत्यु के बाद? यह तो कुछ अजीब बात है!"
"मुझे ठीक से नहीं पता कि यह क्या है! लेकिन मैं कभी यह नहीं कहूंगा कि दौलत खान उससे प्यार करता था! उसकी आत्मा मुझे जीवन भर सताती रहेगी!"
"आत्मा? तुम बहुत गहरे चले गए हो, बेटे समर! एक इंसान इतना संवेदनशील नहीं हो सकता! तुमने उसके साथ एक रात मजे किए, ठीक है, लेकिन अब जब वह चली गई है, तो तुम्हारे लिए इस बेचारे दौलतखान को फंसाने की कोशिश करना सही नहीं है!" "ऐसा नहीं लगता! मैं तुम्हें सच बताऊंगी। उस रात जब उसने फ्लश हार लिया था, तब उसने जो कहा था, मैं तुम्हें बताना बंद नहीं करूंगी! अगर तुम्हें उसका बचाव करने के लिए और पाँच हज़ार चाहिए, तो मुझे बताना! लेकिन मुझे परेशान मत करना, पिताजी?"
पिताजी ने मेरी तरफ देखा और अजीब सी मुस्कान के साथ बोले, "अजीब! कुछ बहुत ही अजीब! लेकिन मुझे तुमसे पूछताछ करनी ही होगी! अगर तुम दौलत खान के खिलाफ अदालत में गवाही देने के लिए खड़े हुए, तो मैं पूरी तरह भूल जाऊंगा कि तुम मेरे बेटे हो, याद रखना! तुम जानते हो कि जिस तरह तुम सलीमा की याद के प्रति वफादार रहने की कोशिश कर रहे हो, उसी तरह मैं भी अपने कारोबार के प्रति वफादार हूं!"
"जी हां, आप हैं, और मैंने आपको जल्दी फोन किया ताकि उसे बचाने की कोशिश की जा सके! अगर आपको और पैसों की जरूरत हो तो मुझे बता दीजिए!"

पिताजी ने बोतल में जितनी व्हिस्की थी उतनी अपने गिलास में डाली, सोडा खत्म किया, एक घूंट सीधे पिया और मुझसे कहा, "तुमने अल्का से बात करना इसलिए बंद कर दिया क्योंकि तुम्हें उस पर व्यभिचार का शक था, और यहाँ मुझे आश्चर्य है कि तुम एक रखैल के प्रति इतनी वफादारी दिखा रहे हो!"
"इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, पापा! अलका तो पवित्र होने का दिखावा कर रही थी, लेकिन सलीमा ने दिखावा नहीं किया। उसने खुलेआम ऐलान किया कि वह इस धंधे में है! फिर भी, सलीमा सबसे अच्छी है!"
पापा ने हवा में हाथ लहराते हुए इशारा किया मानो कह रहे हों, "अब तुमसे बात करने का कोई फायदा नहीं है," और मुझसे कहा, "चलो रात के खाने पर चलते हैं!" हम दोनों ने खाना खाते समय कुछ नहीं कहा। खाना खाने के बाद मैंने पापा से कहा,-
"मैं जा रहा हूं!"
"कहाँ?"
‘‘विलासकडे!’’
‘‘का?’’
मैंने उसे बताया था कि मैं आ रहा हूँ!
"ठीक है!"
मुझे पापा के साथ उस होटल में रुकने में कोई दिक्कत नहीं थी; लेकिन मैं वहाँ रुकना नहीं चाहती थी! इससे मामला फिर से उठ जाता, और मैं ऐसा बिल्कुल नहीं चाहती थी!
मैं रात करीब 10:30 बजे विलास पहुंचा।
विलास और उनकी पत्नी इंदु घर के सामने बेंत की कुर्सियों पर बैठे बातें कर रहे थे। मेरे पास आने से पहले ही उन्होंने मुझे पहचान लिया था।
"समर! अरे, तुम्हारा पता कहाँ है? मुझे लगा था कि तुम सलीमा के अंतिम संस्कार के लिए हैदराबाद गए थे?"
सच कहूँ तो, मुझे ही जाना चाहिए था! भाभी जी, आप बैठ जाइए, मैं अंदर जाकर कुर्सी संभाल लेती हूँ!
मैंने इंदु से कहा, जो अभी भी खड़ी थी।
"क्या आप इसे लाएँगी?" यह कहते हुए भाभी अंदर से एक और बेंत की कुर्सी ले आईं। विलास ने अपनी कुर्सी थोड़ी सी एक तरफ खिसकाई। मेरी ओर देखते हुए उसने पूछा, "यह क्या है, भंगड़ रेई?"
"यह झूठ है, भगवान जाने, पिताजी! लेकिन मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि दौलत खान इतना बड़ा बदमाश निकलेगा! बेचारी सलीमा निर्दोष थी!"
"चाचा क्या कहते हैं?" विलास ने सिगरेट जलाते हुए मुझसे पूछा।
"वे कहते हैं कि अगर दौलत खान इस मामले से बचना चाहता है, तो मुझे उसे वही गवाही देनी होगी जो वह चाहता है!"
"आपका क्या मतलब है?"
मैं तुम्हें सच बताऊंगा!
"तो क्या हुआ अगर बाप-बेटी की लड़ाई सफल हो जाती है!"
"ये तो संकेत हैं!"

"क्या आपको लगता है कि दौलत खान को जेल जाना चाहिए?"
"ऐसा नहीं है, विलास! मैं तुम्हें सच बताऊंगी, और भले ही वह बच जाए, मुझे खुशी है!"
"लेकिन जीजाजी, आपकी शादी को छह महीने से भी कम समय हुआ है, और आप अपने परिवार को छोड़कर गांव-गांव क्यों भटक रहे हैं?"
"भाभी, आप इसे अपने आप समझ जाएंगी!"
सामने वाले बंगले से ' द ' की तेज़ आवाज़ सुनकर मैं चौंक गया। लेकिन विलास और इंदु वाहिनी ने उस आवाज़ पर कोई ध्यान नहीं दिया।
"यह किस तरह की आवाज़ है, विलास? वह किस तरह की आवाज़ है?"
"ओह, यह बंगला इस बाहरी कमरे के मालिक का है। वह इसी बंगले में रहता है। साला अकेला है; लेकिन वह एक बेहद सनकी आदमी है। बंगले के परिसर में आते ही वह मुर्गियों और कुत्तों को गोली मार देता है। बंगले के सामने एक बगीचा है और उसने उस बगीचे में जानवरों के पिंजरों के साथ पेड़ लगा रखे हैं। चने और पेरू के पौधे अब खिल चुके हैं। अगर कोई चमगादड़ पेड़ पर आता है, तो उसने उसे जरूर गोली मारी होगी, बस!"
"वह एक अद्भुत व्यक्ति लगते हैं!"
"अरे, हम तो मुर्गियाँ पालते थे। उन पक्षियों को क्या पता होता है! लेकिन जब वे बगीचे में जाते हैं, तो हम उन्हें गोली मार देते हैं! भला ऐसे मंदबुद्धि आदमी से बात कैसे की जा सकती है?"
घर पर कौन है?
"वह भूत की तरह अकेला रहता है। सुबह बाजार जाता है, आधा किलो गोमांस लाता है। दोनों बार उतना ही पकाकर खा जाता है! वह बिल्कुल पागल है! मैंने कहा, रहने के लिए जगह कम है, कृपया बंगले के पीछे वाले कमरे खाली कर दीजिए, लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी! हम दूसरी जगह भी ढूंढ रहे हैं, लेकिन अगर इस आदमी ने थोड़ा सहयोग किया होता तो अच्छा होता!"
"ठीक है। मैं देखता हूँ कि क्या हम दोनों दोस्त बन सकते हैं!"
"देखो, यह असंभव है। उसके अपने कबीले का कोई भी उसके पास नहीं आता! देश गंदा है!"
इधर-उधर खूब बातें हो रही थीं। दरअसल, विलास परिवार के लिए उस छोटे से कमरे में रहना बहुत मुश्किल था। मेरे लिए उसमें जाना ठीक नहीं था। लेकिन किसी कारणवश मुझे उस दंपत्ति पर दया आ रही थी। बच्चे भी बहुत बातूनी थे। वे अंग्रेजी स्कूल जाते थे और अच्छी अंग्रेजी बोलते थे। छोटा अजय बहुत विद्रोही था। बड़ी दीपा और बीच वाला सतीश समझदार बच्चे थे।
मैं उस परिवार के साथ जल्दी ही घुलमिल गया। मैंने खरीदारी का काम शुरू कर दिया, बच्चों को कार से स्कूल लाने-ले जाने लगा और कभी-कभी इंदु को भी खरीदारी के लिए ले जाता था। हैरानी की बात यह थी कि जिस घर में कोई नौकर नहीं था, वहाँ मैं, जिसका पहले कभी इतना तालमेल नहीं रहा था, उस परिवार के साथ पूरी तरह घुलमिल गया। छोटे अजय और मेरे बीच एक खास दोस्ती हो गई। वह मुझसे लिपटकर मुझे 'अंकल अंकल' कहकर पुकारता था। एक शाम मैं उसके पास बैठा था और मुझे अपनी माँ की याद आ गई। वह घर में एक छोटा बच्चा चाहती थी। मैं भी

शादी के लिए तैयार हो गया था, लेकिन मैं नासिक चला गया और अलका को अपने साथ ले आया। अगर अलका अच्छी होती, तो क्या मेरे घर में भी उसके जैसे दो-तीन बछड़े नहीं होते?...
इसी बीच, दौलत खान के मामले की सुनवाई की तारीख टल जाने के कारण पिताजी भवानी नगर लौट गए। लेकिन उन्हें तो सुनवाई शुरू होने पर ही लौटना था। यह कहावत सचमुच सही है कि 'लोगों की याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है'! जब सलीमा की हत्या हुई, दौलत खान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया, तो पुणे में चार-पांच दिनों तक इस विषय पर कोई और चर्चा नहीं हुई। लेकिन धीरे-धीरे लोग इस मुद्दे को भूल गए। कभी-कभी मैं विलास के साथ रेसकोर्स जाया करता था। कई रेस के दीवाने मुझसे दोस्ती करने की कोशिश करते थे क्योंकि उन्हें पता था कि मैं विलास के घर पर रुका हुआ हूँ। लेकिन विलास ने मुझे चेतावनी दी थी। 'मुझे किसी से भी टिप्स माँगना पसंद नहीं है। किसी को कुछ मत बताना!' हालाँकि उसने मुझे इस तरह चेतावनी दी थी, फिर भी मैं अनजाने में उसे बता देता था कि कौन से घोड़े 'अच्छी फॉर्म' में हैं और कौन से घोड़े तुक्के से जीत सकते हैं। मैं रेसिंग की दुनिया को अच्छी तरह से समझने लगा था। अल्का ने मेरे जीवन में जो 'निराशा' पैदा की थी, उसे भुलाने के लिए रेसिंग जैसी जगह और कहाँ मिल सकती थी?
विलास का व्यवहार बेहद संयमित था। वह गिनती करके सिगरेट पीता था! दिन में दस - यानी दस! वह ग्यारह नहीं होना चाहता था! शाम को दो पेग - यानी दो, और उसके बाद भी वह तीन दिन तक शराब को हाथ नहीं लगाता था - गुरुवार, शनिवार और सोमवार!
जब से मैं उसके घर आई थी, वह थोड़ा संतुष्ट लग रहा था। मैंने उसका सारा बोझ अपने कंधों पर उठा लिया था। पुणे में मुझे एक ऐसी जगह भी चाहिए थी जहाँ कोई मेरा करीबी हो। विलास के घर आने के बाद से मुझे 'फ्लश' खेलने का बिल्कुल भी समय नहीं मिला था।
उस दिन, मेरे सामने खड़े बूढ़े आदमी ने अजय को गाल पर थप्पड़ मार दिया क्योंकि वह एक तितली के पीछे भाग रहा था। मैं कार का कार्बोरेटर साफ कर रहा था। वह रोते हुए मेरे पास आया। मैंने उसके गाल पर सूजी हुई उंगलियां देखीं और मेरा दिल दुख से भर गया। तेल से सने हाथों के साथ मैं उस बूढ़े आदमी के पास गया। बूढ़ा आदमी एक गिरे हुए पौधे को दोबारा लगा रहा था। मैंने उसकी गर्दन पकड़ ली और पूछा,-
‘‘क्यूँ बे कुत्ते! बच्चे को क्यूँ मारा?’’
दरअसल, किसी ने भी कभी उसकी गर्दन पकड़कर उससे पूछताछ नहीं की थी। उसने मेरी गर्दन से अपनी पकड़ ढीली की और कहा, "बहन, तुमने मेरा पौधा बर्बाद कर दिया!"
मैंने अपने बाएं हाथ से पौधा खींचा और उसे आंगन के बाहर फेंक दिया। बूढ़ा आदमी अपने पंजे उठाए मेरी तरफ दौड़ा, मैंने उसका हाथ मरोड़कर उसे मजबूर किया कि वह पौधा छोड़ दे। बूढ़े ने अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़ा लिया और बंगले में घुसने की कोशिश करने लगा। मुझे समझ आ गया कि वह बंदूक लेकर आएगा;

परशा मरणासन्न था। उसने उदास चेहरे से मेरी ओर देखा और कहा, "मैंने बच्चे पर दांव लगाया था, इसलिए भगवान ने मुझे सजा दी है!"
मैंने मन ही मन कहा, सिर्फ एक ही कारण नहीं होना चाहिए, अगर सैकड़ों निर्दोष कुत्तों, बिल्लियों और मुर्गियों को मार दिया गया, तो वह भी एक कारण होगा!
‘‘चाचाजी, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?’’
‘‘मुझे घर ले चल! मैं इधर मरना नहीं चाहता!’’
मुझे उस पर तरस आया। मैंने टैक्सी लेकर उस बूढ़े आदमी के घर गया। वह बिस्तर से उठ नहीं पा रहा था। इंदु और मुझे उसकी देखभाल करनी पड़ी। चार महीने बाद उसकी मृत्यु हो गई, और हैरानी की बात यह थी कि उसने अपनी वसीयत में घर, बाहरी कमरा और सब कुछ अजय के नाम कर दिया था!
पुणे जैसे शहर में, विलास को एक बड़ा बंगला मिला, जिसमें बगीचा, फलों के पेड़ आदि थे। फिर मैंने बंगले का स्वरूप बदल दिया। मैंने उसका पूरा रूप बदल दिया, और जब विलास बंगले में रहने आया, तो मुझे स्वतः ही बाहरी मकान का अधिकार मिल गया।
मैं अब विलास परिवार का अभिन्न अंग बन चुका था। मुझे पता भी नहीं चला कि एक साल कैसे बीत गया। मैंने पुणे में कई लोगों से जान-पहचान बना ली थी; नए लोग भी बन रहे थे, और इन्हीं नए लोगों से एक नाजुक मामला सामने आ रहा था।
मेरी जान-पहचान उल्का से हुई, जो उस प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका थीं जहाँ मैं अजय को छोड़ने और लेने जाया करता था। उनके भाई अवि नौसेना में थे। जब भी उनकी छुट्टी होती थी, रेस का सीज़न शुरू हो जाता था, इसलिए वे हमेशा बाहर रहते थे! हम जॉकी से उनका परिचय कराते, उन्हें पार्टियों में बुलाते, उपहार देते, फलों की टोकरियाँ भेजते और हमेशा उनसे टिप्स लेने की कोशिश करते थे।
जब उन्हें उल्का से पता चला कि विलास का बेटा उसी स्कूल में पढ़ता है जहाँ वह पढ़ाती है, तो उन्होंने तुरंत मुझसे अपना परिचय दिया। उनका व्यक्तित्व बहुत ही हंसमुख था! उनके पिता की एक परिवहन कंपनी थी। उनके दोनों भाई अपने पिता के व्यवसाय में उनकी मदद करते थे। घर में अपार धन-दौलत थी और परिवार इतना संपन्न था कि किसी की भी आहट अनसुनी नहीं रहती थी। घर में कोई किसी से कोई सवाल नहीं करता था। उल्का ने मोंटेसरी पद्धति से शिक्षा प्राप्त की थी। वह मुझे जानती थीं और मेरा पता भी जानती थीं।
उस दिन जब मैं अजय को लेने स्कूल गई, तो उसका भाई, मौरिस, जो नौसेना में है, अपनी कार में वहाँ इंतज़ार कर रहा था। वह उल्का को लेने आया था, या शायद जानबूझकर वहाँ आया था क्योंकि उसे पता था कि मैं उस समय अजय को लेने आऊँगी, इसलिए वह वहाँ रुक गया, कौन जाने! लेकिन उल्का ने मेरा उससे परिचय कराया। ‘‘मीट माय ब्रदर, अवी-नेव्हल ऑफिसर! अवी, ही इज मिस्टर समर ठाकूर!’’
हम दोनों ने हाथ मिलाया। पहली मुलाकात में हमने औपचारिक रूप से जो भी बात करनी थी, कर ली। लेकिन बाद में औपचारिकता का पर्दा हट गया। अवि दो महीने पुणे में रहा, लेकिन इन दो महीनों में एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब हमारी मुलाकात न हुई हो।

बच्चों को स्कूल से वापस लाने के बाद घर पर मेरे पास आमतौर पर करने को कुछ नहीं होता था। अगर समय मिलता तो मैं इंदु की भाभी को बाहर जाते समय कहती, 'मैं रात के खाने पर नहीं आऊंगी, मेरा इंतज़ार मत करना।'
एवी एक अनोखी लड़की थी। उसे एक जीवंत जीवन जीने का जुनून था। उसका जीवन का मूलमंत्र था, 'जो कुछ भी चाहो, उसे आज और अभी हासिल करो!' अपने स्वभाव के कारण, उसे 'कल' की कोई परवाह नहीं थी। 'आज और अभी' ही उसके जीवन का मूलमंत्र था। एवी और मेरे एक साथ आने का एक और कारण यह था कि वह थोड़ा अय्याश भी था। लेकिन मैंने उसे कभी भी ज़रूरत से ज़्यादा लाड़-प्यार करने के बारे में नहीं सोचा। एक और कारण जिसकी वजह से मैंने ऐसा नहीं सोचा, वह था उल्कापिंड! उल्का और मैं रोज़ मिलते थे। जब से मेरी अवी से दोस्ती हुई, हम दोस्त बन गए। जब उल्का को मेरी पसंद और अतीत के बारे में पता चला, तो हमारी दोस्ती को प्यार में बदलने में ज़्यादा समय नहीं लगा। उल्का के घर का माहौल पश्चिमी शैली का था। कोई किसी से सवाल नहीं करना चाहता था, सब अपने-अपने काम में व्यस्त रहते थे! घर में खूब पैसा था, और उल्का के पिता और दोनों भाई और ज़्यादा कमाने की चाहत में चैन से नहीं बैठते थे। इस घर में एक अपवाद था और वो थे उल्का और अवी! उल्का को एहसास था कि समाज के प्रति उसकी कुछ ज़िम्मेदारी है, और इसी एहसास के चलते उसने स्नातक होने के बाद शादी किए बिना मोंटेसरी पाठ्यक्रम पूरा किया। वह समय-समय पर अखबार में बाल मनोविज्ञान पर लेख लिखती थी। उसकी शादी की उम्र हो चुकी थी, लेकिन घर में किसी को इसकी चिंता नहीं थी। उसे बस यह तय करना था कि किससे और कब शादी करनी है।
अवि को एक जगह बैठे रहना बिल्कुल पसंद नहीं था; इसलिए उन्होंने व्यापार करने के बजाय नौसेना में भर्ती हो गए। वे साल में दो महीने के लिए घर आते थे, लेकिन उस दौरान भी उन्हें घर पर देखना बहुत मुश्किल होता था! उनके दोस्तों का दायरा बहुत बड़ा था। उनके दोस्त अलग-अलग क्षेत्रों के युवा थे, जिनमें मोटर मैकेनिक, टिन बनाने वाले, पानपत्ती बेचने वाले, घुड़दौड़ के सट्टेबाज, वकील और डॉक्टर तक शामिल थे। मैं अवि से दोस्त बन गया, लेकिन वे कभी मेरे करीब नहीं आए। और न ही मुझे उनसे ऐसी उम्मीद थी।
जिस तरह विलास और इंदु को समझ आ गया था कि उल्का और मैं एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं, उसी तरह उसके परिवार को भी यह बात समझ आ गई थी।
उस दिन विलास ने मुझसे कहा, "उसे पूरे गांव में चर्चा का विषय बनने देने के बजाय, तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते?"
इंदु की बहन अजय के लिए ऊनी स्वेटर बुन रही थी। उसने मेरी तरफ देखकर कहा, "यह न केवल सुंदर है, बल्कि किफायती भी है!"
"हे भाभी, मैं उससे शादी कैसे कर सकता हूँ?"
"क्यों नहीं?"
"मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि मेरी शादी पहले हुई थी? अल्का हम दोनों को द्विविवाह निवारण अधिनियम के तहत अदालत में घसीट लेगी, है ना?"
"तो क्या आपको उसे तलाक दे देना चाहिए?"

"समस्या की जड़ यही तो है! हमारे परिवार में तलाक लेना आम बात नहीं है! इसीलिए तो हमने घर छोड़ दिया।"
"तो क्या यह मेरे जीवन भर ऐसे ही रहेगा?"
आगे जो होगा देखा जाएगा! मैंने इसके बारे में सोचना छोड़ दिया है। आज का दिन बीत गया, लेकिन मैंने इसे कमाया है! कल तो कल है!
"समर, मैं तुम्हें बता दूं!" विलास ने सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा, "मैंने तुमसे कहीं अधिक मोहक अनुभवों की दुनिया जी है। लेकिन अंत में, पत्नी और बच्चों से मिलने वाली खुशी और संतुष्टि की कोई तुलना नहीं है!"
"मुझे नहीं लगता कि मुझे यह इस जीवन में मिलेगा!" मैंने आकाश की ओर देखते हुए कहा।
"तो यह सिलसिला कब तक ऐसे ही चलता रहेगा?"
"मरते दम तक!"
विलास ने लगभग खत्म होने वाली सिगरेट को उठाया और फेंक दिया, फिर उसने कंधे उचकाते हुए कहा,-
कौन जाने इसका क्या अंजाम होगा!
- ०-०-०-

१४
विलास के पास दो कारें थीं। एक बड़ी शेवरले और दूसरी छोटी फोर्ड! दरअसल, विलास के परिवार को उस शेवरले की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं थी। विलास बहुत मेहनती थे, लेकिन बेहद अंधविश्वासी भी थे। उनका मानना था कि जब से उन्होंने वह शेवरले खरीदी है, तब से उनकी तरक्की हुई है, उन्हें जॉकी का लाइसेंस मिला है, उन्होंने बड़ी-बड़ी रेस जीती हैं। उस कार की वजह से लक्ष्मी हर तरफ से उनके पास आई हैं; इसीलिए वे उस कार को लक्ष्मी कहते थे; मैं तो मन ही मन उस कार को 'हाथी' कहती थी! उस समय पेट्रोल न तो इतना दुर्लभ था और न ही इतना महंगा, फिर भी अंधविश्वास की वजह से उस बड़ी कार को घर में रखना मेरे बस की बात नहीं थी। मैंने उन्हें कई बार सुझाव दिया कि अगर वे उस कार को बेचना चाहते हैं, तो उन्हें एक 'फिएट' खरीद लेनी चाहिए। लेकिन उस लक्ष्मी में उनका विश्वास अटूट था। वरना मेरे पिता ऐसा करते क्या। अगर कोई नुकसान नहीं भी होता, और विलास बेबी फोर्ड लेकर बाहर गया होता और मुझे भी उसी समय निकलना होता, तो मुझे 'लक्ष्मी' रोड से जाना पड़ता, और ये पुणे की मशहूर सड़कें हैं! हमारा भवानी नगर इससे बड़ा है! एक बार मुझे कुछ काम से जिम जाना पड़ा। पहले वामपाटा में अपना काम खत्म करके, मैं लक्ष्मी रोड पर 'लक्ष्मी' से गया। हे भगवान! कितनी भीड़ थी! लोग, औरतें, बच्चे बेपरवाही से साइकिल चला रहे थे - हा हा हा! पुणे में जो गाड़ी चलाना कुशलता से सीख लेता है, उसे तो लंदन और पेरिस में गाड़ी चलाने का लाइसेंस ज़रूर मिलना चाहिए! इसीलिए मैंने फिर कभी 'लक्ष्मी' नहीं चलाई।
आज शाम उल्का ने मुझे पहाड़ पर आने के लिए कहा था। विलास घर पर था। जब वह काम पर नहीं होता था, तो कभी बाहर नहीं जाता था। पुराने मालिक ने एक बड़ा बगीचा और फलों के पेड़ छोड़े थे। विलास अक्सर उसी बगीचे में समय बिताता था।
विलास एक ग्राफ्टेड गुलाब की झाड़ी पर हैंड पंप से कीटनाशक का छिड़काव कर रहा था। मैं उसके पास गया और बोला, "मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर जाना है!" ‘‘जा!’’
"अगर तुम बाहर जाना चाहते हो, तो मैं बस से जाऊँगा!"
"तुम रात को कब आओगे?"
"ग्यारह बज जाएंगे!"
पार्टी कहाँ है?
"ऐसा कुछ नहीं था। लेकिन वह बस यही कह रही थी कि वह कहीं बाहर खाना खाने जाना चाहती है!"
‘‘कोण उल्का?’’
"तो फिर मुझे और कौन फोन करेगा?"
मैं क्या कहूँ? आप यह कैसे तय कर सकते हैं कि जो व्यक्ति शादी के बंधन में बंधना नहीं चाहता, उसे सिर्फ एक दोस्त का साथ पसंद आएगा? जाओ, लेकिन ज़्यादा मत पीना। मुझे गाड़ी की चिंता नहीं है; मुझे तुम्हारी चिंता है!

मैं हँस पड़ा। इस तरह विलास मुझे अपने सबसे अच्छे भाई का प्यार दे रहा था। मैं उससे चार साल बड़ा था, पर कहते हैं ना, मेहनत से ही इंसान को बड़प्पन मिलता है! विलास मुझसे ऐसे लहजे में कहता था कि मैं अजय या सतीश को समझा दूँ। मुझे इसमें कुछ गलत नहीं लगा। क्योंकि घर छोड़ने के बाद मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ जाऊँगा। लेकिन ऐसे समय में विलास ने मुझे सहारा दिया था। मैं भी उस परिवार का हिस्सा था और इसी तरह रहता था।
अल्का और उल्का! ये दोनों नाम कितने मिलते-जुलते हैं! अगर अल्का के 'अ' को 'उ' से बदल दिया जाए और नाम का उच्चारण सीधा किया जाए, तो यह तुरंत 'उल्का' बन जाएगा! लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि उल्का कभी अल्का नहीं बनेगी। दोनों खूबसूरत और पढ़ी-लिखी थीं, लेकिन उल्का में वो बात ज़रूर थी जो अल्का में नहीं थी - 'चरित्र'! इतनी पढ़ी-लिखी कि अगर वो घर पर दोनों वक्त का खाना खाकर आराम से बैठकर कहानियां पढ़तीं, तो भी कोई कुछ नहीं पूछता, लेकिन उन्होंने अकेले ही इस मोंटेसरी क्लास को चलाने की ज़िम्मेदारी उठा ली! एक छोटे बच्चे की देखभाल करना नौ बच्चों को संभालने जैसा होता है, जबकि उन्होंने पचास छोटे बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली थी। मैं अक्सर बैठकर उस मोंटेसरी क्लास में होने वाली मस्ती देखती थी! एक-दूसरे के बारे में गपशप कभी खत्म नहीं होती थी। 'अरे, ये प्रदीप मुझे चुटकी काटता है,' 'अरे! ये सरिता मेरी पेंसिल छुपाती है', कोई 'वो' कह देता!
मैं उल्का से कई बार कहा करता था, "मैं तुम्हारे धैर्य और दृढ़ता की जितनी भी प्रशंसा करूं कम है।"
वह हंसती और कहती, "अरे, इसमें तो एक मासूम सी खुशी है! बाल मनोविज्ञान एक बहुत ही रोचक और सामाजिक रूप से उपयोगी विषय है। किसी को तो इसे अपनाना ही चाहिए, है ना?"
"इस छोटी बच्ची की देखभाल करने के बजाय अगर तुम कॉलेज में प्रोफेसर बन जाते तो बेहतर होता!"
"अरे! अरे, चाहे हमें यहाँ कितना भी कष्ट सहना पड़े, ये बच्चे निर्दोष हैं! इससे मेरा दिमाग खराब नहीं होता; लेकिन आजकल स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों का अहंकार देखकर तो खुद को 'मैं' कहने वाले प्रोफेसर भी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं!"
"यह सिर्फ छात्रों की गलती नहीं है, उल्का, प्रोफेसरों की वफादारी की भी परीक्षा लेनी होगी! ऐसे ही एक प्रोफेसर मेरे पतन के लिए जिम्मेदार हैं!" उल्कला को मेरी पिछली कहानी इंदु वाहिनी से पता थी; उन्होंने मुझसे इसके बारे में ज्यादा कुछ पूछा भी नहीं। बल्कि, अगर कभी यह विषय उठता भी, तो वे बड़ी कुशलता से बात बदल देतीं। वे मुझे बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत समझातीं।
अब तक हम सिर्फ साथ-साथ टहलते, बातें करते और हंसी-मजाक करते थे। वह समझदार थी और मैं उसकी ज़िम्मेदारी भी उठाता था; लेकिन कभी-कभी मुझे ये सीमाएं पार करनी पड़ती थीं। मेरे पैर कमज़ोर होने का मतलब यह नहीं कि मेरी जवानी कमज़ोर हो गई थी।

आज उल्का ने फोन करके कहा कि वह कहीं बाहर डिनर पर जाना चाहती है। जब उसने कहा, "शाम पांच बजे पार्वती के घर आ जाना," तो मैं समझ गई कि उल्का आज मुझसे किसी गंभीर विषय पर बात करना चाहती है।
पांच बजे मैं उस जगह गया जहाँ उल्कापिंड ने मुझे बताया था, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर समय बिताने के लिए मैंने देवी के दर्शन किए और मंदिर के दो चक्कर लगाए। अगर आप मेरी तरह इधर-उधर घूमने के बजाय मंदिर के चारों ओर घूमते रहेंगे, तो किसी को भी आप पर शक करने का कोई कारण नहीं होगा, इसलिए जितने चाहें उतने चक्कर लगाएँ। जितने ज़्यादा चक्कर लगाएंगे, आपकी भक्ति उतनी ही प्रबल होगी। चाहे कोई मंदिर के चारों ओर किसी की बुराई के बारे में सोचकर घूम रहा हो या पानी का घड़ा लेने के लिए, वह भक्ति के मार्ग पर ही है। देवी पावली मेरे तीसरे चक्कर के दौरान आ गईं। मैंने देखा कि मेटियोर नीचे से सीढ़ियों से ऊपर आ रही है। मैंने अपने चक्कर रोक दिए और उसकी ओर कुछ दूर तक चली गई। सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद उसकी साँस फूल रही थी। उसके स्तन ऊपर-नीचे हो रहे थे। मेटियोर ने रुमाल से माथे से पसीना पोंछते हुए कहा,-
"वाह! अगर आपको इसकी आदत नहीं है, तो आपके पैरों में ऐंठन आ जाएगी।"
"तुम बहादुर हो, लेकिन मैं एक पैर पर चलने में कमजोर हूँ। मैं तुम्हारा इंतज़ार करते हुए इधर-उधर घूम रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हारी तरह थका हुआ नहीं हूँ!"
"आने का समय हो गया! एवी का दोस्त बिल्कुल सही समय पर आया। फिर मुझे उससे दस मिनट बात करनी पड़ी।"
मुझे नहीं लगता कि घर पर कोई और था।
"अरे, समर, तुम्हें पता नहीं! हमारे घर के लोग काम से जुड़ी ज़रूरी बातों के अलावा किसी से बात करना पसंद नहीं करते। तुम्हें हमारे घर के लोगों की निजी ज़िंदगी की समझ नहीं है।"
"मैं थोड़ा-बहुत समझता हूँ, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आप और एवी इतने अलग हैं।"
काफी देर तक मुझे वह उल्कापिंड गंभीर सा लगा। सूर्यास्त का समय था। सिंहगढ़ का सीधा किनारा, मानो नीली रेखा से खींचा गया हो, बैंगनी रंग का हो गया था।
हम दोनों कुछ दूर तक चले। एक समतल जगह देखकर उल्का बोली, "हम यहीं बैठेंगे!"
"आज मुझे तुम्हारे बारे में कुछ अलग सा महसूस हो रहा है, मेटियोर! क्या बात है?"
"इसमें कुछ खास नहीं है, लेकिन-"
"बोलो, ठीक है?" मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।
"समर, ये कब तक चलेगा? पापा मुझसे कल रात यही पूछ रहे थे!"
"क्या?"
"क्या आप अपने बारे में पूछ रहे थे?"
"क्या तुमने मुझे बताया था?"
"हां, लेकिन मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि आपकी शादी पहले हो चुकी है।"

"आपने मुझे क्यों नहीं बताया?"
"अगर उन्होंने मुझे यह बात बताई होती तो उन्हें अच्छा नहीं लगता।"
"यह सही है।"
"लेकिन अब हमें इससे निकलने का रास्ता ढूंढना होगा।"
‘‘आप ही तो सुझाव हैं, है ना?’’
कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा, "हम शादी करने जा रहे हैं।"
"यह कानूनी नहीं होगा।"
"मैं भी यह जानती हूं; लेकिन जिस मोंटेसरी स्कूल में मैं पढ़ाती हूं, उसके निदेशक ने मुझसे कहा, 'जब तक मेरी शादी नहीं हो जाती, तब तक तुम्हारे साथ रहना मेरे लिए ठीक नहीं है।'"
मैंने सोचा। ऐसा नहीं है कि उल्का गलत थी; लेकिन वह जानबूझकर गैरकानूनी काम कैसे कर सकती है? लेकिन समस्या क्या है? अल्का ने मुझे धोखा दिया है। वह स्वभाव से ही बुरी थी, लेकिन शादी से पहले मैं उसके बुरे व्यवहार को माफ कर देता; शादी के बाद थोम्बर के प्रति उसका लगाव कभी जायज़ नहीं था! मुझे अल्का की परवाह क्यों करनी चाहिए?...
उल्का के भले के लिए या उसके डर से यह कहना कि मुझे उससे शादी नहीं करनी चाहिए, इसमें क्या न्यायसंगतता है?...
मैंने उल्का का हाथ कसकर पकड़ा और कहा, "मैं तैयार हूँ। अगर उल्का कभी मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करे, तो तुम्हें भी उसका सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए!"
"वह कहती है कि इसीलिए वह यहाँ आई है, अब और इंतजार करने का कोई मतलब नहीं है!"
हम दोनों ने अपनी शादी को लेकर ज्यादा धूमधाम न करने का फैसला किया। उल्का ने शादी के बाद अपने घर पर हमें बताया कि मेरी शादी विलास और इंदु की भाभी की मौजूदगी में लोनावला के एक पुजारी के घर में उल्का से हुई। उसे शायद डर था कि उसके पिता और दो भाई, जो हमेशा कहते रहते हैं "देखो तुम दोनों को", उनकी गैरमौजूदगी में कोई न कोई बखेड़ा खड़ा कर देंगे। हमारी शादी बिना किसी धूमधाम के हो गई; लेकिन जल्द ही सबको इसके बारे में पता चल गया। जब अवि को हमारी शादी के बारे में पता चला, तो हमें उससे बधाई का टेलीग्राम भी मिला। उल्का बाहरी कमरे में रहने आ गई। वह महीने में तीन से चार सौ रुपये कमा रही थी। मेरे पास भी दौलतखान की बचत से आठ से दस हजार रुपये बचे थे। इसके अलावा, अगर मुझे कोई भी काम करने को कहा जाता, तो मेरे लिए तीन से चार सौ रुपये कमाना मुश्किल नहीं होता! मुझे किसी बड़ी फैक्ट्री या औद्योगिक प्रतिष्ठान में सुरक्षा अधिकारी की नौकरी आसानी से मिल गई। ज्यादातर उद्योगपति घुड़दौड़ में सट्टेबाज थे। विलास के पास मेरे लिए सिफारिश करने का समय नहीं था; लेकिन जब उल्का ने कहा कि वह काम कर रही है, तो मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मुझे भी काम करना ही है।
मेरी शादी की खबर भवानी नगर तक पहुंची और मुझे अपने पिता का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था, ‘मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि तुम इतनी मूर्खतापूर्ण हरकत करोगी! कम से कम ऐसा करने से पहले मुझसे सलाह तो ले लेती?’ लेकिन अगर

मैंने उनसे सलाह ली होती, तो मैं देख सकती थी कि मुझे किस तरह की सलाह मिलती। एक तरह से, उनकी सलाह की उम्मीद न करके मैंने बहुत अच्छा काम किया! इंदु और विलास को लगा था कि शादी से मुझे कुछ स्थिरता मिलेगी; लेकिन विलास के बंगले के पीछे बने छोटे से कमरे में रहते हुए उल्का को असहज महसूस होने लगा। उसे यह बात भी पसंद नहीं थी कि मैं विलास के बच्चों को स्कूल छोड़ने और लेने जाती थी! बाल मनोविज्ञान की पढ़ाई करने के कारण मुझे उल्का के स्वभाव का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था। शादी के एक महीने बाद मैंने उससे पूछा, "बताओ तुम्हें क्या लगता है!"
"चलो यहाँ से चलते हैं!"
‘‘का?’’
मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं जब कोई कहता है कि हम किसी की दया पर जीते हैं!
अरे बाप रे! इसमें दयालुता का सवाल ही कहाँ उठता है? विलास मुझे भाई की तरह मानता है; मैं उसके घर की देखभाल करता हूँ। मैं बच्चों को स्कूल लाता-ले जाता हूँ। बदले में, हम उसके बाहरी कमरे में रहते हैं! तुम कमाल हो! ऐसा क्या हुआ है जिससे तुम्हें हीनता महसूस होने लगी है?
"समर, तुम यह बात नहीं समझती! औरतें बिना बोले एक-दूसरे की मानसिकता समझ जाती हैं! इंदुबाई के व्यवहार से तो मुझे यह महसूस हो ही रहा है! वैसे भी, तुम किस तरह की गृहिणी हो?"
‘‘उल्काऽ!’’
"जी हाँ! मैं फिर से पूछती हूँ, तुम बच्चों को स्कूल ले जाओ, वापस लाओ, घर के लिए खाना और सब्जियाँ लाओ, जॉकी जैसे दूसरे काम करो, और इन सबके बदले में उन्होंने तुम्हें यह जगह मुफ्त में रहने के लिए दी है, बस! मुझे अपने माता- पिता का दबदबा कभी पसंद नहीं आया। नहीं, किसी पर इस तरह अधिकार जताना मेरे स्वभाव में नहीं है! अगर मुझे बाहर डेढ़ सौ रुपये किराया भी देना पड़े, तो भी कोई बात नहीं! अगर मुझे कमरा मिल गया, तो मैं तुम्हें सब कुछ दिखा दूँगी!"
मैंने अपना माथा पीट लिया। मुझे उल्का की सोच बिल्कुल समझ नहीं आई। क्योंकि उस घर में मेरे साथ ऐसा बर्ताव होता था मानो मैं उस परिवार में इकलौती ही क्यों न हूँ। मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि उल्का, स्नातक होने के बाद भी, इतनी समझदार नहीं है!
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि अगर आप थोड़ी समझदारी दिखाएं तो बेहतर होगा!" इसका मतलब है कि आपको इस घर से बाहर निकलना पसंद नहीं है। बस इतना ही! मुझे बहुत निराशा हुई। उल्का पढ़ी-लिखी, बुद्धिमान और संस्कारी है; इसलिए मुझे पूरा यकीन था कि किसी भी परिस्थिति में उसका विवेक विचलित नहीं होगा; लेकिन मेरी निराशा गलत साबित हुई। दुनिया में आप कहीं भी चले जाएं, महिलाओं के स्वभाव का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता, यह सच है! यह सोचकर मुझे बहुत दुख और पीड़ा हुई कि अगर विलास और इंदु को पता चल जाए कि उल्का क्या सोच रही है तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।

विलास कभी-कभी पार्टियाँ आयोजित करता था। रॉयल वेस्टर्न टर्फ क्लब के एक सदस्य सेवानिवृत्त होने वाले थे, और विलास ने उनके सम्मान में एक पार्टी का आयोजन किया था। खाना बनाने के लिए रसोइयों को बुलाया गया था; लेकिन ज़ाहिर है, देखरेख की ज़िम्मेदारी मेरी थी। शाम होते-होते गाड़ियाँ एक-एक करके आने लगीं। विलास और मैंने मेहमानों का स्वागत करना शुरू किया। बाहर लॉन में मेज़ें और कुर्सियाँ लगाई गईं। इंदु वाहिनी मेहमानों में मौजूद महिलाओं से हँसते-हँसते बातें करने लगीं। यह जानकर कि वह अकेली हैं, विलास ने उल्का के बारे में पूछा। जब मैं उल्का को बुलाने गया, तो उसने साफ-साफ जवाब दिया, "मुझे तुम्हारी तरह मज़ाक करना नहीं आता! और आज मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है!"
मेरा दिमाग पूरी तरह से खराब हो गया है! उस उल्कापिंड को उस विलासिता के प्रति जरा भी सम्मान नहीं होना चाहिए जिसने मेरे जीवन को स्थिरता दी, मुझे अपने घर में रखा, और मुझे परिवार का हिस्सा माना!
"तुम्हें आना ही होगा, उल्कापिंड!" मैंने अपनी आवाज थोड़ी ऊंची करते हुए कहा।
"देखो, समर, मैं ऐसी धमकी से नहीं डरूंगा। क्या मैंने तुम्हें रोका था?" "अरे, विलास तुम्हें बुला रही है। वहाँ तो सिर्फ इंदु वाहिनी है। वहाँ आठ-दस पत्नियाँ हैं। क्या वो अकेली ही उन सब से बात करेगी? इतनी ज़िद्दी मत बनो!"
"आपने कहा था कि आपकी तबीयत ठीक नहीं है, है ना?" उत्का उठी और सीधे बिस्तर पर गिर पड़ी।
मैंने उस दिन खूब शराब पी। मैंने जानबूझकर अपने गम भुलाने के लिए शराब पी। मुझे पता भी नहीं चला कि पार्टी कब खत्म हुई और लोग कब वापस चले गए। मैं बगीचे में एक कुर्सी पर लेटकर आसमान में चांद गिनता रहा। ऐसा लग रहा था जैसे अंतरिक्ष में बवंडर चल रहा हो।
विलास मेरे पास आया और मेरा कंधा पकड़कर बोला, "समर, तुमने आज ऐसा क्यों किया? तुमने पहले कभी इतना अविवेकी व्यवहार नहीं किया?"
मेरी जुबान भारी हो गई थी, मेरा सिर चकरा रहा था, लेकिन फिर भी मैंने कहा, "मैं जीना नहीं चाहता!"
"आप इतना गुस्सा क्यों कर रहे हैं?"
"'यह सब तुम्हारी वजह से हुआ! तुमने ही मेरी शादी उल्के से करवाई! क्या मैं इस घर की नौकरानी हूँ?'"
विलास अचानक गंभीर हो गया। वह समझ गया था कि उत्का को पार्टी में आमंत्रित किए जाने के बावजूद वह क्यों नहीं आया। लेकिन उस समय उसने इस विषय पर और कुछ नहीं कहा। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बाहरी कमरे के दरवाजे तक ले गया और मेरे पीछे-पीछे आया। मैंने दरवाजा खटखटाया। उत्का ने कुंडी खोली। अगले दिन, हैंगओवर! मेरा सिर दर्द कर रहा था, मुँह सूख रहा था। स्कॉच पी थी, पर आखिर वो शराब ही तो थी! मैं सुबह 9:30 बजे उठी। उल्का गाना गुनगुना रही थी और स्कूल जाने की तैयारी कर रही थी। वो मेरी मौजूदगी को नज़रअंदाज़ कर

रही थी! मैं भी बिस्तर पर लेटी उसे देख रही थी। उसके बाल पीठ पर खुले थे। सफेद साड़ी में वो बेहद खूबसूरत लग रही थी।
गिरते हुए मैंने चिल्लाकर कहा, "उल्कापिंड!"
मैं स्कूल जाना चाहता हूँ। तुम क्या चाहते हो?
"मैं तुम्हें चाहता हूँ! मेरे करीब आओ!"
"हम्म! मैंने नहा लिया! आज मेरा व्रत है। उठो, दांत साफ करो और नहा लो!"
मैं झगड़े को ज्यादा बढ़ाना नहीं चाहती थी! उल्का, अल्का से लाखों गुना बेहतर थी। इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी कि वह स्त्री स्वभाव की सीमाओं को पार नहीं कर सकती थी!
"उल्का, अगर हम कहीं और रहने चले गए तो खर्चों का क्या करेंगे?"
"तुम भी नौकरी ढूंढ लो! क्या तुम दोनों का खर्च नहीं उठा पाओगी? तुम्हें ज़िम्मेदारी नहीं चाहिए? तुम्हें तो मुफ्त में गाड़ी चलाने को मिलती है। अपनी ज़िंदगी का कितना समय बच्चों को स्कूल ले जाने और वापस लाने जैसे कामों में बर्बाद करोगी? और अगर तुम्हें पूरी ज़िंदगी यही करना है, तो मुझसे शादी करने के लिए राज़ी क्यों हुई? कोई भी स्वाभिमानी औरत अपने पति को किसी और से शादी करते देखना पसंद नहीं करती! चलो एक बार खाना खा लें, लेकिन इज़्ज़त से जिएं!"
"लेकिन इंदु वाहिनी ने आपके आत्मसम्मान को कहाँ ठेस पहुँचाई?"
"अरे, मूर्ख! ऐसी बातें कहने की कोई ज़रूरत नहीं है। एक समझदार औरत तो उसके हाव-भाव और बातों से ही समझ जाती है! उठो, नाश्ता तैयार है, और मुझे आज स्कूल छोड़ने के लिए उनकी गाड़ी की ज़रूरत नहीं है! मैं बस से जाऊंगी!" इधर-उधर कुएँ! मैं यह नहीं कह सकती कि उल्का ने जो कहा वह पूरी तरह गलत था। विलास और इंदु की बहनें चाहे कितनी भी लालची क्यों न हों, उनके सहारे जीवन भर जीना असंभव था! उल्का के रवैये पर गहराई से विचार करने के बाद, जिसने मेरी पहली शादी होने के बावजूद मुझ पर प्यार बरसाया, मुझमें यह कहने का साहस नहीं था कि यह गलत था।
"मीटियर, चलो मिलकर करते हैं!"
"मुझे बताओ क्या?"
"मुझे नहीं लगता कि पुणे में कहीं और रुकना हमारे लिए अच्छा विचार है। चलो मुंबई चलते हैं! देखते हैं तुम्हें वहाँ नौकरी मिल पाती है या नहीं!" उल्का मेरे पास आकर बोली, “क्या तुम्हें कोई ‘अंतर्ज्ञान’ हुआ था?” इतना कहकर वह अलमारी के पास गई और लाल स्याही से छपा ‘टाइम्स ऑफ इंडिया’ का अंक मेरे सामने उठाकर बोली, “जी हाँ, इसे पढ़ो! मैंने कल ही मुंबई में नौकरी के लिए आवेदन भेजा है! पुणे में अभी भी बहुत से लोग हैं जो लोगों को परखते हैं। मुंबई में कौन किसी को नहीं जानता? अगर मुझे यह नौकरी मिल जाती है, तो मैं एक पैर पर भी आने को तैयार हूँ।”
"अब और करीब आओ!"
उल्का मेरे करीब आई और मेरे बिखरे बालों में उंगलियां फेरते हुए बोली, "अरे, मेरे मन की बात समझना सीखो। तुम जीवन में एक बार इसलिए असफल हो गए

क्योंकि तुम महिलाओं के स्वभाव को नहीं समझ पाए, क्या तुम बार-बार वही गलती दोहराते रहोगे?"
जब मैंने उलाका का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा, तो वह चिल्लाई, "अरे! मेरे मुंह से अभी भी शराब की गंध आ रही है! उठो!" उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे जगाया।
- ०-०-०-

१५
मेरी प्रकृति में मौजूद कोमलता और भावुकता को नष्ट करने के लिए वे दो महिलाएं जिम्मेदार थीं - एक अल्का और दूसरी उल्का!
अल्का ने मुझे साफ तौर पर धोखा दिया, मेरे साथ बेईमानी की। वहीं उल्का मेरे प्रति वफादार है; लेकिन वह मुझे जानती ही नहीं थी! पुणे छोड़ते समय मैंने यही शिकायत की थी।
मुझे पुणे छोड़ने का दिन आज भी साफ-साफ याद है। विलास और इंदुवाहिनी घर पर थे। विलास ने मुझसे पुणे न छोड़ने की विनती की। मैंने उसे यह भी कहा कि अगर उल्का को तुम्हारा यहाँ रहना पसंद नहीं है, तो तुम कहीं और खुशी से रह सकती हो। लेकिन उल्का बहुत जिद्दी थी! अब वह पुणे छोड़ने पर अड़ी हुई थी। मैंने अपना सारा सामान दो बक्सों में पैक कर लिया। लेकिन मुझे मुंबई में ये समझ नहीं आ रहा था कि इन्हें कहाँ रखूँ, कहाँ ठहरूँ या इनका क्या करूँ। सामान पैक करते समय मैंने उल्का से कहा, "जब हमें मुंबई में रहने की जगह ही नहीं पता, तो ये बक्सा साथ क्यों ला रही हो? इसे यहीं रख दो या कम से कम अपने घर ले जाओ!"
"देखो, समर, मैंने शादी से पहले सब कुछ सोच-समझ लिया था। उसी क्षण मेरे परिवार से मेरा रिश्ता टूट गया था! मैं उस घर में असहाय महसूस करते हुए वापस नहीं जाऊंगी!"
लेकिन मुसीबत के समय जाने का क्या फायदा?
"नहीं मतलब नहीं!"
एक ज़ख्म, दो टुकड़े! बातचीत, चर्चा या समझौता करने का कोई फ़ायदा नहीं। सामान पैक करने के बाद, मैं विलास और इंदु वाहिनी को अलविदा कहने गई। विलास कुछ बोल नहीं पा रहा था। इंदु वाहिनी अपने आँसू नहीं रोक पा रही थी। पिछले एक साल से जिस घर में मैं रह रही थी, उसे छोड़ते हुए मुझे बहुत तकलीफ़ हो रही थी। इसी बीच, अजय, जो बगल वाले घर में खेलने गया था, आ गया। मैंने उसे गले लगाया और कहा, "अजय, मैं जा रही हूँ!"
"कहाँ?"
"मुंबई के लिए!"
"आप कब लौटेंगे?"
मैंने कुछ नहीं कहा। फिर उसने कहा,-
"मैं आपके साथ चलूंगा, चाचा!" उसने कहा और मेरे करीब आकर मुझे गले लगा लिया। इंदुवाहिनी ने उसे खींच लिया।
"उन्हें अकेला छोड़ दो! वे वापस आ जाएँगे!"
यह दृश्य देखकर विलास उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। इंदु फूट-फूटकर रो रही थी। अपने माता-पिता का व्यवहार देखकर नन्हा अजय समझ गया कि वह अब यहाँ से जा रहा है और कभी वापस नहीं आएगा!
मुझे वो दिन याद आने लगे जब से मैं उस घर में आई थी। अजय कभी-कभी बहुत ज़िद्दी हो जाता था। वो बिल्कुल भी नहाना नहीं चाहता था; तब मैं उसे प्यार से बातें करते हुए, कहानियां सुनाते हुए बाथरूम तक ले जाती और फिर खुद उसे

नहलाती। फिर अजय ही तय करता कि पानी कितना गर्म होना चाहिए! वो धमकी भी देता था कि अगर साबुन उसकी आंखों में चला गया तो वो फिर कभी तुम्हारे हाथों से नहीं नहाएगा!
मेरे अपने कोई बच्चे नहीं हैं; और न ही भविष्य में बच्चे होने की कोई संभावना है; इसलिए मैं विलास के तीन बच्चों पर अपना सारा स्नेह लुटा रहा था। मुझे उस छोटी बच्ची को छोड़ना पड़ा जो मुझे 'अंकल' और 'अंकल' कहकर पुकारती थी, उल्का की ज़िद की वजह से! उल्का, जिसने बाल मनोविज्ञान की पढ़ाई की थी! इसे ही तो 'घटना की विडंबना' कहते हैं!
मुझे वो दिन याद है जब मकान मालिक ने अजय को थप्पड़ मारा था। मैंने उस बूढ़े आदमी से लड़ाई की और उसे कमरे में बंद कर दिया, पुलिस के हवाले कर दिया। बाद में जब बूढ़े आदमी की हालत बिगड़ी, तो इंदु वाहिनी और मैंने उसकी देखभाल की। लेकिन हमारी मेहनत बेकार नहीं गई। बूढ़े आदमी ने अपनी वसीयत में अजय के नाम एक बंगला लिख दिया। मुझे वो दिन याद है। मेरी कोई बहन नहीं थी, मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि बहन का प्यार क्या होता है। लेकिन इंदु वाहिनी के रूप में मुझे एक सच्ची बहन मिल गई। अलका की वजह से सभी महिलाओं के धोखेबाज़ और चालाक होने की जो धारणा थी, इंदु वाहिनी के स्वभाव ने उसे दूर कर दिया। इंदु वाहिनी बहुत सादा जीवन जीती थीं, भले ही उनके पति एक महत्वाकांक्षी जॉकी थे, फिर भी वे स्वभाव से बेहद विनम्र थीं। ऐसे अमीर लोगों की पत्नियां 'भाभी भाभी' बनकर घर आती थीं और इंदु वाहिनी की सहानुभूति पाने की कोशिश करती थीं। दूसरे जॉकी की पत्नियां रेसकोर्स पर ऐसा मेकअप करके आती थीं कि फिल्मी सितारे भी शर्मा जाएं, लेकिन मुझे याद नहीं कि इंदु वाहिनी ने कभी मेरे साथ छेड़छाड़ की हो। विलास अक्सर उससे कहती थी, 'कम से कम जब रेसकोर्स आओ तो लिपस्टिक तो लगा लो।' लेकिन वो कभी ऐसा भी नहीं करती थी। अगर मैं बिना बताए घर लौट आती और देर हो जाती, तो इंदु वाहिनी रात ग्यारह-बारह बजे तक मेरा इंतज़ार करती रहती! कभी-कभी इंदु वाहिनी का व्यवहार देखकर मुझे अपनी माँ की याद आ जाती। दोनों कितनी मिलती- जुलती थीं! लेकिन अब मैं उन सबको पीछे छोड़ रही थी। विलास खिड़की से बाहर देख रही थी और सिगरेट पी रही थी।
"मेँ आ रहा हूँ!"
‘‘ये!’’
"गुस्सा मत करो।"
"गुस्सा करने का क्या फायदा? मुंबई जा रहे हो तो इसका मतलब ये नहीं कि देश छोड़ रहे हो! वैसे भी, मुंबई में रेस सीजन शुरू होने में दो महीने और बाकी हैं। मुझे भी मुंबई में लगभग पांच महीने रहना पड़ेगा!"
यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। विलास से कभी-कभार मिलना संभव था।
उल्का आ गई। उसने औपचारिक रूप से सभी को अलविदा कहा। मैंने अपने सामान के लिए एक स्टेशन वैगन बुक की थी, और हम उसी में मुंबई जा रहे थे।
पुणे मेरी जन्मभूमि नहीं है, लेकिन इसे छोड़ना मेरे लिए असहनीय था।

संगम पुल पार करने के बाद, हमारी स्टेशन वैगन मुंबई की ओर चलने लगी। उला के चेहरे पर संतोष झलक रहा था। हवा से बाल उड़ने से बचाने के लिए उसने जानबूझकर अपना घूंघट सिर से हटा लिया और एक हाथ से उसे कसकर पकड़ लिया। जब गाड़ी हाईवे पर पिंपरी सीमा पार कर रही थी, मैंने उल्का से पूछा,
"आप इस बक्से को कहाँ रखेंगे? हम चार या आठ दिन, या ज़रूरत पड़ने पर एक या दो महीने तक भी होटल में रह सकते हैं, लेकिन आप इन दो पलंगों और बक्से का क्या करेंगे?"
"आप क्या सोचते हैं? मैंने तो इसके बारे में सोचा ही नहीं है?"
"आपने क्या फ़ैसला किया!"
"मेरी दोस्त लिलियन मार्टिन बांद्रा में रहती है। उसका घर बहुत बड़ा है। चलो अपना सामान उसके पास रख देते हैं! जब तक हमें रहने के लिए कोई जगह नहीं मिल जाती, तब तक वहीं रहना ठीक रहेगा!"
"पुणे से निकलते समय क्या आप घर नहीं गए थे?"
"मामला अभी खत्म नहीं हुआ है! क्या आप बाद में आ सकते हैं?"
"लेकिन अगर आपको जिस नौकरी के लिए आप कोशिश कर रहे हैं, वह तुरंत न मिले तो क्या होगा?"
"तुम्हारे पास अब तक की बचत है! और तुम्हारे पास आठ या दस हजार हैं?"
जब हम बात कर रहे थे, तभी स्टेशन वैगन लोनावला-खंडाला घाट को पार करके नीचे उतरने लगी। खोपोली नजर आने लगा।
"उल्का, क्या तुम्हें अंदाजा है कि विलास के बच्चों को छोड़कर जाते समय मुझे कैसा महसूस हुआ होगा?"
"अचे से!"
मुझे लगा था कि आपको इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
"ऐसा कैसे हो सकता है! लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपसे शादी करने के बाद से मुझे कितना दुख हो रहा है?"
"किस तरह का दर्द?"
"सबसे पहले तो, आपकी पहली शादी हुई थी, मेरे जान-पहचान वाले लोग मुझसे कह रहे थे कि इतने सालों तक शादीशुदा रहने के बाद आपको एक अच्छा जीवनसाथी चुनना चाहिए था! ऐसे में दौलत खान मामले में आप पर शक जताया जा रहा था। उस स्थिति में पुणे छोड़ना ही मेरे लिए एकमात्र रास्ता बचा था!"
"लेकिन विलास के बच्चों को भूलना मेरे लिए बहुत मुश्किल है!"
वह हंसते हुए बोली, "यही तो तुम्हारी प्रकृति की कमजोरी है, समर!"
"चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उस परिवार को आसानी से नहीं भूल सकता जिसके साथ मैं कुछ समय के लिए जुड़ा था!"
"समर, चलो अब इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं। इस पर अब और चर्चा नहीं!" कौन जाने मेरी ज़िंदगी की यह नाव कहाँ जाकर रुकेगी!
खोपोली में कुछ देर रुकने के बाद, यात्रा फिर से शुरू हुई। मेरे दिमाग में कई तरह के विचार उमड़ रहे थे। अगर उल्का को मुंबई में नौकरी नहीं मिली तो वह क्या करेगी? उसके पास कुछ पैसे हैं। मेरे पास भी कुछ हैं। लेकिन यह जमा हुआ पानी! यह कब तक चलेगा?...

जैसे-जैसे मुंबई नज़दीक आता गया, यातायात बढ़ता गया। खाड़ी की हल्की सी गंध मेरी नाक में समा गई। जो बंगले, कारखाने और फैक्ट्रियां कभी दिखाई देती थीं, वे अब गायब हो चुकी थीं। हर तरफ ऊंची-ऊंची इमारतें ही इमारतें थीं। सड़कें लोगों से भरी हुई थीं। सालों से मैं इस पहेली को सुलझा नहीं पाया हूं कि इस गांव में इतने सारे लोग कैसे रहते हैं। कबूतरों के बिल जैसे घर, कुछ इमारतें जो कल या कल गिर जाएंगी, इतनी जर्जर हालत में भी अनगिनत परिवार बिना किसी झिझक के उनमें बसते हैं! ऐसा नहीं है कि मैंने मुंबई पहले कभी नहीं देखा था। लेकिन मुंबई को देखने का नजरिया उन लोगों के नजरिए से बहुत अलग है जो कुछ दिनों के लिए आते हैं और जो स्थायी रूप से रहने के लिए आते हैं।
मेरा जन्म और पालन-पोषण भवानी नगर जैसे शहर में हुआ, जो शहर की भागदौड़ से बहुत दूर है। लेकिन जन्म के समय ही सृष्टिकर्ता ने भविष्यवाणी कर दी थी कि मेरे लिए एक ही स्थान पर लंबे समय तक रहना असंभव होगा, यह जानते हुए कि वहाँ क्या हो रहा है।
गाड़ी बांद्रा टॉकीज से बांद्रा की ओर जा रही थी, सेंट एंड्रयू चर्च के सामने, उल्कापिंड से चिह्नित सड़क पर। सड़क पर थोड़ा आगे पश्चिम की ओर श्रीमती मार्टिन रहती थीं। दो मंजिला मकान, पश्चिम की ओर बरामदा, और बरामदे से पीछे फैला विशाल नीला अरब सागर! लिलियन मार्टिन घर पर नहीं थीं। हम स्टेशन वैगन से उतरे और ड्राइवर को किराया दिया।
कुछ ही देर में लिलियन मार्टिन आ गईं। श्रीमती मार्टिन, जिनकी उम्र उल्कापिंड के लगभग बराबर थी, का चेहरा थोड़ा भूरा था लेकिन बहुत भावपूर्ण था, और वह बोलते समय खुद ही हंसती रहती थीं!
उल्का ने हम दोनों का परिचय कराया। वे दोनों पुरानी यादें ताजा करने लगीं। ‘अरे, डॉली रुस्तम कहाँ है?...’ बिनी डॉक्टर बन गई है। उसने महिमा के लिए एक अस्पताल शुरू किया है... तो, किसी मीनल देशपांडे ने किसी पायलट ऑफिसर से शादी कर ली है!
मैं बरामदे में खड़ा था, ओजोन की ठंडी हवा का आनंद ले रहा था और दूर क्षितिज पर तैरते जहाजों के पाल को निहार रहा था।
श्रीमती मार्टिन ने चाय बनाई और मुस्कुराते हुए मुझे अंदर बुलाया। प्लेट में केक और बिस्कुट के टुकड़े रखे हुए थे।
घर में श्रीमान और श्रीमती मार्टिन की एक साथ ली गई लगभग आठ-दस तस्वीरें थीं - अलग-अलग मुद्राओं में। मैंने उन दोनों की शादी की तस्वीर को ध्यान से देखा। आज की श्रीमती मार्टिन और उस समय की श्रीमती मार्टिन में बहुत बड़ा अंतर था।
"श्री ठाकुर, आपको हमारा स्थान कैसा लगा?" लिलियन ने पूछा।
"बहुत बढ़िया! अब हमें ऐसी जगह दिखाओ जहाँ ऐसे दो कमरे हों, और हमारा काम हो जाएगा!"
"यह बहुत मुश्किल है, लेकिन जब तक हमें रहने के लिए जगह नहीं मिल जाती, तब तक आप दोनों हमारे साथ रह सकते हैं!"

उल्का ने मेरी तरफ देखा - इस तरह से जैसे कह रही हो, 'देखो, वह इसे वैसे ही कहेगी जैसे मैंने तुम्हें बताया है!'
शाम को श्री मार्टिन आए। उनका व्यक्तित्व लिलियन मार्टिन को बिल्कुल भी रास नहीं आया। काले घुंघराले बालों और मोटे होंठों वाले श्री मार्टिन जब हँसे तो उनकी हँसी बिजली की गड़गड़ाहट जैसी थी!
उल्का ने विज्ञापन लिलियन को दिखाया। लिलियन ने कहा कि विज्ञापन देने वाली संस्था में नौकरी पाना तभी संभव है जब आप ईसाई हों। विज्ञापन में यह शर्त शामिल करना संभव नहीं था, इसलिए इसे शामिल नहीं किया गया।
"तो, मुझे मोंटेसरी में नौकरी और कहाँ मिल सकती है?" "हमें चार से छह महीने इंतजार करना होगा!"
उल्का निराश थी। शाम को जब मैं और उल्का समुद्र तट पर टहलने गए, तो उल्का ने मुझसे कहा, "अब मुझे क्या करना चाहिए, समर?"
"तो मैं कह रहा था, 'अपना सारा सामान पैक करके मत जाओ! लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि तुम मेरी बात सुनोगे!'"
"क्या आप बता सकते हैं कि मुझे यह कहाँ मिल सकता है?"
मैं किसी नौकरी पर निर्भर नहीं हूँ, उल्कापिंड!
"आपका क्या मतलब है?"
मैंने अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ उसके सामने फैला दीं और कहा, "जब तक ये हाथ सलामत हैं, मैं किसी की दया पर नहीं जिऊँगा। तुम जल्द ही इन हाथों की शक्ति देखोगी!"
शाम को मैंने अपने चश्मे साफ़ किए, वो चश्मे जो मैं फ्लश खेलते समय पहनता हूँ। रॉबर्ट मार्टिन कुछ बेहतरीन सुरमई मछली लेकर आया था। उटेका और लिलियन रसोई में झगड़ रही थीं। रॉबर्ट मार्टिन ने नाइटसूट पहना और बरामदे में दो कुर्सियाँ ले आया। उसने अंदर एक छोटी मेज़ रखी। यह जानते हुए कि मैं नियमित रूप से शराब पीता हूँ, वह गिलास, सोडा और व्हिस्की की एक बोतल लाया और उन्हें मेज़ पर रख दिया। मैं मना क्यों करता?
वर्ली नाका में रॉबर्ट मार्टिन की एक छोटी सी घड़ी मरम्मत की दुकान थी। रॉबर्ट इतने मजबूत कद-काठी के थे कि मैं यह देखकर चकित रह गया कि वे घड़ी जैसी इतनी नाजुक मशीन को कैसे संभालते थे।
रॉबर्ट ने मुझसे पूछा, "आप किस तरह की नौकरी करना चाहेंगे?"
"मैं अभी जो भी काम मिले उसे करने के लिए तैयार हूं; लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि मैं उस नौकरी में बना रह पाऊंगा!"
रॉबर्ट ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं भी ऐसी ही स्थिति में था। मैं भी किसी के हुकुम के अधीन नहीं रहना चाहता। मैं पिछले चौदह सालों से यह काम कर रहा हूँ। कितना बढ़िया है!"
"बच्चे कहाँ दिखाई नहीं देते?"
मेरे सवाल पर मार्टिन थोड़ा गंभीर हो गया और बोला, "लेकिन इस मामले में हम बदकिस्मत हैं। लिलियन के दो बच्चे थे; लेकिन वे जीवित नहीं रह पाए! और इस देश की जनसंख्या इतनी तेज़ी से बढ़ रही है, ऐसे में बच्चा न होने का अफसोस

करने का कोई कारण नहीं है। अब भी लिलियन को लगता है कि कम से कम उसकी एक बेटी तो होनी चाहिए, लेकिन क्या यह उसके बस में है?"
"विज्ञान ने बहुत तरक्की की है, श्री रॉबर्ट। अगर आपको सही चिकित्सीय सलाह मिल जाए, तो यह भी मुश्किल नहीं है!"
लिलियन अंदर हल्दी भून रही थी। बाहर भी वैसी ही गंध आ रही थी। दो-तीन कश लेने के बाद रॉबर्ट ने बोतल उठाई और कहा,
"बहन, यह चीज़ तुम्हारी आँखों के सामने ज़्यादा देर तक नहीं रहनी चाहिए। यह बहुत लुभावना है!"
अगले दिन, उल्का टाइम्स ऑफ इंडिया में दिए गए विज्ञापन के पते पर गई और आवेदन किया। लेकिन अंत में लिलियन की बात सच निकली। वह संस्था ईसाई थी, और उन्हें मोंटेसरी कक्षा पढ़ाने के लिए एक ईसाई शिक्षक की आवश्यकता थी। तब उन दोनों ने कहीं और नौकरी ढूंढने की कोशिश शुरू कर दी। इसी बीच, मैं वरलिनक्का के पास रॉबर्ट की घड़ी मरम्मत की दुकान पर काम करने चला गया। लेकिन दुकान चार फीट चौड़ी और तीन फीट लंबी थी। उसमें सिर्फ रॉबर्ट ही इधर-उधर घूम सकता था। मैं वहाँ बैठकर देखता रहता था कि रॉबर्ट का काम कैसा चल रहा है... जब कोई घड़ी मरम्मत के लिए आती, तो रॉबर्ट तुरंत ग्राहक को बताता कि उसमें क्या खराबी है, अनुमानित लागत बताता और मरम्मत के बाद घड़ी लौटाने की तारीख लिखित में देता। वह तय समय के भीतर घड़ी की मरम्मत करता और यह देखने के लिए एक 'परीक्षण' लेता कि वह ठीक है या नहीं, और उसके बाद ही घड़ी लौटाता। अपने व्यवसाय के प्रति इस निष्ठा और ईमानदारी के कारण, उसके पास काम की कमी नहीं थी। वह प्रतिदिन सौ रुपये कमा रहा था।
जब मैं रॉबर्ट की दुकान पर गया, तो वहाँ छोटी सी चौकी पर बैठना नामुमकिन था; इसलिए मैं दुकान के बाहर तख्ते पर बैठ गया, सिगरेट पीते हुए सड़क पर रंग-बिरंगी भीड़ को देखता रहा। रॉबर्ट की दुकान के सामने एक आठ मंजिला इमारत थी। हर शाम नई गाड़ियाँ आतीं और इस इमारत के सामने खड़ी हो जातीं। उनसे उतरने वाले लोग भी बेहद संभ्रांत और शानदार थे। कभी वे सूट और बूट पहने होते थे, कभी बढ़िया धोती और रेशमी कॉलर वाले कोट पहने!
"ये लोग किसके पास आते हैं, रॉबर्ट?" मैंने एक बार जिज्ञासावश रॉबर्ट से पूछा था।
रॉबर्ट हँसते हुए बोला, "क्या तुम देखना चाहते हो कि वे किसके पास जाते हैं?"
"यहाँ रहने वाला यह लंबा-चौड़ा असमिया कौन है?"
"वह वहाँ आठवीं मंजिल पर रहती है - कुंवारी! वह काम करती है। लेकिन हम जैसे लोगों के पास वहाँ जाने के लिए पैसे नहीं हैं! वह एक रात के पाँच सौ से एक हज़ार रुपये लेती है!"
"एक हज़ार पांच सौ?"
"हा! नक्त! नकद!"
मैंने कहा, "उसमें सोने जैसा क्या है?"
"ओह, पिताजी, अगर मैं आपको सब कुछ बता दूँगी, तो आपको यकीन नहीं होगा। बड़े- बड़े व्यापारी, घुड़दौड़ के सट्टेबाज, तस्कर और यहाँ तक कि कुछ पुलिस

अधिकारी भी इस लड़की के दीवाने हैं! अगर आप उसकी खूबसूरती में कोई कमी ढूंढने की कोशिश करेंगे, तो आपको कुछ नहीं मिलेगा। अमीर लोगों का दीवाना होना कोई मामूली बात नहीं है।"
"क्या आप उसे जानते हो?"
रॉबर्ट मुस्कुराया और बोला, "वह मेरी क्लाइंट है।"
"आपका क्या मतलब है?"
"आम तौर पर, जब कोई चीज़ पुरानी हो जाती है, तो वह उसे नौकरानी या ड्राइवर को तोहफे में दे देती है। लेकिन वह फ्रांस से एक दीवार घड़ी लाई थी। वह हर पंद्रह मिनट पर टिक-टिक करती थी। जब वह खराब हो गई, तो उसने उसे मुंबई के सभी घड़ी मरम्मत करने वालों को दिखाया ताकि उसे ठीक करवाया जा सके। कोई भी उसे ठीक नहीं कर सका, इसलिए मैंने किया। अब तीन साल हो गए हैं। इसमें कोई शिकायत नहीं है। मैं हर छह महीने में जाकर उसमें तेल डालता हूँ। उसने उस घड़ी का नाम 'गोल्डा' रखा है। जब भी मैं 'गोल्डा' में तेल डालता हूँ, वह मुझे सौ रुपये का नोट देती है।"
"रॉबर्ट, यह नौकरी वाकई अजीब लग रही है!"
अब मुझे उस लड़की को देखने की बहुत तीव्र इच्छा हो रही है।
"रुको, आठ दिन बाद मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा जब मैं उसकी उस गोल्डा को तेल लगाने जाऊँगा; लेकिन एक बात याद रखना, मैं उसके बारे में कोई भी विचार अपने मन में नहीं आने देना चाहता।"
"क्या आपको लगा था कि मैं इतनी 'ऐसी' थी?"
रॉबर्ट पेट हिलाते हुए हँसा और बोला, "अरे, बुढ़ापे की ओर बढ़ते हुए लोग, जिनकी कामुकता कम हो चुकी है, उन्हें भी कम से कम किसी कुंवारी लड़की के शरीर पर हाथ फेरने का मन करता है। लेकिन तुम तो जवान आदमी की तरह बोलते और चलते हो। और तुम्हारा व्यक्तित्व तो किसी फिल्मी सितारे जैसा है। अगर मैं बहक जाऊं तो क्या करूं? वो उल्कापिंड जूता लेकर मेरा पीछा करेगा।"
मैं हँसा और बोला, "आपके वर्णन से तो लगता है कि वह बहुत सुंदर रही होगी, लेकिन मैंने भी ऐसी ही खूबसूरत काया वाली महिला का आनंद लिया है - सलीमा! लेकिन बेचारी अब इस दुनिया में नहीं है! उसकी हत्या कर दी गई।"
"अरे नहीं!"
मैंने रॉबर्ट को दौलत खान और सलीमा के प्रसंग के बारे में बताया और कहा, "मुझे नहीं लगता कि इस महिला जितनी खूबसूरत कोई और हो सकती है, रॉबर्ट!" "क्या आप किसी कुंवारी लड़की को देखने के बाद भी यही बात कहेंगे?"
"अगर आप और हिची एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह जानते हैं, तो मैं यह काम जरूर पूरा कर दूंगा!"
"काम कैसा था? नौकरी कैसी रही?"
"और कौन हो सकता है! अगर मुझे किसी कारखाने या मिल में सुरक्षा अधिकारी का पद भी मिल जाए, तो मुझे सौ या पांच सौ रुपये ही मिलेंगे। पहले बहुत सारे विज्ञापन आते थे और उनमें योग्यता के तौर पर एक लाइन लिखी होती थी कि 'पूर्व सेना अधिकारियों को प्राथमिकता दी जाएगी'। मैं भी सेना से सेवानिवृत्त हो चुका हूं।"

तो आपको कोई पेंशन नहीं मिलती?
"ऐसी नौकरी कहां थी जो पेंशन पाने के लिए काफी अच्छी हो? दो साल के भीतर ही मेरे पैर में चोट लग गई और मुझे नौकरी से निकाल दिया गया।"
"चाहे कुछ भी हो जाए, आपको विकलांगता पेंशन मिलनी चाहिए, भले ही वह थोड़ी सी ही क्यों न हो। हम कुमारी को बता देंगे।"
"वह क्या करेगी?"
"वह क्या करेगी? अरे, दिल्ली तक के बड़े-बड़े सैन्य अधिकारी उसे जानते हैं, तुम कहाँ हो?"
"मुझे कोशिश करनी चाहिए थी; लेकिन जब मुझे छुट्टी मिली, तो कमांडिंग ऑफिसर ने मेरी 'शीट' को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया! उसने मुझे झूठा, धोखेबाज और जुआरी कहा।"
क्या आपका कभी कोर्ट मार्शल हुआ है? क्या आप पर कभी आरोप लगाकर पूछताछ की गई है?
"कभी नहीं।"
"तो फिर वह 'शीट' मुर्गी की 'शीट' जितनी महत्वपूर्ण नहीं है। हम कोशिश करेंगे। हम कल कुमारी के पास जाएंगे, आज ही उन्हें फोन करके मिलने का समय तय कर लेंगे!"
मैं शाम को घर लौटा। मेटियोर को बहुत खांसी आ रही थी।
"मुझे बताओ, मुझे पिछले चार दिनों से हल्की खांसी है; लेकिन आज तो मैं एक मिनट के लिए भी सांस नहीं ले पा रही हूँ!" लिलियन ने कहा।
इस पर रॉबर्ट ने कहा, "मुझे वो दवा दो जो तुम खांसते समय लेते हो!"
मैंने पूछा, "वह किस तरह की दवा लेती है?"
"मुक्का खाता है।"
"पंच क्या है?"
"दो लौंग जलाकर बारीक पीस लें, उसमें दो औंस ब्रांडी, एक चम्मच चीनी, गर्म पानी और आधा नींबू मिला लें। इन सबको मिलाकर सोने से पहले पी लें। खांसी दो घंटे के अंदर ठीक हो जानी चाहिए। मेरी माँ बचपन में मुझे यह पेय पिलाती थीं। उस समय 'शुद्ध' फ्रेंच ब्रांडी आसानी से मिल जाती थी।"
मैं अपने पास मौजूद पैसों में से प्रतिदिन बीस रुपये खर्च कर रहा था। लिलियन मुझसे नाराज़ होकर कहती, 'तुम मटन और मछली क्यों लाते हो?' लेकिन मैं उसकी बात नहीं सुनता था! मुझे उसके घर में खाली हाथ रहना अच्छा नहीं लगता था। इसी बीच, एक-दो कमरे और नौकरी ढूंढने का मेरा प्रयास जारी रहा। रात का खाना खाते हुए लिलियन ने कहा, "समर, सेंट एंड्रयू चर्च से बाईं ओर जाने वाली गली के आखिर में दो कमरों का एक मकान है। मैं मकान मालकिन को जानती हूँ। किराया ज़्यादा नहीं है, वो सत्तर-अस्सी रुपये ही लेंगी! वो अकेली रहती हैं। मुझे पता है वो एक परिवार चाहती थीं! उन्हें पाँच हज़ार रुपये जमा करने होंगे! उल्का को वो मकान पसंद है। पाँच हज़ार रुपये में ऐसा मकान कहीं और मिलना मुश्किल है। तुम कल आकर देख लो!"
"अगर आप दोनों को यह पसंद है, तो बस, मुझे इसे देखने का क्या कारण है?"

"ठीक है, लेकिन उसे थोड़ा बेहतर महसूस करने दो, फिर तुम यहीं रुक जाओ! ये क्या बकवास है, उल्कापिंड!"
खांसी का दौरा रुकते ही उसने कहा, "मैं कल से यहीं रुकूंगी और यहीं जाऊंगी! मैं तुम्हें कितनी परेशानी दूंगी!"
"तुम कितनी नादान लड़की हो!" लिलियन ने उल्कापिंड की छड़ी को चुटकी से पकड़ते हुए कहा।
आठ दिन बीत चुके हैं। चूंकि रॉबर्ट के घर पर हमारा आखिरी दिन था, इसलिए रॉबर्ट ने उस दिन हमारे लिए एक पार्टी रखी। वैसे तो हर रात किसी न किसी तरह का सामी खाना होता ही था; लेकिन आज का दिन थोड़ा खास था।
मैं और रॉबर्ट ऊपर बरामदे में बैठकर व्हिस्की पी रहे थे। दरअसल, उस युवती की काल्पनिक छवि मेरे दिमाग में घूम रही थी। व्हिस्की के नशे के कारण वह और भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। उसके ख्याल मेरे दिमाग में उमड़ने लगे। "रॉबर्ट, क्या आप हमारी पहली मुलाकात में उसे मेरी नौकरी या पेंशन के बारे में बता देंगे?"
"अरे यार, हार मान लो! अगर ये काम नहीं करेगा तो नहीं करेगा! उल्का को थोड़ा अच्छा महसूस करने दो, मैं उसके लिए कहीं और नौकरी ढूंढने की कोशिश करूंगा!" "कहाँ?"
"क्या आप वर्ली के नानूभाई ज्वेलर को जानते हैं?"
"मुझे कैसे पता चलेगा?"
"तो वो मेरा 'ग्राहक' है। उसके रोटरी और लायंस क्लब से संबंध हैं। अगर मैं उससे अपनी पत्नी की दोस्त की मदद करने को कहूँ, जिसके पास मोंटेसरी डिप्लोमा है, तो वो मना नहीं करेगा! वो बहुत अच्छा आदमी है! अगर वो वादा करता है, तो वो उसे पूरा करके ही रहेगा!"
रॉबर्ट के हर क्षेत्र में जान-पहचान थी। एक साधारण घड़ी ठीक करने वाला, लेकिन उसकी ज़बान बहुत मीठी और मीठी थी। इसीलिए एक बार लोग उसे जान लेते थे तो उसे भूलते नहीं थे। रॉबर्ट, जो वर्ली नाका की उस छोटी सी दुकान में चश्मा लगाकर और सिर झुकाए घड़ियाँ ठीक करता था, मुंबई के कई लोगों और उनकी हरकतों से अच्छी तरह वाकिफ था, लेकिन खुद ऐसी हरकतों से दूर रहता था। उस समय शराबबंदी थी। उसने दो यूनिटों का परमिट लिया था, लेकिन उन्हें दफनाना नहीं चाहता था। फिर उसे बोतलें लाने के लिए ऐसे लोगों के पास जाना पड़ता था, बस! वह हमेशा मुझसे कहता था, 'समर, झगड़ालू को इस बात का घमंड होता है कि वह दुनिया को धोखा देता है, लेकिन असली धोखेबाज तो वह खुद होता है! अब मैं घड़ियाँ ठीक करता हूँ, इतने सारे लोग रिश्वत के तौर पर तस्करी के लिए मेरे पास आते हैं! अगर मैं वह धंधा करता, तो आज मैंने एक इमारत बना ली होती, एक कार खरीद ली होती! लेकिन हमें वह नहीं चाहिए! क्या, सच है या झूठ?'
"आप ठीक कह रहे हैं!"
"देखो, ईशनिंदा करने वालों का अंत कैसे होता है?"
"हाँ, पश्चाताप का समय आ गया है!"

रॉबर्ट मुझे मानवीय ईमानदारी के बारे में बता रहा था। मैं उसे कुछ जवाब देने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मैंने ऐसा दिखावा किया जैसे मैंने सब कुछ सुन लिया हो। जैसे ही उसने बोलना बंद किया, मैंने उससे पूछा-
उसके घर पर कौन है?
"किसका?"
"ओह, कुंवारी!"
"खुशी! वह और उसकी दूर की चाची दोनों! लेकिन क्या तुमने शुरू से ही मेरी कही हुई बातों पर ध्यान नहीं दिया?"
"रॉबर्ट, यह सच नहीं है," मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "तुमने उस लड़की का इस तरह वर्णन किया है कि मैं हमेशा से उसे एक दिन देखने की कामना करता रहा हूँ!"
"क्या मुझे उल्कापिंड को बताना चाहिए?"
‘‘प्ली ऽ ज डोंट टेल हर! शी वुइल टेक इट सीरियसली!’’
रात के खाने पर रॉबर्ट ने कहा,
"आप लोग एक महीने तक रुके, कल जा रहे हैं, हम इसे और बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे!"
"तुम दोनों एक महीने के लिए हमारे साथ आकर रहो!"
"यह तो अच्छा विचार है! लेकिन पहले आपके लिए एक नौकरी का इंतजाम कर लेते हैं, और मेटियोर के लिए कुछ व्यवस्था कर लेते हैं; फिर हम आकर खुशी से रह सकते हैं!"
उस रात, लिलियन ने सोते समय उल्का को ब्रांडी का एक घूंट पिला दिया। लेकिन फिर भी वह पूरी रात खांसती रही!
लिलियन को यह सोचकर ही घिन आ रही थी कि हम ऐसी स्थिति में अकेले रहने जा रहे हैं। उसने तो आठ दिन बाद ही जाने की ज़िद भी कर दी। लेकिन वह ज़िद्दी लिलियन सुनने को तैयार नहीं थी। आखिरकार, जब हम जा रहे थे, रॉबर्ट ने मुझे ब्रांडी की पूरी बोतल थमाते हुए कहा, "उसे हर रात सोने से पहले यह पिला देना!"
"लेकिन आप इसे हर दिन कैसे दे सकते हैं?"
"उसे क्या हुआ? उसे तो इसे दवा के रूप में देना था!"
सुबह हमारे बक्से और पलंग एक ठेले पर लादकर नई जगह ले जाए गए। नई जगह में केवल दो कमरे थे, लेकिन हवादार थी। समुद्र से आने वाली हल्की हवा सुहावनी थी। दूसरी तरफ एक छोटी मछुआरे की झोपड़ी थी।
सामान ठीक से रखने के बाद, उल्का ने मुझे एक लंबी सूची दी और कहा, "मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत है।" उसमें जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ थीं। पुणे में हम जो सामान साथ लेकर घूम रहे थे, वह अब पर्याप्त नहीं था। दौलत खान से लूटा गया पैसा अभी खत्म नहीं हुआ था। उल्का द्वारा दी गई सूची के अनुसार, मैंने सारा सामान घर में लाया और सीधे चेकपॉइंट चला गया। रॉबर्ट आज मुझे कुमारी ले जाने वाला था।

मुझे चटख रंग पहनना बहुत पसंद था! गहरे नीले रंग की रेशमी कमीज और सफेद पैंट पहने, आंखों पर रबन के चश्मे लगाए, मैं वारलिना जाने वाली बस में सवार हो गई।
जैसे ही रॉबर्ट ने मुझे देखा, उसने पूछा, "उल्का खांसी का क्या मतलब होता है?"
"ठीक है! मैं आज रात भी तुम्हें एक घूंसा मारूंगा!"
‘‘दे दे! बरं, मग जायचं ना आज कुमारीकडे?’’
मैंने अपनी कमीज़ और साफ़ सफ़ेद पैंट दिखाते हुए कहा, "तुम्हारा क्या मतलब है? मैं तो इसी के लिए तो यहाँ आया हूँ!"
रॉबर्ट हँसते हुए बोला, "अरे यार! एक औरत को कपड़ों की परवाह ही नहीं होती!" "क्या मैं यही करने की कोशिश कर रहा हूँ? अरे, मैंने तो बस अपनी पसंदीदा शर्ट पहनी है, बस इतना ही!"
"समर, तुम्हारी गोरी रंगत पर यह नीली कमीज बहुत अच्छी लग रही है!"
‘‘चलो चलें! मेरी जिज्ञासा अब बस!’’
जैसे-जैसे लिफ्ट हर मंजिल पर चढ़ती गई, मेरा दिल ज़ोर से धड़कता गया। जैसे ही लिफ्ट आठवीं और आखिरी मंजिल पर पहुँची, हम बाहर निकल गए। रॉबर्ट ने घंटी बजाई। स्कर्ट पहनी एक नौकरानी ने पहले ही झाँककर देख लिया था कि बाहर कौन है और फिर उसने दरवाजा खोल दिया।
मैं रॉबर्ट के पीछे-पीछे अंदर गई। सामने एक विशाल हॉल था। ऊंचे-ऊंचे फर्नीचर बड़े ही आकर्षक ढंग से सजाए गए थे। चाय की मेज पर ताज़े, रसीले, रंग-बिरंगे गुलाब रखे थे। जब नौकरानी मालकिन को हमारे आने की सूचना देने गई, तो रॉबर्ट ने दीवार पर टंगी घड़ी की ओर इशारा करते हुए मुझसे कहा, "समर, उस 'सुनहरी' घड़ी को देखो! अब उसमें ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह हो जाएंगे!" रॉबर्ट के शब्द खत्म होते ही घड़ी पियानो जैसी धुन बजाने लगी। जब वह धुन हवा में गूंज रही थी, तभी अंदर से एक लड़की मुस्कुराते हुए बाहर आई। पच्चीस से छब्बीस वर्ष की आयु की; लेकिन उसका शरीर कितना कोमल और लचीला था, जैसे सोलह या सत्रह वर्ष की लड़की! उसने पैरों तक पहुँचने वाला सफेद वस्त्र पहना हुआ था, उसका रंग गुलाबी था, भौहें धनुषाकार थीं, और उसके होंठ हल्के गुलाबी रंग की लिपस्टिक से रंगे हुए थे। उसने रॉबर्ट से कहा,- "अजनबी होने के नाते आप किस तरह का व्यक्ति हैं जो अपॉइंटमेंट लेकर आए हैं?"
रॉबर्ट ने अपने हाथ मलते हुए सिर हिलाया और कहा, "तुम ऐसा कैसे कर सकते हो!" "अरे, मुझे सुबह क्या करना है? देखो, मैं तो ये किताब पढ़ रही थी!" अंग्रेजी की किताब को हमारे सामने हाथ में पकड़े हुए उस युवती ने कहा, "बैठ जाओ! ये कौन हैं?"
"ये मेरी पत्नी की सहेली के पति हैं!" मेरा मन किया कि रॉबर्ट को एक थप्पड़ मार दूं। उस बदमाश को क्या हो गया था कि वो बस इतना कह दे कि 'ये मेरे दोस्त हैं'? इतनी खूबसूरत औरत को पहली ही मुलाकात में पता चल जाए कि वो किसी की असली पत्नी है, इसमें कोई बुराई नहीं! लेकिन इस तरह अपना परिचय देने के बाद भी वो लड़की मुझे घूरती रही। रॉबर्ट ने मेरा परिचय देते हुए आगे कहा, "मैं

सेना में था, मैं हॉकी और फुटबॉल बहुत अच्छा खेलता था, लेकिन खेलते समय मुझे चोट लग गई।"
जैसे ही रॉबर्ट ने अपना परिचय दिया, मैंने आसानी से वह अंग्रेजी की किताब उठा ली जो उस महिला ने मेज पर रखी थी। उसका शीर्षक था,-
‘‘एक लता, बिना पेड़ के!’’
"यह बहुत ही खूबसूरत किताब है! क्या इसका अनुवाद 'बिना पेड़ की लता' के रूप में किया जा सकता है?" कुमारी ने मुझसे पूछा।
"बिल्कुल सही!" मैंने प्रशंसा करते हुए कहा।
आप इस समय मुंबई में क्या कर रहे हैं?
इस पर रॉबर्ट ने कहा, "यह बेकार है!" लेकिन अब रॉबर्ट अपनी मूर्खता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। उसे तो घड़ियाँ ठीक करने के बाद उससे बात करना भी नहीं आता था! विषय बदलने के लिए, मैंने कहा,-
"तुम्हारी खूबसूरती का वर्णन सुनकर मुझे तुमसे मिलने की इच्छा हुई। सचमुच--"
लड़की मेरी अधूरी बात का पूरा मतलब समझ गई। जो लोग उसके पास आए थे, वे एक खास मकसद से आए थे! 'हम तुम्हें पाने के लिए पैसे देते हैं! तुम्हारी खूबसूरती की तारीफ क्यों करें?' यही भाव उन लोगों की आँखों में झलक रहा था। लेकिन जो युवक आज उसके पास आया था, वह बेरोजगार था और सिर्फ जिज्ञासावश इतनी दूर तक आया था, जिससे लड़की खुश हो गई।
"रॉबर्ट, घड़ी थोड़ी तेज़ चल रही है!"
"पेंडुलम के पेंच को थोड़ा कसने की जरूरत है!"
"आप तय कीजिए कि इसका क्या करना है। मुझे नहीं पता कि इसका क्या करना है! लेकिन जब से आपने इसे ठीक किया है, तब से यह चल ही रहा है! अरे हाँ, मुझे याद आया! मैं किसी की एक ऑटोमैटिक जेंट्स घड़ी भूल गया था! मुझे लगता है कि इसे बंद कर देना चाहिए!"
"अगर आप घड़ी नहीं पहनेंगे तो स्वचालित घड़ी चलना बंद हो जाएगी!" रॉबर्ट ने मेज पर चढ़ते हुए और दीवार पर लगी फ्रांसीसी घड़ी को उतारते हुए कहा। "मैं इसे आज शाम को देख लूंगा!"
मैंने कहा, "यहाँ की हवा कितनी अच्छी है!"
"जी हां, बिल्कुल! छत पर खड़े होकर देखो, यहां से पूरा समुद्र दिखाई देता है।"
जब मैं छत पर जाकर खड़ा हुआ, तो वह लड़की मेरे पीछे-पीछे आई। मुझे उसके शरीर की खुशबू महसूस हुई। वह मेरे करीब आई और धीरे से बोली, "दोपहर में अकेले आना, मुझे कुछ काम है।"
मुझे अपनी आवाज़ पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने धीरे से 'आह' कहा और उस लड़की की तरफ देखा, लेकिन वह मन ही मन मुस्कुराई और अंदर जाते हुए मेरे लिंग को चुटकी से दबा दिया।
एक रात के हज़ार रुपये वसूलने वाली इस युवती ने मेरा हाथ क्यों दबाया, जबकि रॉबर्ट ने मुझे बताया था कि मैं बेरोज़गार और शादीशुदा हूँ? उसने मुझे दोपहर में अकेले आने के लिए क्यों कहा? यह रहस्य मुझे कभी समझ नहीं आया।

उस रात सलीमा भी छत पर खड़ी थी। जब मैंने उसे जाने और दरवाजा बंद करने को कहा, तो वह मेरे गले लग गई। क्या उसका इरादा भी यही नहीं था? मैंने सोचा। मैं छत पर खड़ा था, अवाक और सोच में डूबा हुआ। रॉबर्ट ने मुझे अंदर आने के लिए आवाज़ दी।
"अरे, आओ चाय पीते हैं।"
रॉबर्ट ने घड़ी को वापस दीवार पर टांग दिया और अपने हाथ में पकड़ी हुई घड़ी से उसकी तुलना की, तभी घड़ी में बारह बज गए।
चाय बनाते समय, जो नौकरानी थाली से लेकर आई थी, उसने मुझसे पूछा, "कितनी चीनी डालनी है?"
‘‘एक पुरे!’’
"लेकिन मुझे दो चाहिए!" रॉबर्ट ने उत्सुकता से कहा।
"रॉबर्ट, इस उम्र में ज्यादा चीनी खाना ठीक नहीं है!" उसने कहा और उसके कप में दो चम्मच चीनी डाल दी।
रॉबर्ट ने चाय का प्याला होठों से लगाया। उसने एक घूंट लिया और कहा, "तुम्हारी जान-पहचान से हमारी गर्मी थोड़ी और लंबी हो जाएगी!"
वह हंस पड़ी और तुरंत बोली, "तुम्हें किस तरह की नौकरी चाहिए?"
"कोई चारा नहीं, कुछ भी चलेगा; लेकिन अगर मुझे किसी कंपनी में सुरक्षा अधिकारी की नौकरी मिल जाए तो अच्छा होगा। वह पूर्व सैनिक हैं!"
"लेकिन अगर मुझे दूसरी तरफ भी इसी तरह की जिम्मेदारियों वाली नौकरी मिल जाए तो क्या होगा?"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" रॉबर्ट ने हड़बड़ी में पूछा, और वह हैरान था। "ओह, तो जिम्मेदारी तो सुरक्षा अधिकारी की है, लेकिन काम का स्वरूप अलग है!"
"मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही!" रॉबर्ट ने कहा।
"इन्हें आज दोपहर तक मेरे पास भेज दो। मैं उन्हें बता दूंगा!"
"अब दोपहर के कितने घंटे हो गए हैं? एक मिनट रुको! तुम मेरी दुकान में बैठकर क्या कर रहे हो? ये क्या बकवास है?"
मेरी स्थिति बहुत अजीब हो गई थी। मुझे तुरंत एहसास हुआ कि इस महिला की मेरे प्रति केवल यौन इच्छा ही नहीं थी, बल्कि मुझे रोकने के पीछे उसका कोई और मकसद भी था।
इसके अलावा, खुलेआम वेश्यावृत्ति में लिप्त इस युवती में ऐसी क्या बात थी जिसने मुझे पहली ही मुलाकात में उसकी ओर इतना आकर्षित कर लिया?
रॉबर्ट मुझे वहीं छोड़कर चला गया। जब मैं वापस हॉल में आई और किताब हाथ में ली, तो उस महिला ने कहा,-
"कृपया अंदर आइए, समर! मार्था! अगर अभी कोई आए तो उन्हें बता देना कि मैं काम पर हूँ।"
जी हाँ, महोदया!
और याद रखना, समर दोपहर के भोजन के लिए आ रही है।
"जी मैडम!"
"अगर आंटी आएं तो उन्हें बता देना कि मैं काम पर हूँ!"

मैं कुमारी के पीछे-पीछे उसके शयनकक्ष में गया। उसने मुझे बिस्तर पर बैठने को कहा और खुद एक तकिया सहारा लेकर मेरे सामने बैठ गई। बैठते ही उसके पैरों पर पड़ा बाथरोब थोड़ा ऊपर उठ गया, उसने उसे नीचे किया और सिगरेट का डिब्बा तकिए के ऊपर रखकर मेरे सामने कर दिया। मैं थोड़ा झिझका। लेकिन मैंने सोचा, जब वह अभी प्रस्ताव दे रही है तो शर्माने की क्या ज़रूरत है? उसने भी खुद एक सिगरेट जलाई। नाक और मुंह से धुआं उड़ाते हुए उसने कहा, "समर, रॉबर्ट ने तुम्हें मेरे बारे में ज़रूर बताया होगा! तुम्हें देखते ही मैं समझ गई थी कि तुम यहाँ यह देखने के लिए आए हो कि वह किस तरह की औरत है, चाहे वह ग्राहक से हज़ार रुपये ही क्यों न ले! खैर, जब मैंने कहा कि मेरे पास तुम्हारे लिए एक काम है, तो यह मत सोचो कि यह बात मैंने तुम्हें देखते ही कह दी! यह विचार मेरे मन में बहुत समय से चल रहा था!"
मैंने साहसपूर्वक पूछा, "कैसे?"
मुझे एक बॉडीगार्ड चाहिए! आप जानते हैं, कभी-कभी यहाँ आने वाले ग्राहक बहुत शोर मचाते हैं। उन्हें संभालना नामुमकिन है। वे खूब शराब पीते हैं और बहुत शोर करते हैं। ऐसे समय में, मुझे एक भरोसेमंद बॉडीगार्ड चाहिए जो उन्हें सिर से पकड़कर नीचे खींच सके! मुझे लगता है कि आपका व्यक्तित्व इस काम के लिए एकदम सही है! निश्चिंत रहें, मैं आपके वैवाहिक जीवन में कभी दखल नहीं दूंगा!
"आपने इससे पहले कभी इस तरह का प्रयोग नहीं किया है, है ना?"
"नहीं! मैंने कहा, अगर तुम अपनी सुरक्षा के लिए किसी को रखोगे, तो वो पैसे के लालच में तुम्हें मार डालेगा!"
"इस बात की क्या गारंटी है कि मैं उस तरह के प्रलोभन में नहीं पड़ूंगा?" "छोड़ो इसे! अब तो मैं लोगों को पहली नजर में ही पहचानने में माहिर हो गया हूँ!"
मैं मुस्कुराया। इतने कम समय में किसी ने भी मेरे चरित्र की परीक्षा नहीं ली थी। इस युवती ने यह कर दिखाया था।
"तो क्या यह एक वादा है? आप दिन में जो चाहें कर सकते हैं; इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है; लेकिन रात में, गाँव को आपकी यहाँ ज़रूरत है!"
मैंने हंसते हुए कहा, "तो मेरे वैवाहिक जीवन में कोई दखल नहीं होगा?" "बिल्कुल नहीं! अगर आप यह सब अपनी पत्नी को समझा देंगे, तो वह भी गलत नहीं समझेगी; या उसे बता दें कि आपकी नौकरी सिर्फ रात में कारखाने में काम करने की है!"
मैंने कहा, "मेरी पत्नी उल्का अपने माता-पिता और भाई को छोड़कर यहाँ मेरे साथ अपने पैरों पर खड़े होने के लिए बड़े उत्साह से आई है। अगर उसे पता चले कि मैं असल में किस तरह का काम करता हूँ, तो वह क्या सोचेगी? आप एक पुरुष को तुरंत पहचान लेते हैं, लेकिन फिर भी एक स्त्री के स्वभाव को नहीं समझ पाते?"
"तुम उसकी चिंता मत करो! और अगर ऐसा हुआ तो मैं जिम्मेदार हूँ!"

मैंने इनकार में सिर हिलाते हुए कहा, "सिर्फ इसलिए कि एक महिला ने मुझे धोखा दिया, इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने किसी दूसरी निर्दोष महिला को धोखा दिया है, कुमारीजी!"
"तुम ज़रा सोच लो! मुझे परवाह नहीं कि तुम यह कर सकते हो या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि मना करने का कोई कारण नहीं है। मैं तुम्हारे सहारे जी लूँगा, जैसे पेड़ पर लता।"
अब मेरे दिमाग में एक विचार आया। वह सचमुच उस किताब के शीर्षक के अर्थ को व्यवहार में उतारने के बारे में सोच रही थी जिसे वह पढ़ रही थी!
"क्या मुझे सोचने का समय मिलेगा?"
"बिल्कुल! और सच कहूँ तो, मैं बहुत पैसा कमाता हूँ; लेकिन हाल ही में मेरी असुरक्षा की भावना कम हो गई है! बिल्कुल पेड़ के बिना लता की तरह! लेकिन मैं कम से कम सात या आठ साल और जीना चाहता हूँ!"
जब मैं बोल रहा था, तो मैंने महसूस किया कि लड़की की आँखों में आँसू भर आए हैं। फिर मैंने कहा, "अगर तुम ऐसा महसूस करती हो, तो तुम्हें अपना कारोबार बंद कर देना चाहिए और अपनी कमाई से बाकी जीवन गुजारना चाहिए!"
"समर, मैं बस इसी बारे में सोचती रही हूँ! अगर मैं तुम्हें बता भी दूँ कि मैंने अपना कारोबार बंद कर दिया है, तो भी कोई यकीन नहीं करेगा। इसके लिए मुझे मुंबई छोड़ना पड़ेगा!"
तो फिर चले जाओ!
"और मैं कहाँ जाऊँ? मैं जहाँ भी जाऊँ, जब तक मैं जवान और खूबसूरत हूँ, लोग मुझे चैन से नहीं रहने देंगे! अरे, अगर मैं पेरिस जाऊँ, तो वहाँ कोई भारतीय होगा जो मेरे बारे में सब जानता होगा! उसे जाने दो, ज़रा सोचो।"
बाहर लगी घड़ी में साढ़े बारह बजते ही युवती ने कहा,
"चलो, दोपहर का भोजन करते हैं-" मैं उठी और उसके पीछे-पीछे भोजन की मेज पर चली गई।
- ०-०-०-

१६
मैंने कुमारी से इस बारे में सोचने के लिए पंद्रह दिन का समय मांगा। मैं दुविधा में थी कि रॉबर्ट को वहां हुई घटना के बारे में बताऊं या नहीं। अगर मैं उसे बताए बिना ज़िम्मेदारी स्वीकार कर लेती, तो संभव था कि रॉबर्ट इसका गलत अर्थ निकाल ले। मैंने अपने काम की प्रकृति को कितना भी छिपाने की कोशिश की, लिलियन के ज़रिए यह बात उल्कापिंड तक ज़रूर पहुंच जाती; इसलिए मैंने आखिरकार रॉबर्ट को सब कुछ बता दिया।
उन्होंने मेरी बातें उसी एकाग्रता से सुनीं, जैसे वे कोई नाजुक घड़ी बनाते समय सुनते हैं। सुनने के बाद उन्होंने मुझसे कहा, "यह तो चमत्कार है!" "किस तरह का चमत्कार?"
“तुम्हारे जैसे दुबले-पतले नौजवान की बजाय मेरे जैसे मोटे, अफ्रीकी रंग के आदमी को अपना अभिभावक बनाना उसके लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद होता!” रॉबर्ट फिर हँसते हुए अपना पेट हिलाने लगा। जब मैं गंभीर हुआ, तो मैंने कहा, “रॉबर्ट, इसका मज़ाक मत उड़ाओ। मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए। क्या मुझे यह ज़िम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए?”
रॉबर्ट ने तुरंत कहा, "समर, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं तुम्हें क्या सलाह दूं! वह काम करती है, लेकिन फिर भी बहुत नेक दिल औरत है! वह बड़े-बड़े शब्दों का इस्तेमाल करती है, लेकिन मैंने कभी किसी को यह शिकायत करते नहीं सुना कि शराब पीने से उसका दिमाग खराब हुआ है। बल्कि, उसके रसोइया, सफाईकर्मी और माली, सभी उसकी दयालुता का फायदा उठाते हुए उसे अपनी घरेलू परेशानियां बताते हैं। और अक्सर उससे पैसे ऐंठ लेते हैं!"
"क्या यहाँ तक कि माली भी? लेकिन मुझे उस इमारत में कहीं भी बगीचा नहीं दिखा!"
रॉबर्ट मुस्कुराते हुए बोला, "ओह, पिताजी, उसकी छत पर एक बहुत बड़ी माला है! क्या आपने मेज पर रखा वह गुच्छा देखा? वह तो उसके बगीचे से है! ऊपर एक छोटा सा लॉन है। कभी-कभी, पूर्णिमा की रातों में, यहाँ आने वाले ग्राहक ऊपर लॉन में बैठते हैं और उसके साथ बैठकर पीते हैं!"
"इसे जाने दो, मुझे बताओ, क्या मुझे यह जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए?" "क्या आप अपने गृहनगर वापस जाना चाहते हैं या मुंबई में ही रहना चाहते हैं?"
"उल्कापिंड का कहना है कि वह अब यहीं बसना चाहता है!"
"तो फिर यह नौकरी स्वीकार कर लो!"
‘‘का?’’
"अगर आप मुंबई में वास्तव में क्या होता है, यहां के लोग क्या करते हैं, वे क्या करते हैं, इसकी गहरी समझ हासिल करना चाहते हैं, तो दो साल के लिए यह नौकरी करें!"
"एक शर्त!"
‘‘बोल!’’
"तुम्हें यह बात उल्कापिंड को नहीं बतानी चाहिए!"

रॉबर्ट हँसते हुए बोला, "क्या तुम्हें लगता है कि बिना मेरे बताए वह समझ जाएगी?"
"जब वह समझना चाहेगी तब समझ जाएगी, लेकिन उसे कोई भी गलत विचार मत दो!" ‘‘अरे वाह! वो कौन है!’’
अगर रॉबर्ट मुझे एक-दो साल के लिए भी वह काम करने की सलाह देता, तो भी मेरा मन तैयार नहीं होता! मैंने घर इसलिए छोड़ा था क्योंकि अलका झगड़ालू थी और मुंबई में, मैं इस लड़की का नाम का पति बनकर रहूँगा जो दिखने में तो बहुत सुंदर है, लेकिन वेश्या है? क्या मुझे दरवाजे पर पहरा देना चाहिए अगर वह ग्राहक को अंदर ले जाए? यह मेरी शान के खिलाफ है! उसके पास पहले बहुत पैसा था, अब कहाँ गया?...
दो दिन बाद। मैं पैदल महालक्ष्मी की ओर जा रहा था। हाजी अली की दरगाह चारों ओर से समुद्र से घिरी हुई थी। दरगाह तक जाने वाला रास्ता भी गायब हो गया था। झागदार लहरें किनारे से टकराने लगीं। उड़ती हुई बर्फ चट्टान तक फैल रही थी। मेरे पीछे कई वाहन आ-जा रहे थे। मेरे मन में कई विचार उमड़ रहे थे। मैं अपने सामने उग्र समुद्र को देखता रहा। कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था। सूरज डूब रहा था। क्षितिज पर पीले और सुनहरे रंग तैर रहे थे। अनगिनत लहरों पर उनका प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था। अचानक, सूरज समुद्र में समा गया। लहरें गर्जना करती रहीं, और हाजी अली दरगाह के पास लगा लाल ट्यूबलाइट विज्ञापन जगमगा उठा।
और उसी क्षण मुझे उल्का की याद आ गई। 'मैं सुबह से बाहर थी। उसने मुझे जल्दी आने के लिए कहा था। आज जब से मैं निकली हूँ, मुझे उसकी याद भी नहीं आई...' मैं तेजी से बस स्टॉप की ओर चली और बांद्रा जाने वाली बस पकड़ ली।
उल्का मेरा इंतज़ार कर रही थी। उसे कभी-कभी खांसी का दौरा पड़ता था; लेकिन आज उसे बिल्कुल भी खांसी न करते देखकर मुझे थोड़ी हैरानी हुई। मैंने अपनी कमीज़ रखने के लिए दीवार में बनी अलमारी खोली, और वहाँ रॉबर्ट द्वारा दी गई ब्रांडी की आधी खाली बोतल पड़ी थी!
"मीटियर, ये क्या है? तुम्हारी ब्रांडी कैसे खत्म हो गई?"
उल्का ने अजीब सी मुस्कान के साथ कहा, "बस हो गया! हर दिन थोड़ा-थोड़ा लेने के बजाय, मैंने चार दिन के बराबर पंच एक ही बार में पी लिया। खांसी ठीक हो गई! अब मुझे थोड़ा और पंच दो!"
बोलते समय उसकी ज़बान भारी लग रही थी। उसकी आँखें लाल दिख रही थीं। वह बिस्तर पर बैठ गई और बोली, "सामने वाले होटल से डिब्बा ले आओ। आज मैं कुछ नहीं कर सकती।"
मैंने डिब्बा उठाया और होटल की ओर चल दिया। मैं सोचने लगी, 'उल्का ने क्या किया है? यह ठीक नहीं है। मुझे दवा के तौर पर जो ब्रांडी दी गई थी, मैंने वही पी ली। उल्का, जो कभी भी तर्कहीन व्यवहार नहीं करती, आज अपना संतुलन क्यों खो बैठी?'
मैं डिब्बा ले आई। लेकिन उटेका खाने के लिए नहीं उठी। बगल में एक खाली गिलास पड़ा था। मैंने उसे सूंघा और जल्दी से अलमारी खोली। ब्रांडी की बोतल लगभग खाली थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि उटेका ऐसा व्यवहार करेगी। जब मैं

विलास के साथ थी, वह कभी-कभार शराब पीती थी। ऐसा नहीं था कि उसे शराब पीने से मना किया गया था, लेकिन वह ज़्यादा मात्रा बर्दाश्त नहीं कर पाती थी और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उटेका आज ऐसा क्यों कर रही है। वह खाने के लिए नहीं उठी। फिर मुझे भी खाने की इच्छा नहीं हुई। मैंने बोतल में न होने वाली डेढ़ पेग ब्रांडी पी ली और अंदर से दरवाजा बंद करके पलंग पर लेट गई। बाहर की हलचल धीरे-धीरे कम हो रही थी। ज्वार-भाटा शुरू हो गया था। लहरों का लयबद्ध ज्वार-भाटा शुरू हो रहा था।
आधी रात को उल्का को प्यास लगी तो वह पानी पीने के लिए उठी। लेकिन उसका पानी अभी खत्म नहीं हुआ था। जब वह घड़े से गिलास में पानी डाल रही थी, तो पानी बाहर निकल रहा था। मैंने दीपक की हल्की रोशनी में यह देखा और उठकर उसका गिलास भर दिया। पानी पीने के बाद वह मेरे बगल में लेट गई और अपनी बाहें मेरे चारों ओर लपेट लीं। उसकी सांसों से ब्रांडी की तेज गंध मेरी नाक में आ रही थी। मैंने उसके पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा,-
"तुम इस तरह क्यों व्यवहार कर रहे हो, मेटियोर?"
मैं क्या करूँ? मैं काम के सिलसिले में बीस अलग-अलग जगहों पर जा चुका हूँ। हर कोई कहता है, फिर मिलेंगे!
"बिल्कुल सही! इस तरह की नौकरियां यूं ही नहीं मिल जातीं! आपको उनसे जान-पहचान बनानी पड़ती है, जब तक आप उनके लिए कुछ नहीं करेंगे, वे आपके लिए कुछ नहीं करेंगे! और हां, यह मत भूलिए कि यह मुंबई है!"
मैं जीना नहीं चाहता!
"कभी-कभी व्यक्ति को ऐसा महसूस होता है; लेकिन उसे अपने मन को विचलित नहीं होने देना चाहिए!"
आपको नौकरी की जरूरत पड़ेगी, है ना?
"हां, इसमें एक या ढाई महीने लग जाएंगे, दो हजार रुपये की नौकरी है। लेकिन मुझे संदेह है कि मैं इसे कर पाऊंगा या नहीं!"
"क्यों? क्या दिक्कत है?"
"यह रात की ड्यूटी है। शाम सात बजे से सुबह सात बजे तक!"
क्या मुझे पूरी रात जागना पड़ेगा?
"ऐसा पूरी रात नहीं रहता। तब तो आपको पहरा देना ही पड़ेगा! लेकिन आपको शाम सात बजे से वहाँ मौजूद रहना होगा!"
"तो फिर आपको दिन में सोना चाहिए!"
"हां, आप दिन में सो सकते हैं; लेकिन दिन को रात और रात को दिन मानने की आदत डालने में थोड़ा समय लगेगा और यह मुश्किल भी हो सकता है!"
"अगर आपको इतनी तनख्वाह मिल रही है तो इसमें क्या दिक्कत है?"
"वह पिछले तीन-चार दिनों से इसके बारे में सोच रहा है!"
"इसके बारे में मत सोचो। बस काम पर लग जाओ! यह नौकरी कहाँ है?"
‘‘बेलार्ड इस्टेट.’’
"अलविदा?"

“क्या बहुत समय हो गया? कर्जत से अनगिनत लोग रोज़ काम के लिए मुंबई आते हैं। तुम कहाँ हो! मुझे सिर्फ तुम्हारी चिंता है! तुम पूरी रात घर पर अकेले रहोगी!”
"क्या यह मालिक है या पड़ोसी? वह भी तो अकेली रहती है!"
"मालकिन और तुम एक जैसे नहीं हो! वो छियासठ साल की हैं और तुम जवान हो! इसके अलावा, ये मुंबई है। यहाँ-"
"समर, मुझे ये सब पता है! लेकिन अब हमारे पास बैठकर खाने के लिए भी पैसे नहीं बचे हैं। अगर मैं नहीं कर सकती, तो कम से कम तुम्हें काम तो करना पड़ेगा!"
मैं तैयार हूँ। मुझे बस आपकी अनुमति चाहिए थी!
अगली सुबह मैंने स्नान किया, कपड़े पहने और सीटी बजाते हुए बाहर निकल गया। कुमारी सुबह दस बजे तक नहीं उठती थी। उठने के बाद, वह बिस्तर पर ही चाय पीती और सारे अखबार पढ़ती। मुंबई की दुर्घटनाओं, राजनीति और विदेशी खबरों के बाद, वह आखिर में रेस रिव्यू को ध्यान से पढ़ती थी। घुड़दौड़ उसका पसंदीदा शौक था। उसे घुड़दौड़ के क्षेत्र का इतना गहरा ज्ञान था कि जब वह घुड़दौड़ के बारे में बात करना शुरू करती, तो कोई भी यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि वह गलत है! उसके शयनकक्ष में घोड़े पर सवार एक घुड़सवार की एक बड़ी सी तेल चित्रकला थी। पहले तो उसने सोचा कि यह कोई परिचित होगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं था। चित्र के नीचे लिखा था, 'गैलोपिंग ग्लोरी!'
धीरे-धीरे मुझे उसकी पसंद समझ आने लगी। वह अपना सारा सामान खुद खरीदती थी, खासकर किराने का सामान। जब वह बाज़ार जाती थी, तो बिल्कुल भी मेकअप नहीं करती थी। घर पर वह ड्रेस, स्कर्ट, ट्राउज़र और पैंट पहनती थी; लेकिन जब वह बाज़ार जाती थी, तो साड़ी और कोहनी तक लंबी आस्तीन वाला सफेद ब्लाउज़ पहनती थी! मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि उसके चश्मे की कीमत तीन हज़ार रुपये थी। मेरे जीवन में पहली बार मैंने देखा था कि चश्मे की कीमत इतनी ज़्यादा हो सकती है। मेरे पास भी ऐसा ही एक कीमती चश्मा था। उसे देखकर किसी और के हाथ में रखे पत्ते किताब जितने बड़े लगते थे! उसकी कीमत कितनी होगी? कौन जाने? मुंबई आकर कुमारी के महंगे चश्मे देखकर मुझे उन चश्मों की याद आ गई। लेकिन बीच के कुछ महीनों में मैंने अपने हाथ में ताश बिल्कुल नहीं पकड़ी थी। और तो और, मुझे ताश खेलने के लिए ऐसी संगत कहां मिली थी?
जब मैंने उस लड़की की अभिभावक-सह-अभिभावक बनने के लिए सहमति दी, तो वह बहुत खुश हुई। उसने मुझे एक तरफ बुलाया और कहा,-
"समर, मैं ध्यान रखूंगी कि तुम मुझसे किसी मुसीबत में न पड़ो। लेकिन मेरी 'चाची' थोड़ी सनकी है। अगर वो गलती से कुछ कह दे, तो उसे दिल पर मत लेना, बस बात खत्म! क्या?"
"हां, लेकिन मैं आपको क्या कहकर बुलाऊं?"
"आप मुझे जिस भी नाम से पुकारना चाहें, पुकार सकते हैं। चाहें तो कुमारी भी कह सकते हैं!"
नहीं, मैं बस कुमारीजी कहूँगी!
"ओह के! ओह, लेकिन मुझे बताओ, तुम गाड़ी चला रहे हो ना?"

"हां, लेकिन मुझे मुंबई में गाड़ी चलाने से डर लगता है!"
कुमारी मुस्कुराई और बोली, "मुंबई में गाड़ी चलाना आसान है! महाराष्ट्र में कहीं भी आपको मुंबई के लोगों जैसी यातायात की समझ नहीं मिलेगी!"
"इस समय चाची कहाँ हैं?"
मैं एक यात्रा पर गई थी। वह मेरा पीछा कर रही थी और मुझसे आपके साथ आने के लिए कह रही थी। लेकिन सच कहूँ तो, मुझे किसी ट्रैवल कंपनी के साथ जाना बिल्कुल पसंद नहीं है। वैसे भी, फ्रांस और इंग्लैंड देखने के बाद, मुझे कहीं और जाने का मन ही नहीं करता!
"कुमारीजी, आपको रेसिंग इतनी पसंद क्यों है?"
"रेस मेरी कमजोरी है, समर! रेस जुआ है, धन की बर्बादी है। किसी को भी मुझे उपदेश देने की कोशिश मत करने देना, यह बेकार है!"
मुझे उपदेश देने क्यों जाना चाहिए! मुझे रेसिंग भी पसंद है; लेकिन मुझे इसके बारे में ज्यादा समझ नहीं है। मैं समझना भी नहीं चाहता!
"मेरे साथ कोर्स पर आइए, आपको लगेगा कि आप धीरे-धीरे चल रहे हैं!"
कुमारी के यहाँ मेरी नौकरी शुरू हो चुकी थी। भला इसे नौकरी कैसे कहूँ? मुझे उसे बुढ़ापे में भी डटकर खड़ा रखना था ताकि कोई भी उसकी बेबसी का फायदा न उठा सके, सिर्फ इसलिए कि वह एक औरत थी। और उसने यह कर दिखाया! मैंने शराब पीकर लड़की का मज़ाक उड़ाने आए चार-पाँच लोगों को भगा दिया था। भला मैं हाथ जोड़कर उनका स्वागत क्यों करूँ, जिनके पास जेब में पैसे न हों? हज़ार रुपये भला कैसा मज़ाक? लेकिन इस हज़ार रुपये में ग्राहक का पसंदीदा पेय और खाना भी शामिल था। मैंने उससे इस बारे में पूछा, "आप इतनी मेहनत क्यों कर रही हैं?"
इस पर उसने कहा, "अरे, यहाँ आने वाले कुछ ग्राहक कहते हैं, 'चलो बाहर जाकर ड्रिंक करते हैं,' और अगर कोई ड्रिंक लेकर आता है, तो वे कहते हैं, 'चलो बाहर खाना खाने चलते हैं!' ऐसे लोगों के साथ हाथ पकड़कर गाँव में इधर-उधर क्यों घूमना चाहोगे? मुझे ये पसंद नहीं! मुझे परवाह नहीं कि उस ड्रिंक और खाने पर मुझे दो-तीन सौ रुपये खर्च करने पड़ें!"
उस दिन कुमारी और मैं बाज़ार जाने के लिए लिफ्ट से उतरे। लिफ्ट से बाहर निकलने से पहले, उसने शीशे में एक नज़र डाली और कहा, "समर, तुम बहुत समय से सोच रहे हो कि उसने मुझे क्यों काम पर रखा! आज रात इसका खुलासा हो जाएगा!" ''वह कैसा है?''
लिफ्ट से बाहर निकलने के बाद, कार में बैठते हुए उसने मुझसे कहा, "गडकरी आज रात आ रहे हैं!"
"गडकरी कौन हैं?"
"मुंबई में दो महीने बिताने के बाद भी, आप अभी तक यह नहीं समझ पाए हैं कि गडकरी कौन हैं? यह तो कमाल है!"
वे क्या कर रहे हैं?
"वह एक पुलिस इंस्पेक्टर है! एक दिलेर! पूरी रेसिंग की दुनिया उसे जानती है। अगर वह किसी को पकड़ने का ठान ले, तो पल भर में कर देता है! कुछ लोग छुपकर रेसकोर्स पर सट्टा लगाते हैं, जिनसे वह हर रेस के लिए दस से पंद्रह

हजार रुपये वसूलता है। यहां तक कि शातिर अपराधी भी उसका नाम सुनकर कांप जाते हैं। विभाग में उसे बहुत होशियार माना जाता है। यहां तक कि पुलिस कमिश्नर भी कभी-कभी उससे सलाह लेते हैं। भले ही विभाग उसकी खूबियों और खामियों को जानता हो, फिर भी विभाग में उसका दबदबा है!"
क्या ये सज्जन आज आ रहे हैं?
"हाँ, कभी-कभी वो मन करता है तब आ जाता है। आज दोपहर उसे फोन आया था। उसे फिश कटलेट और चिकन करी चाहिए! उसे थोड़ी रॉयल सैल्यूट व्हिस्की पीने दो!" "क्या वह भुगतान करता है?"
"क्या आप भुगतान करते हैं?" लड़की ने कार को पेडर रोड से ग्रांट रोड की ओर मोड़ते हुए कहा, "वह आता है, पीता है, खाता है, सोता है और जाते समय अपने साथ एक हजार या पांच सौ रुपये ले जाता है!"
‘‘का?’’
"आपका मतलब क्या है? अगर आप हमारी जिंदगी से व्यापार कर रहे हैं, तो क्या हमें कुछ नहीं चाहिए?" मैंने पूछा!
"ये तो बहुत बुरा हुआ! वेश्या से पैसे लेना इतना बड़ा पाप तो नहीं है!" "पाप और पुण्य! समर, पुण्य के इन विचारों को त्याग दो! अगर मुंबई में रहना है तो पहले चौपाटी के सागर में पाप और पुण्य के विचार को छोड़ दो! अगर आज नहीं छोड़ा तो तुमने यह हक कमा लिया!"
"बंद होने का क्या मतलब है?"
"मार डालता है! हाथ मरोड़ता है! बाल खींचता है! क्या आप जानते हैं कि 'सैडिस्ट' व्यक्ति क्या होता है?"
"नहीं? किसे सैडिस्ट कहा जाता है?"
"जिस महिला के साथ वह आनंद लेना चाहता है, उसके प्रति क्रूरता किए बिना उसे कोई आनंद नहीं मिल सकता!"
"हे भगवान!" मैंने अपने माथे को छुआ।
"उसने मुझे एक बार थप्पड़ मारा, और मेरे गाल पर पड़ा निशान दो दिन तक नहीं गया!"
लेकिन मैं कहता हूं, अगर वह इतना ही निकम्मा है, तो उसे घर में क्यों लाया जाए?
"मैं तुम्हें क्या बताऊं, समर! भले ही तुम सब कुछ जानती हो, फिर भी तुम्हें विनम्रता के साथ सार को सहन करना होगा!"
"लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं, अगर वह आपको पीटने लगे तो मैं चुप नहीं रहूंगी! मेरा भाई भी बहुत गुस्से में है!"
"तो फिर तुम्हें आज रात यहाँ नहीं रुकना चाहिए! वह हमेशा मुझे इस तरह प्रताड़ित नहीं करता, कभी-कभी तो वह अपनी पत्नी के दुर्व्यवहार को याद करके रो भी पड़ता है!"
"क्या? क्या उसकी पत्नी वेश्या है?"
"हाँ, ऐसे लोग और भी क्रूर हो जाते हैं। वे 'सैडिस्ट' बन जाते हैं। कुछ लोगों को अपनी मनचाही औरत को मारे बिना और उसके मुँह से खून निकलते देखे बिना संतोष नहीं मिलता, जबकि कुछ कहते हैं कि क्रूरता के बिना उनकी यौन

इच्छा जागृत नहीं होती! एक मशहूर अभिनेता, जो एक ड्रामा फिल्म में काम करते थे, मेरे पास आते थे। जब वे आते थे, तो अपने बाल कटवा लेते थे। समर, मैं क्या कहूँ, वे बिल्कुल अनोखे थे! बेचारे की अगले ही दिन मौत हो गई। कहते हैं कि मरे हुए की निंदा नहीं करनी चाहिए, इसलिए मैं चुप रही!"
कुमारी ने मछली मंडी के पास कार खड़ी की। मैं उसके पीछे-पीछे मार्वल तक गया। लेकिन कुमारी ने जो सच बताया था, उससे मेरा मन बेचैन था। उस समय मेरे मन में यह ख्याल आया कि मछली मंडी में करीने से सजी मछलियाँ जाल से निकालने के बाद कैसे चटक गई होंगी। क्योंकि मैंने देखा कि संयोग से जो मछली मिली, वह चाँदी की नहीं बल्कि सोने की थी, एक चलती-फिरती और बोलती हुई 'मछली' जो चटक रही थी। मछली लेने के बाद उसने कार स्टार्ट की और एक तालाब के मुहाने के पास मरीन ड्राइव के पास रोक दी। मैं भी उसके पीछे उतरने लगा, तभी उसने मुझे इशारा किया और कहा,
‘‘समर, यू प्लीज वेट हिअर!’’
‘‘का?’’
"ओह, ये तस्कर तो बड़े ही संदिग्ध हैं। अगर तुम मेरे साथ आओगे, तो मुझे आज वो रॉयल सैल्यूट की बोतल भी नहीं मिलेगी जो मैं चाहता हूँ। मैं पाँच मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा!"
हाथ में कागज में लिपटी बोतल लिए वह लड़की मुस्कुराते हुए आई और बोली, "मुझे मिल गई! पिछली खेप में उन्हें 'किंग जॉर्ज पंचम' व्हिस्की चाहिए थी। जब उन्हें वह नहीं मिली, तो वे एकदम निराश हो गए। खैर, अगर उन्हें घर में हर तरह की बोतलें रखने को कहा भी गया होता, तो भी यह मुमकिन नहीं था!" कार में बैठते हुए उसने स्टार्टर दबाते हुए कहा, "यह तो मेरे खानदानी कर्ज़ की वजह से ही होगा!"
"लेकिन मुझे बहुत असहाय महसूस हो रहा है, कुमारीजी!"
"कैसा लगता है? लगता तो है! लेकिन कहते हैं ना, एक बार इस दुष्चक्र में फंस गए तो कोई रास्ता नहीं!"
मुझे यह पसंद नहीं है!
"किसी को भी इस बात पर यकीन नहीं होना चाहिए! लेकिन मुझे यकीन करना ही होगा!"
"अगर तुम उसके सामने दरवाजा बंद कर दो तो क्या होगा?"
"उस पर कोई आरोप लगेगा और उसे जेल हो जाएगी! वो ऐसे कामों में माहिर है!" परेश रोड पर रहने वाली चंचला ने ऐसा कहा था। लेकिन अगले चार महीनों में ही वो ज़िंदा नहीं रह पाई। गुंडों ने गली में ही उस पर हमला कर दिया! अस्पताल ले जाने से पहले ही उसकी मौत हो गई! मैं अपनी पत्नी को ज़िंदा देखना चाहता हूँ! वो आएगा, उसे थप्पड़ मारेगा, उसका हाथ मरोड़ेगा, कमर पर लात मारेगा, मुझे ये सब लग रहा है! मुझे अब उसकी कोई परवाह नहीं! अगर तुमने आज ये किया, तो रुकना मत! क्या?"
"मैं गडकरी को एक बार देखना चाहता हूँ। आपने उनके बारे में इतनी अच्छी तरह से बताया है, इसलिए मैं उन्हें देखने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।"

वर्ली नाका के पास पहुँचते ही कार रुक गई। लाल बत्ती के कारण सड़क अवरुद्ध थी। घर पाँच मिनट की दूरी पर था। लड़की स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखे बार-बार मुझसे पूछ रही थी,-
"तो फिर आप जा रहे हैं, है ना?"
"देखो, मैं जाऊँगा। लेकिन मैं उससे मिलूँगा और फिर चला जाऊँगा! कोई दिक्कत नहीं, है ना?"
"बिल्कुल नहीं! अगर तुमने कुछ कहा तो वो गुस्सा हो जाएगा, इसलिए चले जाओ!" मैं यह देखने के लिए उत्सुक थी कि वह सज्जन कैसे दिखते हैं, इसलिए मैं कुमारी के साथ लिफ्ट में ऊपर गई। मैंने घंटी बजाई। मार्था ने दरवाजा खोला, और वहाँ एक हट्टे-कट्टे सज्जन पंखे के नीचे कुर्सी पर बैठे थे। उनका रंग गोरा था और सामने थोड़े-थोड़े बाल झड़ रहे थे। उन्होंने रेशमी नेहरू शर्ट और पजामा पहना हुआ था, उनकी आँखों से ही मैं समझ गई कि वे इंस्पेक्टर गडकरी हैं।
"अरे कुमारी, ये कुमार कौन है जिसे तुम अपने साथ लाई हो? ये तुम्हारा नया अंगरक्षक क्यों है? अरे! मज़ाक कर रही हो! तुम तो पहले व्यापारी थीं, अब 'रक्षक' बनकर क्या कर रही हो? आने-जाने वालों के जूते, चप्पल, बूट? वाह! तुम्हारा नाम क्या है?"
दरअसल, उनके इस बयान से मेरा सिर चकरा गया। लेकिन कुमारी मेरी तरफ देख रही थी और अपनी आंखों से मुझे चुप रहने का इशारा कर रही थी!
"तुम कहाँ गए थे?" उसने पूछा।
"मार्केटिंग!"
"क्या यह सही मेल लगता है?"
"समर, क्या तुम जा रहे हो?" कुमारी ने मुझसे पूछा।
"वाह! तुम्हारा नाम क्या है, समर? अच्छा नाम है, मुझे लगता है तुम बंगाली हो? चलो बताओ! क्या तुम शराब पीते हो या नहीं?"
"सर, उन्हें आज घर जाना होगा। उनकी पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है!"
"अगर आपके बॉडीगार्ड की पत्नी है! वाह! अगर आप जाना चाहते हैं, तो जाइए, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आपका बॉडीगार्ड अपनी पत्नी को याद करेगा!" उसने शरारती हंसी हंसते हुए कहा।
बॉडीगार्ड शब्द के जो अर्थ उसने मुझे दिए थे, उससे मेरा दिमाग पहले से ही जल रहा था। अब जब उसने मेरी पत्नी का ज़िक्र किया, तो मेरा दिमाग और भी ज़्यादा जलने लगा। कुमारी ने मेरा चेहरा तुरंत पहचान लिया और मेरा हाथ पकड़कर मुझे बाहर खींच लिया और बोली, "मैं तुम्हारे चरणों में गिर रही हूँ, समर, तुम्हें घर जाना चाहिए।"
"काश इस कमीने के साथ थोड़ा न्याय हुआ होता, तो मुझे थोड़ा अच्छा लगता!" ‘‘प्लीज, समर, प्लीज गो!’’
मैं अनिच्छा से लिफ्ट में दाखिल हुआ, और लोहे का दरवाजा बंद करते हुए मुझे उस लड़की पर गुस्सा भी आ रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह इतनी बेबस क्यों थी, जबकि उसे एक वेश्या पर हुकूमत करने वाले इतने घमंडी और ताकतवर

अधिकारी को सबक सिखाना चाहिए था। अगर ऐसे समय में वह मुझे घर से निकालना चाहती थी, तो मुझे अंगरक्षक बनाकर रखने का क्या कारण था?
जब लिफ्ट भूतल पर पहुँची, तो पाँचवीं मंजिल पर महालेखाकार के कार्यालय में काम करने वाले अयंगर उसका इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या, तुम बाहर चले गए?"
"हां, कुछ काम है। मुझे जाना होगा!"
इमारत में रहने वाले परिवारों को पता था कि मैं रात में ऊपर वाले कमरे में रहता हूँ। लोगों ने मुझे चार-छह बार नशे में धुत होकर दरवाजा खटखटाने वालों को पकड़कर नीचे भूतल तक घसीटते और धक्का देकर बाहर निकालते हुए देखा था।
मैंने बांद्रा की बस पकड़ी। उल्का अंदर से दरवाजा बंद करके सो रही थी। मैंने दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन कोई हलचल नहीं हुई। आखिरकार, मैंने जोर से आवाज लगाई, तब जाकर वह आई और दरवाजा खोला। लेकिन जैसे ही उसने दरवाजा खोला, मुझे उसकी सांसों की तेज गंध महसूस हुई। यह देखकर कि वह मेरा गर्म पानी पी चुकी थी, मैंने चिल्लाकर कहा,-
"तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम हर दिन शराब पीते हो?"
"हाँ, हर दिन! इसके बिना मैं आराम नहीं कर सकता। मैं सो नहीं सकता!" "मीटियोर!" मैंने उसके कंधों को हिलाते हुए कहा, "क्या तुम्हें समझ आ रहा है कि तुम क्या कर रही हो?"
मुझे समझ नहीं आ रहा, आप आज यहां क्यों हैं? क्या आपका कोई कर्तव्य नहीं है?
"कर्तव्य का तो सत्यानाश हो गया है! अगर आपको खांसी के लिए घूंसा मारा जाए और चार से आठ दिनों तक ब्रांडी पिलाई जाए, तो क्या आप सचमुच शराब के आदी हो जाएंगे?"
"समर! मैंने तुम्हें पुणे छोड़ने के लिए मजबूर किया था, मेरा सपना था कि मुझे यहाँ अच्छी नौकरी मिल जाएगी, तुम भी कुछ कमाओगे, हम दोनों खुशी से रहेंगे, लेकिन अब मैं निराश हूँ। कल मैं नौकरी ढूंढने एक संस्था में गई थी, और अध्यक्ष ने मुझसे कहा, 'क्या तुम बिना नौकरी के वेतन पर यहीं रहोगी?'" "उसने क्या कहा?" मैंने पूछा, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रही है। उन्होंने कहा, 'बिना नौकरी के आप मुझे वेतन क्यों दे रहे हैं? क्या आपको समझ नहीं आ रहा?'
"समझा!"
"नौकरी न होने पर भी आपको वेतन मिलता है!"
‘‘उल्का ऽ!’’
उसने हल्की सी मुस्कान बिखेरी, अपने हाथों को हवा में लहराते हुए कहा, "तुम्हें क्या लगता है, मैं इतनी डरपोक हूँ? मैं सब कुछ समझती हूँ! लेकिन मुझे कुछ भी कहने का कोई अधिकार नहीं है! मैं ही तो तुम्हें यहाँ लेकर आई हूँ!"
बस करो! मुझे भी खाना है! उठो!

"आज बॉस ने मुझे खाना नहीं दिया? क्या तुम्हें नौकरी से निकाल दिया गया है या कुछ और?"
उसका संतुलन बिगड़ रहा था। उसी हालत में वह चूल्हा जलाने गई, तभी मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे चारपाई पर बिठाया और कहा,-
"मुझे समझ नहीं आ रहा कि हमारा क्या होगा! मेटियोर, मैंने बहुत बड़ी गड़बड़ कर दी है। मुझे पछतावा हो रहा है, मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा-"
मैं उस उल्कापिंड को अपने सीने से कसकर पकड़े हुए, इस स्थिति से निकलने का तरीका सोच रहा था, तभी बाहर से किसी ने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी। यह सोचकर कि इतनी रात को कौन मुझसे मिलने आया होगा, मैं उठा और दरवाजा खोला; वहाँ नीली वर्दी में चार मुंबई पुलिसकर्मी और एक सब-इंस्पेक्टर खड़े थे! जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, सब-इंस्पेक्टर ने मेरे हाथों में हथकड़ी लगा दी। मैंने उन लोगों से पूछा,-
"किसलिए?"
"हत्या! तुम पर हत्या का आरोप है!"
मैंने मुश्किल से सांस लेते हुए उनसे पूछा, "किसकी हत्या हुई?"
"तुमने इंस्पेक्टर गडकरी को आठवीं मंजिल से नीचे फेंक दिया और यहाँ आकर बैठ गए?"
"आपका क्या मतलब है?"
"तुम्हें मुझे क्या बताना है? चलो, तुम और कुमारी दोनों ने मिलकर यह हत्या की है। अब हमें यकीन हो गया है!"
"से क्या?"
"तुमने क्या कहा, माघा? 'मुझे नहीं पता कि हमारा क्या होगा! मैंने बहुत बड़ी गड़बड़ कर दी है। मुझे पछतावा हो रहा है। मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा,' तुमने यही कहा था, है ना? हमने तुम्हारी बातें रिकॉर्ड कर ली हैं!" "हे भगवान! ओह, लेकिन वह तो एक अलग संदर्भ में था, मुझे पता था कि इंस्पेक्टर गडकरी कुमारी आए थे। लेकिन मैं वहां से चली गई!"
"तुम गए ही नहीं! जब तुम अयंगर से मिले, तो तुमने उससे कहा कि बाहर जाओ और वापस आओ!"
मैंने ऐसा कहा तो था, लेकिन मैं वापस नहीं गया।
"अब अदालत को बताओ कि तुम्हें क्या कहना है।"
उल्कापिंड का नशा पल भर में उतर गया। मकान मालकिन और आसपास के लोग मुझे हथकड़ी में देखकर भयभीत हो गए। एक सज्जन उस बूढ़ी औरत से कह रहे थे, "लेकिन हमने तुम्हें बताया था, किसी को भी तब तक कमरा मत दो जब तक तुम्हारी उससे पहले से जान-पहचान न हो! वह तो हत्यारा निकला।"
मैंने अपनी किस्मत को दोष देते हुए पुलिस की गाड़ी में बैठ गया।
- ०-०-०-

१७
कुमारी के फ्लैट से निकलने के लगभग डेढ़ घंटे बाद यह भयानक घटना घटी। इंस्पेक्टर गडकरी आठवीं मंजिल की छत से गिर गए थे। उनका सिर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। कुछ लोगों ने उन्हें ऊपर से गिरते देखा और आगे दौड़े; लेकिन पल भर में सब कुछ खत्म हो गया। पुलिस पहुंची और जांच शुरू हुई। जब उन्होंने कुमारी से घटना के बारे में पूछा, तो उन्होंने कुछ नहीं कहा! हालांकि, गडकरी की गर्दन और कानों पर नाखूनों के खरोंच के स्पष्ट निशान थे। उनके शव के पोस्टमार्टम से पता चला कि ये चोटें मृत्यु से पहले लगी थीं। इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि ऊपर से गिरने से पहले किसी ने उनके साथ हाथापाई की थी।
उस समय फ्लैट में कुमारी और मार्था ही थीं। 'आंटी' अभी तक अपनी यात्रा से नहीं लौटी थीं। जब पुलिस ने मार्था से पूछा, तो उसने बताया, "मकान मालकिन की चीख सुनकर मैं उनके कमरे की ओर भागी और कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था। लेकिन जैसे ही मैंने दरवाजे पर दस्तक दी, दरवाजा खुल गया और उस समय कुमारी पूरी तरह नग्न थी। वह डर के मारे पागलों की तरह मुझे घूर रही थी। मैंने उस पर चादर डाली और पूछा, 'क्या हुआ?' तब उसने कुछ नहीं कहा और बस छत की ओर इशारा किया! मैं छत पर गई और नीचे देखा। इंस्पेक्टर गडकरी का शव पारे की रोशनी में पड़ा था। नीचे भीड़ घेरा बनाकर खड़ी थी। यह जानते हुए कि पुलिस कुछ ही क्षणों में आ जाएगी, मैंने उससे कपड़े पहनने को कहा। लेकिन वह बेसुध थी। वह पागलों की तरह बड़ी-बड़ी आँखों से मुझे घूर रही थी। मैंने उसे कपड़े पहनाए! पाँच मिनट के भीतर पुलिस आ गई। उन्होंने कुमारी से पूछा, 'यह कैसे हुआ?' लेकिन वह कुछ नहीं कह सकी।" वह जैसे किसी नशे में थी, हवा में उंगलियां हिला रही थी। जब न तो मार्था और न ही कुमारी कुछ बता पाईं, तो अगले दिन पुलिस इंस्पेक्टर सखारे ने मुझसे पूछना शुरू किया,-
"क्या आप समर ठाकुर नहीं हैं?"
‘‘हो!’’
"हम कुछ समय से इस लड़की के साथ रह रहे थे!"
"हाँ! अंगरक्षक के रूप में!"
"जो भी हो, क्या यह सच है कि वह वहां रह रहा था?"
‘‘हो!’’
"तो कल रात ऐसा क्या हुआ कि आपको बांद्रा वापस घर आने की जल्दी करनी पड़ी?" "क्योंकि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं। इंस्पेक्टर गडकरी के आने के बाद कुमारी ने मुझे घर जाने को कहा!"
"ऐसा क्यों? जब उसने आपको अपनी सुरक्षा के लिए ही नियुक्त किया था, तो वह आपको जाने के लिए क्यों कहेगी?"
"इसका कोई खास कारण नहीं था! लड़की ने कहा, 'आज तुम्हारी छुट्टी है!'"
"श्री ठाकुर, इस घटना के बाद आपका बांद्रा भागना केवल एक ही निष्कर्ष की ओर इशारा करता है - आप एक हत्यारे हैं।"
"यह झूठ है!"

‘‘क्या आप महालेखाकार कार्यालय से अयंगर यान्ना को जानते हैं?’’
"हां, मैं उसे जानता हूं। उस रात करीब 8:30 बजे जब मैं लिफ्ट से बाहर निकला, तो अयंगर ने ही मुझसे मुलाकात की थी!"
"तुमने उनसे कहा था कि मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूँ!"
मैं ऐसा कह देता, लेकिन मुझे यकीन है कि मैं वापस नहीं आया!
"अगर तुम वापस नहीं आने वाले थे, तो इस तरह झूठ बोलने का क्या कारण था?" मैंने सीधे-सादे शब्दों में बात की। मेरा झूठ बोलने का कोई इरादा नहीं था, महोदय!
"पांचवीं मंजिल पर अयंगर, चौथी मंजिल पर दोषी, तीसरी मंजिल पर देसिंगकर, सभी कहते हैं कि कुमारी की चीख सुनकर लिफ्ट तुरंत नीचे गई और आप टैक्सी स्टैंड की ओर भागे!"
"यह सरासर झूठ है! अयंगर, दोशी और देसिंगकर परिवार लंबे समय से कुमारी से दुकान खाली करने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत भी दर्ज कराई थी कि कुमारी की दुकान पर आने वाले ग्राहक कभी-कभी उनके दरवाजे पर दस्तक देते हैं!"
"उन्हें कुमारी के बारे में शिकायत हो सकती है; लेकिन इस मामले में आपका नाम क्यों घसीटा जाना चाहिए?"
"कौन जानता है?"
"श्री ठाकुर!" इंस्पेक्टर सखरा ने सिगरेट जलाई और एक लंबा कश लिया, "क्या पुणे के होटल हेवर्ड्स में भी कुछ ऐसा ही नहीं हुआ था?"
मैंने आश्चर्य से सक्रीन की ओर देखा और कहा, "मैं उस घटना के घटित होने से एक दिन पहले पुणे छोड़ चुका था।"
मुझे यह सब पता है, लेकिन आप सुबह तड़के संदिग्ध परिस्थितियों में पुणे से निकले थे। आपने चौकीदार के तकिए से चाबी ली और दरवाजा खोलकर बाहर चले गए, फिर मनी ऑर्डर से पैसे भेजे, मुझे यह सारी जानकारी समझ आ गई है!
"उस मामले का इस केस से क्या लेना-देना है?"
"यह बिल्कुल वैसा ही है। आप अचानक उस जगह को छोड़ देते हैं जहां आप हैं और फिर कुछ भयानक घटित हो जाता है!"
इंस्पेक्टर सखरा सिगरेट पीते हुए हँसे और बोले, “श्री ठाकुर, मैंने अभी तक इस बारे में कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाला है कि आप उस समय वहाँ थे या नहीं। लेकिन एक बात मुझे परेशान करती है, आप जहाँ भी जाते हैं, ऐसी भयानक घटना क्यों घटित होती है?”
भगवान ही जाने! मैं कुछ सोच भी नहीं सकता!
"गडकरी के शरीर पर नाखूनों के खरोंच के निशान थे, और वह इतना बलवान था कि एक साथ दो या तीन लोगों को गिरा सकता था!"
"हां, लेकिन शराब पीने से उन्हें चक्कर आ सकते हैं!"
सखरा मुस्कुराई और बोली, "लगता है आपने कानून की पढ़ाई की है, श्री ठाकुर!" मैंने पढ़ाई नहीं की है; लेकिन मैं एक वकील का बेटा हूं।
"मुझे पता है! इसीलिए तो तुम हर जगह अपनी 'घटना के समय कहीं और होने का सबूत' दे पाए!"

"अगर मैं वहां नहीं था, तो फिर अपनी गैरमौजूदगी साबित करने का सवाल ही कहां उठता है?"
"अच्छा! लेकिन मुझे एक बात बताओ, तुम उस लड़की के साथ हर रात रुकते थे; तो फिर कल रात बाहर क्यों गए थे?"
आपको लड़की से ही कारण पूछना चाहिए!
"हमने पूछा। वह कुछ नहीं बोल रही है। हम दोबारा पूछेंगे, लेकिन हम आपसे कुछ स्पष्टीकरण प्राप्त करना चाहते थे!"
मेरी हथकड़ियां खोल दी गईं। इंस्पेक्टर सखरा ने मुझे सिगरेट देते हुए कहा, "श्री ठाकुर, मुझे पूरा यकीन है कि आप उस समय फ्लैट में नहीं थे। इस फ्लैट में रहने वालों का यह सोचना स्वाभाविक था कि कुमारी को यहां नहीं रहना चाहिए। उन्होंने आपका नाम तक नहीं लिया। शायद मैंने आपको झूठ बोलकर यह अनुमान लगाया कि उस समय लिफ्ट नीचे जा रही थी! खैर, आप जाने के लिए तैयार हैं।"
मुझे कुछ पता नहीं था, पुलिस ने मेरी हथकड़ी खोल दी; लेकिन कुमारी अभी भी पुलिस हिरासत में थी। मैं पिछले डेढ़-दो महीने से उसके साथ था। मैं उसके स्वभाव की अच्छी-बुरी दोनों बातें जानता था। वह खुलेआम व्यापार करती थी; लेकिन मुझे पता था कि मेरे साथ व्यवहार करते समय वह बहुत धैर्यवान और स्नेहशील थी। मुझे उम्मीद नहीं थी कि हत्या जैसा गंभीर अपराध एक संवेदनशील लड़की कर सकती है। इस मामले में गडकरी चार आदमियों के बराबर ताकतवर आदमी है। उसे तो बस एक पुराने खिलौने की तरह फेंक दिया जाएगा! लेकिन उस नाखून से खरोंच के निशान किसने बनाए? कुमारी उस समय पूरी तरह नग्न थी, क्यों?... मुझे तो यह भी समझ नहीं आया कि आखिर हुआ क्या था।
मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरा जीवन इतना उथल-पुथल भरा होगा। एक तो, उल्का शराब की आदी हो गई थी। मुंबई में अपने पैरों पर खड़े होने की उसकी सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं और वह पूरी तरह टूट चुकी थी। इसलिए, शराब का सहारा लेना कोई समाधान नहीं था। मैं उल्का की चिंता तो कर ही रही थी, साथ ही कुमारी के मामलों में भी उलझी हुई थी।
इंस्पेक्टर ने मुझे बताया कि ‘तुम्हें रिहा कर दिया गया है’; लेकिन मैं मुंबई पुलिस की चालों से वाकिफ था। वे गिरफ्तार व्यक्ति को बताते थे कि उसे रिहा कर दिया गया है और फिर उसकी गतिविधियों पर नजर रखते थे। वे सादे कपड़ों में गुप्त पुलिसकर्मियों को तैनात करके उस पर नज़र रखते थे कि वह कहाँ जाता है और किससे बात करता है। कभी-कभी इन तरीकों से अपराध में शामिल अन्य लोगों के बारे में भी जानकारी मिल जाती थी। पूरी संभावना थी कि उन्होंने मेरे साथ भी यही चाल चली हो। मुझे इस मामले के बारे में कुछ भी पता नहीं था; तो मुझ पर नजर रखने का क्या फायदा?
चौथे दिन मैं रॉबर्ट की दुकान पर गया। रॉबर्ट ने मुझे अनदेखा करने का नाटक किया। मैं लोगों की आँखों से उनके मन की बात समझ जाता हूँ। मैंने रॉबर्ट की नज़र तुरंत पहचान ली और उससे कहा,-
"भगवान की कसम, मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। मैं निर्दोष हूँ। पुलिस ने मुझे छोड़ दिया। रॉबर्ट, मुझे गलत मत समझना!"

"कृपया, यहाँ से चले जाओ!"
"सुनो, रॉबर्ट, मुझे कुछ नहीं पता!"
‘‘लिसन! प्लीज गो!’’
जब मैं उसके दरवाजे पर खड़ा था, उसने दीवार पर लगी घड़ी देखी, खुद उठा और दुकान बंद कर दी। वह एक शरारती मुस्कान के साथ चलने लगा।
मैंने गहरी साँस ली। जिस समय मैं चाहता था कि लोग मुझे समझें और पहचानें, उसी समय लोग मुझसे मुँह मोड़कर चले गए। मेरे स्वभाव पर यह अजीब सा असर हो रहा था। मुझे इस दुनिया में किसी की चिंता नहीं करनी चाहिए, मुझे अपने दिल की सुनो, मुझे पाप के डरपोक विचारों को मन में नहीं लाना चाहिए। आज का उजाला और वर्तमान क्षण ही मेरे पास है। मुझे अगले पल और कल क्या होगा, इसकी बिल्कुल भी चिंता नहीं करनी चाहिए, ऐसे अजीब विचार मेरे मन में आ रहे थे। अल्का, सलीमा, उल्का और कुमारी, इन चारों ने मेरे जीवन में हलचल मचा दी थी। अल्का ने मेरे जीवन की इस नाव को जीवन के इस विचित्र सागर में बहा दिया था। सलीमा, उल्का और कुमारी जैसी महिलाओं के साथ यह नाव ऊपर-नीचे होती रही। मेरी आँखों के सामने पहाड़ जैसी लहरें दिखाई दे रही थीं। इससे मुझे ज़रा भी भरोसा नहीं हुआ कि मैं सुरक्षित किनारे तक पहुँच पाऊँगा...
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मेरे दिमाग में चल रहे विचार मुझे चला रहे थे या मैं चल रहा था ताकि मेरे विचार भी मेरे साथ दौड़ें! मैंने वर्ली नाका से सतरस्था की ओर चलना शुरू किया। सतरस्था से दलिल्लाह रोड जाते समय मुझे जेल दिखाई दी। कुमारी को इसी जेल में 'विचाराधीन कैदी' के रूप में रखा गया था! उस पर इंस्पेक्टर गडकरी को गैलरी से धक्का देकर उनकी हत्या करने का आरोप था, मुकदमा चल रहा था। पुलिस ने कुमारी की रिमांड नहीं बढ़ाई थी।
मैंने जेलर को एक आवेदन दिया। मैं उस लड़की से मिलना चाहता था। जेलर ने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ और क्यों आया हूँ, और मुझे उससे मिलने की अनुमति दे दी।
पीले चेहरे वाली वह युवती लोहे के फाटक के पीछे बैठी थी। उसके माथे पर बालों की एक लट लटक रही थी। उसने चिंता भरी नज़रों से मेरी ओर देखा और पूछा, "क्या तुम घर गए थे?"
"तुमने किसका घर कहा? मेरा या तुम्हारा?"
"मेरे प्रिय?"
नहीं, मैं नहीं गया था!
"आज ही जाओ, आंटी ज़रूर आई होंगी। एक वकील का इंतज़ाम करो और मुझे ज़मानत पर छुड़वाओ, यहाँ तो रात भर खाना पड़ता है, यहाँ तो जानवर भी खाना नहीं खा सकते! इस केस में कम से कम तीन से चार महीने लगेंगे! अगर इस केस में ज़मानत नहीं मिली तो मेरी मौत बेकार जाएगी! आंटी से उतने पैसे लेकर मेरे लिए एक अच्छा वकील का इंतज़ाम करो!"
वकील शब्द सुनते ही मुझे पापा याद आ गए। मैंने पुणे में दौलत खान के खिलाफ केस में पापा को बुलाया था; लेकिन दौलत खान ने अपने परिवार के किसी सदस्य को वकील बना लिया और दौलत खान को उम्रकैद की सजा हो गई। पापा के लिए केस को अंत तक लड़ना नामुमकिन था। मुझे लगा कि पापा को कम से कम कुमारी के खिलाफ

केस तो लड़ना चाहिए, इसलिए मैंने उन्हें एक पत्र भेजा। मैंने पत्र में सारी सच्चाई लिख दी।
कुमारी की 'मौसी' यात्रा से लौट आई थीं। मैंने उन्हें अभी तक नहीं देखा था, चाहे वो काली हों या गोरी। मैं उनसे मिलने गया।
मुझे संदेह भरी नजरों से देखते हुए उसने कहा,-
"उसने तो कभी एक चींटी को भी नहीं मारा, वो किसी इंसान को कैसे मार सकती है? ये किसी की उसे फंसाने की योजना है!"
"यह किसकी योजना होगी?"
"कौन जाने! लेकिन उसके साथ ऐसा नहीं होगा!"
आंटी की उम्र पैंतालीस या पैंतालीस वर्ष थी, रंग गोरा था और वे थोड़ी मोटी थीं। हालाँकि उनके चेहरे पर पवित्र भाव था, लेकिन वे बेहद कामुक प्रतीत होती थीं। यहाँ तक कि जब उन्होंने मेरी ओर देखा, तब भी मैं उनकी आँखों में वासना महसूस कर सकता था। मैंने खुलेआम व्यापार में लगी किसी कुंवारी लड़की की आँखों में ऐसा भाव पहले कभी नहीं देखा था।
"आंटी, मामला खत्म होने के बाद पता चल जाएगा कि कौन ज़िम्मेदार है। अभी इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है। हमें एक वकील चाहिए! हमें कुमारी को ज़मानत पर बाहर निकालना होगा!"
"लेकिन अयंगर कह रहे थे कि हत्या के आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता!" आंटी।
"तुम अयंगरों से पूछने क्यों गए? उन्हें तो पानी में कुंवारी कन्या दिखाई देती है! सबको - यहाँ तक कि अयंगर, दोशी और देसिंगकरों को भी!"
आंटी ने मेरी तरफ देखकर कहा, "क्या तुम उससे मिलने गए थे?"
"हां, मैं अभी वहीं से आ रही हूं। मुझे मार्था के घर जाकर उसे फोन करना है!" "मार्था?" चाची ने मुझे संदेह भरी नजरों से देखते हुए कहा। "क्या तुम आज यहीं रुकोगी?"
‘‘अरे! कुंवारी ने मुझे ऐसा बताया था!
"ठीक है!"
मुझे खर्चों के लिए आपसे दो हजार रुपये चाहिए!
"दो हजार?" चाची लगभग चीख पड़ीं।
कुमारी को जमानत पर रिहा किया जाना चाहिए!
मेरे पास कितने पैसे हैं?
"उसने कहा कि तुम्हारे पास वे हैं!"
"ठीक है, कल सुबह आना!"
आंटी कुमारी की असली आंटी नहीं थीं! वह दूर की रिश्तेदार थीं। कुमारी को घर के कामों में सहारा देने के लिए किसी भरोसेमंद व्यक्ति की ज़रूरत थी, इसलिए उन्होंने उन्हें बुलाया था! लेकिन यह महिला बहुत चालाक थी। चालाक लोग भगवान के प्रति भक्ति का बड़ा दिखावा करते हैं, और आंटी भी इसका अपवाद नहीं थीं। वह कुमारी के पैसों से चरिधाम तीर्थयात्रा पर आई थीं। वह कुमारी की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर अभिषेक और महापूजा करती थीं। कुमारी भी कुछ इसी तरह की चालाक थी; वह सोचती थी कि अगर वह अनैतिक तरीकों

से पैसा कमाएगी, तो उसके पाप बढ़ेंगे; आंटी कहती थीं कि अभिषेक और महापूजा की मदद से उसके पाप धुल जाएंगे।
आंटी, जो इस विचार से ग्रस्त थीं कि कुमारी ने यह अपराध किया है, उसे इसके लिए दंडित किया जाएगा, और हमें उसका फ्लैट, फर्नीचर, पैसा और गहने मिल जाएंगे, यह सुनकर बहुत आश्चर्यचकित हुईं कि मैं कुमारी को जमानत पर रिहा कर दूंगा!
उसने मुझे अगले दिन मिलने के लिए कहा, इसलिए मैं अगले दिन उसके फ्लैट पर गया। मार्था वहाँ सिर पकड़े बैठी थी!
“क्या हुआ, मेरी चाची कहाँ हैं?”
"ओह, उन्होंने रात में तिजोरी खोली और नौकरानी के गहने और पैसे लेकर भाग गए!"
"क्या, तुम सच कह रहे हो! वहाँ कितना पैसा था! वहाँ किस तरह के गहने थे!" मुझे क्या पता है?
"यह ठीक नहीं है! हमें इसकी सूचना पुलिस को देनी चाहिए!"
"लेकिन जब आपको यह पता ही नहीं है कि उस तिजोरी में क्या था, तो आप मुझे यह कैसे बता सकते हैं कि उसमें क्या था?"
"यह भी सच है। मैं वापस जेल जाऊंगा और उस लड़की से मिलूंगा!"
जब जेल में हमारी मुलाकात हुई और मैंने उस लड़की को यह कहानी सुनाई, तो वह हंस पड़ी। मुझे लगा जैसे यह कोई चमत्कार हो।
"मेरी भविष्यवाणी सच हो गई, समर!"
"क्या अनुमान है?"
"मौसी, तुम एक दिन मुझे धोखा जरूर दोगी! लेकिन वो तो बचकर निकल गई!"
"वह कैसा है?"
"मेरा पैसा बैंक में है। असली गहने लॉकर में हैं। नकली, दिखावटी गहने घर पर हैं। वह बहुत दयालु थी। कभी-कभी मेरा मन करता था कि उसे भगा दूं; लेकिन मेरा स्वभाव बदल चुका था, उसे 'जाओ' कहना मेरे लिए बहुत मुश्किल था!"
"क्या आपको शिकायत दर्ज नहीं करनी चाहिए?"
"बिल्कुल नहीं! अच्छा हुआ कि वह अपनी मर्जी से चली गई!"
"तो फिर आपने मुझसे पैसे लाने के लिए कैसे कहा?"
मैंने उसके पास पाँच-छह हज़ार रुपये छोड़ दिए थे! लेकिन अब इसके बारे में मत सोचो। मेरी चेकबुक ड्रेसिंग टेबल के नीचे वाली दराज में है, उसे ले आओ। मैं तुम्हें चेक दे दूँगा!
तीसरी सुबह मैं पापा को लेने बोरीबंदर गया। जैसे ही मैं कार से उतरा, उन्होंने मेरा हाथ मिलाया और कहा,
"हेलो समर! ऐसा हर जगह होता है, ये सब क्या बकवास है?"
मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, पापा!
"अच्छा, आपने उतरने की व्यवस्था कहाँ की है?"
"समतल सतह पर!"
"किसका?"
"वो लड़की जिसके साथ तुम अपने बाल संवारना चाहोगे!"

‘‘अच्छा!’’
मैंने पापा का बैग हाथ में ले लिया। वो थोड़े दुबले-पतले लग रहे थे। चलते- चलते मैंने पूछा, "मम्मी कैसी हैं?"
"ठीक है! क्या तुम्हें वह अभी भी याद है?"
"वह मेरी माँ है!"
"अल्का ने स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली है, वह बी.टी. में दाखिला ले रही है! वह पूरी तरह बदल गई है! क्या वह इतनी बदल गई है कि आप उसे पहचान ही नहीं पाएंगे?"
‘‘आचारात की विचारात?’’
"वे दोनों!"
"लेकिन आप उसे एलएल.बी. करवाने वाले थे, है ना?"
"हाँ, मैं यही चाहता था; लेकिन उसने बीटी जाने का फैसला कर लिया, तो मैं क्या करूँ! लेकिन चलो छोड़ो, मैंने सुना है कि तुमने पुणे के किसी लड़के से शादी कर ली है, क्या यह सच है?"
"हाँ! मुझे अब उस बात का भी अफसोस है! शायद यही नियति का इरादा है कि इस जीवन में कोई भी स्त्री लंबे समय तक मुझे साथ नहीं दे पाएगी!"
जैसे ही हम टैक्सी में बैठे, पापा ने कहा, "तुम बहुत भाग्यशाली हो!"
उसके बगल में बैठे हुए मैंने कहा, "जिस महिला को मैंने अपने जीवनसाथी के रूप में चुना है, वह दिल तोड़ने वाली है, तो आप कैसे कह सकते हैं कि मैं भाग्यशाली हूँ!" ड्राइवर मुझे सवालिया निगाहों से देख रहा था, जिस पर मैंने कहा, "वर्ली नाका!"
मेरे गोद में हाथ रखते हुए पापा ने कहा, "चलो चलते हैं, इस बारे में भूल जाते हैं। तुम्हारी माँ इस यात्रा पर मेरे साथ मुंबई आने के लिए बहुत ज़िद कर रही थी; लेकिन मैंने उनसे वादा किया है कि मैं आऊँगा!"
"कैसे!"
मैं तुम्हें चार दिन के लिए भवानी नगर ले चलूंगा!
"मुझे!"
"हाँ, क्यों! क्या समस्या है!"
"पापा, जब यह मामला खत्म हो जाएगा, तो क्या आप मम्मी को चार दिनों के लिए यहाँ बुलाएँगे?"
"वो बदमाश! उसे मुंबई की हवा बिल्कुल पसंद नहीं आएगी। काश तुम चार दिन के लिए आकर चले जाते! अलकही-"
मैंने तुरंत पापा का इरादा समझ लिया, उन्हें पता चल गया था कि वो अल्का और मेरे बीच सुलह करवाना चाहते हैं! दरअसल, उसके प्रति मेरे दिल में नफरत भी कुछ हद तक कम हो गई थी; लेकिन फिर भी, टूटे हुए रिश्ते को सुधारना मुमकिन नहीं था।
‘‘बाये हात से लो!’’
जैसे ही ड्राइवर कार को परवीन के विला के पास लाया, मैंने उसे रुकने के लिए कहा।

जैसे ही हम लिफ्ट में चढ़े, पापा ने कहा, "जिस मुंबई में मैं बचपन में पढ़ने गया था और आज के मुंबई में कितना बड़ा अंतर है!"
लोग भी बदल गए हैं!
"जब इतनी अधिक जनसंख्या का जमावड़ा होता है, तो कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं!"
घंटी बजते ही मार्था ने दरवाजा खोल दिया।
"मार्था, मेरे पापा से मिलो!" मार्था ने कमर झुकाकर पापा का मुस्कुराते हुए अभिवादन किया।
पिताजी ने पूरे फ्लैट में चारों ओर देखा और मुझसे पूछा, "इसका क्या काम था?"
मुझे थोड़ी झिझक हुई; इसलिए मैंने कहा, "मुझे बहुत खुशी हुई!"
पिताजी ने मेरी तरफ देखकर कहा, "समर, अगर कोई आदमी नेक है और कोई कारोबार नहीं करता, तो लोग उसे विलासिता का धनी कहते हैं। लेकिन जब इस लड़की जैसी जवान, खूबसूरत औरत कुछ नहीं कर रही होती है, तो बस एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है!"
"क्या!"
"वह कारोबार में है!"
मैं चुपचाप समुद्र को देखता हुआ वहीं खड़ा रहा। पिताजी उठे, मेरे पास आए और बोले, "क्या यही वह जगह है जहाँ कहते हैं कि हत्या हुई थी?"
"हां, वे इसी गैलरी से गिरे थे!"
पिताजी ने गैलरी की ऊंचाई का अंदाज़ा लगाया। उन्होंने यह जांचा कि वहां खड़ा व्यक्ति संतुलन बनाए रख सकता है या नहीं। उनके आते ही उन्होंने मुझसे जानकारी मांगनी शुरू कर दी थी। मैंने पिताजी को मामले के बारे में सब कुछ बताया जो मुझे पता था और कहा, "पिताजी, हम यह सिद्धांत पेश कर सकते हैं कि गडकरी का संतुलन बिगड़ गया और वे यहां से गिर गए; लेकिन उनके शरीर पर नाखूनों के खरोंच के निशान हैं, हम उनका क्या करें? उन चोटों का कारण क्या था! हमें इसका जवाब देना ही होगा, है ना!"
"यह तो करना ही पड़ेगा! लेकिन मेरी राय में इसमें कुछ भी ज्यादा मुश्किल नहीं है!"
मुझे यह मुश्किल लगता है!
पिताजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "हो सकता है कि उन खरोंचों का इस्तेमाल बचाव के लिए किया जा सके।"
- ०-०-०-

१८
उस रात, पिताजी ने कुमारी के बारे में मुझसे और मार्था से जानकारी माँगना शुरू किया। मार्था पिछले चार सालों से कुमारी के यहाँ काम कर रही थी। कुमारी को उस पर पूरा भरोसा था। वह घर का सारा काम उसे सौंपकर खुशी-खुशी बाहर चली जाती थी। लेकिन उसने कभी 'आंटी' पर इस तरह भरोसा नहीं किया था। पिताजी ने मार्था से पूछा,-
"अरे इंस्पेक्टर गडकरी, क्या आपको पता है कि ऐसा पहले कितनी बार हो चुका है?"
"वे अक्सर नहीं आते थे; वे हर दो या तीन महीने में एक बार आते थे। लेकिन वे आने से पहले सूचना दे देते थे। वे रात के खाने के लिए रुकते थे। वे फोन पर यह भी बता देते थे कि उन्हें खाने में क्या चाहिए!"
"ऐसे सुझाव लेकर और कौन आ रहा है?"
"कोई नहीं! यह तो अकेला ही आता है!"
"जब लड़की को फोन आया कि वे आ रहे हैं, तो क्या वह खुश थी या डरी हुई थी?" "मेरा भाई! जब फोन बजता था, तो वह सबसे पहले एक गिलास ठंडा पानी पीता था! उसका मुंह सूख जाता था।"
"क्या वे रुकना चाहेंगे?"
"हाँ! चलो सुबह चलते हैं!"
"रात में किस तरह की घटना घटित होगी?"
"कभी-कभी वह रोती थी; कभी-कभी बस सिसकियाँ भरती थी!"
पिताजी ने सिगरेट जलाई और मुझसे कहा, "समर, गडकरी जो कर रहे होंगे, उसे मनोरोगी यौन क्रिया कहते हैं! भयानक! यह एक यौन विकृति है। कुछ लोगों में यह प्रवृत्ति होती है कि वे जिस महिला के साथ यौन संबंध बनाना चाहते हैं, उसे प्रताड़ित करते हैं। गडकरी की मृत्यु में कुछ भी बुरा नहीं हुआ।" लेकिन कुंवारी मिल गई!
"चिंता मत करो! वह बहुत खुश होगी!"
मुझे उससे छुटकारा पाना मुश्किल लगता है!
पापा ने मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, बाहर जाने से पहले क्या ड्रिंक्स का कोई इंतजाम है?"
"सब कुछ व्यवस्थित हो गया है। खाना भी तैयार है!"
"ये तो बदतमीज़ी है! मैं पूछ रही हूँ कि क्या पेय पदार्थ उपलब्ध हैं, और आप मुझे बता रहे हैं कि खाना तैयार है!"
मैं मुस्कुराते हुए उठी और बोली, "मेरा ऐसा इरादा नहीं था, पापा। मैंने तो बस इसलिए कह दिया क्योंकि बहुत समय हो गया था!" और साथ ही मैंने लड़की की अलमारी से व्हिस्की की एक बोतल निकाल ली।
‘‘दॅटस ऑल!’’
गिलास को होठों से लगाकर एक घूंट पीते हुए पापा ने मुझसे पूछा, "पुणे से तुम कौन सी लड़की को लेकर आई हो?"
मैं आपको बाद में इसके बारे में सब कुछ बताऊंगी, पापा!

"इसका मतलब यह नहीं है कि मैं उसके बारे में कुछ कहना नहीं चाहता!"
"आज नहीं! पहले हमें लड़की को इस मुसीबत से छुड़ाने का कोई रास्ता ढूंढना होगा।"
"चिंता मत करो! हम उसे कल शाम तक घर ले आएंगे!"
"लेकिन अगर हत्या का आरोप है, तो सत्र न्यायालय आपको जमानत पर रिहा करने में थोड़ा हिचकिचाएगा, है ना?"
मुझे ऐसा करने मत दो!
"पापा, ये गडकरी इंस्पेक्टर थे, है ना? ये तो कई महिलाओं को ऐसे ही छेड़ते थे; क्या हम इनका कुछ इस्तेमाल कर सकते हैं?"
"मामला शुरू होने के बाद हम तय करेंगे कि बचाव पक्ष क्या होगा! अभी इस बारे में बातचीत न करें, लेकिन अगर हमें इंस्पेक्टर गडकरी के वेश्या के पास जाने की जानकारी मिल जाए तो अच्छा होगा! लेकिन पता नहीं, पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर ने 'अंदरूनी अंगों' को सुरक्षित रखा था या नहीं?"
"जी हां, इसे रासायनिक विश्लेषक के पास भेज दिया गया है! रिपोर्ट अभी तक नहीं आई है।"
"गडकरी नशे में थे, है ना?"
"मैं हमेशा जैम पीता था! मैं एक रात में लगभग छह बड़े गिलास पी जाता था!" ‘‘दॅटस् गुड!’’
"लेकिन इन खरोंचों का क्या करें, पापा?"
पिताजी हँसे और बोले, "खरोंच लगने के डर को अपने दिमाग से निकाल दो!"
रसोई में खाना बनाने के बाद मार्था एक तरफ स्टूल पर बैठी हमारी बातचीत सुन रही थी। वह यह जानने के लिए उत्सुक थी कि लड़की को बचाने के लिए कौन से तरीके अपनाए जा रहे हैं।
इसी बीच, पिताजी ने व्हिस्की का गिलास हिलाते हुए सिगरेट की राख ऐशट्रे में झाड़ दी। "रहने दो! मार्था, वह मेज इधर लाओ!" मैंने कहा।
वहाँ एक मोटी लकड़ी की मेज थी जहाँ मार्था बैठी थी। मार्था ने उसे अकेले ही उठाया और हमारे सामने रख दिया। पिताजी ने फिर से व्हिस्की डाली और गिलास को मेज पर रखने से पहले उसका वजन जांचने के लिए उठाया। मेज उठाते समय पिताजी मार्था की जांघों की मांसपेशियों को निहार रहे थे। मेज रखने के बाद उन्होंने मार्था से कहा,--
"हम पाँच मिनट में वहाँ पहुँच जाएँगे। मुझे बहुत गर्मी लग रही है!"
मुझे तुरंत समझ आ गया कि वे मार्था को वहीं से अंदर भेजने वाले हैं। मार्था के अंदर जाने के बाद पापा ने मुझसे कहा, "अब तो रहस्य सुलझ गया!"
"कैसे?"
"वह लड़की अकेले गडकरी को गैलरी से नीचे नहीं गिरा सकती थी। इस मार्था ने उसकी मदद की होगी! इस मेज को हिलाकर देखो, यह कितनी भारी है? उसने इसे आसानी से अकेले ही नीचे गिरा दिया!"
लेकिन मार्था ने पुलिस को बताया कि वह उस कमरे में नहीं थी!

"तुम्हारा यही मतलब था! लड़की नग्न थी, हमने उसके चारों ओर चादर लपेट दी, वगैरह-वगैरह, यह सब मनगढ़ंत कहानी है। इन दोनों ने ही उसे गैलरी से नीचे फेंका होगा! मुझे पूरा यकीन है!"
"हे भगवान! यह कैसे संभव है, पिताजी?"
"ओह, जब पानी उसकी गर्दन तक पहुँच जाता है, तो बंदर अपनी पिछली टांग उसकी पीठ पर रखकर उस पर खड़ा हो जाता है, फिर यह राक्षस आ जाता है जो हमेशा आकर उसे सताता है! जब यह असहनीय हो जाएगा तो वह क्या करेगी? कुंवारी के प्रति मार्था की भक्ति और निष्ठा निर्विवाद है, इस बात की प्रबल संभावना है कि उसने नशे में धुत गडकरी के पैरों को मेज की तरह उठाकर दूर फेंक दिया!" "मैंने मार्था की ताकत कई बार देखी है। एक बार उसने लिफ्ट से कोयले से भरी बोरी उठाई और उसे अंदर ले आई, और दूसरी बार उसने क्रॉफर्ड मार्केट में एक लड़ाई में माली को धक्का देकर गिरा दिया, और वह गिर गया!"
"तुमने झगड़ा क्यों शुरू किया?"
कुमारी ने आमों का एक डिब्बा खरीदा और उसे सौ रुपये का नोट दिया। उसने नोट सड़क पर फेंक दिया और पैसे वापस मांगने लगा। कुमारी के बार-बार कहने पर भी कि उसने पैसे दे दिए हैं, उसने नहीं सुना; इसलिए मार्था को गुस्सा आया और उसने उसे सड़क से घसीटकर सड़क पर धकेल दिया! भीड़ जमा हो गई, पुलिस आ गई; लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई मार्था के शरीर को छूने की!
"क्या आप व्यायाम करते हैं?"
"उसके पिता मुक्केबाज थे, मैंने उसे व्यायाम करते हुए नहीं देखा है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसका शरीर बहुत मजबूत है!"
"जब मैंने मगशी को मेज उठाते देखा, तो मैंने मन ही मन सोचा! खैर, यह तो एक बहुत ही दिलचस्प हत्या का मामला है! एक तरफ तो गडकरी जैसा जिम्मेदार पुलिस अधिकारी एक वेश्या के पास जाता है, शराब पीता है और वहीं रुकता है, ये सब बातें उसके प्रति सहानुभूति को खत्म कर देती हैं। दूसरी तरफ, यह भी संभव है कि छत पर खड़े-खड़े उसका संतुलन बिगड़ गया हो और वह गिर गया हो!"
"लेकिन वो खरोंचें!" मैंने फिर से अपनी शंका व्यक्त करते हुए कहा।
"चलिए, हम खरोंचों के बारे में बता देते हैं। देखते हैं कि गडकरी जिस वेश्या के पास जाने वाला था, वैसी ही कोई और बहादुर वेश्या मदद करने को तैयार होती है या नहीं!"
रात का खाना खाते समय मैं मार्था की हरकतों को देखती रही। मुझे पापा की बातें समझ आने लगी थीं। मार्था की कलाई और जांघें मुझे बहुत मर्दाना लगने लगी थीं।
अगले दिन, पिताजी ने कुमारी के लिए अदालत में जमानत याचिका दायर की। सरकारी वकीलों ने नियमों के अनुसार आपत्ति जताई। लेकिन पिताजी ने जमानत से संबंधित मद्रास और इलाहाबाद उच्च न्यायालयों के कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों का हवाला देते हुए अदालत से कहा, "न केवल इस बात की प्रबल संभावना है कि कुमारी इस मामले में पूरी तरह बरी हो जाएगी, बल्कि कानून यह भी कहता है कि हत्या के आरोप में गिरफ्तार महिला को उचित और योग्य जमानत मिलने पर रिहा कर दिया जाना चाहिए। यदि उसे जमानत पर रिहा कर दिया जाता है, तो

सरकारी गवाहों के अयोग्य घोषित होने की कोई वास्तविक संभावना नहीं है। क्योंकि इस मामले में कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं है। उपलब्ध साक्ष्य मुख्य रूप से परिस्थितिजन्य साक्ष्य हैं। उसे अयोग्य घोषित करने का कोई सवाल ही नहीं उठता!"
कुमारी को पाँच हज़ार रुपये की ज़मानत पर रिहा करने का आदेश दिया गया। कुमारी की ओर से अदालत में पाँच हज़ार रुपये नकद जमा किए गए। शाम को हम तीनों टैक्सी से 'परवीन विला' लौट आए।
फ्लैट पर पहुँचने के बाद कुमारी ने पापा को धन्यवाद देते हुए कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद पापा!" इस पर पापा ने कहा, "तुम्हें अभी पूरी तरह निर्दोष साबित होना है, इसलिए यह धन्यवाद कुछ दिनों के लिए रख लो!"
मुझे मार्था को शक की नजरों से देखने का मन हुआ। मार्था ने मुझे पहचान लिया और मुझे रसोई में बुलाया और पूछा,
"समर, पिछले दो दिनों से तुम मुझे इतनी अजीब तरह से क्यों देख रही हो?" "अजीब लग रहा है? कुछ तो गड़बड़ है! ऐसा दिखने के लिए तुमने क्या किया है?" मुझे इसके बारे में क्या पता है?
"मैंने सुना कि तुम और तुम्हारे पापा पिछली रात मेरे बारे में क्या बातें कर रहे थे!"
"क्या आपको यकीन है? क्या पापा का शक गलत है?"
मार्था ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारे पिता तुमसे कहीं ज्यादा बुद्धिमान हैं, यह तो निश्चित है?"
"मार्था, असल में क्या हुआ था?"
"तुम किसी को नहीं बताओगे?"
"तुम कसम खाओ, मैं किसी को नहीं बताऊँगा!"
"मैं कसम खाता हूँ! अगर मैं मर गया, तो तुम मुसीबत में पड़ जाओगे!"
मैं अपनी मां की कसम खाता हूं। तुम किसी को नहीं बताओगे?
"तो सुनो, उस रात कुमारी ने तुम्हें घर जाने को कहा। तुम चले गए। फिर मैंने दरवाजा बंद कर दिया और अंदर आ गई। गडकरी ने कुमारी को पीने के लिए ज़ोर दिया। लेकिन उसने नहीं पिया। क्योंकि पीने के बाद वह उसके साथ बुरा बर्ताव करता था। वह उसकी बांहें मरोड़ता, गाल पर मारता, थप्पड़ मारता। वह उसे तब तक चिढ़ाता रहता जब तक वह बेचैन होकर रोने न लगे।"
उस रात, उसके कहने पर, उसने बाद में पीने का नाटक किया। लेकिन उसने जैम पी लिया। उसने लड़की से कहा, 'नग्न होकर नाचो! अब तो उसे कपड़ों में नाचना चाहिए था। वेश्या बनने का क्या हुआ, उसे शर्म आनी चाहिए थी!' उसने मना कर दिया। उसने उसकी साड़ी फाड़ दी। उसने उसकी स्कर्ट फाड़ दी। उसने उसके ब्लाउज को चीथड़ों में फाड़ दिया और कहा, 'अब नाचोगी या नहीं?'
"वह लड़की, जो हमेशा शांत रहती थी, उस पर गुस्सा हो गई क्योंकि उसने उसे नग्न होने के लिए मजबूर किया था और उस पर टूट पड़ी। उसने अपने नाखूनों से उसे खरोंचा, लेकिन क्या उसने उसकी बात सुनी? वह उसे लात मारने लगा, मैं उसकी चीखें सुनकर भागी। मैं रसोई से पराठे बनाते हुए आई थी। वह हाथ हिला रही थी, इसलिए मैं पीछे से आई और उसके सिर पर वार किया। जैसे ही घाव हुआ, वह

गिर पड़ा। लड़की ने कहा, 'मार्था, सिर्फ हाथ हिलाने से काम नहीं चलेगा; हम इसे हमेशा के लिए खत्म कर देंगे।' वह भी गुस्से से कांप रही थी। जब वह अधमरा था, तो हम दोनों उसे घसीटकर छत पर ले गए, हम दोनों ने उसे नीचे फेंक दिया। हमें लगा कि पुलिस तुरंत आ जाएगी। इसलिए हमने उसे कपड़े पहनने को कहा। हमने उसे रसोई का दरवाजा अंदर से बंद करने को कहा! लड़की के लिए कमरे में अकेले बैठना असंभव हो गया, वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी, 'मार्था, मार्था!'" फिर मैं अंदर चली गई। नीचे भीड़ जमा हो रही थी। घंटी बजने पर मैंने दरवाजा खोला। नौकरानी ने कुछ नहीं कहा। मैं रसोई में थी। मैंने ऐसा दिखाया जैसे मुझे पता ही नहीं था कि क्या हुआ है! बस इतना ही हुआ था!
"लेकिन पापा ने तो यही कहा था! एक कुंवारी लड़की के लिए यह काम अकेले करना नामुमकिन है!"
"लेकिन अब मेरा नाम सामने नहीं आएगा, है ना?"
"यह मुमकिन नहीं है! डॉक्टर ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में लिखा है कि गडकरी ने बहुत ज़्यादा शराब पी थी, और उनके पेट में मौजूद भोजन को रासायनिक विश्लेषण के लिए भेजा गया है। उससे भी पता चलेगा कि उन्होंने शराब पी थी! गडकरी गैलरी से टेक लगाकर खड़े थे, सिगरेट पी रहे थे, हांफ रहे थे, और अचानक उनका संतुलन बिगड़ गया और वे गिर गए, इसी तरह पापा अपना बचाव करेंगे! आपका नाम बताने का तो सवाल ही नहीं उठता!"
"तो ठीक है! लेकिन ये क्या बकवास है, उन्होंने मुझ पर आरोप क्यों नहीं लगाया?"
मैंने मजाक में कहा, "तुम जरूर डर गए होगे!"
"मेरा मजाक मत उड़ाओ, समर!"
क्या तुम मजाक कर रहे हो?
मार्था ने जो कहा था, वह सच था। लेकिन मार्था इस मामले में उलझना नहीं चाहती थी। क्योंकि गडकरी का वज़न ढाई सौ पाउंड था और कुमारी का सिर्फ़ पचानवे सौ पाउंड! पिताजी यह तर्क देना चाहते थे कि कुमारी के लिए उन्हें उठाना नामुमकिन था, क्योंकि ऊपर से फेंके जाने के कारण उसकी खोपड़ी पूरी तरह से फट गई थी, उस पर किसी चोट का कोई निशान नहीं था। फिर गडकरी शराब के नशे में अपना संतुलन खो बैठे और गिर गए, यही एकमात्र तर्कसंगत और सही बचाव था। सवाल तो सिर्फ़ खरोंचों के निशानों का था! लेकिन पिताजी को इसकी परवाह नहीं थी। उनके पास इसका जवाब तैयार था! लेकिन वे मुझसे इस बारे में बात नहीं करना चाहते थे!
चूंकि मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर आधारित था, इसलिए इसे तुरंत सत्र न्यायालय में भेज दिया गया। गवाहों को तलब किया गया और पूछताछ के लिए एक तारीख तय की गई।
मैं कभी-कभार बांद्रा घर आता था। लेकिन चाहे मैं आता या जाता, उल्का के लिए स्थिति एक जैसी ही थी। वह शराब की आदी थी। अगर वह बोलती भी तो मीठी बात कहती, वरना कुछ बुरा-भला कह देती! "क्या तुम्हें सोने के अंडे देने वाली मुर्गी मिल गई है, अब मेरी चिंता क्यों कर रहे हो?"
मैं कहता, "मीटियोर, तुम मेरी पत्नी हो!"

"पत्नी? ये! ये! एक नाजायज पत्नी! दूसरी शादी से! क्या पहली पत्नी के जीवित रहते दूसरी शादी हो सकती है?" वह कुछ दिल दहला देने वाली बातें कहती थी। सुबह-सुबह वह चर्च के सामने वाले बाज़ार में चावल, कुछ सब्ज़ियाँ या मछली पकाकर बेचती, फिर लाकर एक ही बार में कलवान भरकर पकाती। दोनों बार वही खाती। जैसे ही उसके सारे पैसे खत्म हो गए, मैंने उसे खर्चों के लिए पैसे देना शुरू कर दिया। मैंने अपनी आँखों से देखा कि एक सुंदर, पढ़ी-लिखी लड़की की हालत बिगड़ती जा रही थी; लेकिन उसे इस हालत से बाहर निकालना मेरे लिए नामुमकिन था, उल्का शराब की आदी हो चुकी थी। अगर वह शराब नहीं पीती, तो उसके हाथ-पैर काँपने लगते! धीरे-धीरे उसके शरीर की खूबसूरती भी फीकी पड़ने लगी। उसकी आँखों के नीचे काले घेरे पड़ने लगे। उसकी आँखें बेजान और भावहीन लगने लगीं। अब मुझे उसमें कोई आकर्षण महसूस नहीं होता था। मेरे प्रति उसकी एकमात्र भलाई यही थी कि वह नशे में धुत होकर गली या मोहल्ले में कोई हंगामा नहीं करती थी! अगर उल्का कंजूस थी, तो वह शराबी भी थी! ऐसा लगता था मानो ये दोनों ही मेरे जीवन में आई ही न हों! कुमारी के साथ ऐसा रिश्ता रखना मेरे लिए नामुमकिन था! मैं उसे घर चलाने वाली मानता था। वह मुझ पर पूरी तरह भरोसा करती थी। मुझे बस इतना पता था कि जब वह मुसीबत में हो तो उसे मुसीबत से निकालना है। पापा को यहाँ लाने का यही एकमात्र उद्देश्य था!
कुमारी मामले ने लोगों के मेरे प्रति नजरिए को भी बदल दिया। कुछ लोगों का मानना था कि मैंने गडकरी को नीचे गिरा दिया था और पुलिस को यह यकीन दिला दिया था कि मैं उस समय वहां मौजूद नहीं थी। लेकिन ऐसी अफवाहें फैलाने वालों को यह नहीं पता था कि इंस्पेक्टर सकरे जैसे वरिष्ठ पुलिस अधिकारी इस मामले की जांच कर रहे थे। अगर मैं अपराधी होती, तो उनकी जांच से बच पाना नामुमकिन था! जब मैं वर्ली नाका से गुजरती, तो लोग आपस में फुसफुसाते और मुझे डर भरी निगाहों से देखते। बांद्रा में भी यही हाल था! जब मैं घर जाती, तो गली के कोनों पर मंडराते लड़कों का गिरोह चुप हो जाता। इंस्पेक्टर गडकरी मुंबई में एक जाना-पहचाना चेहरा थे। वह एक अपराधी थे। यहां तक कि बांद्रा की गलियों में रहने वाले बूढ़े लोग भी मानते थे कि मैंने गडकरी इंस्पेक्टरों की हत्या की है। गडकरियों ने कई लोगों को परेशान किया था, इसलिए अपराधी भी मुझे डर और सम्मान की नजरों से देखने लगे, क्योंकि मैंने गडकरियों का इल्जाम अपने ऊपर ले लिया था। अगर मुझे मुफ्त में यह सब मिल रहा है, तो मुझे क्यों न छोड़ दिया जाए? मेरा रवैया भी यही था।
फेल्ट की टोपी, काले चश्मे, चौकोर गले वाली कमीज, गहरे रंग की ऊनी पैंट और जोधपुरी बूट पहने मैं चलने लगा। वर्ली नाका और बांद्रा से मुझे जानने वाले लोग मुझे देखकर मुस्कुराए। कुछ लोग पहचाने जाने पर गर्व महसूस कर रहे थे, जबकि कुछ ने मुझसे दूरी बनाए रखी।
कहते हैं कि महान बनने के लिए कुछ करना पड़ता है, लेकिन मुझे तो बिना कुछ किए ही महानता मिल रही थी। लोग मुझे उस बहादुर हीरो के रूप में जानने लगे जिसने गुंडों के दौर में इंस्पेक्टर गडकरी को आठवीं मंजिल से नीचे फेंक दिया था। मैंने उन्हें सच्चाई बताने की ज़हमत भी नहीं उठाई।

उल्का बांद्रा में अकेली रहती थी, वो जवान थी। शुरू में मुझे उसे बांद्रा में अकेला छोड़ने से डर लगता था। लेकिन गडकरी कांड के बाद मेरा डर और बढ़ गया। कोई भी उल्का के घर नहीं जा सकता था!
जिस दिन सेशन कोर्ट में मामले की सुनवाई हुई, उस दिन अदालत में कदम रखने की भी जगह नहीं थी। मैं कुमारी के साथ गई थी, इसलिए मुझे अंदर जाने की अनुमति मिल गई।
वर्ली नाका के पुलिस कांस्टेबल रावराणे ने सरकार के समक्ष शिकायत दर्ज कराई, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें लगा कि परवीन विला से किसी की गिरकर मौत हो गई है, जिसके बाद वे वहां गए और शव की पहचान इंस्पेक्टर गडकरी के रूप में की। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने इरन्या के होटल से कमिश्नर कार्यालय और संबंधित पुलिस स्टेशनों को फोन किया। इंस्पेक्टर सखरा दस मिनट के भीतर घटनास्थल पर पहुंच गए और रावराणे ने यह भी बताया कि वे उनके साथ आठवीं मंजिल पर स्थित कुमारी के फ्लैट में गए थे।
पिताजी ने उससे बस कुछ ही सवाल पूछे।
"देखो, रावराने, इंस्पेक्टर गडकरी को लेटे हुए देखा गया था। तुम उन्हें पहचानते हो ना?"
‘‘हो ऽ!’’
"लेकिन आपको कैसे पता चला कि यह ऊपर से गिरा था?"
"क्योंकि वे कभी-कभी कुंवारी के पास आते थे!"
"अच्छा! तो तुम उस लड़की को जानते हो!"
तो क्या हुआ? पुलिस को अपने इलाके के गुंडों, अपराधियों और वेश्याओं के बारे में पता है!
"मेरा मतलब है, तुम्हें वेश्याओं के बारे में कुछ भी नहीं पता!"
"ऐसा क्यों? हमारे इलाके में तो पचपन वेश्याओं के बारे में पता है!"
"वाह! क्या आप कुछ के नाम बता सकते हैं?"
‘‘जरूर! नादिरा, शहाजबी, रायना, मिलो, मिस वुइल्सझी-’’
बस करो! तुम उन्हें ज़रूर जानते हो!
"लेकिन क्या आपको नहीं पता कि इंस्पेक्टर गडकरी उस रात कुमारी के पास क्यों गए थे?"
"क्यों नहीं? लोग वेश्याओं के पास क्यों जाते हैं?" अदालत में थोड़ी अफरा- तफरी मच गई।
लेकिन मेरा मतलब है, गडकरी तो ऐसे नहीं थे!
"क्या मैं गडकरी के बारे में आपसे ज्यादा जानता हूँ? गडकरी साहब को तो यह शौक था!"
"इस कदर!"
डैडी ने रावराने की जिरह यहीं समाप्त कर दी। फिर, मामले में एक महत्वपूर्ण गवाह के रूप में गडकरी के शव की जांच करने वाले डॉक्टर आए और गवाहों के कटघरे में खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि गडकरी की मृत्यु खोपड़ी में फ्रैक्चर और ऊपर से गिरने के कारण जमीन पर लगने से तुरंत हो गई थी। उनके

शरीर पर खरोंचें थीं और उन्होंने कहा कि ये खरोंचें मृत्यु से पहले की थीं।
पिताजी ने अपनी जिरह शुरू की-
"डॉक्टर साहब, आप कहते हैं कि गडकरी के शरीर और गर्दन पर ऐसे निशान थे जो नाखूनों से खरोंचे हुए लग रहे थे, लेकिन प्रमाण पत्र में यह उल्लेख नहीं है कि उनकी मृत्यु से कितने समय पहले ये निशान थे!"
"नहीं, लेकिन वे निशान निश्चित रूप से मृत्यु से पहले के थे!"
"देखो, मुझे ऐसे अस्पष्ट जवाब नहीं चाहिए। तुम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि ओर्बाडाला की चोटें उसकी मृत्यु से कितने समय पहले लगी होंगी, मेरा मतलब है उसकी चोटों की उम्र!"
"लेकिन वे घाव तो अभी ताजा थे!"
"ताज़ा का मतलब है बारह घंटे के भीतर!"
डॉक्टर यह अंदाज़ा नहीं लगा सका कि पिताजी किस बात पर सवाल उठा रहे थे। थोड़ी देर सोचने के बाद उसने कहा-
"वे घाव तीन या चार घंटे तक रह सकते थे!"
"क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?"
"आना!"
"तो फिर आपने अपने प्रमाणपत्र में उन खरोंचों के 'किनारे' का उल्लेख क्यों नहीं किया?"
"क्योंकि उन खरोंचों का मौत से कोई लेना-देना नहीं था!"
"लेकिन क्या आप जानते हैं कि हत्या जैसे महत्वपूर्ण मामलों में, मामूली चोटों की 'सीमा' और 'कारण' को स्पष्ट रूप से बताना आवश्यक होता है?"
"हाँ।"
"जब शव को रात में अस्पताल लाया गया, तो क्या उसकी सांसों से शराब की गंध आ रही थी?"
मुझे तो कुछ भी गंध नहीं आई!
"क्या आपने आंतरिक अंगों की जांच की? इस प्रमाण पत्र को देखिए, यह सबसे पहले रासायनिक विश्लेषक द्वारा आपको भेजा गया था?"
"आओ! तुम आ गए हो!"
"वे कहते हैं कि उनके खाने में शराब है!"
"हां, ऐसा कहा जाता है!"
डॉक्टर, क्राइम सीन एक्सपर्ट, जांच एक्सपर्ट, फ्लैट से गडकरी की कमीज और बनियान जब्त करने वाले एक्सपर्ट और फिर परवीन विला में रहने वाले अयंगर और देसिंगकर जैसे लोगों से जिरह करने के बाद, पापा ने अपने बयान दिए। पापा ने उनसे ज्यादा जिरह नहीं की!
दिन भर का काम खत्म करने के बाद हम फ्लैट में वापस आ गए। पापा ने ठंडे पानी से नहाया और हॉल में पंखे के नीचे बैठकर मुझसे कहा, "थोड़ा और! आज मेरे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं।"

जब मैं पापा के लिए व्हिस्की का पूरा गिलास लेकर आई, तो वो लड़की भी आई और कपड़े धोने के लिए बीच वाले हॉल में बैठ गई। पापा ने एक घूंट लिया, सिगरेट जलाई और लड़की से पूछा,-
"कुमारी, क्या आपका कोई व्यावसायिक मित्र जो आपकी मदद कर सकता है, आपकी ओर से गवाही देने को तैयार होगा?"
कुछ देर सोचने के बाद लड़की ने कहा, "हां, मेरे दो-तीन दोस्त ऐसे हैं; लेकिन आप किस मुद्दे पर उनकी गवाही चाहते हैं?"
मैं अभी ऐसा नहीं कह रहा हूँ; मुझे बस ऐसे ही एक गवाह की ज़रूरत है!
लड़की ने तुरंत कोने में पड़ा फोन उठाया और डायल किया।
"हैलो! कौन है? मिली? शुभ संध्या! मैं अंग्रेजी में बात कर रही हूँ!" "बोलो! ओह, आज उस मामले में क्या हुआ?" मुझे फोन के दूसरी तरफ की आवाज साफ सुनाई दे रही थी।
"मेरे पास तुम्हारे लिए एक काम है! क्या तुम आ सकते हो?"
"क्यों नहीं?"
लेकिन अगर आपकी सगाई नहीं हुई है, तो भी आइए!
"भले ही ऐसा हो, लेकिन जब आप कहते हैं कि आपको आमंत्रित किया गया है, तो आपको आना ही होगा!"
“चलो फिर!” कुमारी ने रिसीवर नीचे रखा और अपने पिता की ओर देखकर बोली, “पिछले साल मिली को टाइफाइड हो गया था! उसके बचने की कोई गारंटी नहीं थी। उसकी माँ ने मुझसे एक हज़ार रुपये उधार लिए थे। मिली मीटिंग के बाद पैसे लेकर आई थी; लेकिन मैंने नहीं लिए। उसने बस इतना कहा कि अगर समय मिला तो आपको फोन कर दूँगी! उस समय मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मेरे साथ ऐसा कुछ होगा!”
"बहुत बढ़िया! यह लड़की कैसी दिखती है?" पापा ने पूछा।
"वहाँ पहुँचने पर आपको यह दिख जाएगा! बेहद खूबसूरत!"
"वह इन गडकरी लोगों को जानती थी!"
"हाँ! गडकरी कभी-कभी खूबसूरत वेश्याओं के पास जाया करते थे! वे उन्हें खाते-पीते, पीटते और सुबह उठने पर अपने साथ पंद्रह सौ रुपये ले जाते थे!" "भयानक आदमी!"
"तो आप क्या कह रहे हैं! कभी-कभी मुझे लगता है कि इतने सारे बच्चों को उनकी यातना से बचाकर मैं कुछ पुण्य अर्जित कर लूंगी!"
पापा हँसे और बोले, "पाप और पुण्य सब कल्पना का खेल है, कुमारी! मैं इसमें विश्वास नहीं करता!"
पंद्रह मिनट के भीतर मिली आ गई, गोरी, थोड़ी चंचल मिली पंजाबी पोशाक में बेहद आकर्षक लग रही थी। पापा से उसका परिचय कराते हुए कुमारी ने कहा,- "मिल्ली, मेरे वकील श्री ठाकुर से मिलो!"
मिली ने पापा से हाथ मिलाया। पापा ने सबसे पहले उसके नाखूनों को देखा। चिकने और रंगे हुए नाखूनों को देखकर पापा ने कहा, "मुझे तो ऐसी ही गवाह चाहिए थी!"

पिताजी ने मार्था और मुझे हॉल से बाहर जाने का इशारा किया। हम दोनों के उठने के बाद, उन तीनों के बीच काफी देर तक कुछ चल रहा था। उस रात न तो मार्था और न ही मुझे पता था कि क्या हो रहा है; लेकिन जब मिली अदालत में उस लड़की के पक्ष में गवाह के तौर पर पेश हुई, तो सब कुछ स्पष्ट हो गया।
- ०-०-०-

१९
सरकारी पक्ष ने इस तरह का मामला पेश किया कि इंस्पेक्टर गडकरी गैलरी में शराब पीकर खड़े थे, तभी कुमारी ने उन्हें धक्का दे दिया। शराब के नशे के कारण वे अपना संतुलन नहीं बना पाए और गिर गए। धक्का देने से पहले कुमारी ने उनसे हाथापाई भी की थी, इसीलिए उनकी गर्दन और गले पर नाखूनों के खरोंच के निशान दिखाई दे रहे थे।
सरकारी पक्ष के अंतिम गवाह इंस्पेक्टर सखरा कटघरे में खड़े हुए। उन्होंने सरकारी सबूतों को आपस में जोड़कर दिखाया कि कुमारी हत्या की दोषी थी। पिताजी ने उनसे जिरह करते हुए कहा कि अगर कुमारी इंस्पेक्टर गडकरी को मारना चाहती थी, तो इस तरह से मारने का कोई कारण नहीं था। वह रात भर उसके घर पर रुकने वाले थे, कुमारी रात में सोते समय कभी भी उनकी जान ले सकती थी; ऐसे क्रूर कदम की कोई जरूरत नहीं थी।
सरकार की गवाही समाप्त होने के बाद, अदालत ने कुमारी से पूछा कि वह सबूतों के बारे में क्या सोचती है, और उसने कहा-
उस रात इंस्पेक्टर साहब ने बहुत ज़्यादा शराब पी रखी थी। मेरे घर आने से पहले ही वो नशे में थे। मेरे घर आकर उन्होंने फिर से शराब पीना शुरू कर दिया। जब मैंने उनसे ऐसा न करने की विनती की, तो उन्होंने कहा, "बहन, तू वेश्या बहुत नशे में है! मैं उस चक्की पर गया था, लेकिन बहन ने मुझे छुआ तक नहीं। जब मैंने उसे पास खींचा, तो वो सहम गई! वो बिल्ली प्रेमी है! मैं उसे फोरस रोड पर फेंक दूँगा! आज मेरी सगाई है! वेश्या की सगाई कब होती है? उसका मालिक घर आएगा!" उन्होंने अपनी कमीज़ उतारकर मुझे अपनी गर्दन पर खरोंचें दिखाईं। मैंने धीरे से हाथ हिलाकर उनसे कहा, "लेकिन अब पीना बंद कर दे!" इस पर उन्होंने कहा, "क्या तुम मुझे सिखा रही हो? मैं यहीं घास पर खड़े-खड़े पी लूँगा!" यह कहते हुए उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे खींच लिया! उस जल्दबाज़ी में उनके हाथ का गिलास टूट गया। उन्होंने मुझसे कहा, "दूसरा गिलास लाओ।" मैं गिलास लेने अंदर जा ही रही थी कि घास पर उनका संतुलन बिगड़ गया और वे गिर पड़े। जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि गिलास टूट गया है, मैं चीख पड़ी। मार्था दौड़ती हुई आई। जो हुआ मैंने उसे बता दिया।"
कुमारी का खुलासा पूरी तरह झूठा था; लेकिन उसने पिताजी के कहने पर अपना बचाव जारी रखा। कुमारी के बयान की पुष्टि करने के लिए मिली आरोपी के पक्ष में गवाह बनकर अदालत में आई थी। उसने शपथ लेकर कहा था कि उसी शाम उसने गडकरी की गर्दन पर खरोंच के निशान बनाए थे। इसके बाद सरकारी वकीलों ने उससे कई बार जिरह की, लेकिन मिली टस से मस नहीं हुई। इसके विपरीत, उसने विस्तार से बताया कि कैसे गडकरी ने कई वेश्याओं के साथ छेड़छाड़ की और उनसे पैसे ऐंठ लिए।
अंत में, दोनों पक्षों के वकीलों ने अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया। सरकारी वकीलों ने दावा किया कि आरोपी कुमारी ने उन्हें गैलरी से धक्का दिया था और इसे महज एक दुर्घटना साबित करने का प्रयास मनगढ़ंत और झूठा था।

फिर पिताजी उठे और अपना पक्ष रखने लगे। उन्होंने कहा, “वैलास्वसी गडकरी पुलिस विभाग के लिए कलंक थे, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उन्हें और बदनाम किए बिना, मैं यह कहना चाहता हूँ कि गडकरी कौन थे और उनका स्वभाव कैसा था, इस बारे में सोचे बिना, हम यह देखना चाहते हैं कि क्या कुमारी इस मामले में हत्या की दोषी हैं! पहले, वह मिली के पास गए थे। मिली की सगाई हो चुकी थी। हमने अभी-अभी शपथ पर उनका बयान सुना है। इस मामले में उनके पास झूठी गवाही देने का कोई कारण नहीं है! गडकरी उनके पास गए थे। उन्होंने उन्हें छेड़ने की कोशिश की। अगर वह वेश्या भी बन जाती हैं, तो भी उन्हें कुछ हद तक आज़ादी है। उस शाम, जब उन्होंने उनकी इच्छा नहीं मानी, तो उन्होंने उन्हें जबरदस्ती उठाने की कोशिश की, और उनकी गर्दन और गले पर खरोंचें आ गईं। ये खरोंचें मिली ने ही बनाई थीं।”
‘‘बाद में गडकरी कुमारी के पास आए। क्रोधित होकर गडकरी कुमारी से पानी मांगने लगे। उस समय वे दोनों छत पर खड़े थे। पंचनामा के अनुसार छत का किनारा ढाई फीट ऊंचा है। उस समय, बहुत अधिक नशे में धुत गडकरी का संतुलन बिगड़ गया और वे गिर पड़े। कुमारी का बचाव काफी तर्कसंगत लगता है! खैर, अगर कुमारी ने उन्हें जबरदस्ती धक्का देने के बारे में सोचा होता, तो यह असंभव होता। अगर गडकरी ने उन्हें जोर से थप्पड़ मारा होता, तो कुमारी जमीन पर गिर जातीं और यह मानना कि कुमारी ने इतने हट्टे-कट्टे आदमी को छत से धक्का दिया होगा, तर्क, बुद्धि और समझदारी का त्याग करने जैसा होगा!
कुमारी पूरी तरह निर्दोष है! गडकरी की हत्या नहीं हुई थी, उनकी मृत्यु दुर्घटना में हुई थी! लेकिन यह झूठा मामला सिर्फ इसलिए गढ़ा गया है क्योंकि वह एक पुलिस अधिकारी थे। इस मामले में कोई सच्चाई नहीं है। आरोपी कुमारी निर्दोष है। उसे बरी किया जाना चाहिए!
पिताजी ने न्यायाधीश को डॉक्टर द्वारा की गई जिरह याद दिलाते हुए कहा, “डॉक्टर निश्चित रूप से यह नहीं बता सके कि शरीर पर खरोंचें कब लगीं। इसका यह मतलब नहीं है कि ये खरोंचें कुमारी ने खुद लगाई थीं, बल्कि मिली का खरोंचों के बारे में दिया गया विवरण अधिक सुसंगत और विश्वसनीय लगता है! रासायनिक विश्लेषक ने कहा है कि गडकरी परिवार के भोजन में शराब पाई गई थी! यह सच है कि उन्होंने बहुत अधिक शराब पी थी और अपना संतुलन खो बैठे थे!” "अब, अगर कुमारी जानबूझकर गडकार्य को मारना चाहती थी, तो उसके घर में काम करने वाला समर ठाकुर, मार्था और वह खुद, ये तीनों बिना किसी झंझट के उसे मार सकते थे और शव को ठिकाने भी लगा सकते थे!"
"सरकार का मामला पूरी तरह से झूठा और मनगढ़ंत है। मुझे यह कहते हुए खेद है कि यह मामला पुलिस विभाग द्वारा हमारे एक दिवंगत अधिकारी को शहीद बनाने का एक कायरतापूर्ण प्रयास है... एक युवा महिला के हाथों ऐसी भयावह घटना होना संभव ही नहीं है! मैं निवेदन करता हूँ कि उसे बरी किया जाए!"
न्यायाधीश ने दोनों पक्षों के वकीलों के भाषणों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने गंभीर भाव से दोनों की बातें सुनीं। फैसला सुनाने की तारीख की घोषणा करने से पहले, न्यायाधीश ने सरकारी वकीलों से कहा, “श्रीमान

अभियोक्ता, मैं वह फ्लैट देखना चाहता हूँ जहाँ से मृतक गिरा था! इसे अभी के बयान में जोड़ दीजिए!”
यहां तक कि पापा को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि जज कुमारी के फ्लैट और छत को देखने का फैसला करेंगे।
जज, सरकारी वकील, पिताजी, कुमारी, इंस्पेक्टर सखरा और मैं फ्लैट पर पहुँचे। जज ने पूरे फ्लैट का जायज़ा लिया और फिर छत पर आ गए। उन्होंने छत का किनारा पकड़ लिया और नीचे देखने लगे, उनकी आँखें नीचे की ओर घूम रही थीं। “श्री सखरा, क्या आपको नहीं लगता कि इस छत की ऊँचाई बहुत कम है?”
"जी हाँ!" चीनी निरीक्षक ने किनारे पर हाथ रखते हुए कहा, "लेकिन फिर भी संतुलन खोना असंभव है!"
‘‘इसका फैसला मैं करूंगा!’’ हंसते हुए जज ने कहा।
उसने अपने साथ आए अधीक्षक से फ्लैट का पंचनामा अभिलेखों से हटाने को कहा। पंचनामा में उल्लेख था कि गैलरी के पास एक टूटा हुआ कांच पड़ा है।
जज ने लड़की पर कड़ी नजर रखी। हालांकि, मार्था सामने नहीं आई। सरकार ने उसका बयान नहीं लिया। क्योंकि अगर उससे पूछताछ की जाती, तो शायद वह ऐसा बयान दे देती जिससे लड़की की रिहाई में मदद मिल सकती थी।
सबके चले जाने के बाद पिताजी ने कहा, "ठीक है, अदालत ने जगह देख ली है!" "लेकिन आपको क्या लगता है कि क्या होगा?" मैंने पापा से पूछा।
"मामला पचास-पचास का है! संदेह का लाभ दिया जा सकता है! देखते हैं। नतीजे चार दिन में आ जाएंगे! ठीक है, आज ही मेरी बुकिंग करा दीजिए और आकर देख लीजिए। वैसे भी, मुझे आज जाना होगा!"
"क्या तुम जा रहे हो? परिणाम आने तक यहीं रुको!" मैंने कहा।
नहीं नहीं! इतनी देर तक रुकना ठीक नहीं है!
"लेकिन अगर उसे सजा मिल जाए तो क्या होगा?"
"तो फिर उच्च न्यायालय में अपील करो!"
"पापा, कृपया चार दिन रुक जाइए!" मैंने पापा से विनम्र स्वर में कहा।
फिर उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा,-
"समर, मुझे जाना होगा, और अगर उसे सज़ा मिलती है, तो यहाँ कोई उसकी ज़मानत करवा दे और मुझे टेलीग्राम भेज दे! मैं भी हाई कोर्ट आऊँगी। लेकिन मुझे कल जाना होगा!"
कुमारी भी चाहती थी कि पापा चार दिन रुकें; लेकिन उसने पापा पर ज्यादा जोर नहीं दिया। वह परिणामों का सामना करने के लिए तैयार थी।
जब पापा बोरीबंदर में विदाई ले रहे थे, तब कुमारी ने उन्हें एक बटुआ दिया। "यह क्या है?" पिताजी ने पूछा।
कुछ तो है, लेकिन रहने दो!
पिताजी ने उसे खोला और देखा कि उसमें तीस सौ रुपये के नोट थे।
"बस इतना ही! तुमने इतना ही भुगतान किया?" पापा ने बटुआ वापस देते हुए कहा, "अगर मैं डेढ़ महीने तक हर दिन स्कॉच व्हिस्की और पश्चिमी खाना खाता, तो भी पाँच हज़ार रुपये नहीं लगते, बेटा, इसे अपने पास ही रखो!"
पिताजी ने फीस लौटा दी। घंटी बजते ही पिताजी ने मार्था की ओर देखा और कहा,-

"शाबाश मार्था! तुम बाल-बाल बच गई! लेकिन फिर कभी किसी को इस तरह मत उठाना!" पापा के जाने के बाद, मैं, कुमारी और मार्था फ्लैट में लौट आए। कुमारी ने मुझसे कहा,
"पापा ने पैसे क्यों नहीं लिए? क्या उन्हें लगा कि पैसे बहुत कम थे?"
"अरे! वे इतने धनी थे कि उन्हें आपसे पैसे लेने में असहजता महसूस हुई!" "समर, तुम्हारी औपचारिकता अभी भी खत्म नहीं हुई है। मुझे 'अहोया' कहना बंद करो! अच्छा, तुम्हारी पत्नी क्या कहती है? क्या तुमने शराब पीना कम कर दिया है?"
"मैं कल शाम उसे डॉक्टर चोक्सी के पास ले गया था। उन्होंने कहा कि अगर वह शराब पीना बंद नहीं करेगा, तो उसे लीवर में फोड़ा हो जाएगा! और एक बार लीवर खराब हो जाए, तो फिर कुछ भी करने का कोई फायदा नहीं!"
"तो उसने क्या समाधान सुझाया?"
"उसका कहना है कि शराब की लत छुड़ाने के लिए उसे कुछ दिनों तक मेथम्फेटामाइन के इंजेक्शन लेने चाहिए!"
"मॉर्फिया? ओह, लेकिन अगर आपको इसकी आदत हो जाए, तो यह शराब से भी बदतर है!" "क्या करना है मुझे बताओ?"
मुझे उससे एक बार मिलने दो!
"क्या मैं आपसे मिलूँ? वह आपके बारे में अच्छी राय नहीं रखती!"
"यह तो स्वाभाविक है। लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए!"
"धन्यवाद! लेकिन उससे मिलने की कोशिश मत करना!"
उल्का में बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैंने उसकी जिंदगी बर्बाद कर दी हो। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि विलास के बच्चों को स्कूल छोड़ते समय उल्का की मुझसे मुलाकात मेरी और उसकी जिंदगी में इतनी पेचीदा स्थिति पैदा कर देगी। अब कुमारी उससे मिलना चाहती थी, लेकिन यह मुमकिन नहीं था। उल्का उससे कुछ ऐसा कह देती जिससे उसे ठेस पहुँचती और... नहीं, इन दोनों का मिलना नामुमकिन था!
चौथे दिन, मामले का फैसला सुनाया गया। कुमारी को बरी कर दिया गया। न्यायाधीश ने उन्हें संदेह का लाभ दिया। फैसला सुनने के लिए अदालत में भारी भीड़ थी। अंत में, कुमारी और मुझे पुलिस सुरक्षा में बाहर आना पड़ा। जैसे ही हम बाहर आ रहे थे, दो-तीन फ्लैशगन दागे गए। एक अखबार के रिपोर्टर ने कुमारी से पूछा, -
इस परिणाम पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?
भीड़ से बाहर निकलते हुए उसने कहा, "मैं कुछ नहीं कहना चाहती!" लेकिन जिद्दी रिपोर्टर ने कहा, "अगर आप अभी कुछ नहीं कहना चाहतीं, तो मत कहिए, लेकिन अगर आप मुझे घर जाने देंगी, तो मैं जरूर कहूँगा!"
मैंने लड़की का हाथ पकड़कर उसे टैक्सी में बिठाया और ड्राइवर से कहा, "वर्ली नाका-परवीन विला!"
मार्था ने कुमारी से मुस्कुराते हुए मुलाकात की। दोनों की आँखों में आँसू भरे हुए थे। एक बड़ा संकट टल गया था।

"गर्मी, कुछ मिठाई लाओ!" मार्था ने मुझे बीस रुपये दिए।
लेकिन कुमारी ने उसका हाथ थामते हुए कहा, "समर, मिठाई या दावत की कोई ज़रूरत नहीं है। हमें कोई बड़ी जीत नहीं मिली है। हमारे हाथों एक आदमी मारा गया है। इस पर खुशी ज़ाहिर करने की कोई ज़रूरत नहीं है!"
कुमारी की बात मुझे समझ आ गई थी। मुकदमे के बाद से ही मैंने उसके व्यक्तित्व में बदलाव देखा था। वह घंटों अकेले समुद्र को निहारती रहती थी। उसने अच्छे कपड़े पहनना छोड़ दिया था। वह कभी-कभार शराब पीती थी; लेकिन उसमें कोई लगाव नहीं था।
इस मामले के बाद से कुमारी के पास कोई ग्राहक नहीं आ रहा था। गडकरी जैसे शक्तिशाली पुलिस अधिकारी की हत्या करने वाली कुमारी को उसके प्रशंसकों ने भी ठुकरा दिया था। एक तरह से जो हो रहा था, वह अच्छा ही था। ऐसा नहीं था कि कुमारी को उस धंधे में बहुत दिलचस्पी थी। उसकी एक इच्छा थी और उसे कोई दूसरा रास्ता नहीं दिख रहा था। इस मामले की वजह से उसे वह इच्छा अपने आप मिल गई। उसके ग्राहक आना बंद कर चुके थे।
फैसले के बाद मेरी भावनाएं और भी तीव्र हो गईं। "उन्होंने न केवल गडकरी हत्याकांड में खुद को शामिल नहीं किया, बल्कि कुमारी को भी इस मामले से बरी कर दिया!"
"'समर!'" कुमारी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। मैं गया और उसके सामने खड़ा हो गया।
"मेरा मन कर रहा है कि मैं किसी भी शहर में जाकर चार दिन रुक जाऊं! क्या हम भवानी नगर चलें चार दिन के लिए?"
"भवानी नगर?"
"हां! जब मामला चल रहा था, तब मैंने मन में तय कर लिया था कि एक बार इससे मुक्त हो जाने के बाद, मैं भवानी से मिलने जाऊंगा।"
"मुझे जाने में कोई आपत्ति नहीं है, लड़की, लेकिन अगर मैं तुम्हारे साथ आता हूँ, तो इसका मतलब है..."
मैं रुक गया, समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहूँ। लेकिन माँ को देखे हुए लगभग एक साल हो गया था। मैंने भवानीनगर न लौटने की कसम तो नहीं खाई थी। मुझे अपने पुराने दोस्त धोंडू मास्टर से मिलने और उनके साथ चार दिन बिताने का मन कर रहा था, इसलिए मैंने कहा, "चलिए! लेकिन मुझे उल्का के लिए यहाँ कुछ इंतज़ाम करने होंगे।"
"तो वे कह रहे थे, 'एक बार उससे मिल लो। अगर वह मेरे घर पर भी रुक जाती, तो भी ठीक रहता। मार्था यहीं थी।'"
"यह असंभव है! आप कब जाना चाहते हैं? मैं उसके लिए व्यवस्था कर दूंगा।" "परसों चलते हैं।"
जब मैं बांद्रा पहुंचा, तो उल्का मोहल्ले की एक लड़की को कुछ सिखा रही थी। सौभाग्य से, उसके मुंह से शराब की गंध नहीं आ रही थी। “कोई बात नहीं। बस इस गली के बच्चों को पढ़ाने के लिए एक क्लास शुरू कर दो। तुम्हें नौकरी की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।”

"अरे, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैंने इतने लंबे समय तक इस बारे में क्यों नहीं सोचा। वहाँ कोलिया की एक बस्ती है। वहाँ बहुत सारी लड़कियाँ हैं। जब मैंने कहा कि मैं उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाऊँगी, तो उन्होंने कहा, 'हमारे कोलियावाड़ा में आ जाओ।'"
"आपके पास कोई न कोई व्यावसायिक अनुभव तो होना ही चाहिए। आप तो तरह-तरह की बातें इसलिए कह रहे थे क्योंकि आपके पास कोई व्यावसायिक अनुभव नहीं था।" उल्का ने अपने सामने खड़ी लड़की से कहा, "कल आना।"
मैंने अपने जूते उतारे और हाथ-पैर धोने के लिए बाथरूम में गई। मैंने अपनी पैंट उतारी और लुंगी पहनकर बगल वाले कमरे में उल्का के पास बैठ गई और बोली, "उल्का, तुम किसी बात में इतनी मग्न हो गई हो कि तुम्हें शराब का भी पता नहीं चलेगा!"
"ऐसा दोबारा नहीं होगा!"
‘‘का?’’
"मैं चोक्सीबाई से मॉर्फिन की थोड़ी सी खुराक लाया हूँ! अच्छा लगता है, धूम्रपान करो!"
मैंने अपने माथे को छुआ।
"लोग कहते हैं कि एक बार आपको मारिजुआना की लत लग जाए तो यह मरने तक नहीं छूटती। साथ ही, लत बहुत महंगी होती है।"
"खर्चा?" उल्का ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "अरे, जब तुम इतनी अमीर मालकिन के लिए काम कर रही हो तो मुझे पैसों की कमी क्यों होगी? तुम एक रात के हज़ार रुपये लेती हो, है ना कुमारी?"
"भूल जाओ! कुमारी ने अपना कारोबार बंद कर दिया है!"
मुझे एक बात बताओ! बुढ़ापे में उसे कारोबार बंद क्यों करना पड़ा?
"ऐसा लगता है कि आपको इस मामले के बारे में कुछ भी पता नहीं है?"
"मुझे लगता है मैंने कुछ सुना था। उसकी हत्या एक इंस्पेक्टर ने की थी, इसलिए उस पर मुकदमा चलाया गया!"
"उल्का, यही तो माफिया की शान है! मामला उस लड़की के खिलाफ था और वह भी इंस्पेक्टर की हत्या के आरोप में!"
‘‘मैं समझ गया! फिर उस मामले का क्या हुआ?’’
"मासूम!"
"बहुत खूब! अब हमें कीमत बढ़ा देनी चाहिए!"
यह उल्कापिंड की तरह जल रहा था। मेरा सिर दर्द कर रहा था।
"उल्का, मैं चार से आठ दिनों के लिए भवानी नगर जा रहा हूँ!"
"तो मैं भी आऊंगा!"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने कहा, "पापा परसों आए थे और बोले, 'मम्मी मुझे बहुत याद करती हैं। आप चार दिन के लिए यहाँ आकर रह लीजिए।'"
"तो मुझे अपने साथ ले चलो! क्या दिक्कत है? मैं बाहर ही रहूंगा, तुम्हारे घर नहीं आऊंगा।"
"उल्का, तुम इस तरह बार-बार क्यों आ-जा रही हो? वैसे भी, जब से तुम आई हो-"

"क्या हो जाएगा?"
"वहां के लोगों को चर्चा के लिए कोई न कोई विषय मिल ही जाएगा।"
मैंने उल्का को ये बात बताई, लेकिन मेरा मन मुझे अंदर ही अंदर खा रहा था। मैं कुमारी को अपने साथ भवानी नगर ले जाने वाली थी; क्या इससे लोगों को बात करने का कोई विषय नहीं मिल जाता? लेकिन अब तक मुझे बड़ी चतुराई से झूठ बोलने की आदत पड़ चुकी थी।
"इसमें क्या दिक्कत है, उल्का? भवानी नगर मुंबई के मुकाबले बहुत छोटा गाँव है। वहाँ अच्छे होटल भी नहीं हैं। वैसे भी, मैं उस गाँव को अच्छी तरह जानता हूँ। बेहतर होगा कि तुम न आओ।"
"क्या तुम जल्द वापस आओगे?"
"चार दिनों के भीतर।"
"मुझे कुछ पैसे दो और जाओ।"
"मैं तुम्हें ये दे दूंगी, लेकिन चोक्सीबाई से मॉर्फिया मत लेना। मैं एक लत छोड़ने के चक्कर में दूसरी लत नहीं लगाना चाहती!" मैंने उल्का को 150 रुपये देते हुए कहा, "इसे समझदारी से खर्च करना।"
‘‘का?’’
"कुमारी ने कारोबार बंद कर दिया है। शायद अब मुझे नौकरी या कोई दूसरा पेशा ढूंढना चाहिए!"
"मुझे अनुमान नहीं था!"
"तुम्हें ऐसी कई बातों का कोई अंदाजा नहीं था, और अब भी नहीं है। तुम दिन भर नशे में थे।"
उल्का ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं आपकी प्रशंसा करती हूँ, समर! आपको शराब की लत क्यों नहीं लगती?"
"मैं बचपन से ही शराब से परिचित हूँ, उल्का! इस शराब ने एक बार मेरे पिता के व्यवसाय को पूरी तरह ठप्प कर दिया था। इस शराब ने मेरी माँ को बहुत पीड़ा दी थी। यह मनुष्य में राक्षसी प्रवृत्ति को जगाती है और हमेशा मनुष्य को उसके अंतर्मन की गहराइयों से बाहर निकालने के लिए तैयार रहती है।"
‘‘यह वाक्य नाटक से कहाँ से लिया गया है?’’
"ये अनुभव के शब्द हैं! ये किसी नाटक की पंक्तियाँ नहीं हैं, याद है ना? मैं जा रहा हूँ।"
उल्का ने अपने हाथ में मौजूद नोटों को हिलाते हुए कहा, "आओ!"
पुणे में उल्का के प्रति जो आकर्षण मेरे मन में था, मुंबई आने के बाद गायब हो गया। पहली बात तो यह कि मैं तब उसके जिद्दी स्वभाव से परिचित नहीं थी, और दूसरी वजह थी खांसी शुरू होने के बाद से उसकी शराब की लत! मुझे उसके चरित्र पर कभी शक नहीं होता; लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मोंटेसरी में स्नातक की डिग्री हासिल कर चुकी उल्का कुछ मायनों में इतनी जिद्दी निकलेगी। जब मैं उल्का की ओर आकर्षित थी, तब मैं अल्का से बदला लेना चाहती थी। विलास के घर में रहते हुए उल्का ने मुझे दिखा दिया था कि मेरा कोई भविष्य नहीं है। यह जानते हुए भी कि मेरी शादी अल्का से हो चुकी है, उसने मुझे स्वीकार कर लिया। चूंकि वह घर पर इस शादी को स्वीकार नहीं करती,

इसलिए उसने अपना घर भी छोड़ दिया। मुंबई आने के बाद अपने पैरों पर खड़े होने का उसका सपना पूरी तरह चकनाचूर हो गया। इसीलिए मुझे नौकरानी का काम करना पड़ा!
लेकिन अब जो कुछ हुआ उसे याद रखने का क्या फायदा? जो होना था वो तो हो ही गया! मैं बांद्रा टॉकीज के पास बस का इंतजार कर रहा था तभी एक कार मेरे सामने आकर रुकी। जब मैंने देखा तो वो जॉकी विलास था। "अंदर आ जाओ!" अपने बगल वाले दरवाजे को खोलते हुए उसने कहा, "इंसान हो या जानवर?"
उसने दोबारा कार स्टार्ट की और वह सड़क पर तेजी से दौड़ रही कई कारों की कतार के साथ-साथ दौड़ने लगी।
मैंने पूछा, "क्या हुआ?"
"क्या आप यहां आने के बाद से कम से कम एक पत्र भेजना चाहते थे? आप कहां थे? उटेका कैसी है? क्या उसे नौकरी मिल गई?"
नहीं! मेरे साथ कुछ खास नहीं हुआ है जिसके बारे में मैं आपको बताऊं। बच्चे कैसे हैं?
"क्या आज आपको बच्चों की याद आई?"
"नहीं, महोदय। मैं इसके बारे में सोचता रहा; लेकिन मैं क्या कर सकता था? मेरे आस-पास ऐसी अजीबोगरीब स्थिति थी कि मेरे पास इसके अलावा कुछ और सोचने का समय ही नहीं था!"
"वाह वाह! बच्चे आज मुंबई में हैं! सीज़न अगले रविवार से शुरू हो रहा है! मैं बच्चों को ले आया! अब आप कहाँ जा रहे हैं?"
"वर्ली के लिए!"
वर्ली? कहाँ?
"वर्ली में 'परवीन विला' में!"
"परवीन विला!" गाड़ी चलाते समय विलास ने मेरी तरफ देखा और तुरंत आगे देखते हुए कहा, "उस इमारत में मेरा एक परिचित रहता है!"
"कौन?"
कुमारी! अरे यार! समर, मैं तुम्हें क्या बताऊँ! मैंने अनगिनत महिलाओं और लड़कियों को रेसकोर्स पर हमारे लिए अपनी जान कुर्बान करते देखा है; लेकिन कुमारी के सामने कोई नहीं टिक सकता। परसों उसके खिलाफ झूठा केस दर्ज किया गया था! लेकिन उसे रिहा कर दिया गया, अब तुम किसके पास जाओगे?
मुझे विलास का मजाक उड़ाने का भी मन हुआ। मैंने कहा, "अयंगर साहब ने उसे महालेखाकार के कार्यालय में बिठा रखा है!"
"तुम अभी क्या कर रहे हो?"
"ये खाली है!"
"इतने दिन?"
‘‘जी हां, आपने जिस माघा का जिक्र किया वह कौन है?’’
"कुमारी! क्या तुमने उसे कभी देखा है? अरे, जब वो रेसकोर्स आती थी, तो सारे सट्टेबाज अपने हारे हुए टिकट हड़पना छोड़कर उसे ही घूरते रहते थे! मैं भी कभी-कभी वहाँ जाता था! लेकिन उसने मुझसे कभी कुछ नहीं लिया!" मैंने पुणे में उसके घर पर देखा था कि विलास स्वभाव से थोड़ा शरारती था। लेकिन मुझे ये

बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि वो और कुमारी इतने अच्छे दोस्त होंगे। "क्या तुम उसके घर चाय पीने चलना चाहोगी?" विलास ने मुझसे पूछा।
"चलो! देखते हैं वो कैसी है? तुम तो उसका इतना वर्णन कर रहे हो!" विलास मुंबई की गाड़ियों के बीच से सरायता की तरह गाड़ी चला रहा था। गाड़ी चलाते हुए उसने कहा, "उस पर इंस्पेक्टर गडकरी को छत से धक्का देने का आरोप लगा था! लेकिन गडकरी तो आग थे! अरे, जब वो रेसकोर्स आते थे, तो प्राइवेट सट्टेबाजों के पसीने छूट जाते थे! वो जितने कठोर होते थे, उतने ही चालाक भी! सारे अपराधी उनसे डरते थे! कुमारी के घर जाते ही वो वहीं गिर पड़े। वो बहुत शराब पीते थे!"
मैंने चेहरे पर उत्साह का भाव लिए कहा, "क्या कुमारी ही उसकी मौत का कारण नहीं बन सकती थी?"
अरे! ये तो मुमकिन ही नहीं! वो तो बदमाश था! एक बार उसने मुझे पार्टी में बुलाया, हमने मुंबई से बाहर खाने-पीने का प्लान बनाया! कहाँ जाएँ? हम पवई गए! अभी जो आई.आई.टी. है, वो उसके बाईं ओर है! जगह ज़बरदस्त थी। गडकरी अपने साथ तीन बच्चे लाया था। पंद्रह-सोलह साल के! समर, तुम सोच भी नहीं सकते, मुझे उन बच्चों को छूने से भी डर लग रहा था जो अभी-अभी बालिग हुए थे! हम तीनों और वो तीन बच्चे। हमने पीना शुरू किया और वो दोनों बहुत लंबे हो गए। वो बच्चे मेरे चारों ओर जमा हो गए। रात हो चुकी थी। मैं होश में था। लेकिन मैं उन बच्चों को छूना नहीं चाहता था। लेकिन अगले दिन गडकरी ने मुझसे कहा, ''तुम तीन घोड़ों पर सवार हुए और सारी रेस एक ही घोड़े पर!'' गडकरी कितना विकृत इंसान था! वो बच्चों को बहुत सताता था! उन्हें नोचता था, उनके हाथ मरोड़ता था। मैंने ये भी सुना है कि उसने कुछ व्यापारियों को सिगरेट के टुकड़े दिए थे। उसकी मौत कुमारी के घर में दर्ज की गई थी।
हमने परवीन विला के पास कार रोकी और लिफ्ट में चढ़ गए। विलास ने दरवाजे का बटन दबाया। मार्था ने दरवाजा खोला।
"तुम्हारी प्रेमिका कहाँ है?"
मार्था ने मुस्कुराते हुए कहा, "हां, मैं उन्हें बताती हूं!"
मार्था अंदर चली गई। मैंने नखरे दिखाने का नाटक किया और विलास के बगल में बैठ गई, कुर्सी के हैंडल को ऐसे थपथपाने लगी जैसे मैं तबला पकड़े हुए हूँ। सफेद साड़ी पहने एक युवती अंदर आई। विलास को देखकर उसने पूछा, "तुम कब आए?" मैं परसों मुंबई पहुंचा! रेस का सीज़न अगले रविवार से शुरू हो रहा है! "हां, बिल्कुल सही!" युवती ने याद करते हुए कहा।
मैं स्थिति को समझता हूँ! यह एक आपदा थी!
लड़की ने बस मुस्कुरा दिया।
"कुमारी, मैं तुम्हें अपने दोस्त समर ठाकुर से मिलवाता हूँ! हम दोनों भवानी नगर से हैं!"
कुमारी विलास के इस बयान से हैरान थी, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि विलास को मेरे बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

"वो बड़ा और आकर्षक आदमी है, लेकिन ये क्या बकवास कर रहा है, उससे नाराज़ है!" मैं छत को घूरता रहा और सोचता रहा, "विलास को मेरे बारे में जो कहना है कह लेने दो।"
आप क्या लेना चाहेंगे? चाय, कॉफी या कोई ठंडा पेय?
"कुछ भी चलेगा, लेकिन अगर मुझे एक गिलास बीयर मिल जाती तो और भी अच्छा होता!" विलास ने कहा।
"बीयर? ठीक है! समर, नीचे से दो बीयर ले आओ!" हमेशा की तरह कुमारी बोल पड़ी! मैं उठा और टोकरी लेकर नीचे चला गया। जब मैं बीयर लेकर आया, तो विलास ने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, "अरे वाह - तुम तो बिल्कुल मुंबई मावली बन गए! मुझे एक थांगपट्टा भी नहीं दिया?"
मैं मुस्कुराया और बीयर की बोतलें फ्रिज में रख दीं। मार्था ने मुझसे कहा, "क्या आज तुम अजीब व्यवहार कर रहे हो?"
"कैसे?"
‘‘आप जानते हैं कि वे बेहतरीन अभिनय कैसे कर सकते हैं!’’
"लेकिन आपसे कम! आपने तो मुंबई पुलिस को भी चकमा दे दिया था! आपने अपने मासूम चेहरे से सबको मोहित कर लिया था! अभिनय की यह कला मुझमें आपकी संगति की वजह से ही आई!"
मार्था गुस्से से मेरी ओर दौड़ी। मैं ताला खोलने वाला औजार लेकर हॉल में आया। विलास वहाँ सिगरेट पीते हुए कुमारी से बातें कर रहा था।
"आप कुछ भी कह लें, मुझे यह पसंद नहीं है। आप रेसिंग छोड़ सकते हैं, अपना व्यवसाय बंद कर सकते हैं; लेकिन मुझे मुंबई छोड़ने का विचार पसंद नहीं है," विलास ने कुमारी से कहा।
"एक सैन्य अधिकारी ने नेरल में एक खेत पर बंगला बनवाया है। उसके चारों ओर चार-छह एकड़ जमीन है। वह ढाई लाख रुपये मांग रहा है; मैंने डेढ़ लाख रुपये तक की पेशकश की है।"
लेकिन मैंने कहा कि आप मुंबई गए थे?
"उस घटना के बाद से मैं मुंबई में नहीं रहना चाहता। पुलिस विभाग मुझे चैन से जीने नहीं देता, विलास! कल शाम ही एक सब-इंस्पेक्टर मेरे पास आया और मुझे धमकी दी।"
"किस लिए?"
मैं तुम्हें क्या बताऊं? इस दुनिया में स्त्री के रूप में जन्म लेना पाप है! और एक बार किसी स्त्री के पैर कटे हुए देख लिए जाएं, तो मरने तक कोई भी उसे अच्छी नजरों से नहीं देखता!
"भूल जाओ!" विलास ने बीयर की बोतल खोलने वाले यंत्र से फूंक मारते हुए कहा, "इस रविवार को रेस ट्रैक पर आओ, 'कोलंबिया प्रिंसेस' पर जितना हो सके उतना दांव लगाओ। मैं उसी घोड़ी पर सवार होने वाला हूँ!"
"मुझे बहुत खेद है, विलास! मैं कल तुम्हारे गाँव जा रहा हूँ!"
"मेरे गृहनगर में?" विलास ने मेरी ओर देखा और कहा, "क्या बात है, समर, तुमने क्या फैसला किया है?"
मैंने अभी तक कुछ तय नहीं किया है! वह देवी स्कूल जाना चाहती है!

"□□□, □□□! □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□!"
□□□ □□ □□□□□ □□□□□! □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□?
"□□ □□□, □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□□! □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□, □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□!"

-□-□-□-

२०
लगभग एक साल बाद, मैं भवानी नगर लौट रहा था। मेरे साथ कुमारी भी थी। मुकदमे में बरी होने के बावजूद, वह खुश नहीं लग रही थी। हम प्रथम श्रेणी के डिब्बे में आमने-सामने बैठे थे। वह खिड़की से बाहर देख रही थी। ट्रेन चलने के बाद उसने मुझसे कहा, "वापस आते समय, नेरल में उतरकर वह जगह देखते हैं! अगर हो सका तो हम सौदा पूरा कर लेंगे।"
"ठीक है!"
"आप विलास को कितने सालों से जानते हैं?"
"मैं उसे कई सालों से जानता हूं, लेकिन जब से मैं पुणे में उसके घर पर रह रहा हूं, हालात और खराब हो गए हैं! क्यों? क्या आप उसके बारे में कुछ जानना चाहते हैं?"
"ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन वो आदमी अभिनय में माहिर है! अंदर और बाहर जैसी कोई चीज नहीं होती!"
"तुम कितने समय से एक दूसरे को जानते हो?"
"हम बहुत पुराने परिचित हैं! जिस दिन उसे पहली बार घुड़सवारी का मौका मिला और उसने जीत हासिल की, मैं खुद उसके पास गया और उसे बधाई दी!"
"अरे वाह!"
"वह कभी-कभार यहाँ आता है। वह मुझे कुछ अचूक सुझाव देता है!"
"वह मेरे साथ बहुत खुलकर बात करता था, लेकिन उसने कभी तुम्हारा नाम तक नहीं लिया!"
उस युवती ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या मैं कोई उल्लेखनीय व्यक्ति हूँ?" "सच में नहीं, लेकिन दोस्त होने के बाद, क्या हमें एक-दूसरे से ऐसी बातों के बारे में बात नहीं करनी चाहिए?"
"मुझे लगता है कि अगर हम दोनों पुणे में न मिले होते तो बेहतर होता!"
"आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"
"उल्कापिंड - मुझे तो पता ही नहीं चलता!"
दादर पार करने के बाद, कार पुणे की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी। मुंबई की घनी आबादी अब कुछ कम दिखाई देने लगी। गलियों में वाहनों की संख्या भी कम हो गई। सांता क्रूज़ से आ रहा एक बड़ा विमान आसमान में एक ही जगह पर स्थिर प्रतीत हो रहा था।
नौकरानी ने मेरी तरफ घूरकर देखा और कहा, "समर, तुम कुछ उदास लग रही हो!" "मुश्किल!"
"किसका?"
"एक उल्कापिंड से है और दूसरा तुमसे!"
मैं इतना चिंतित क्यों हूँ?
सच कहूं तो, उस घटना के बाद से मेरी नींद उड़ गई है, मैं लगातार यही सोचता रहता हूं कि क्या होगा और क्या नहीं होगा!
"आप मेरे बारे में ऐसा क्यों सोचते हैं?"
"कौन जानता है!"

"ऐसा महसूस करना अच्छा नहीं है!"
मैं भी यही जानना चाहता था, लेकिन मैं उस एहसास को महसूस करना जारी रखना चाहता था!
लड़की मुस्कुराई और मुझसे पूछा, "भवानी नगर में ठहरने की क्या व्यवस्था है?"
"गांव के बीचोंबीच सिर्फ एक ही अच्छा होटल है; होटल मालिक बहुत ही बढ़िया शाकाहारी और मांसाहारी खाना बनाता है! तीसरी मंजिल पर ठहरने की व्यवस्था है!"
"अच्छा! देखने लायक क्या है?"
"गांव में दो महल हैं जो देखने लायक हैं। लेकिन गांव से चौदह मील दूर एक प्राचीन किला भी है। और वहां की हवा बहुत ही सुहावनी है!"
"क्या वहां ठहरने की कोई व्यवस्था है?"
"जी हाँ! यहाँ हॉलिडे होम हैं। एक सरकारी गेस्ट हाउस भी है। वहाँ का रसोइया आपकी पसंद के अनुसार खाना बनाता है। हम कॉलेज के दिनों में दुर्गा गेस्ट हाउस जाया करते थे! हम भी ऐसा ही करेंगे, कुमारी!"
"कैसे?"
"हम भवानी नगर में ज्यादा देर नहीं रुकना चाहते! मैं अपनी मां से मिलने जा रही हूं, जिनका देहांत हो गया है। कल शाम हम दुर्गा में रहने के लिए जाएंगे!"
"ठीक है! मैं किसी शांत जगह पर जाना चाहता हूँ, जहाँ गाड़ियों के हॉर्न की आवाज़ भी न सुनाई दे।"
"तब माथेरान बहुत बढ़िया जगह थी, मैं वहाँ रहता था। वहाँ किसी भी प्रकार का यांत्रिक वाहन ले जाना मना है!"
"लेकिन हम देवी के दर्शन करना चाहते थे, है ना!"
"यह भी सच है!"
‘‘तू देव मानतोस, समर?’’
सच कहूं तो, कभी-कभी मुझे लगता है कि भगवान का अस्तित्व अवश्य होना चाहिए, और कभी-कभी मुझे लगता है कि भगवान से संबंधित धर्म पूरी तरह बकवास है। "आपके विचार से ऐसा कब नहीं होना चाहिए?"
"वह समय जब अलका ने मेरे साथ बेईमानी की! हमने देव ब्राह्मण के सामने शादी की, उसने सप्तपदी के दौरान मेरे प्रति वफादार रहने और मेरे सुख-दुखों में साथ देने की शपथ ली। लेकिन उसी अलका ने थोंबर के साथ संबंध बनाए; तब मुझे लगा कि सारा धार्मिक धर्म झूठ है!"
और आपको क्या लगता है कि यह कब होगा?
"जब आपको बरी कर दिया गया!"
"एक वेश्या के लिए इतना प्यार महसूस करना सही नहीं है, समर!"
सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि तुम वेश्या हो!
"इस तरह सोचने में खतरा है!"

"देखिए, मेरी दो बार शादी हो चुकी है, लेकिन दोनों में से किसी ने भी मुझे सच्चा प्यार नहीं दिया। मैं आपके पास एक खास मकसद से आई थी, नौकरी के लिए! लेकिन बाद में, मुझे महसूस होने लगा—"
"क्या?"
"अपने घर में किसी भी अजनबी को मत आने दो!"
वह युवती हँसी, हँसते-हँसते उसका बायाँ गाल झनझना उठता था! वह आँखें सिकोड़कर हँसती थी, और जब वह ज़ोर से हँसती थी तो उसकी आँखों से पानी आ जाता था! वह आज भी ऐसे ही हँसती है।
रुमाला ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा, "मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि तुम्हारे दिमाग में ऐसा कुछ आ सकता है!"
"मुझे पहले तो यकीन नहीं था, लेकिन जब से आप पर मुकदमा हुआ है, तब से मुझे ऐसा महसूस होने लगा है!"
"मुकदमा खत्म हो गया है! अब ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है!"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "कुमारी, मेरे जीवन में दो महिलाओं ने मुझे निराश किया। इसीलिए मैं तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ।"
"आपने वही किया जो आपने कहा था!"
‘‘का?’’
आपको बात समझ आ गई!
उसके बाद काफी देर तक किसी ने किसी से बात नहीं की। कल्याण पार करने के बाद ट्रेन कर्जत की ओर बढ़ रही थी। वारली लोगों के फूस के घरों के बीच लकड़ी के खंभों और ताड़ के पेड़ों पर धान की बोरियों के ढेर दिखाई दे रहे थे। ये कम ही दिखाई देने लगे और ट्रेन कर्जत स्टेशन पर रुक गई।
"समर, क्या इस कार में खानपान की सुविधा वाली कार है?"
‘‘हाँ, आप क्या चाहते हैं?’’
"मुंबई छोड़ने के बाद मुझे भूख लग रही है, क्या आपको नहीं लगता?"
"लेकिन अगर आपने अभी कुछ खा लिया है, तो क्या आप रात का खाना खाएंगे? हमारा खाना पुणे स्टेशन पर तैयार होगा। मैंने स्टेशन मास्टर को हमारे रवाना होने से पहले सूचना भेज दी है!"
"क्या हम चाय पिएं?"
"अरे! रहने दो! इस कार में तो कोई वेटर ही नहीं दिख रहा!"
कुमारी और मैं ट्रेन के दूसरे छोर पर स्थित खानपान के डिब्बे में चढ़ गए। जब हम आ रहे थे, कुमारी को दो डिब्बों के जंक्शन को पार करते समय संतुलन बिगड़ने जैसा महसूस हुआ, इसलिए मैंने उसकी कमर पकड़ ली। यह दूसरी बार था जब मैंने उसकी कमर छुई थी... पहली बार तब हुआ था जब फैसला सुनाए जाने वाले दिन भीड़ में से टैक्सी में बैठते समय मैंने उसकी कमर छुई थी। हम खानपान के डिब्बे में बैठ गए। वेटर मेनू लेकर आया। मैंने तुरंत मेनू से नज़रें हटा लीं और कहा, "दो चाय!"
"समर, तुम इतने लंबे समय से घर पर हो, लेकिन हमें कभी खुलकर बात करने का मौका ही नहीं मिला!"
वह समय तो आना ही होगा!

वेटर ट्रे लेकर आया और उसे मेरे सामने मेज पर रख दिया। कप में चीनी डालते हुए उसने मुझसे पूछा,—
"ट्रेन सुबह भवानी नगर कितने बजे पहुँचती है?"
"छह बजे का समय बिल्कुल सही है; लेकिन अगर ट्रेन समय पर आ जाए तो क्या होगा?"
उस युवती की सुंदरता ऐसी थी कि उसे एक नज़र देखने से कोई संतुष्ट नहीं हो सकता था। भोजनालय में बैठे सभी लोगों की निगाहें उस युवती पर टिकी हुई थीं। यह जानते हुए भी उसने किसी की ओर नहीं देखा; पुरुषों के बीच संगति के कारण या अपने पेशे के कारण, उसे पुरुषों के प्रति कोई जिज्ञासा नहीं थी! उसकी आँखों में एक तरह की तटस्थता थी। बाल संवारने के बाद से मैंने उसके इस रवैये को और भी ज़्यादा महसूस किया था।
"समर, यह सच है कि किसी को भी दूसरे के निजी मामलों में दखल नहीं देना चाहिए; लेकिन तुम्हारी पहली पत्नी के बारे में जानकर मैं राहुनारा से भी ज्यादा हैरान हूँ! उसमें तुममें ऐसी क्या कमी थी कि वह दूसरों की ओर आकर्षित हो गई?"
चाय का खाली प्याला ट्रे पर रखते हुए मैंने अपने हाथ हवा में उछाल दिए; “भगवान जाने! इतना ही नहीं, मैं उसके कॉलेज जीवन के बारे में सुनी हर बात भूलने को भी तैयार थी; लेकिन वो गोबर खाने चली गई! अब मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने उसे जान से क्यों नहीं मार दिया।”
“ऐसा मत सोचो, पापा!” कुमारी उठते हुए बोली। “कोई व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न हो, उसे मारना सही तरीका नहीं है!”
वह मेरा हाथ पकड़कर मेरे साथ-साथ चली और बोली, "चलिए, मैं आपको अपनी पत्नी से मिलवा देती हूँ। मैं उसे बताऊँगी कि व्यभिचारी स्त्री का क्या अंजाम होता है! वैसे तो मुझे उसे कुछ भी सिखाने का कोई अधिकार नहीं है; लेकिन मुझे लगता है कि आपका जीवन सुखमय होना चाहिए!"
हम बैठ गए। गाड़ी खंडाला घाट पर चढ़ रही थी। जैसे-जैसे गाड़ी ऊपर चढ़ती गई, ठंड लगने लगी। कुमारी ने खिड़की नीचे की और मुझसे पूछा, "क्या आप कभी गर्मियों में लोनावला में रुके हैं?"
"क्यों नहीं?"
"बहुत बढ़िया लग रहा है! चलो इस गर्मी में आते हैं!"
"तुम्हारे दिमाग में कई योजनाएं हैं। तुम नेरल में वह फार्म खरीदना चाहते हो, वहां जाकर रहना चाहते हो, लोनावला आना चाहते हो!"
उसने मुस्कुराते हुए कहा, "कई योजनाएँ हैं; लेकिन हम देखेंगे कि वे कितनी हद तक पूरी हो पाती हैं!"
"अगर आप वह खेत और बंगला खरीद लें तो मुझे क्या करना चाहिए?"
"मेरे साथ रहो!" उसने सहजता से कहा।
"तुम एक बार कहती हो कि तुम्हारा जीवन सुखमय होना चाहिए, और एक बार कहती हो कि तुम मेरे साथ रहोगी। इसका क्या मतलब है?"
युवती मुस्कुराई और बोली, "यह भी सच है!"
"क्या सच है?"

"तुम्हारे लिए मेरे साथ लंबे समय तक रहना असंभव है!"
तभी एक मोटा-ताज़ा टी.सी. आया और बोला, ‘टिकट टिकट’। मैंने उसे टिकट दिखाए। उसने बॉलपॉइंट पेन से उन पर कुछ लिखा और जाते हुए कुमारी की तरफ़ एक नज़र डाली और चला गया। कुमारी ने कहा, ‘तुम मेरे साथ हो तब भी लोग मुझे ऐसे ही देखना चाहते हैं; सोचो अगर मैं अकेले सफ़र कर रही होती तो क्या होता!’ "अरे, तुम्हारा रूप ऐसा है, लोग इसके साथ क्या करेंगे?"
"लेकिन समर, मैं अब तुम्हारे बिना अकेले नहीं रह सकती!"
कुमारी ने आखिरकार अपना स्पष्ट मत व्यक्त किया। मेरे लिए इसमें कुछ भी अप्रत्याशित नहीं था। लेकिन मेरे जीवन में आई दोनों महिलाओं ने मुझे बहुत निराश किया था। अब, तीसरी महिला को स्वीकार करके, और वह भी एक खुलेआम वेश्या, मेरा जीवन सचमुच बर्बाद हो जाएगा। अनजाने में ही मुझे लगा कि कुमारी मुझे वह सब कुछ दे देगी जो वे दोनों नहीं दे पाईं! मुझे प्रेम चाहिए था। शुद्ध प्रेम, वासना से मुक्त! मेरे लिए यह भूलना असंभव था कि कुमारी ने कई लोगों के सामने अपना कोमल शरीर दिखाया था, लेकिन उसके शरीर के प्रति मेरा कोई कर्तव्य नहीं था; मुझे बस उसका प्रेम चाहिए था!... लेकिन यह कैसे संभव था! बस एक सुंदर स्त्री का साथ या उसका प्रेम! यह मानना या कहना कि उसके शरीर के प्रति मेरा कोई कर्तव्य नहीं था, दोनों ही मूर्खता होगी। जो कोई भी ऐसे 'प्लेटोनिक प्रेम' में विश्वास करता है, मैं ऐसे 'प्लेटोनिक प्रेम' में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता...
कम से कम अब तक तो मुझे उसकी तरफ इतना आकर्षण महसूस नहीं हुआ था। उस मामले के बाद से जब उसने काम करना बंद कर दिया, तब से मुझे उसकी तरफ एक अलग तरह का आकर्षण महसूस होने लगा। मैं जानता था कि व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो ऐसा महसूस करना हास्यास्पद होता।
घाट से ट्रेन लोनावला पार करके समतल ज़मीन पर चलने लगी। लोनावला में एक सज्जन और एक बुज़ुर्ग महिला हमारे डिब्बे में चढ़े। अज़ीबाई बैठे-बैठे ऊंघने लगीं और कुमारी के कंधे पर गर्दन रखकर झपकी लेने लगीं।
लड़की ने मुझसे कहा, "समर, तुम यहाँ बैठो। मुझे अपनी सीट दे दो!"
"यह तो न्याय है। आप इधर आइए!" कुमारी ने धीरे से अपनी दादी का सिर उठाया और खिड़की के पास मेरे बगल में बैठ गई।
हवा से लहराते उसके बाल मुझे ऐसे महसूस करा रहे थे मानो मेरे गाल पर मोर का पंख फड़फड़ा रहा हो। मैंने हल्के से अपना हाथ उसकी कमर पर रखा और उसने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया। अंधेरा था।
मुझे पुणे स्टेशन पर ट्रेन बदलनी पड़ी। मुझे ब्रॉड गेज से मीटर गेज ट्रेन में बदलना था। उससे पहले, मैं एक रेस्टोरेंट में गया और दोपहर का खाना खाया।
मीटर गेज की प्रथम श्रेणी की ट्रेन में हम दोनों के अलावा कोई और नहीं था! ऐसे समय में, मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जो होना स्वाभाविक था, वही हुआ; लेकिन उसके बाद, मुझे अचानक सलीमा याद आ गई! दौलत खान की सलीमा! वह खूबसूरत औरत मेरी आँखों के सामने खड़ी थी! मुझे वह घटना याद आ गई! मेरे मन में एक हल्का सा संदेह उठा कि कहीं हर खूबसूरत औरत जो इस तरह मेरे जीवन में आती

है, उसका अंत किसी दुखद तरीके से तो नहीं होगा। वह युवती जो मुझे बाहों में भरकर सो रही थी, बिल्कुल भी सोच नहीं रही थी। ट्रेन की लयबद्ध आवाज़ से ऐसा लग रहा था मानो मेरी आँखें चौंधिया रही हों।
सुबह जब मैंने आंखें खोलीं तो ट्रेन भवानी नगर स्टेशन पर रुक चुकी थी।
खिड़की खोलकर देखा तो सभी यात्री उतर चुके थे। खैर, भवानी नगर तो आखिरी स्टेशन था। अगर यह बीच में होता तो ट्रेन जल्द ही अगले स्टेशन के लिए निकल जाती।
मैंने कुमारली को हिलाकर जगाया।
"उम," उसने जम्हाई लेते हुए पूछा, "क्या आप भवानी नगर पहुँच गए हैं?"
"हाँ। गाड़ी रुके हुए काफी समय हो गया है।" मैंने अपना सामान पैक करते हुए कहा, "अंधेरा हो रहा है, तो हमें लॉज चलना चाहिए!"
"क्यों?" उसने अपने बालों में कंघी करते हुए पूछा।
इस शहर में इतने सारे लोग हैं जो मुझे जानते हैं!
लेकिन मुझे कोई नहीं जानता!
वाह वाह वाह! किसी न किसी समय तो इंजन गाड़ी को खींचकर दूसरी तरफ ले जाएगा! मुझे होटल की तीसरी मंजिल पर एक कमरा मिल गया। मैंने नहाया और कपड़े बदले। बाल संवारते हुए मैंने शीशे में कुमारी को देखा और कहा, "आखिरकार, काम हो गया!"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो!"
"क्या तुम उस रात को इतनी जल्दी भूल गए?"
"हाँ!" उसने मुस्कुराते हुए कहा, "हम अगले दिन ऐसी बातें कैसे याद रख पाएंगे? अच्छा, तुम कब वापस आओगे, मुझे बताओ? नहीं तो तुम मुझे यहीं फंसाए रखोगे और मुझे पूरे गाँव में भटकना पड़ेगा।"
"'चे: चे:! ऐसा नहीं होगा; लेकिन एक काम करो, मेरा ज़्यादा इंतज़ार मत करना; खाना खा लो। अब, जब दुकान आठ बजे खुलेगी, तो लड़का अख़बार ले आएगा। अगर तुम्हें कोई पत्रिका चाहिए, तो मुझे बता देना!"
सड़क पर चलते हुए मैं सोच रहा था, "भविष्य में मेरा क्या होगा? इस जहाज के किसी भी किनारे पर सुरक्षित उतरने के कोई संकेत नहीं हैं... मुझे नहीं पता कि मेरे जीवन में कितनी महिलाएं आएंगी और वे क्या करेंगी!..."
जब मैं घर पहुँचा, तो अमर मेरे सामने अखबार पढ़ रहा था। मुझे देखकर उसने अखबार एक तरफ रख दिया और मुझे गले लगा लिया, "दादा!"
मैंने खुद को उसके आलिंगन से छुड़ाया और पूछा, "माँ कहाँ है?"
"मंदिर में!"
"पापा?"
वे ऊपर हैं!
अमर ने सोचा, मैं अलका के बारे में भी पूछूंगा, वह मुझे इसी उम्मीद से देख रहा था; लेकिन उसने बड़ी सावधानी से उसके बारे में पूछने से परहेज किया। मैंने अपने जूते उतारे और अंदर चली गई। मैंने अपने पैर धोए और मंदिर के दरवाजे के सामने खड़ी होकर पुकारा, "माँ!"

मेरी पुकार सुनकर माँ मंदिर से बाहर आईं। मैंने उनके पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया। माँ बार-बार मेरी पीठ पर हाथ फेर रही थीं। उनकी आँखों में आँसू भर आए। डेढ़ साल बाद मैं अपनी माँ से मिल रही थी। मेरे मन में भावनाओं का सैलाब उमड़ आया था। मुझे भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
मैं मंदिर के द्वार के पास अपनी माँ के बगल में बैठ गया। अमर भी वहीं खड़ा था। उसने कहा, “दादा, परसों रत्नपुर से एक सज्जन आपका मुंबई का पता पूछने आए थे!”
"रत्नापुर से एक सज्जन?"
"जी हाँ! रत्नपुर की राजकुमारी अपने पति से झगड़े के बाद मुंबई के लिए रवाना हो गई है। अगर किसी ने उसे बता दिया कि वह मुंबई में है, तो समर को उसके ठिकाने का पता चल जाएगा!"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"हां, मुझे भी पहले यकीन नहीं हुआ था। वह दो महीने पहले चली गई थी!" "शानदार!" मैंने अपना माथा छूते हुए कहा।
"राजकुमार अमरेंद्र भी आपसे मिलने भवानी नगर आए थे!"
"लेकिन यह सब कैसे हुआ?"
"कौन जाने! ऐसा लगता है कि शादी के बाद से ही दंपति के बीच काफी तनाव था। बात तलाक की अर्जी देने तक पहुंच गई।"
तब मां ने धीमी आवाज में कहा, "अमर, तुमने उसे यहां आने के लिए क्यों कहा?" "देखो माँ, मुझे अब इन सब बातों की परवाह नहीं है। बल्कि, अजीब तो तब लगता है जब किसी का वैवाहिक जीवन सुचारू रूप से चल रहा हो! वैसे, अल्का कहाँ है?" "मैं कॉलेज गया था। अब बीटी की कक्षाएं सुबह के समय होती हैं!" अमर ने यह जानकारी दी।
"समर, बाबा, तुम यहीं रहो! वह भी समझदार हो गई है! कुशाबा कह रही थी कि खेती हमारे लिए लाभदायक नहीं है। मैं तुम्हें अभी यहाँ से कहीं नहीं जाने दूँगा! सीधे खेत जाओ और वहीं रहो!"
मैं बस हंस पड़ी। मेरी मां को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मुंबई की तेज रफ्तार जिंदगी में ढल चुकी किसी व्यक्ति से खेती करने के लिए कहना कितना हास्यास्पद था।
फिर मैं पापा से मिलने गई, "हेलो! अरे, क्या आप बुनियादी शिष्टाचार का भी पालन नहीं कर सकते?" मुझे देखते ही पापा का गुस्सा फूट पड़ा।
"क्या हुआ?"
"क्या आपने मुझे फोन पर भी नहीं बताया कि कुमारी रिहा हो गई है? मुझे तो अखबार में पढ़कर ही पता चला!"
मुझे याद नहीं था।
"अच्छा, अब तुम यहाँ कैसे आ पाए?" पापा ने मुझसे पूछा, मानो वे किसी तीसरे व्यक्ति से पूछ रहे हों।
"मैं आसानी से आ गया!"
"कुंवारी कैसी है?"
"ठीक है।" मैंने जानबूझकर इस बात का जिक्र नहीं किया कि वह मेरे साथ आई थी।

"अरे, रत्नपुर की उस राजकुमारी को क्या हुआ है?"
"मुझे भी कुछ पता नहीं, पापा। अब मुझे अमर से पता चला कि उसका अपने पति से झगड़ा हुआ और वो मुंबई चली गई! मैंने उसे मुंबई में कहाँ-कहाँ नहीं देखा?" "हम जल्द ही मिलेंगे!" पापा ने सिगरेट जलाते हुए कहा।
"वह कैसा है?"
"रेस का सीज़न शुरू हो रहा है, है ना? कई रानियाँ और राजकुमारियाँ, जिनका अपने पतियों से झगड़ा हो गया और वे उन्हें छोड़कर चली गईं, रेसकोर्स पर ज़रूर मिलेंगी। एक कुंवारी लड़की पास में है, और एक और बीच में है!"
"आप अपने आप में एक अनोखी चीज हैं, पापा!"
"ऐसा कैसे हो सकता है? तुम कसम खाकर कह रहे हो। क्योंकि तुम्हारा और कुमारी का वैसा रिश्ता नहीं था?"
"तुम समझ गए ना मैं क्या कहना चाहता हूँ।" तो मैं तीसरी मंज़िल पर अपने कमरे में चला गया। अलका ने कमरा बहुत करीने से सजाया था। मेज़ के एक तरफ किताबें सजी थीं। अलमारियों में साड़ियाँ और ब्लाउज़ टंगे थे। कमरे का माहौल बहुत खुशनुमा था। काफी समय बीत जाने के कारण अलका के प्रति मेरा गुस्सा थोड़ा कम हो गया था। मुझे अलका से मिलने की बहुत इच्छा थी और उसी क्षण सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। अलका किसी मराठी फिल्म का गाना गुनगुनाते हुए ऊपर आई। मुझे कुर्सी पर बैठे देखकर वह चौंक गई। उसने कोने में अपने जूते उतारे और किताबें मेज़ पर रखकर खिड़की के पास खड़ी हो गई। वह तय नहीं कर पा रही थी कि मुझसे बात करे या नहीं। सवाल यह था कि कौन शुरू करे। दो से पाँच मिनट इसी तरह बीत गए। दरअसल, बाहर से आने के बाद उसे अपनी साड़ी बदलनी पड़ी। शादी के बाद उसने मेरे सामने कई बार कपड़े बदले थे। मैंने तो स्कर्ट और ब्लाउज़ में भी उसे चिढ़ाने से कभी नहीं रोका था। लेकिन आज वही अलका मेरे सामने कपड़े बदलने को तैयार नहीं थी। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि उसकी नज़रों में मैं एक अजनबी था?... मेरे मन में संदेह पैदा हो गया। मैं कुर्सी से उठा और नीचे चला गया।
- ०-०-०-

२१
मेरी मां नीचे सीढ़ियों के पास खड़ी थीं। वह वहां खड़ी होकर उम्मीद कर रही थीं कि मैंने अल्का से बात कर ली होगी, और शायद हमारे बीच इबोला का मामला खत्म हो गया होगा।
"क्या तुमने उससे बात की?" माँ ने पूछा।
"हाँ!" मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा।
"शाबाश! आपने उसमें बदलाव देखा, है ना?"
"छड़ी में कोई बदलाव नहीं आया है! इसकी कठोरता अभी भी वैसी ही है। कौन जाने इसे किस बात पर गर्व है!"
मां का चेहरा पत्थर की तरह उतर गया।
"क्या मैंने तुमसे बात नहीं की?"
"नहीं!"
मेरी माँ की आँखों में आँसू भर आए। पापा चाहे कितने भी सनकी क्यों न हों, मेरी माँ गाँव आते-जाते समय उनके पैर छूकर उनका अभिवादन करती थीं। उन्हें लगा कि अल्का ने भी मुझे देखकर इसी तरह अभिवादन किया होगा।
"ठीक है माँ, मैं बाहर जाकर वापस आ जाता हूँ!" मैंने अपने जूतों के फीते बांधते हुए कहा।
"रात के खाने के लिए देर मत करना। मैं इंतज़ार करूँगा!"
"ठीक है!"
मेरे पुराने मित्र धोंडू मास्टर ने मुझे देखा और पास आकर मेरा हाथ पकड़कर कहा, "समर, तुम कब से मुझे देख रहे हो? तुम कहाँ हो? क्या कर रहे हो?"
"मेँ मुंबई मेँ रहता हूँ।"
आप कहाँ-कहाँ सेवा करते हैं?
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "सेवा अभी शुरू नहीं हुई है!"
"तो फिर तुम क्या कर रहे हो?"
"मैं तुम्हें बाद में बताऊँगी। धोंडू, मुझे टैक्सी चाहिए। मुझे दुर्गा जाना है!"
"क्या मुझे टैक्सी मिल सकती है? मुझे लगता है कि कोई खास तोहफा लाया है?" मैं बस हंस पड़ा।
"तुममें काफी सुधार हुआ है, समर!" गुरु ने मेरी ओर ध्यान से देखते हुए कहा। "तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
"मैं इसे तुम्हारे चेहरे पर देख सकता हूँ!"
और यहाँ क्या खास है?
"इसमें खास क्या है? तुम उस कमीने की वजह से यहाँ से चले गए थे। फिर हम तलमी के लड़कों ने उस कमीने को सबक सिखाया! उसका तबादला हो गया और वह औरंगाबाद चला गया! क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी पत्नी उस्ताद बन रही है?" "हां, बी.टी. यह कर रहा है।"
"उसे अभी मुंबई ले जाओ। पत्नी से ज्यादा देर तक दूर रहना ठीक नहीं है।"

"चलो, इस विषय को छोड़ो! फुटबॉल टीम क्या कहती है, बताओ?" मैंने विषय बदलने के इरादे से पूछा।
"तुम चले गए और टीम 'फुटबॉल' बनकर रह गई। सब कुछ इधर-उधर बिखर गया। पैलेस की एक टीम थी, लेकिन उसने भी अपनी आत्मा खो दी। आखिरी दिन से ही तुम टीम से बाहर होने लगे! अब मुंबई में क्या कर रहे हो? मुझे लगा था कि तुम इस बीच विलास जॉकी के साथ हो!"
"गुरुजी, यदि आप दुर्गा के पास आएंगे, तो मैं आपको सब कुछ बता दूंगी!"
"वह आ रहा है!"
"कल आना, फिर हम बैठेंगे।"
मुझे कई पुराने दोस्त मिले। हर कोई मेरे काम के बारे में पूछ रहा था; लेकिन मेरे पास उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं था। मुझमें यह कहने की हिम्मत नहीं थी कि मैं एक मशहूर वेश्या कुमारी के घर में हूँ।
घर लौटते समय मुझे राजकुमारी रत्नप्रभा की याद आ गई। सच में, यह राजकुमारी कहाँ गायब हो गई?... मुझे उनका एक पत्र मिला था जिसमें उन्होंने लिखा था, "जिस राजकुमार से मेरी शादी हो रही है, उसकी सोच पुरानी है। उसे मनाना मेरे लिए मुश्किल है।" लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि राजकुमारी उन्हें छोड़कर शरणार्थी बन जाएगी! राजकुमारी मुझ पर बहुत एहसानमंद थी। उनमें मुझे बचाने की हिम्मत नहीं थी। वरना समर धीरज सिंह ठाकुर तो कब के गायब हो गए होते। कौन जाने राजकुमारी कहाँ गायब हो गई! लेकिन उनके बारे में बात करते हुए मेरे पिताजी ने कहा, "पति को छोड़कर जाने वाली राजकुमारियाँ और रानियाँ अक्सर घुड़दौड़ के मैदान में ही मिलती हैं!"
कुछ हद तक वे सही थे। लेकिन मैं पहले से ही महिलाओं के जाल में फंसा हुआ था, इसलिए मुझे राजकुमारी का पता लगाने की कोई ज़रूरत नहीं लगी। भला मुझे किसकी चिंता करनी चाहिए? अलका, उल्का या कुमारी की? इस राजकुमारी की तो बात ही छोड़ो!...
जब मैं घर पहुंची, तो मेरी माँ मेरा इंतज़ार कर रही थी। रोने से उनकी आँखें लाल थीं। उन्होंने ज़रूर अल्का को बहकाने की कोशिश की होगी! मुझे लगा कि उन्होंने मेरी बात दिल पर ले ली होगी, तभी तो उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। माँ ने मेरे लिए एक थाली तैयार की। उन्होंने बादाम और काजू डालकर सूजी का हलवा बनाया था। माँ ने मेरे लिए आलू की सब्ज़ी, पत्ता गोभी का सलाद, मसालेदार चावल आदि विशेष व्यंजन तैयार किए थे। जब मैं खाना खा रहा था, माँ एक तरफ बैठी थीं।
"तुम भी मेरे साथ आओ!"
“नहीं, तुम जी भर के खाओ!” मेरी माँ की आँखों में फिर से आँसू भर आए।
"माँ, क्या हुआ?" मैंने चावल चबाते हुए पूछा।
"कुछ नहीं। तुम खा लो!" उसने आंखें घुमाते हुए कहा।
"मैं तुम्हें एक बात बता दूँ, बिलकुल भी बुरा मत मानो! अल्का के सिवा कुछ भी मेरे साथ नहीं रहा। और आगे भी नहीं रहेगा। तुम और पापा दोनों ने ज़ोर दिया था, इसलिए मैं चुप रही; वरना मुझे यह सब करने के बारे में ज़्यादा सोचना ही नहीं पड़ता।"

"ओह, मैंने तुम्हें बाहर जाने के लिए कहा था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तुम उस तरफ जाओ।"
मैं अब बाहर हूँ। मैं अकेला हूँ! मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है!
मैंने यह दिखाने के लिए खाना शुरू किया कि मैं अकेला हूँ, लेकिन अपनी माँ की नम आँखों और मेरे लिए उनकी चिंता को देखकर, मेरे मुँह में रखा खाना मेरे गले से नीचे नहीं उतर रहा था।
"तुम्हें खुद भी बोलने की कोशिश करनी चाहिए!" मां ने कहा।
"ठीक है! लेकिन पहले तुम खा लो!" माँ ने नहीं खाया।
मैंने जैसे-तैसे चार निवाले पेट में ठूँसे और हाथ धोने के लिए रसोई की ओर चल दिया। जब मेरी माँ मेरी थाली साफ़ कर रही थी, तो उन्होंने कहा, "समर, अगर तुम दोबारा शादी करना चाहती हो, तो खुशी-खुशी शादी करना।"
हाथ धोते समय, मैंने पीछे मुड़कर अपनी माँ की ओर देखा और कहा, "शादी?" "हां, शादी के बिना आपका जीवन स्थिर नहीं होगा!"
मैंने हाथ धोते और तौलिए से सुखाते हुए कहा, —
"मैंने वो भी कोशिश की थी, माँ! लेकिन लगता है किस्मत ने मुझे मेरी पत्नी से कभी कोई खुशी नहीं दी! क्या पिताजी ने मुझे मेरी दूसरी शादी के बारे में नहीं बताया था?"
"ओह, उनकी नज़र में मैं एक मूर्ख और पुराने ख्यालों वाली औरत हूँ। उन्होंने मुझ पर कभी भरोसा नहीं किया। तुमने किससे शादी की?"
मैंने एक संपन्न परिवार की लड़की से शादी की, लेकिन मुझे इसका भी पछतावा है!
‘‘का?’’
"मैं आपको अपने काम के बारे में क्या बताऊं, मां! उन्हें तो इसकी लत लग गई है! वे सारा दिन मदहोश रहती हैं!"
"तुमने ऐसी लड़की से शादी क्यों की?"
अब मुझे क्या पता था? वो खूबसूरत है, ग्रेजुएट है और उसने मोंटेसरी कोर्स किया है। हम दोनों ने मुंबई में काम करके खुशहाल जिंदगी जीने का फैसला किया था; लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली; इसलिए वो डिप्रेशन का शिकार हो गई और आज, जिसे शराब से सख्त नफरत थी, वो नंबर वन शराबी बन गई है! मैं आपको बता दूं, जो औरत शादी किए बिना मेरे पास साथ के लिए आती है, वो मेरे लिए जितनी अच्छी होती है! असल में, मुझे ये सब बातें आपके सामने नहीं कहनी चाहिए; लेकिन चूंकि आपने आज ये विषय उठाया है, इसलिए मुझे ये सब बताना ही पड़ेगा। माँ मुझे अवाक देखती रही। मैंने जार से एक चुटकी सौंफ निकाली और उसे अपने हाथ पर मल लिया। मैंने उसे अपनी हथेली में लिया, उस पर हल्की सी फूँक मारी, और उसे अपने मुँह में डालकर कहा, —
मैं कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर जा रहा हूँ। एक-दो दिन में वापस आ जाऊँगा! मुंबई जाने से पहले आपसे ज़रूर मिलूँगा! मेरी चिंता मत करो! मैंने हर मुश्किल का सामना करने की ताकत जुटा ली है! शादीशुदा महिलाओं ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।

जब मैं घर से निकला तो दो बज चुके थे। मालिक ने कहा था कि वह ठीक तीन बजे होटल के लिए टैक्सी भेजेंगे।
होटल के दरवाजे पर एक टैक्सी खड़ी थी। गोरा अहमद टैक्सी से आया था। वह फुटबॉल खेलता था; लेकिन बाद में उसने शराब पीना शुरू कर दिया और उसका 'खर्च' बढ़ गया। उसका पेट एक बड़ी फुटबॉल जैसा हो गया, तो आखिर वह किस तरह का फुटबॉल खिलाड़ी है? उसका नाम रोहिला अहमद था। उसके पिता रोहिलखंड में रहते थे, इसलिए उसका नाम रोहिला अहमद पड़ा।
जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने अपना हाथ उठाया।
"कौन सा समरबाबू?"
"ठीक है! आप कैसे हैं?"
"बेस्ट, मैंने दो टैक्सियाँ बनाईं, एक मेरे भाई द्वारा चलाई गई, दूसरी मेरे द्वारा!"
"क्या आप फुटबॉल मैच देखने जा रहे हैं या नहीं?"
"जी हाँ, बिलकुल! लेकिन सच कहूँ तो, समरबाबू, आपने भवानीनगर छोड़ दिया और फुटबॉल का खेल अपना आकर्षण खो बैठा। अब कभी-कभार ही मैच होते हैं? पर खेल में कोई जोश नहीं है! आपका खास कॉर्नर कौन सा था? गेंद तोप के गोले की तरह गोल में जाती थी। गोल के बादशाह को रोकना नामुमकिन था।"
यह सच है कि अहमद की तारीफ सुनकर मुझे थोड़ी खुशी हुई! मैंने उसकी पीठ थपथपाई और कहा, "लेकिन अहमद, मैं अभी दौड़ नहीं सकता! मेरे पैर सुन्न हो गए हैं।"
"कैसे?"
मेरे पास अहमद को गुमान सिंह की कहानी सुनाने का समय नहीं था, और मैं नहीं चाहता था कि वह सबको बताए। मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं गिर गया और मेरे पैर में स्थायी चोट लग गई! तो, क्या तुम किले जा रहे हो?"
"मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। तुम्हारा घर ही मेरा घर है!" मैं जल्दी से होटल की लकड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ी। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। नौकरानी ने दरवाज़ा खोला।
"खाना खा लिए क्या?"
‘‘अं ऽ हं!’’
‘‘का?’’
"क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं अकेले खाना नहीं खाती?" मैंने हंसते हुए कहा, "अपनी पुरानी आदतें छोड़ दो! टैक्सी नीचे इंतज़ार कर रही है। चलो!" कुमारी तुरंत तैयार हो गई। उसने अपनी साड़ी उतार दी। उसने साड़ी के ऊपर दूसरी साड़ी पहन ली। मुझे घर पर हुई घटना याद आ गई। मेरी होने वाली पत्नी अलका मेरे सामने ऐसा करने को तैयार नहीं थी। वह मुझसे अलग-थलग महसूस करती थी! कुमारी को कैसा लगता होगा? वह तो कथनी और करनी दोनों से वेश्या है! वह खुद अपना शरीर बेचकर जीविका चलाती है! लेकिन पता नहीं क्यों, कुमारी को अपना पिछला जीवन याद नहीं रहा। वह एक नए जीवन की चाहत रखती थी। उसने वेश्यावृत्ति छोड़ दी थी।
साड़ी बदलने के बाद, उसने अपने चेहरे पर पाउडर पफ घुमाते हुए मुझसे पूछा,—

"क्या आप अपनी पत्नी से मिल चुके हैं?"
उसने मुझसे यह सवाल यूं ही पूछ लिया: लेकिन उस सवाल का जवाब देते समय मुझे कुछ समझ नहीं आया। ऐसा लगा जैसे हम कभी मिले ही न हों। लोग मानते हैं कि जब दो लोग शारीरिक रूप से मिलते हैं, तो उनकी मुलाकात हो जाती है। लेकिन हमें यह क्यों मानना चाहिए कि जब दो लोग, जिनके विचार दो ध्रुवों की तरह एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, उनकी मुलाकात हो जाती है?...
कुमारी के सामने इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं था; मैंने उसका सूटकेस उठाया। उसने अपना बैग लिया और हम टैक्सी में बैठ गए। अहमद ने कुमारी को देखा और उसकी खूबसूरती से मंत्रमुग्ध हो गया। उसने मेरी तरफ देखकर अपनी भौंहें ऊपर उठाईं और बोला, "अरे भाई!"
भवानी नगर की सीमा पार करने के बाद टैक्सी दुर्गा रोड पर चलने लगी। दोनों ओर घनी हरियाली थी। टैक्सी बरगद और पीपल के पेड़ों की घनी छाया में पूरी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी। कुमारी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझसे कहा, —
"अगर हमें नेरल की जगह इन इलाकों में चार या छह एकड़ जमीन भी मिल जाए, तो भी काफी होगा!"
"यह मत सोचो कि यहाँ जमीन की कीमत कम है! एक एकड़ की कीमत पंद्रह से बीस हजार तक होगी।"
‘‘माय गॉड!’’
"तो? क्या आप समझते हैं? डेढ़ एकड़ जमीन वाला किसान अब एम्बेसडर फार्म से होकर गुजरता है! चीनी कारखानों ने इस पूरे इलाके का रूप बदल दिया है।"
"यह हिस्सा वाकई बहुत अच्छा लग रहा है, समर!"
"पहले यहाँ चावल और ज्वार उगाए जाते थे; लेकिन अब गन्ने के सिवा कुछ नहीं उगाया जाता। लोगों को बस पैसा चाहिए, पैसा!"
कुमारी ने कहा, "समर, तुम्हें पैसों की ज़रूरत तो ज़रूर है; लेकिन तुम्हें इतनी समझदारी रखनी होगी कि तुम्हें कितने पैसों की ज़रूरत है। एक बार जब तुम्हारे पास बेहिसाब पैसा आ जाता है, तो तुम पागल हो जाते हो। और इतनी आसानी से कमाया गया पैसा इंसान से बदला लेता है, तरह-तरह की लतें लगाता है और तुम्हें लाखों का घोटाला करने पर मजबूर कर देता है। मैंने अपने पास आने वाले करोड़पति ग्राहकों को करीब से देखा है, मुझे पैसे के पीछे भागने वाली वो जाति बिल्कुल पसंद नहीं आई।"
"लेकिन आपका व्यवसाय तो उनकी निजी जिंदगी पर चलता था। आप उन्हें क्यों दोष दे रहे हैं?"
मैं जीने के लिए पैसे कमा रहा था। लेकिन वे पैसे कमाने के लिए नहीं जी रहे थे। यही मेरे और उनके बीच का अंतर था! इस अंतर को कभी मत भूलना!
गाड़ी घाट पर चढ़ रही थी। जब अहमद ने स्टीयरिंग व्हील को बाईं ओर मोड़ा, तो मेरे दाहिनी ओर बैठी लड़की मुझ पर गिर पड़ी। मैंने मुस्कुराते हुए उसे उठाया और एक तरफ धकेल दिया। लेकिन गाड़ी चला रहे अहमद ने सोचा होगा कि हम जानबूझकर हंगामा कर रहे हैं! भवानी नगर के कुछ बड़े लोग तो बस यही करने के लिए किले पर जाया करते थे।

छत के खंभे को पकड़े कुमारी किले के चारों ओर दूर-दूर तक फैले नज़ारे को निहार रही थी। ऊपर से कोंकण की ओर जाने वाली डामर की सड़क किसी साँप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी लग रही थी। धान के खेतों से आती भाप, किसानों की फूस की झोपड़ियाँ और उंगलियों जितने बड़े-बड़े लोग!
हम एक-दूसरे के करीब खड़े थे तभी कुछ बंदर छत पर आ गए। वे इतने बेखौफ थे कि हमारे ठीक सामने होने के बावजूद उन्होंने प्रेमालाप शुरू कर दिया। लड़की की तरफ देखकर मैंने कहा, "क्या उन्हें ज़रा भी शर्म नहीं आती?"
युवती हंस पड़ी और बोली, "इन्हें क्या पता!"
मैंने सिगरेट जलाते हुए कहा, "क्या वे इंसानों के पूर्वज नहीं हैं?" "लोगों में शर्म नाम की क्या चीज रह गई है? गडकरी जैसा व्यक्ति, जो खुद को सुशिक्षित समझता था, ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है?"
"अब तुम उसका नाम क्यों ले रहे हो? मामला तो बंद हो चुका है! भूल जाओ!"
इसी बीच चौकीदार बालू दरवाजे पर आया और विनम्रता से बोला, "आज शाम के खाने में क्या खाएं? पवार गांव जा रहे हैं।"
"क्या पवार अभी भी यहीं हैं? अच्छी बात है। कुमारी, तुमने मुंबई के बड़े- बड़े होटलों में तो चिकन खा ही लिया होगा; लेकिन एक बार पवार के हाथों बना यह चिकन ज़रूर चखो। इसका स्वाद तुम्हें सालों तक याद रहेगा! जाओ, बालू, पवार से चिकन करी और चावल बनाने को कहो।"
बालू के जाने के बाद कुमारी ने कहा, "जब तुम्हारा गांव और यह इलाका इतना अच्छा है तो तुम उस घटिया मुंबई में क्यों आए?"
"कौरी, कौन खुशी-खुशी आता है? ऐसी घटनाएं तो होती ही रहती हैं! अच्छा, क्यों न हम अपने पैरों को थोड़ा खुला रखकर आएं?"
‘‘हो.’’
कुमारी और मैंने स्नान किया। जब मैंने कपड़े बदलने के लिए अपना बैग खोला, तो मुझे उसके डिब्बे में वही चश्मे दिखे, वही मशहूर चश्मे जिन्हें देखकर हैदराबाद के नवाब भी शरमा जाते थे! लेकिन दुर्गा उत्सव में इनका क्या उपयोग है? तभी मुझे याद आया, आज रात भवानी नगर के जहांगीरदार और सरकार दुर्गा उत्सव में विशेष ताश खेलने आ रहे हैं। चलो, उनके साथ कुछ मज़ा करते हैं!
मैंने चश्मा वापस अपने बैग में रखा और पहाड़ी पर स्थित बिंदुओं को देखने के लिए बाहर चला गया।
किले पर ठंडी हवा चल रही थी। बड़े-बड़े बैंगनी पेड़ खिल उठे थे। कहीं-कहीं करवंडी के कुछ जाल भी दिखाई दे रहे थे। जब मैं किले की लाल मिट्टी पर चल रहा था, तो लड़की का शरीर चमकीले पीले रंग का था। उसकी रेशमी साड़ी का किनारा हवा में लहरा रहा था। चलते-चलते उसने मेरा हाथ पकड़ा और बोली, "देखो, यहाँ कोई जगह मिल जाए तो। चलो, नन्हे बच्चे, एक घर बनाते हैं!"
मैं हँस पड़ा। "जो मन में आता है, वही होता है। तुम नेरल में एक खेत खरीदना चाहते हो, उस पर बंगला बनाना चाहते हो! रास्ते में हरी-भरी ज़मीन देखकर तुम्हारा मन करता है कि वहाँ भी एक खेत हो। अब तुम कहते हो कि तुम यहाँ रहना चाहते हो! क्या तुम्हें पता है इसका क्या मतलब है?"

"क्या?" उसने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा, और साथ ही अपनी साड़ी भी पहन ली। इसका मतलब है कि आपकी कोई भी योजना पूरी नहीं होगी।
"जो भी कहो, समर, लेकिन मैं अब मुंबई की जिंदगी से थक चुका हूँ! मैं मुंबई को दोबारा नहीं देखना चाहता। धंधा तो पहले ही बंद हो चुका है।"
"क्या आपको लगता है कि ऐसा किया जाना चाहिए?"
"ओह, मुझे लगता है कि अब यह सवाल बेमानी है। हर कोई मुझे गडकरों के हत्यारे के रूप में देख रहा है। अब मेरे पास कौन आएगा? मैं ही अकेला हूँ जो उस जीवन का आनंद लेने आया हूँ!"
बातचीत करते-करते हम पश्चिमी छोर पर पहुँच गए। वहाँ से डेढ़ मील आगे नरसाई पठार था। यह इतना बड़ा पठार था कि इस पर विमान उतर सकता था। और उसके आगे, क्षितिज की ओर फैली सह्याद्री पर्वतमाला की अनगिनत छोटी-बड़ी चोटियाँ गहरे नीले आकाश में दिखाई दे रही थीं।
अचानक, क्षितिज पर सूर्य उदय हुआ। एक चमकीला सुनहरा गोला! युवती उसे ध्यान से देख रही थी। मैंने उससे सहज भाव से पूछा,—
कुमारी, डूबते सूरज को देखकर तुम्हारे मन में क्या आता है?
"मुझे तो यह बिल्कुल वैसी ही कुमक्वा तिला लग रही है जैसी सुहासिनी ने अपने माथे पर लगाई थी! समर, मुझे दुख है कि मैं अपने जीवन में कभी ऐसी कुमक्वा तिला नहीं लगा पाई!"
मैंने कुंवारी कन्या के आंसुओं में डूबते सूरज के दो बिंदु प्रतिबिंबित होते देखे।
किस्मत का क्या चमत्कार है! मुझे तो शादी करने का पछतावा था, लेकिन यह लड़की इसलिए दुखी और परेशान थी क्योंकि उसकी शादी नहीं हो पाई और वह अपना गुजारा नहीं कर पा रही थी। आखिर, इंसान हमेशा ही कुछ न कुछ पाने की चाह रखता है! वह हमेशा उसी बात की शिकायत करता रहेगा जो उसके पास नहीं है! "कुमारी, उठो! अंधेरा होने से पहले हमें विश्राम गृह जाना होगा!"
लड़की उठ खड़ी हुई। उसने अपनी आँखें घुमाईं। उसने मुझसे कहा, "मुझे बताओ तुमने उसके साथ क्या किया?"
"क्या?"
"एक जाम पीने के बारे में क्या विचार है?"
‘‘क्या आप आज कुछ पीना चाहेंगे?’’
‘‘येस, लेट मी एंजॉय माय व्हिजिट टु धिस ब्युटिफुल प्लेस!’’
अरे बाप रे! मुझे थोड़ी देर के लिए जाना होगा! मैं गोवेकर नाम के एक 'परमिट धारक' को जानता हूँ! देखते हैं कि क्या हम मिल सकते हैं!
मुझे विश्राम गृह में छोड़ दो!
"बिल्कुल! मैं तुम्हें इस तरह सड़क पर नहीं छोड़ूंगा!"
उस युवती ने मुस्कुराते हुए कहा, "अच्छा होगा अगर तुम जीवन भर इस वाक्य को कभी न भूलो!"
पहले तो मुझे उसकी बात समझ नहीं आई, लेकिन कुछ देर सोचने के बाद मुझे उसके शब्दों का निहितार्थ समझ में आ गया।

कुमारी को विश्राम गृह में छोड़कर मैं गोवकार परिवार से मिलने दुर्गा गया। गोवकार कभी-कभी फुटबॉल मैचों में अंपायरिंग करते थे। हम तब से एक-दूसरे को जानते थे। उन्हें न केवल फुटबॉल का ज्ञान था, बल्कि टेनिस, क्रिकेट और बैडमिंटन का भी। वे कई वर्षों तक हॉलैंड में रहे थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्हें भवानी नगर की गर्मी लगने लगी, इसलिए उन्होंने दुर्गा में एक छोटा सा बंगला बनवाया और वहाँ रहने लगे। जब मैं उनके घर गया, तो उन्होंने कहा, “अरे हाँ, हाँ! गर्मी कहाँ है?”
मैंने उनका अभिवादन किया और उनके बगल में बैठ गया। हमने इधर-उधर की बातें कीं। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुद्दे पर कैसे आऊं। फिर, एक-दो बार खांसने का नाटक करते हुए, मैंने कहा,—
"मुंबई से मेरा एक दोस्त मेरे साथ आया है। हम दोनों को खांसी हो रही है!" "अच्छा, मेरे पास कुछ पेप्स हैं, मैं तुम्हें दे दूंगा!" मैं चौंक गया। "सर, क्या बात है—" मैंने थोड़ा गला साफ करते हुए कहा, "अगर मैंने एक-दो पेग ब्रांडी पी ली होती तो बेहतर होता!"
अपनी दोनों भौहें ऊपर उठाते हुए उन्होंने कहा, "क्या यह खांसी है? मैं समझ गया! तो फिर वे ऐसा क्यों नहीं करते?"
"कैसे?"
अपने दोस्त को भी साथ ले आओ! चलो बातें करते हैं।
त्रिफला में फिर से धमाका हो गया है!
"क्या बात है, साहब? वह दोस्त थोड़ा शर्मीला है!"
‘‘अच्छा अच्छा! समजलं!’’
गोवेकर उठे और अंदर चले गए। वे गोवलकोंडा ब्रांडी की एक बड़ी, चार पेग वाली बोतल ले आए। जब मैंने अपनी जेब से पच्चीस रुपये निकाले, तो उन्होंने कहा, "इसे रख लो। मैं शराब बेचने का धंधा नहीं करता!"
लेकिन महोदय—"
"देखो, समर, मैं इन सब से गुजर चुका हूँ। तुम नौजवान लोग हमारी तरह क्या करने वाले हो?"
"सर, आपको कोई समस्या तो नहीं होगी ना?"
‘‘अगर ऐसा होता है, तो आप जाइए और आनंद लीजिए!’’
मैंने अपने जीवन में जितने दयालु लोग देखे हैं, उतने ही क्रूर लोग भी देखे हैं। अब इतने वर्षों बाद, मैंने अपनी पुरानी पहचान त्याग दी और सरकार के पास चली गई। अगर वे हाथ जोड़कर कहते, 'माफ़ कीजिए' या 'मुझे खेद है', तो मैं क्या करती?
जब मैं बोतल लेकर विश्राम गृह पहुँचा, तो मकान मालिकों की गाड़ियाँ पहले से ही वहाँ मौजूद थीं। वे बालू से उस लड़की के बारे में कुछ पूछ रहे होंगे। मुझे देखते ही उन्होंने कहा, “अरे! समर, तुम्हें यहाँ देखकर बहुत खुशी हुई!”
मैं उन सरदारों और जहांगीरदारों को अच्छी तरह जानता था। जब मैं राजमहल की सेना में कप्तान था, तब महाराजा की मुझ पर विशेष कृपा देखकर ये लोग मन ही मन मुझसे ईर्ष्या करते थे। मैंने यह भी सुना था कि जब उन्हें पता चला कि

मेरा पैर टूट गया है, तो उन्होंने मेरा मज़ाक उड़ाया था। मैं हमेशा से उन्हें किसी न किसी मौके पर सबक सिखाना चाहता था; लेकिन अब तक ऐसा मौका नहीं मिला था।
सावरदेकर सरकार ने मुझसे कहा, “तुम मुंबई से ‘पखरू’ लाए हो! वरना तुम वाकई भाग्यशाली हो, समर!”
दरअसल, मुझे उस पर गुस्सा आ रहा था; लेकिन बिना चेहरे पर दिखाए, मैंने कहा, "वह मेरी दोस्त है! वह एक अच्छे परिवार से आती है!"
"हमारा उसके प्रति कोई दायित्व नहीं है! मुझे बताओ, तुम फ्लश खेलने क्यों आ रहे हो?"
"लेकिन सरकार, मैं 'फ्लश' कहां खेल सकता हूँ?"
"अरे वाह! क्या कभी ऐसा हुआ है कि मुंबई में रहते हुए आप फ्लश गेम नहीं खेल सकते? कमाल है!"
"मैं ऐसा ही करूंगा, मैं ठीक नौ बजे आऊंगा, ठीक है?"
‘‘बाय ऑल मीन्स!’’
वह महिला सामने वाले कमरे में थी। मेरे अंदर आते ही उसने कहा, "समझ गए?" "बिल्कुल! लेकिन क्या आपको माघा भवानी नगर याद नहीं है?"
"अरे, मुझे पता ही नहीं था कि किले में इतना प्यारा माहौल होगा! क्या मैं रोज़ शराब पीता हूँ? बस कभी-कभार!"
मैंने अपना गिलास भर लिया। सोडा ऑर्डर करना नामुमकिन था। मेरे सामने बैठे लोग बातचीत का कोई विषय नहीं देना चाहते थे; इसलिए मैंने पानी से ही काम चला लिया।
पवार खाना लेकर आया। कुमारी ने खूब सारा चिकन खाया। हाथ में तंगड़ी का आखिरी टुकड़ा पकड़े हुए उसने मुझसे कहा, “सच में, समर, बहुत ही स्वादिष्ट खाना है! ऐसे सादे पेय, इतने लज़ीज़ खाने और तुम्हारे जैसे साथ के साथ, मुझे आज मरने की भी परवाह नहीं!”
मैंने अपने हाथों पर नींबू और नमक मलते हुए कहा, "तुमने मौत के बारे में बात करना शुरू कर दिया है।"
"कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है! सिर्फ आज की बात नहीं है, समर, जब मैंने व्यापार में लाखों रुपये कमाए थे, तब भी मुझे आत्महत्या करने का मन करता था!"
‘‘इट इज स्ट्रेंज!’’
"जो भी हो; मुझे कई बार ऐसा महसूस हुआ है!"
"हमने गोवेकर और पवार को धन्यवाद देते हुए अपना भोजन समाप्त किया। मैंने एक सिगरेट जलाई और कुमारी से कहा, ''मुझे सड़क के उस पार खेलने का निमंत्रण मिला है, चलो चलते हैं!''"
"यह क्या है? क्या तुम मुझे यहाँ अकेला छोड़कर जाओगे?"
"अरे वाह!"
लेकिन आज मैं...
मैं रात में खेल खत्म होने के बाद आऊंगा!
मैं तब तक जागता रहूंगा!

"□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□!"
□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□
□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□,
"□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□, □□□ □□ □□□□□ □□□□□□!" □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□, "□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□?"
"□□□, □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□!"
‘‘□□□□□ □□□□□!’’
□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□ □□-□□ □□□ □□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□, "□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□!"

*******(□□□□□□□□□ □□□□□□)*******

-□-□-□-

*****

sjeet